साझी

ભગવત્ સુખાર્થ રંગ-ફૂલ-મેવા આદિ સે કિયા ગયા ખિલવાડ

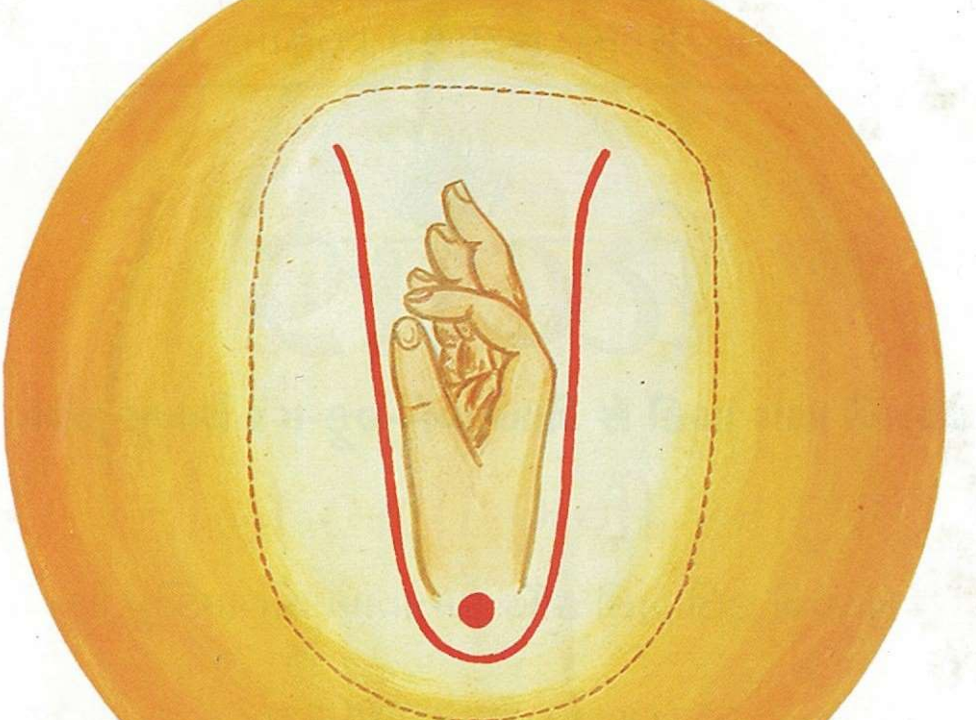

શ્રી વલ્લભકુળ સમસ્ત પરિવારને સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ

પરંપરામાં જે આનંદ આવે છે તે પરોક્ષ કે પ્રત્યક્ષમાં આવતો નથી.
શ્રી વલ્લભકુળ પરંપરા છે. તેથી જ તેમના સ્વરૂપથી ખૂબ જ આનંદ આવે છે.
પુષ્ટિ માર્ગમાં *'સાંઝી'* પરંપરા છે. *'સાંઝી'* પરંપરાને જતન, રક્ષણ અને પોષણ
આપનારા શ્રી વલ્લભકુળ અને વલ્લભી સૃષ્ટિને...

સમર્પણ

॥ શ્રીગોપીજનવલ્લભાય નમઃ ॥

શ્રી પુષ્ટિકલા સાહિત્ય પ્રકાશન. ભરૂચ દ્વારા દ્વિતીય પુષ્પ

सांझी

ભગવત્ સુખાર્થ રંગ-ફૂલ-મેવા આદિ સે કિયા ગયા ખિલવાડ

સાંઝી ભલી બની આઈ

શ્રી પુષ્ટિમાર્ગીય ભાવાત્મક ઔર સિદ્ધાંતિક વિવેચન

ગોપાલદાસ (ભરૂચ)

લેખક - મૂલ વિચારક - સંકલન - ચિત્રકાર એવં સંપાદક

પંડિત રમેશ ઉપમન્યુ (જતિપુરા)

સમન્વયાત્મક - વિવેચક

પ્રકાશક :
શ્રી શુધ્ધાદ્વૈત પંચમ પીઠ
શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્ય વિદ્યા વિભાગ
કામવન (જી. ભરતપૂર) રાજસ્થાન

All Rights Reserved - 2009
© Shri Pushtikala Sahitya Prakashan
Bharuch (Gujarat)

Sanji bhali bani aie

Edited by : Gopaldas Ruwala

લેખક-મૂળવિચારક
સંશોધન-સંકલન-સંપાદક
શ્રીગોપાલદાસ રૂવાળા

ચિત્રકાર - ફોટોગ્રાફી
શ્રી ગોપાલદાસ રૂવાલા

પ્રકાશન સ્થળ
શ્રી પુષ્ટિકલા સાહિત્ય પ્રકાશન
બી-૧૦૩, કુંજ રેસી પ્લાઝા
ઝાડેશ્વર રોડ, મક્તમપુર
ભરૂચ - ૩૯૨ ૦૧૨
(ગુજરાત) ઈન્ડિયા
મો. : ૦૯૩૭૭૫૫૪૦૨૮
E-mail : shripushtikala@yahoo.co.in

પ્રકાશક
શ્રી શુધ્ધાદ્વૈત પંચમ પીઠ
શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્ય વિદ્યાવિભાગ,
કામવન (જી. ભરતપૂર) રાજસ્થાન

પ્રથમ આવૃત્તિ
રાધાષ્ટમી શ્રી વલ્લભાબ્દ્ - ૫૩૨
ઈ. સ. ૨૦૦૯

મુદ્રક
ઝુમ ઓફસેટ
જી-30, બેલ્જીયમ ટાવર,
લીનીયર બસ સ્ટોપ ની સામે, સુરત.
ફોન : ૦૨૬૧-૨૬૦૧૨૧૯

પ્રાપ્તિસ્થાન

શ્રીમહાપ્રભુજી બેઠકજી
સ્ટેશન રોડ, પાંચબત્તી, ભરૂચ - ૩૯૨ ૦૦૧.
ફોન (૦૨૬૪૨) ૨૬૪૬૬૦

શ્રી વાક્પતિ ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
શ્રી બેઠક મંદિર કેવડા બાગ,
વડોદરા - ૩૯૦ ૦૦૧.
ફોન (૦૨૬૫) ૨૪૩૪૯૫૫, ૨૪૩૫૫૪૩

શ્રી વલ્લભસદન
આશ્રમ રોડ, ગુજરાત વહેપારી
મહામંડળની સામે, અમદાવાદ.
ફોન (૦૭૯) ૨૬૫૮૮૭૩૮

શ્રી ઘનશ્યામભાઈ કાપડીયા
ગ્રોવેલ ઈન્વેસ્ટમેન્ટ,
માણેક મેંસન, નાનાભાઈ લેન,
ફાઉન્ટેન, ફોર્ટ, મુંબઈ-૪૦૦ ૦૦૧.
ફોન (૦૨૨) ૨૩૬૨૩૧૪૪

શ્રી સુરેન્દ્રભાઈ શાહ
ઈ-૫૦૩, પુષ્પા હેરીટેજ, મહાવીર નગર,
કાંદિવલી(વેસ્ટ), મુંબઈ - ૪૦૦ ૦૫૧.
ફોન (૦૨૨) ૨૮૬૩૨૩૯૬, મો.૯૮૩૩૨-૭૨૩૮૩

" શ્રી નંદાલય "
નંદાલય માર્ગ, વલ્લભવિદ્યાનગર,
આણંદ (ગુજરાત).
ફોન (૦૨૬૯૨) ૨૩૮૦૮૫

જગમોહન હરિપ્રિયાબેન અરોડા
હરિરાયજી વાચનાલય
શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી મંદિર, નાથદ્વારા (રાજસ્થાન)

।। श्री हरिः ।।
।। श्री द्वारकेशो जयति ।।

गो. श्री व्रजेशकुमारजी महाराज

(शु. तृ. गृहाधिपति) कांकरोली.

स्थान : वडोदरा

साँझी

दिनांक २३-०६-२००९

श्रीमत्पूर्ण पुरुषोत्तम के सर्वव्यापक स्वरुप का भक्तों को अनुसंधान कराने के लिये, श्रीमदाचार्यचरण श्रीमन्महाप्रभुजी, श्रीमद् गोपीनाथजी प्रभुवरचरण और श्री गुसांईजी, श्री विठ्ठलनाथजी प्रभुचरणों ने पुष्टि प्रभु की सेवाविधि में राग, भोग, शृंगार आदि का सूक्ष्म विचार करके, विशिष्ट रूप से ''पर्वयात्रा महात्सवैः'' के रूप में श्री भागवत के एकादश स्कंध में श्री... प्रभु के आदेश का सम्पूर्ण विनिवेश करने हेतु विभिन्न प्रदेशों के अनेक लोकत्योहारों को अपनी भावयुक्त सेवा पध्धति में कुछ इस तरह समाविष्ट कर दिया जिससे अनायास ही श्री... प्रभु का व्यापक परब्रह्म रूपत्व सेवकों को स्पष्ट अनुभूत हो जाये।

जो भक्तजन भ्रमवश अवतारी को मात्र अवतार रूप में ही जानकर सेवा करते हैं, उन्हें इन त्योहारों का भाव समझने के बाद परब्रह्म रूप की अनुभूति हो सकती है तथा इन भ्रमों के कारण, अज्ञानता वश, जाने अनजाने जो लय, विक्षेप, कषाय आदि प्रतिबन्धक दोष बन जाते हैं, उनका उद्‌भव भी रोका जा सकता है ।

यहाँ साँझी का भाव समझना इसका एक अंग मात्र हैं ।इस प्रकार दशहरा, नवरात्रि (नवविलास), वसंत कलश आदि समझना चाहिए ।अस्तु,

साँझी में भाव है, भकित है, कला है तथा इस में पूर्वाचार्यों ने अनुग्रह पूर्वक व्रजगोपवधुओं की परम प्रेमरुपा भक्ति का, उनके अनन्य भाव का संयोजन करके सोने में सुगंध पूरित कर दी है । वस्तुत: साँझी का मूल रूप व्रज आदि प्रदेशों में कुमारिकाओं के द्वारा योग्यवर प्राप्ति हेतु किए जाने वाले पूजन का लोकाचार प्रचलित रूप है । गावों में गोबर, पुष्प और धान्यों के संयोजन से अनेक प्रतीकात्मक आकृतियों का मण्डन कर के पर्वात्मक पूजाविधि की जाती है । इसी विद्या को सेवा पद्धति के अनुरूप ग्रथित कर के नूतन विद्या से साँझी का स्वरूप दिया गया है ।

साँझी शब्द साँझ यानी संध्या से बना है । संध्या में किये जाने वाले कर्म जैसे साँध्यकर्म कहा जाता है, वैसे ही साँझ को किए जाने वाला यह पूजनात्मक कार्य साँझी कहा गया । संध्या समय योग्य दाम्पत्य-कामना से यह समाराधन कुमारिकाओं के द्वारा अभीष्ट देवता को निमित्त करके किया जाता था । अत: गोपिकाओं के द्वारा कृष्ण को ही पति रूप में प्राप्त करने के उद्देश्य यह पूजन होता था उसी भावानुरूप यह साँझी पुष्टि-सेवा पद्धति में समाविष्ट है । वैसे भी यह सिध्धान्त स्पष्ट है कि सारे पूजन नमना दि सीधे परब्रह्म को ही पहुँचते है । महर्षि याज्ञवल्क्य भी कहते हैं - ''संध्या उपासितायेन विष्णुस्तेन उपासित:'' इति ।

अथच इसी भावना को और व्यापक बनाने के लिए दान एकादशी से सम्पूर्ण श्राद्धपक्ष पर्यन्त बीस दिनों में पूरी व्रजयात्रा को प्रारंभ से पूर्णता तक के सभी स्थलों को केले के पत्तों की कटिंग के द्वारा, रंगो की रंगोली के द्वारा और पुष्प, मेवा, धान्यादि के उपयोग द्वारा भगवत्संमुख बनाकर के मानसीयात्रा का भी क्रम योजित कर अपने आप को व्रजभूमि से जोड कर तथा पुष्पावचयन के पदों का ज्ञान करके गोपीजनो के अनन्य प्रेम की अनुभूति अपने हृदय में कराके भक्तजनों को परमानन्द का दान करने का अनुग्रह श्रीमदाचार्यों ने किया है । श्रीमत्पभुचरणों ने अपनी कलात्मक अभिरूचि द्वारा पत्र, पुष्प, रंग, धान्य आदि का कलापूर्ण उपयोग बताकर अपूर्व संरचना करवादी है । तथा रंगो द्वारा जल के उपर और जल के भीतर साँझी बनाकर तो सामान्य दर्शकों का भी मनोहरण करवा दिया है ।

जब भावों से अनभिज्ञ जन भी इस कला से आनन्दित होते हैं, तो जो लोग भावना की गहराई तक जाकर इस कला को श्री... प्रभु के समक्ष देखते हैं तो उनके सामने वृक्षों से पुष्प चयन करती हुई गोपिकाएं साक्षात् श्री... प्रभु के साथ दृष्टि गोचर होने लगती हैं । यही तो परमानन्द की अनुभूति का प्रारंभ है ।

इस कलापूर्ण साँझी की भावना को व्रजभक्तों की भावना से परिभावित करके श्रीमदाचार्य चरणोंने पुष्टि पद्धति की सेवा भावना के अनुरूप जो यह स्वरूप दिया है, उसका एक दूसरा एक पक्ष भी है ।

पुष्टिमार्ग में भगवत्सेवा को यज्ञात्मक माना गया है । भक्तजन श्री... प्रभु के श्रीमुखारविंद में स्थित वैश्वानर में आहूति के रूप में ही सामग्री धरते हैं । यज्ञकर्ताको दीक्षित होना ही चाहिए । अत: सेवा वे ही करते हैं जो अष्टाक्षर और पंञ्चाक्षर मंत्रो से संपुटित गद्यमंत्र द्वारा दीक्षित होते हैं। एवं यज्ञ संस्था के दीक्षित के लिए जो शास्त्रों में संध्योपासन का विधान है, तद्नुरूप ''भवोभ्दवमादिंव्यक्तमद्वयमादित्यं सर्वे देवा ब्रह्मरूद्रेन्दा स्ताञ्व कृष्णो यथासीत् ध्यान योगस्थिता ते संध्या संज्ञा वासुदेवं नमन्ति, वयं देवमादिव्यक्त रूपं कृत्वा चात्मनि देव संस्था तथापि संसारार्थं कर्म तत्कारणमेव संध्या संस्था वासुदेव नमो नम: ।'' इस प्रकार वराहपुराणोक्त वासुदेव नमन रूप साँध्यकर्म (साँझी) को समझकर अन्य देवो पासन से विरत हो अनन्य भक्त का स्वरूप ग्रहण कर भक्तजन सेवा में गोपीजनों का अनन्य प्रेम का अनुभव करते हुए 'भूयान्नन्दसुत: पति:' के भाव को आत्मसात् करें । श्रीमदाचार्य चरण भी 'सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:' इसी प्रकार तो आज्ञा करते हैं । अलमति विस्तरेण। शुभम्।

शुभाकांक्षी

तृ.पी.गो. श्री व्रजेशकुमारजी महाराज
(कांकरोली)

पैलेस
श्री द्वारकाधीश मंदिर
कांकरोली - 313 324
फेक्स : 02952-231100

श्री राजाधिराज मंदिर
राजाधिराज मार्ग,
मथुरा - 281 001
फोन : 0565-2406372

श्री बेठक मंदिर
द्वारकेश बाग,
बडौदा - 390 001
फोन : 0265-2431461

श्री द्वारकाधीश मंदिर
बउआकी पोल, रायपुर चकला,
अहमदाबाद - 380 001
फोन : 079-2141537

॥ श्री गोकुलेन्दुर्जयति ॥

पितृप्रवर्तितपथप्रचारसुविचारक :

स्वस्तिश्रीमदेव्याविष्णुस्वामिमतानुवर्त्य

जगद्गुरु
पंचम पीठाधीश्वर
गो. श्री वल्लभाचार्य महाराज

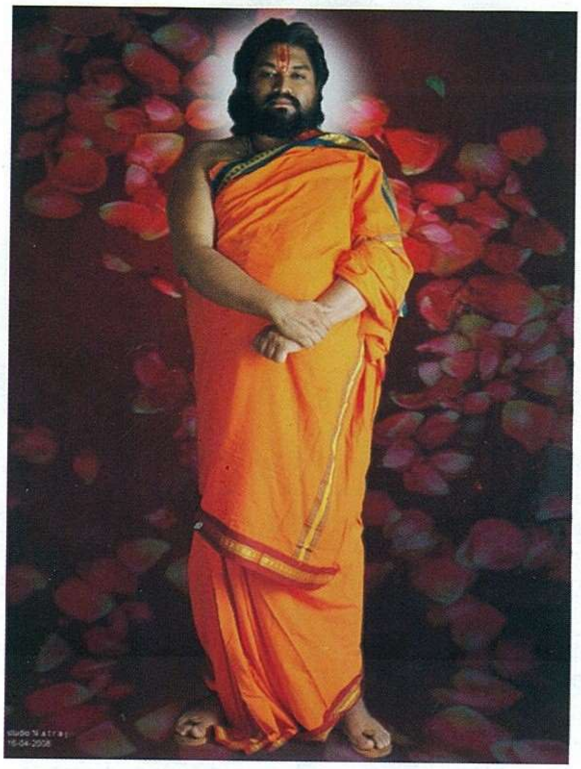

श्री कृष्णा :
अमंगलानां शमनं मंगलाना महोदयम ।
गोपांगनानां सौभाग्यं गोकुलेन्दु वयं नुमः ॥

मिति : श्रावण कृष्णा ५
दिनांक : १२/७/०९

परम भगवदीय गोपालभाई।
शुभाशीष

आपके द्वारा प्रकाशित होने जा रही पुष्टिमार्ग की [illegible] विलक्षण एवं अलौकिक पुस्तिका "सांझी" का कलेवर देख कर आनन्द हुआ। आज तक यह कभी भी समझा नहीं गया कि सांझी मात्र एक चित्रकारी ही नहीं अपितु एक बहुत भावनात्मक [illegible] है। इस पुस्तिका में आपने बड़ा परिश्रम लेकर [illegible] संप्रदाय पर प्रस्तुत किया है। ज्ञानपूर्वक, समझकर किया हुआ कार्य और भी शुद्ध भावना से होता है।

आपने "सांझी" के विषय सबकुछ पुस्तिका में छपाकर एक बहुत अलौकिक विषय को बड़ी सरलता से समझाया है। पूरे संप्रदाय और हम सभी आपको इस कार्य के लिए साधुवाद देते हैं।

भवदीय

Email : vallabhlalji5@gmail.com
(M) : 093770 10555, 09414024545, 09352551615

श्री शुद्धाद्वैत पंचम पीठ
श्री गोकुलचंद्रमाजी हवेली,
श्री देवीकीनंदनाचार्य मार्ग,
कामवन - ३२१०२२
जि. भरतपुर (राज.)

श्री नंदालय हवेली
नंदालय मार्ग, बाकरोल रोड,
वल्लभ विधानगर - ३८८१२०
जि.आनंद (गुजरात)
(०२६९२) २३८०८५

श्री राज रतनबिहारीजी मंदिर
महात्मागांधि रोड
बीकानेर-३३७००५

श्री गोवर्धननाथजी मंदिर
हवामहल, बडी चौपड
जयपुर, जि. जयपुर (राज.)
(०२६९२) २३८०८५

श्री महाप्रभुजीकी
श्री छठीजी बैठकजी
चंपारण्य वाया राजिम
जि. रायपुर, छतिसगढ
(०७७१) २७७७२१९

।। श्री मुकुन्द गोपालौ जयतः ।।

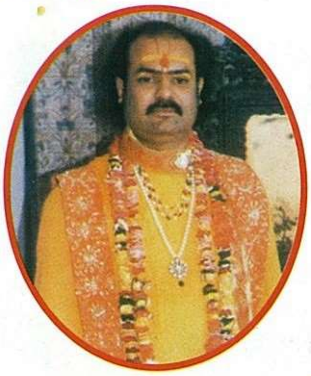

स्थापित-सन् १९९४ ई०
पंजी० सं० ७०६ सन् १९९४-९५

श्री मुकुन्द गोपाल सेवा संस्थान

प्रधान कार्यालय : षष्ठपीठ- श्री गोपाल मंदिर, के. ३७/८६, चौखम्भा, वाराणसी-२२१००१ (भारत) फोन : ४२०२५२

संस्थापक-अध्यक्ष : जगद्गुरू श्री मद्वल्लभाचार्य वंशज षष्ठपीठाधीश्वर गोस्वामी श्री श्याम मनोहर जी महाराज, काशीवाले

दानदाताओं को आयकर की धारा ८० जी में विशेष छूट

पत्रांक 52.

दिनांक 07.06.2009
27.06.2009

प.भ. श्री गोपाल दास जी,

सप्रेम जय श्रीकृष्ण.

आपका पत्र दिनांकित १० मई २००९ प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपने अथक परिश्रम कर पुष्टिमार्गीय चित्रकला को जनसामान्य विशेषत: पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के ज्ञानवर्धन हेतु "सांझी भली बनी आई" ग्रन्थ के रूप में उपलब्ध कराया है। आपका यह प्रयास संस्तुत्य है। श्री मुकुन्द गोपाल प्रभु आपको इसी प्रकार से भगवद् कार्य करने की प्रेरणा एवं शक्ति देते रहें, ऐसी प्रभु से हमारा निवेदन है।

पुण्यपाद षष्ठपीठाधीश्वर गो. १०८ श्री श्याम मनोहर जी महाराज श्री ने आपके सार्थक प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और आप सब संबंधित जनों को साधुवाद प्रेषित करने की आज्ञा प्रदान की है।

प्रसंगवश हम आपको बतलाना चाहेंगे कि हमारी संस्था द्वारा भी प्रकाशन कार्य किया जा रहा है। अबतक हमारी इस फुलवारी से उच्चकोटि के १४ पुष्प पल्लवित किये जा चुके हैं। प्रकाशित ग्रन्थों की सूची आपके सूचनार्थ संलग्न है।

हमारी संस्था द्वारा एक पुस्तकालय एवं वाचनालय भी संचालित किया जा रहा है जिसमें प्राचीन एवं दुर्लभ पुष्टिमार्गीय साहित्य का अद्भुत संग्रह उपलब्ध है यदि आप उचित समझें तो उक्त ग्रन्थ की एक प्रति हमारे पुस्तकालय हेतु भेंट स्वरूप प्रेषित कर सकते हैं इससे आपके ग्रन्थ को प्रचार-प्रसार प्राप्त होगा।

सप्रेम हरिस्मरण सहित,

आज्ञा से

(अरुण पारीख)

॥ શ્રી મદનમોહન પ્રભુઃ વિજયતે ॥

પૂ. પા. ગો. શ્રી હરિરાયજી મહારાજશ્રી
શ્રી મોટી હવેલી
જામનગર.

દિનાંક : સં. ૨૦૬૫ શ્રાવણ સુદ ૬
તારીખ : ૨૭ / ૭ / ૨૦૦૯

પ. ભ. ગોપાલભાઈ,

'શ્રી પુષ્ટિ કલા સાહિત્ય પ્રકાશન ' ભરુચ દ્વારા **'સાંઝી ભલી બની આઈ'** પુસ્તક મળેલ છે. જે પુસ્તકનું અમોએ અવલોકન કરેલ છે. આપણા પુષ્ટિ સંપ્રદાયની અનેક કલાઓમાંની એક મહત્વની કલા 'સાંઝી' છે. વર્તમાન પેઢીને આ અંગે રોચક અને વિસ્તૃત માહિતી મળે તે માટે તમોએ વિવિધ સ્થાનો અને પુસ્તકોમાંથી માહિતી એકત્ર કરીને તેને આનુષંગિક ભગવદ્ લીલાનું યથાર્થ વર્ણન આ પુસ્તકમાં રજૂ કરેલ છે. જે માટે તમોને ધન્યવાદ ઘટે છે. આપણા પુષ્ટિમાર્ગમાં શ્રીગુસાંઈજીએ સંગીત –સાહિત્ય અને કલાનો વિનિયોગ પ્રભુ અર્થે કરાવેલ છે. તેમાંની 'સાંઝી' એક પ્રકારની લલિત કલા છે. આ પુસ્તકમાં સાંઝીના વિવિધ પ્રકાર જેવા કે જલની સાંઝી, રંગની સાંઝી, ફૂલની સાંઝી વિગેરેના ભાવ અર્થ સાથે તમોએ સુંદર રીતે ગ્રંથમાં નિરૂપણ કરેલ છે એ સિવાય પૂ.ગો. બાલકો, પૂ. વહુ – બેટીઓ અને ભગવદીય વૈષ્ણવો જે રીતે આ સાંઝીની કલાને પ્રભુ માટે વિનિયોગ કરાવે છે તેના પ્રસંગોનું સુંદર આલેખન પુસ્તકમાં દર્શાવેલ છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં સાંઝી જે રીતે સિધ્ધ થાય છે તેમાંનો એક પ્રકાર પાટ પર બીબાથી પુરાતી રંગની સાંઝી મારફત સારસ્વત કલ્પની વિવિધ લીલાના દર્શન થાય છે. અષ્ટસખાઓએ ભગવદ્લીલાના જે દર્શન કરેલ છે તેમાંની એક લીલા સાંઝી છે અને આ સાંઝીના પદો અને તેનો ગૂઢ ભાવ વૈષ્ણવ હૃદયને ભાવવિભોર બનાવે છે. અનેક પદોમાંનું એક પદ **'અરી તુમ કૌન હૌ રી . . .'** બીજુ પદ **' રી કૌઉ શ્યામસખીરી સાંઝી પૂજન આવેરી'** વિગેરે કિર્તન અને તેના ભાવ ભક્તના હૃદયને લીલામાં તન્મય બનાવે છે.

અમોને આશા છે કે આ સાંઝીની કલાને પ્રદર્શિત કરતું ભાવપૂર્ણ પુસ્તકનું પ્રકાશન વર્તમાન અને ભવિષ્યની પેઢી માટે ઉપયોગી બનશે. આ સુંદર કાર્ય માટે અમારા તમોને હૃદયપૂર્વક આશીર્વાદ છે. અને આ સુંદર પુસ્તકના નિર્માણના કાર્ય માટેની શુભેચ્છા પાઠવીએ છીએ.

ગો. શ્રી હરિરાયજી મહારાજશ્રી

॥ श्री गोपालप्रभु विजयते ॥ ॥ श्री गोवर्धन प्रभु विजयते ॥

VRAJDHAM

(Jagadguru Shrimad Vallabhacharya Pith)

PRESIDENT : H. H. GOSWAMI 108 SHRI VRAJESHKUMARJI MAHARAJSHRI

"VRAJDHAM" Vrajdham Marg. Nr. Seema Hall, Shyamal 100 ft. Road, Satellite, Ahmedabad - 380 015.

PH. : 26930376, 30921300 / Fax : 079-26733622

E-mail : vrajeshkumarji@yahoo.com / Website : www.vrajdhamahmedabad.com

પ.ભ. ગોપાલભાઈ (ભરૂચવાળા) સસ્નેહ શુભાશીર્વાદ.

પુષ્ટિભક્તિ માર્ગ અનેક કળાઓથી સુશોભિત થયેલો છે. એમાં પણ 'સાંઝી' નીકળા એ વિવિધ પ્રકારની હોવાથી સર્વેનું ધ્યાન ખેંચે તેવી છે. પ્રાચીન કાળથી ચાલતી આવતી આ કળાનું પુષ્ટિ માર્ગમાં વિશેષ સ્થાન પામી છે. ફૂલની સાંઝી, જળની સાંઝી, અનાજની સાંઝી વગેરે અનેક પ્રકારની વ્રજભક્તો પોતાના ઘરના આંગનમાં સજાવી પ્રભુને રીઝવવા માટે નાના પ્રકારના ભાવથી પ્રભુના આગમનની રાહ જોઈ પ્રભુના સ્વાગત માટેની તૈયારી રૂપે સાંઝીના કીર્તનો પણ આપણે ત્યાં ઉપલબ્ધ છે. ખૂબ મહેનત કરીને આપણી ધરોહર સ્વરૂપે પ્રાચીન ચિત્રોનો સંગ્રહ કરીને આ સુંદર પુસ્તક 'સાંઝી' ભલી બની આઈ'નું અવલોકન કરીને ઘણી પ્રસન્નતાનો અનુભવ થયો. વૈષ્ણવજનો આનો લાભ લઈ આ પરિશ્રમને સફળ બનાવે એ જ મંગળ શુભકામના.

ગો. વ્રજેશકુમારજી

ગો. વ્રજેશકુમારજી (કડી-અમદાવાદ)

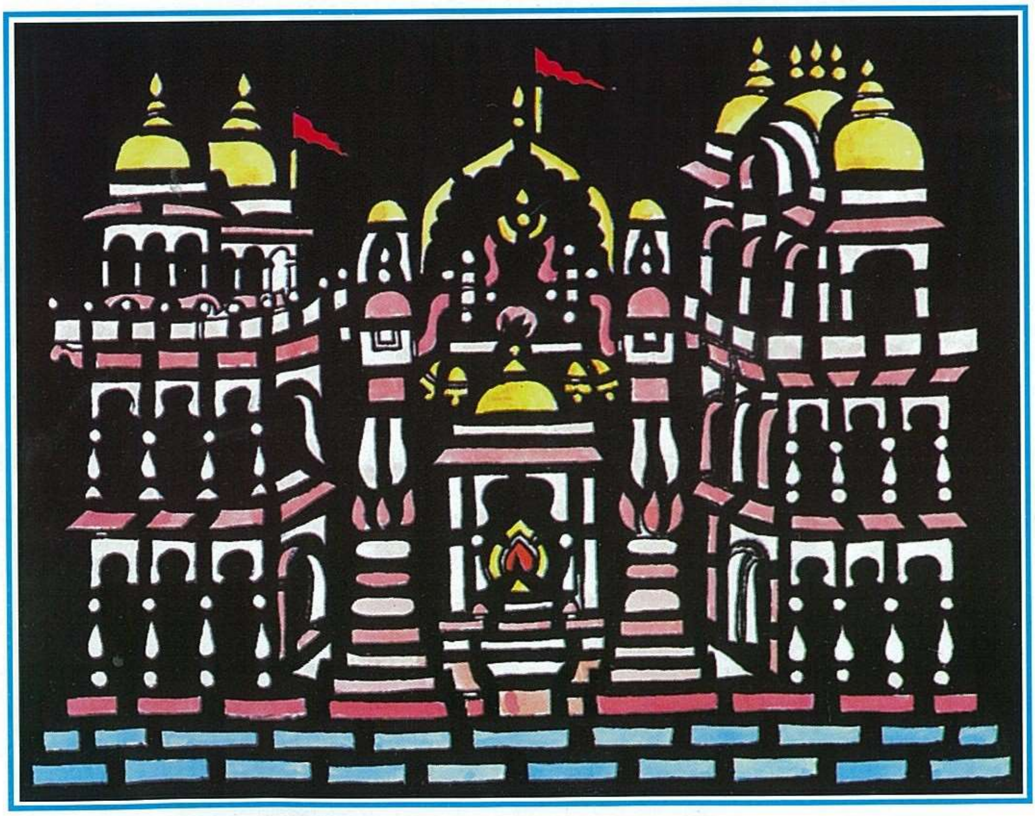

॥ શ્રી ગોપાલલાલ વિજયતે ॥
॥ શ્રીમદ્ આચાર્ય ચરણ વિજયતે॥

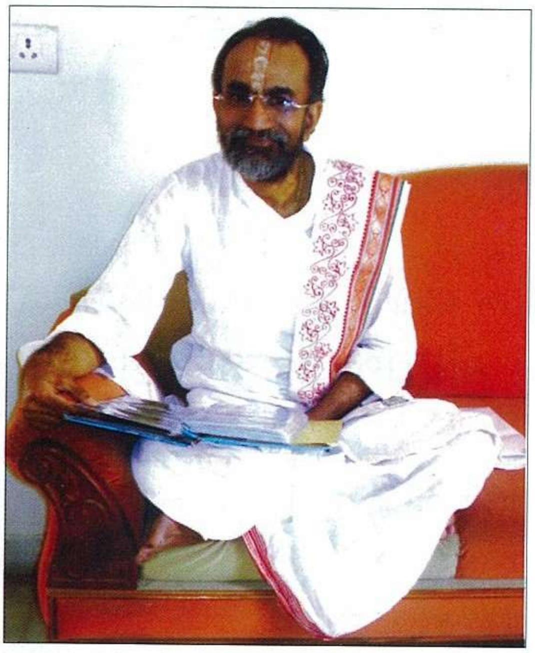

शुध्धद्वैत श्री बल्लभाचार्य गृहपीठ

प. पू. गो. १०८ श्री राजेशकुमारजी महाराजश्री

(श्री घनश्यामलालजी - कडी - अहमदाबाद)

श्री वल्लभ धाम श्री वल्लभाचार्य बेठक मंदिर

३, पंचवटी सोसायटी, जयहिन्द चार रस्ता, मणीनगर, अहमदाबाद.

શુભ આશીર્વાદ

પ્રતિ ‘શ્રી પુષ્ટિકલા સાહિત્ય પ્રકાશન’ ભરૂચ જેના પ્રમુખ મનોરથી પ.ભ. સ્નેહી શ્રી ગોપાળદાસ રૂવાલા અને આ ગ્રંથના સમન્વયાત્મક વિવેચન કરવાવાળા વિદ્વાન પંડિત શ્રી રમેશજી ઉપમન્યુ, ‘જતીપુરા’ને પણ અતિ ધન્યવાદ અને શુભેચ્છા પાઠવીએ છીએ. ઘણા જ આનંદ અને સંતોષનો અદ્‌ભુત અનુભવ થવા પામ્યો છે. જ્યારે ‘સાંઝી ભલી બની આઈ’ જેવાં અતિ સુંદર અને રસ કલાત્મકની સાથે પુષ્ટિભક્તિ રસથી પ્રચુર ગ્રંથનું અવલોકન કર્યું. વાસ્તવમાં પુષ્ટિભક્તિ માર્ગીય સર્વ પ્રકાર ભગવદ્ સુખાત્મક છે અને કલાનિર્ધિન સર્વ લલિતકલા અને શૃંગાર સમર્પિત કરી ભગવદ્ લીલાનું આંતરિક સુખ અનુભવવાનો ભગવદ્ ભોગ્ય પ્રકાર છે. આ ગ્રંથમાં જે સંકલન લીલાત્મકભાવ ઇતિહાસ અને પરંપરાનું સંશોધન પ્રકાશનની સાથે પ્રમાણના પૂરાવા અને નામ ભાવ લીલા સેવા સંગતિ અનેરી બની છે, ધન્યવાદ. આમાં શ્રી ગોપાલભાઈનો ઉત્સાહ ને પરિશ્રમ જણાઈ આવે છે. આ ગ્રંથના પ્રકાશનમાં સહયોગી બનનાર સર્વેને ધન્યવાદ. શુભેચ્છા. ચિત્રોનું સુંદર ક્રમવાર દર્શન અને સાંઝીના કીર્તન સાથેની સંગતિ નિહાળવાલાયક બની છે. વિરામ કરતા પૂર્વ માત્ર ‘સાંઝી ચતુર સુજાન કી’ને વર્ણન કરાયું છે તે ખરેખર સાંઝીનો સેવાનો અને યુગલ સ્વરૂપને સાંઝીના માધ્યમથી મિલન સંકેતનો સર્વ ગૂઢ પ્રકટ કરે છે! વાહ શું કહેવું! છતાં ‘અધિકારી પાખે વાણી નહિ કોને ઉચ્ચાર’ પ્રમાણે પુષ્ટિના અધિકારી માટે લીલા અનુભવનો પ્રકટ પ્રકાર બને છે અને તદ્ અતિરિક્તો માટે બહુમૂલ્ય કલાત્મક ગ્રંથનો સ્વાદ અને સંગ્રહની શોભા. શુભમ્

ગોસ્વામી શ્રી રાજેશકુમારજી મહારાજશ્રી (કડી-અમદાવાદ)

श्री अडेल अे-५६, गिरिवर बंग्लोझ,
रामवाडी, ईसनपुर,
अहमदाबाद, गुजरात (इन्डिया)
फोन : (079) 25731920, 25732020

ए-५०५, मधुपुरी अपार्टमेंट,
एम.जी.रोड, डहानुकरवाडी,
कांदिवली (प.) मुंबई-६७.
फोन : (022) 28062827

श्री शुद्धद्वैत
श्रीमद् वल्लभाचार्य पीठ
(कडी)
फोन : (02764) 325600

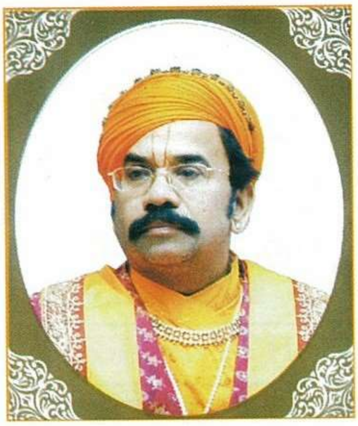

॥ શ્રી નટવરપ્રભુર્વિજયતે ॥

શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યચરણ વંશાવતંસ શ્રીગોપીનાથજી જ્યોતિષ્પીઠાધિશ્વર

શ્રીમદ્ ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રી વ્રજનાથજી મહારાજ

પ્રતિ શ્રી,
પ.ભ. ગોપાલદાસ રૂવાલા
શ્રી પુષ્ટિકલા સાહિત્ય પ્રકાશન

આપના દ્વારા પ્રકાશિત થઈ રહેલ 'સાંઝી ભલી બન આઈ' પુસ્તક પ્રત્યે શુભકામનાઓ પ્રેષિત છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય કલા એવમ્ પરંપરાના ભાગ રૂપ સાંઝીની કલાત્મકતાને ઉજાગર કરવાનો હેતુ આપે આ પુસ્તક દ્વારા મૂર્તિમંત કર્યો છે. અનેક વર્ષોથી ગોપપરંપરાના ભાગરૂપે અવિરત રીતે ચાલી આવતી આ વિશિષ્ટ પરંપરાને શ્રીમત્પ્રભુચરણ શ્રીગુસાંઈજીએ પુષ્ટિમાર્ગીય સેવા પ્રકારમાં વિશિષ્ટ સ્થાન આપ્યું છે, તેને લોકભોગ્ય કરવાની આવશ્યકતા જોતાં તે દિશામાં કાર્ય કરવાને આપ ઉદ્યત થયાં છો તે પ્રશંસાને પાત્ર છે. આપના આ પ્રયત્નથી પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવો સ્વમાર્ગીય પરંપરાઓ સાથે વધુ આત્મીયતા કેળવી શકશે.

આપના દ્વારા સ્વમાર્ગીય હિતકારી આ પ્રકારના પ્રકાશનો વારંવાર થતાં રહે તે ઇચ્છનીય છે. તેના માટે વૈષ્ણવો આપને જે કાંઈ પણ ધન્યવાદ આપે તે યોગ્ય જ છે.

શ્રીનટવરપ્રભુ આપનો આ ઉદ્દાત મનોરથ પૂર્ણ કરે તેવી શ્રીમદ્ પ્રભુચરણ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ચરણોમાં અભ્યર્થના સહ...

- આચાર્યશ્રીમાન્‌ની આજ્ઞાથી
અંગત સચીવ

ગોસ્વામી હવેલી, ગોસાઈજી મહારાજની પોળ, દોશીવાડાની પોળ, કાલુપુર, અમદાવાદ ફોન : ૦૭૯ - ૨૫૩૫૬૨૭૦

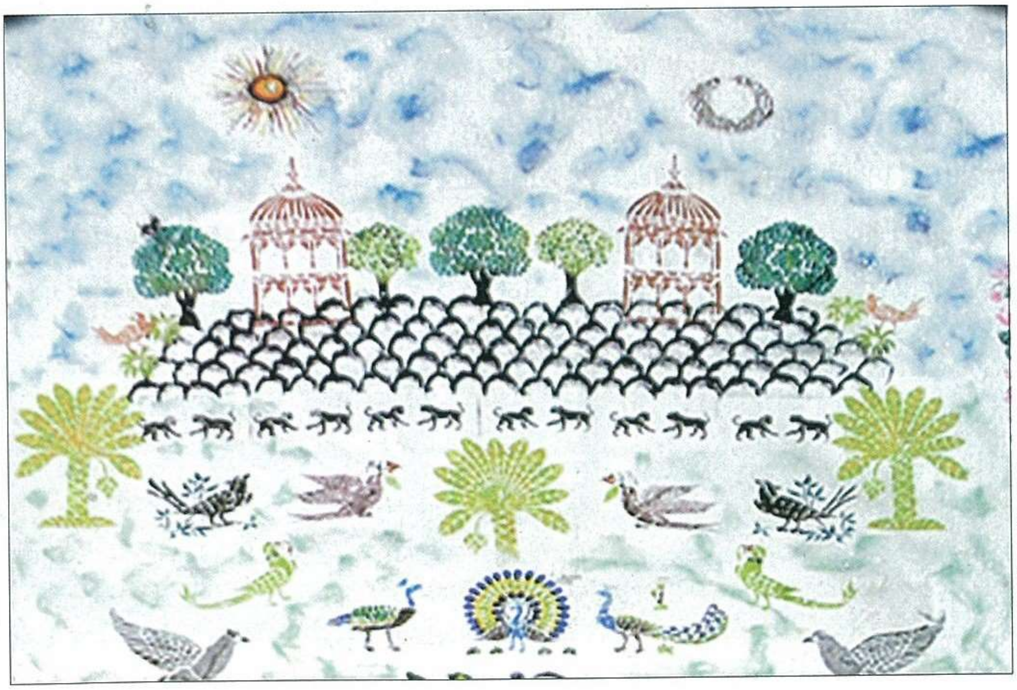

સૌજન્ય : ગોસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ.

।। प्रभुः श्री विठ्ठलेशो विजयतेतराम् ।।

।। शुभाशीर्वाद ।।

यह जानकर अत्यंत ही प्रसन्नता हो रही है कि आपके द्वारा साँझी की पुस्तक प्रकाशित की जा रही है । पुष्टि मार्ग में भगवत् सेवा के अंतर्गत समस्त ललित कलाओं का समर्पण किया जाता है । पुष्टि पुरुषोत्तम प्रभु उत्तम वस्तु के भोक्ता है, अत: सेवा में राग-भोग-शृंगार युक्त उत्तम सेवा-भावों का समर्पण होता है ।

साँझी कला का भी पुष्टि सेवा में अपना ही महत्त्व है। प्रभु के सन्मुख पल्लव, रंग, अनाज, पुष्प, जल, कोट आदि कई प्रकार की सुंदर साँझियाँ बनाई जाती है । पुष्टि मार्ग के अलावा ब्रज के कई अन्य भक्ति मार्गों में भी अनेक प्रकार की सुन्दर साँझियाँ बनाई जाती है ।

इन सब मन्दिरों में जा कर प. भ. श्री गोपालभाई रूवाला ने सुन्दर शोधरूप ये जो ग्रन्थ प्रकाशित किया है, यह सभी भक्त-कला प्रेमियों के लिए उपादेय सिद्ध होवें ।

एसी शुभकामनाओं सहित शुभाशीर्वाद ।

- गो. हरिराय
(द्वितीय पीठ, श्री विठ्ठलनाथजी, मंदिर, श्रीनाथद्वारा)

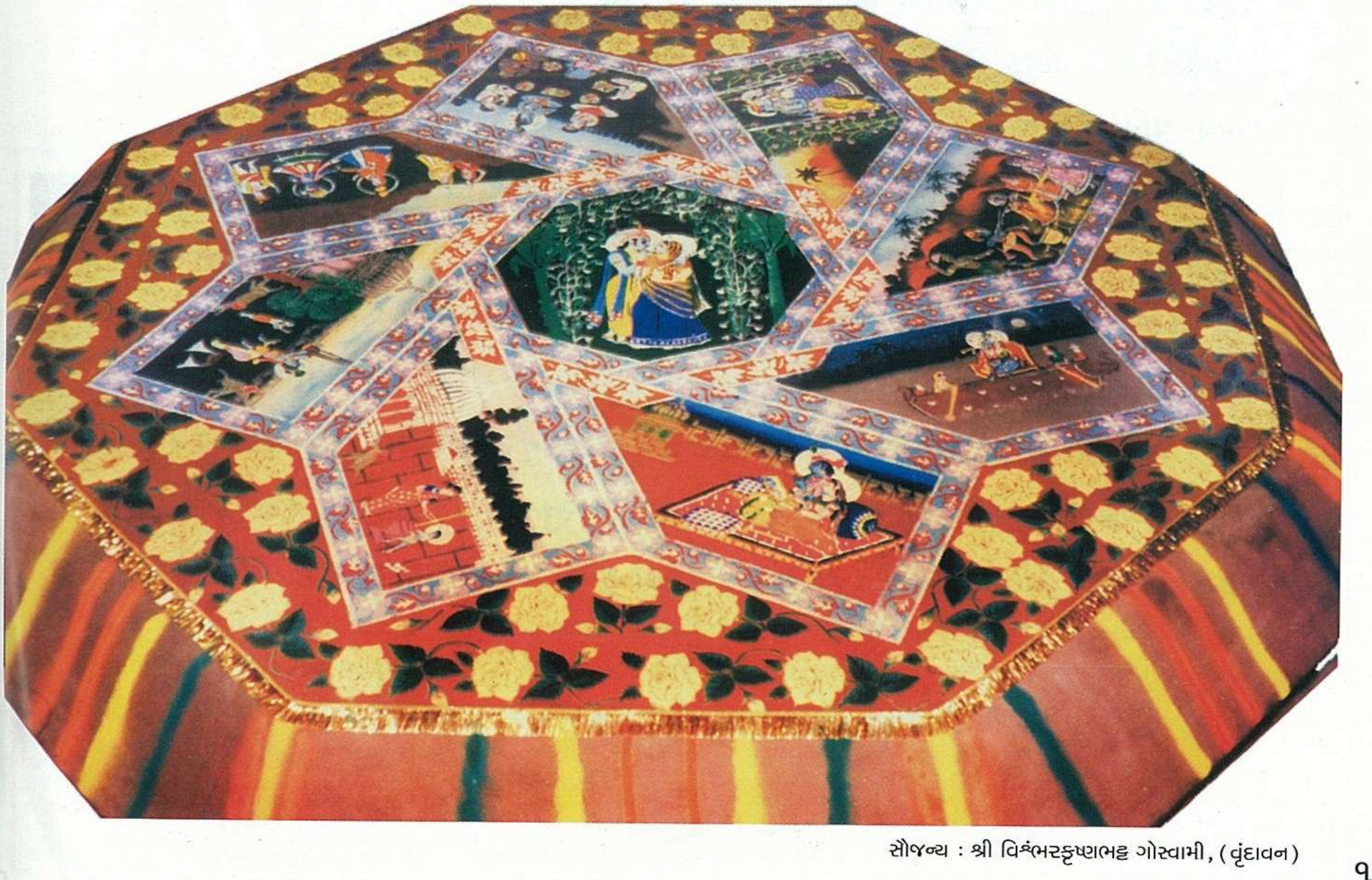

સૌજન્ય : શ્રી વિશ્ંભરકૃષ્ણભટ્ટ ગોસ્વામી, (વૃંદાવન)

॥ શ્રી મદનમોહન પ્રભુઃ વિજયતે ॥

પૂ. પા. ગો. શ્રી વલ્લભરાયજી મહોદય
શ્રી મોટી હવેલી
જામનગર.

દિનાંક : સં. ૨૦૬૫ શ્રાવણ સુદ ૬
તારીખ : ૨૭ / ૭ / ૨૦૦૯

પ. ભ. ગોપાલભાઈ,

'શ્રી પુષ્ટિ કલા સાહિત્ય પ્રકાશન' ભરૂચ દ્વારા પ્રકાશિત થનાર **'સાંઝી ભલી બની આઈ'** નું ભાવનાત્મક પુસ્તક તમારા તરફથી મળેલ છે. જે 'સાંઝી' ના પ્રકારની લીલા–ભાવનાની ઝાંખી કરાવે છે. પુસ્તક અમોએ અવલોકન કરેલ છે. સંપ્રદાયની અનેક કલાઓમાંની એક કલા 'સાંઝીની' જે 'સાંઝી' ના માધ્યમથી તમોએ વિવિધ પ્રકારો પુસ્તકમાં દર્શાવેલ છે. પંદર દિવસની સાંઝીના દિવસોમાં કઈ તિથિએ કઈ લીલાનું આલેખન થાય છે તે માટે તેની વિસ્તૃત સમજણ પુસ્તકમાં આલેખેલી છે. વર્તમાન પેઢી આ કલા વિશે બહુ સમજતી નથી. ત્યારે તમોએ વિવિધ પુસ્તકો – સ્થળો – પ્રાચીન લેખો – ચિત્ર વિ. નું સંકલન કરી માહિતી એકત્ર કરી આ એક પુસ્તકમાં જે 'સાંઝી' વિશે સમજણ આપેલ છે તે માટે તમોને ધન્યવાદ છે. જે ભાવુક વૈષ્ણવો ભાવ–લીલાને સમજવાની ઈંતેજારી દશાર્વે છે તેઓના માટે આ પુસ્તક 'ભાવ–પૂર્તિ' નું બનશે.

અષ્ટસખાની વાણી કે જે વાણી કિર્તનોમાં લીલાભાવ છે તેમાં સંગીત અને તાલના વિવિધ રાગો દર્શાવી ભાવપ્રચૂર કિર્તનો નિર્માણ પામેલ છે. તેમાંની 'સાંઝી'ના પદોનું અર્થ સાથે સુંદર કિર્તનો પદો દર્શાવેલ છે. તેમાના પદો જેવા કે **(૧) દોઉન કી અખિયાં અખિયન માંઝ (૨) ખેલત સાંઝી રંગ રહ્યો . . .** વિગેરે છે.

બીજુ વિશેષ નહીં લખતા તમોએ આ સાંજીના ગૂઢ પ્રકારનું સમજણ આપતું પુસ્તક વૈષ્ણવ સમાજ માટે આલેખેલ છે તે માટે ધન્યવાદને પાત્ર છો. અને તમારા આ સ્તુત્ય પ્રયાસ માટે અમો તમોને અંતઃકરણના આશીર્વાદ પ્રદાન કરીએ છીએ અને આ સુંદર કાર્ય માટે શુભેચ્છા અને શુભકામના પાઠવીએ છીએ.

ગો. વલ્લભ:

ગો. શ્રી વલ્લભરાયજી મહોદયશ્રી

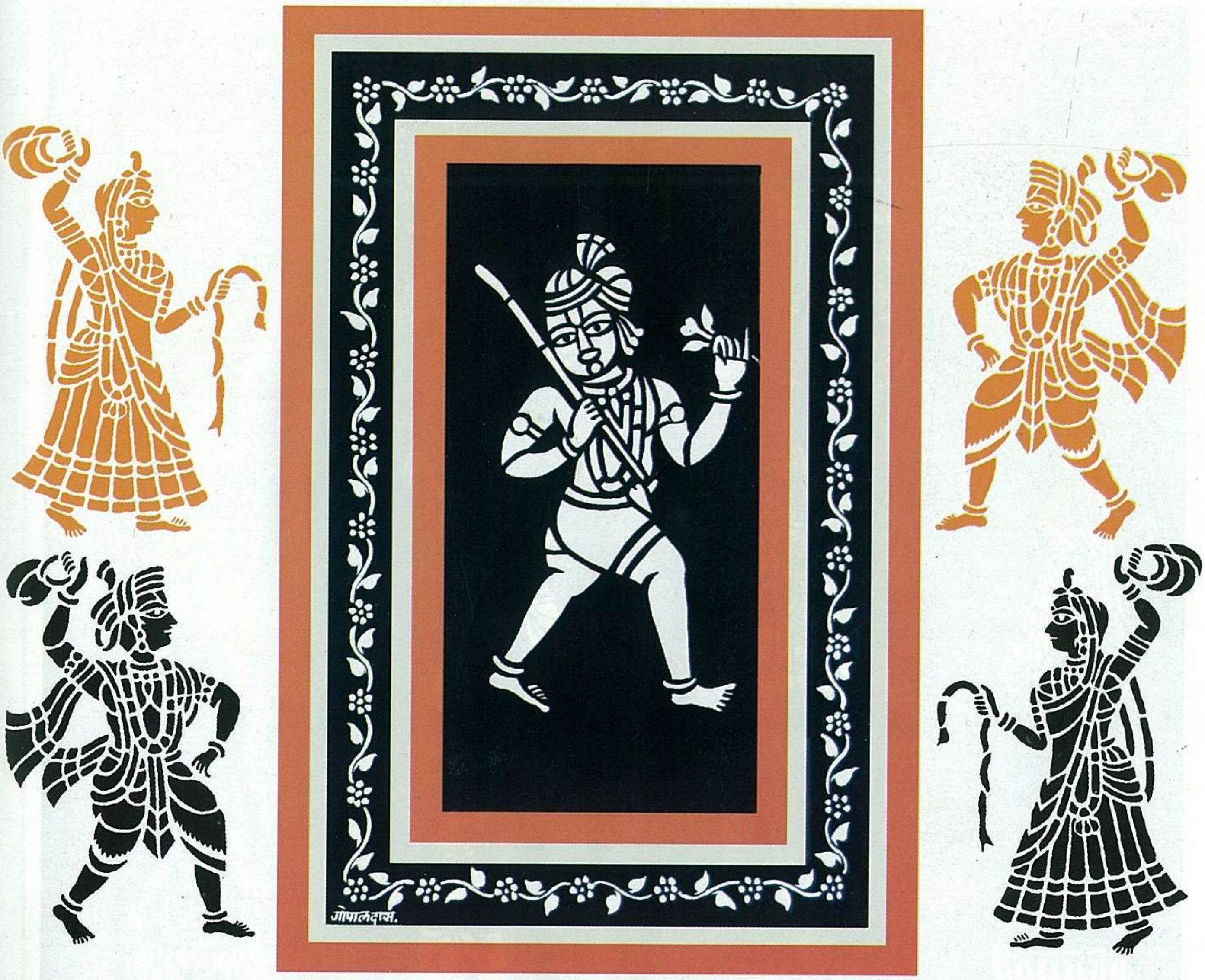

॥ શ્રી હરિઃ ॥

ગો.શ્રી વ્રજભૂષણજી (શ્રી ભૂષણબાવા)
શ્રી દાઉજી બડે મદન મોહનજી હવેલી,
શ્રી વલ્લભાચાર્ય માર્ગ,
મથુરા (ઉ.પ્ર.)
ફોન : ૦૯૪૧૨૨૨૬૨૨૦

સર્વ પ્રથમ તો હું પ. ભ. ગોપાલભાઈને આશીર્વાદ આપું છું અને કહીશ કે તેમના દ્વારા 'સાંઝી' વિષય ઉપર પુસ્તક પ્રકાશિત કરવાનું દૃઢ સંકલ્પ પૂર્ણ થયું છે. હું તેમને હાર્દિક અભિનંદન પાઠવું છું. તમારા પરિશ્રમને કારણે જ પુષ્ટિ માર્ગને એક ઐતિહાસિક પુસ્તકની પ્રાપ્તિ થશે. આ પુસ્તક દ્વારા પુષ્ટિ જીવોને 'સાંઝી'ના વિષય પર વધુ જાણ થશે.

गो० व्रजभूषण

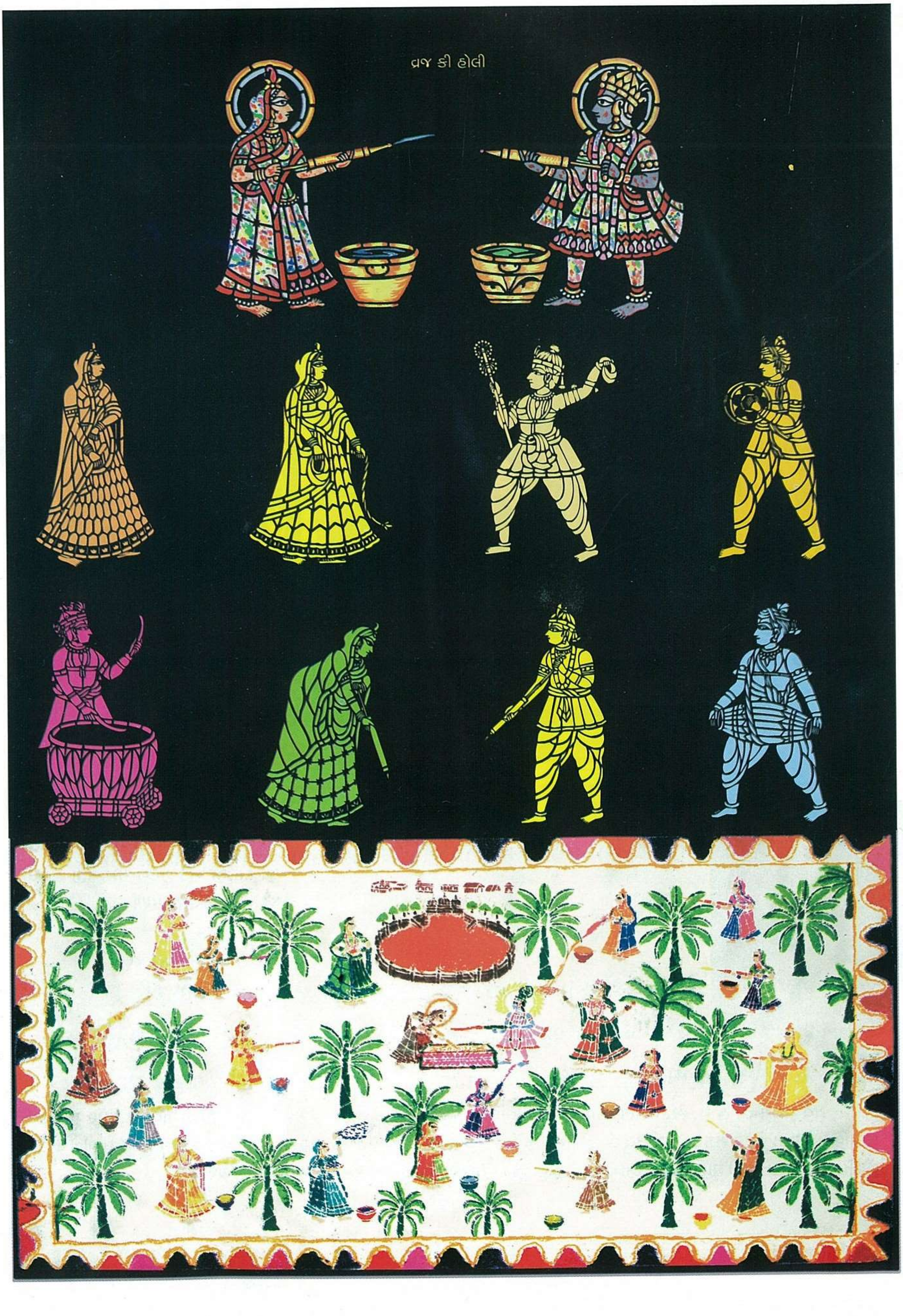

વ્રજ કી હોલી

॥ શ્રી બાલકૃષ્ણો વિજયતેતામ્ ॥ ॥ શ્રી હરિઃ ॥ ॥ શ્રી નાગદમન શ્રીનાથો વિજયેતતામ્ ॥

જગદ્‌ગુરુ શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજી

યુવા વૈષ્ણવાચાર્ય પૂ.પા.ગો. ૧૦૮

શ્રી વ્રજરાજકુમારજી મહોદયશ્રી

(સુરત-વડોદરા)

પુષ્ટિ સંપ્રદાય જેમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન એ સાક્ષાત્ અનેક તળાવનાં સાગર છે. કૃષ્ણ અવતાર વખતે ભગવાને પોતાના અંદરની વિવિધ કલાઓને પ્રગટ કરી વ્રજભક્તોને લાભાંવિત કર્યા હતાં. ત્યારે પુષ્ટિ માર્ગમાં આજે પણ શ્રી ઠાકોરજી હવેલીરૂપી નંદાલયમાં બિરાજી પોતાની અંતરંગ સેવાનો અવસર આપણા સૌને પ્રાપ્ત કરાવે છે. જેમ યશોદાજી નંદરાયજી વ્રજમાં કૃષ્ણની બાળ ભાવે સેવા કરતાં તે જ રીતે આજે પણ આપણી હવેલીઓમાં શ્રી ઠાકોરજીનો, શ્રી વલ્લભાચાર્યજી મહાપ્રભુજીની આડીથી દિવ્ય સેવા ક્રમ નક્કી કરવામાં આવ્યો છે, જેમાં દરેક ક્ષેત્રે કલાનું વિશેષ મહત્ત્વ છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં શૃંગાર, સેવા, સાજ, વસ્ત્રની અદ્‌ભુત કલાનું દર્શન કરી શકાય છે. આ સાથે શ્રી ઠાકોરજીનાં વિવિધ મનોરથો, ઉત્સવો, કીર્તનોના અંદર પણ અનેક વિધકલાઓનું અહીં દર્શન થાય છે. ત્યારે જાણીને ઘણો આનંદ થયો. પ. ભ. શ્રી ગોપાલભાઈ દ્વારા સંકલ્પ લેવાયો છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં જે વિવિધ પ્રકારની સાંજીઓ જે શ્રી ઠાકોરજીની સમક્ષ કરવામાં આવે છે, ખાસ કરીને વિવિધ લીલાઓના ભાવથી આ સાંજીનું વિશેષ મહત્ત્વ છે. પ. ભ. શ્રી ગોપાલભાઈ દ્વારા 'સાંજી ભલી બની આઈ' પુસ્તકનું પ્રકાશન થવા જઈ રહ્યું છે. આ પુસ્તક જિજ્ઞાસુ, વૈષ્ણવો માટે ખૂબ ઉપયોગી રહેશે. જેના અંદર વિશિષ્ટ પ્રકારે ભાવો, મહત્ત્વ, સાંજી કરવાની પદ્ધતિ વગેરે માટેની જાણકારી પ્રાપ્ત થઈ શકશે. અત્યાર સુધી પુષ્ટિ સંપ્રદાયમાં આવું સુંદર અભિગમથી યુક્ત સાંજીનાં સંબંધમાં સુંદર રીતે સંકલિત પુસ્તક પ્રકાશન થયું નથી. ત્યારે આ પ્રસંગે પ. ભ. શ્રી ગોપાલભાઈને અંતર હૃદયથી આર્શીવાદ પાઠવું છું. પ્રભુકૃપાથી સંપ્રદાયના ઉત્કૃષ્ઠ કાર્ય માટે જે એમને મહેનત અને સમય ફાળવ્યો છે, તે અત્યંત પ્રશંસનીય અને અભિનંદનીય છે.

- ગો. શ્રી વ્રજરાજકુમારજી

મુખ્ય કાર્યાલય : શ્રી ગોવર્ધનનાથજી હવેલી, પહેલા માળે, કારેલીબાગ, વડોદરા. ફોન : ૦૨૬૫-૨૪૮૪૮૫૨, ૯૬૬૨૫૪૭૩૭૯

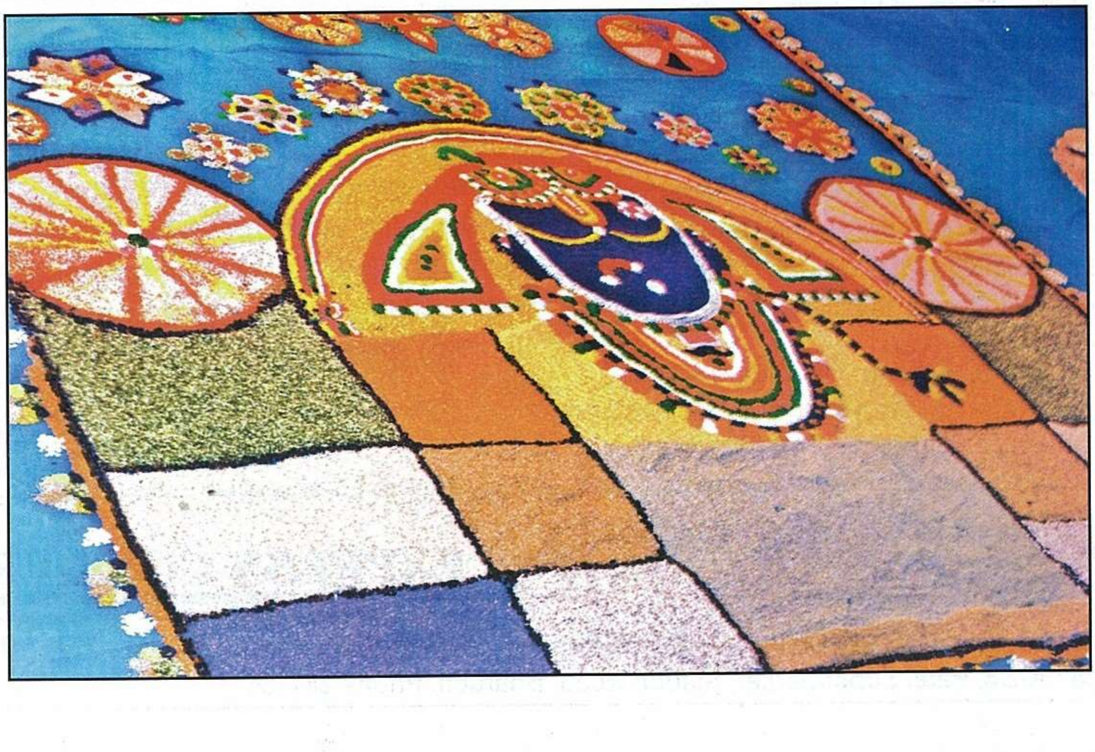

સૌજન્ય : V.Y.O., વડોદરા (વલ્લભ યુથ ઓ.)

કૃપા-સૌભાગ્ય

શ્રી ઠાકોરજીને ત્યાં સર્વસ્વ છે. ચોસઠ કળાઓમાંથી કોઈપણ રીતે કળાનાં ખજાનાની ખોટ નથી. સમસ્ત અપૂર્વ રસરૂપ રીતે ક્ષેમકુશળ છે. પરંતુ એને પ્રાપ્ત કરવું(મેળવવું) જીવોનાં માટે અવશ્ય દુર્લભ છે. પરંતુ પ્રભુની(હરિની) સેવા કરનારાઓ માટે, વૈષ્ણવ કે જેમણે આચાર્ય-બાળક અને ગુરુસેવામાં યત્‌કિંચિત્ પણ વિશ્વાસ કર્યો હોય તો, એ અલભ્ય-અખૂટ ભંડારની ચાવી મેળવવી ખૂબ જ સરળ છે. આ વાત મારા અનુભવમાં પ્રત્યક્ષ છે. જે સમયે આ સાંઝીની ગ્રંથાવલિ પ્રગટ(પ્રસ્તુત) કરવા માટે સંપૂર્ણ ભારતમાં હું ક્યાં ક્યાં ગયો! પરંતુ પછીથી મારા મનમાં ઘણી જ મિઠાશ આવી કે આ બહાને આચાર્ય બાળક, પરમ ભગવદીયજનો, વિદ્વાનોનાં દર્શનનું સૌભાગ્ય મળ્યું, ભલે મને આમાંથી ઘણાંમાંથી મારો સંકલ્પ પરિપૂર્ણ ન થયો. પરંતુ એના દર્શનમાત્રથી, વાર્તાલાપ કરીને જે પુણ્ય-સૌભાગ્ય પ્રાપ્ત થયું, એના બળ ઉપર જે ગોસ્વામી બાળક મને દર્શનીય સ્વરૂપમાં મળ્યા; એમણે ચક્રવાતમાં ફસાયેલી મારી સંકલ્પ નૌકા બરાબર એવી રીતે પાર લગાડી દીધી, જેવી રીતે વિવેકના ચક્રવાતમાં ફસાયેલા-અટવાયેલા ઉદ્ધવને કૃષ્ણએ ગોપીઓ દ્વારા કિનારે લગાડ્યા. બરાબર એ જ પ્રમાણે શ્રી શુદ્ધાદ્વૈત શ્રી વલ્લભ સંપ્રદાય પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવાચાર્ય પૂજ્યપાદ શ્રી - શ્રી ૧૦૮

ગોસ્વામી શ્રી હરિરાયજી બાવાશ્રી (નાથદ્વારા-ઇન્દોર)
ગોસ્વામી શ્રી રવિકુમારજી મહારાજશ્રી
(કાંકરોલી, વડોદરા, મથુરા, ભરૂચ)
ગોસ્વામી શ્રી મધુસૂદનલાલજી મહોદયશ્રી
(શ્રીતિલકબાવા) (અમદાવાદ)
ગોસ્વામી શ્રી નૈમિષકુમારજી મહોદયશ્રી
(સુરત, કાંકરોલી, ભરૂચ, વડોદરા)
ગોસ્વામીશ્રી વલ્લભલાલજી મહોદયશ્રી (જામનગર)
શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી (અમદાવાદ)
શ્રી વિશ્વંભર કૃષ્ણભટ્ટ ગોસ્વામી (વૃંદાવન)

'ભગવદીય'

શ્રી પુલિનકૃષ્ણ ગોસ્વામી ('શ્રી રાધા રમણ મંદિર', વૃંદાવન)
શ્રી વૃંદાવન બિહારી સ્વામીશ્રી ('વૃંદાવન શોધ સંસ્થાન', વૃંદાવન)
પ. ભ. વસંતબેન પરીખ શ્રી હરસાનીજી ('વૈષ્ણવ પરિવાર', મહેસાણા)
પ. ભ. શ્રીકૃષ્ણદાસ અઢીયાજી (દાદાજી) (ચંપારણ્ય)
પ. ભ. સરોજબેન પરીખ (મુંબઈ)
પ. ભ. શ્રી કિશોરભાઈ શાહ (ભરૂચ)

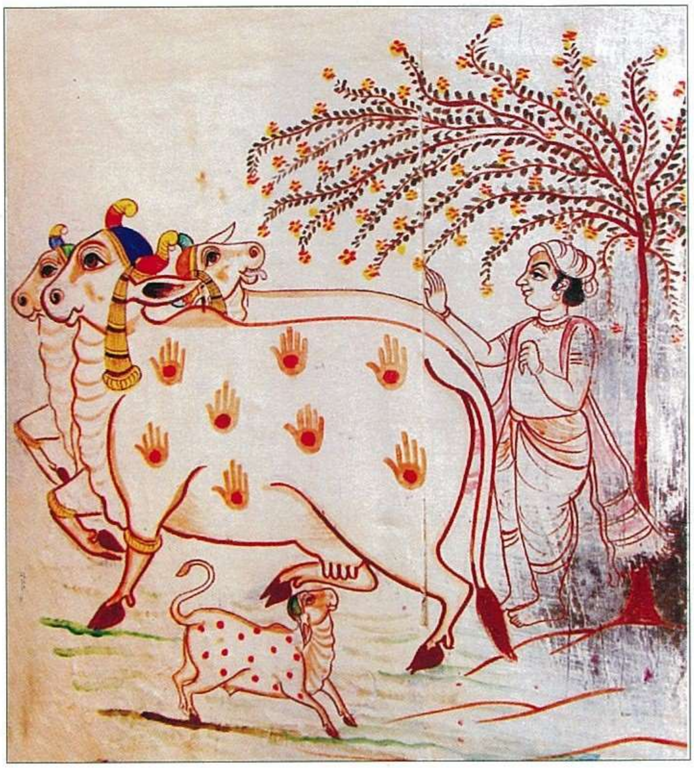

પ. ભ. શ્રી પ્રેમજીભાઈ ('મીડ-વે' એક્સપ્રેસ કુરિયર, ભરૂચ)
પ.ભ. શ્રી ભરતભાઈ શાહ (કાંદીવલી, મુંબઈ)
શ્રી ધનજંયભાઈ શેઠ (શ્રીજી મંદિર, ભરૂચ)
ડૉ. વિનોદભાઈ પુરાણી ('ભારતીય તત્ત્વજ્ઞાન મંદિર', મોડાસા)
શ્રી સંજયભાઈ સોની (એસ. એસ. રંગોલી આર્ટ, મથુરા)
શ્રી ભાનુ શાહ (ચિત્રકાર) અમદાવાદ
શ્રી જોરાવરસિંહ જાધવ ('લોકકલા વિશારદ), અમદાવાદ
શ્રી વાસુદેવ સ્માર્ત / શ્રી જગદીપ સ્માર્ત (ચિત્રકાર) સુરત
પ.ભ. શ્રી ઘનશ્યામભાઈ કાપડીયા (મુંબઈ)
શ્રી સુનીલભાઈ / શ્રી હિતેશભાઈ ('લવલી પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ' સુરત)
શ્રી કાર્તિકભાઈ / શ્રી હાર્દિકભાઈ (વાત્સલ્ય ડિજીટલ સ્ટુડિયો, ભરૂચ)

જેમણે મારી સંકલ્પ નૈયાને કિનારે લાવીને ઊભી કરી. એમને મળીને મને આ નિર્ણય લેવામાં આજે પણ અવરોધ નડી રહ્યો છે, તકલીફ પડી રહી છે. આટલાં વિકટ કાર્યને સફળતા મળવામાં મારા હાથ ઉપરાંત બાળકોનાં સ્વરૂપમાં શ્રી વલ્લભે જ મારો હાથ પકડ્યો હતો અથવા સાક્ષાત્ શ્રી હરિએ જ મારો હાથ પકડ્યો હતો. પરંતુ એમણે જ મને હાથ પકડીને જ કિનારે આણ્યો. ઉપરોક્ત ભગવદીય અને બાળકો માટે હું ભાવવિભોર થઈને મારું હૃદય અને પ્રેમાળ જ એમનાં ચરણોમાં મૂકી શકું છું. સમર્પિત થઈ રહ્યો છું.

અંતે, એટલું જ કહીશ કે, 'હું કોઈપણ રીતે એમને લાયક નથી.'

❧

- વિનમ્ર

Mid Way EXPRESS COURIER
Head Office : 26, Unique Trade Center, Opp. P.M. Regency, Sayagi Ganj, Baroda. Phone : 2225741, 22251101
Regd Office : A-2/8, Patel Supermarket, Station Road, Bharuch. Phone 244138

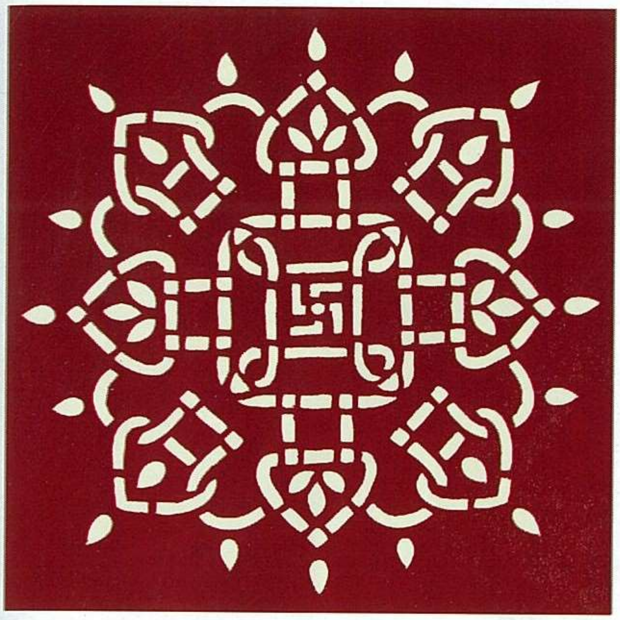

आमुख

वन्दे व्रज वसुन्धराम्।

भरूच वारे परम स्नेही श्री गोपालदासभाई सूँ हमकूँ कोई शुभ दिन प्रभूनने मिलायो। जब उनने, मोकूँ अपनों आशय बतायो के ''साँझी विषय'' लेके प्रकाशन कछु करनो है। स्वयं अनुग्रह मार्ग जाको अधिष्ठाता होय वहां जीवको विचार निर्मूल है। तोहू श्री हरि की लीला जो मोकूँ प्राचीन और पूर्ववर्ती विद्वान भगवदीय आचार्य स्वरूप बालक, सम्प्रदाय ग्रंथन सूँ जेसो जो मिले वह या ग्रंथमें समाधान कियो है। आज ज्ञान भयो कब की कृपा कब काम आई। मेरे दीक्षागुरु प्रथम पीठाधीश्वर श्री रणछोडरायजी महाराज (श्री प्रथमेशजी), चतुः सम्प्रदाय चक्रवर्ती श्री आचार्य चक्रधरजी गेरोला, सम्प्रदाय मर्मज्ञ श्री गोपीवल्लभजी औदीच्य गहन विचार विमर्शी मेरे पूज्य पिताश्री गोपाल प्रसादजी उपमन्यु, प. भ. श्री ग्वालदासजी मूंघडा और हू भगवदीय हें जिनने मौपे कृपा करी।इन उपरोक्तन की वरद छाया में जो शीतलता मिली सो सांझी के मिस गोपालभाई ''भरूच'' वारेन कूं सोंपी है। भूलचूक स्वाभाविक है। ताको में ही निमित्त हूं। पाठकगण और आप भगवदीय तो सुधार कैं ही बाँचेगे। सो हमें विश्वास है जो श्री महाप्रभुजी और श्री गुँसाइजी के मारग की रीत एसी ही है। छपवे के बाद ग्रंथ जिनकूँ सोंपौ जाये, सो ज्यादा अपने आप हे जायगो। मेरे ज्यादा लिखे सूँ कछु नाँय होनो।

श्री वल्लभ की रीत श्री वल्लभ के भगवदीयन कूँ समर्पित करुँ हूँ।

अपने साम्प्रदायिक भगवदीयन को दर्शनाभिलाषी

पं. रमेश उपमन्यु

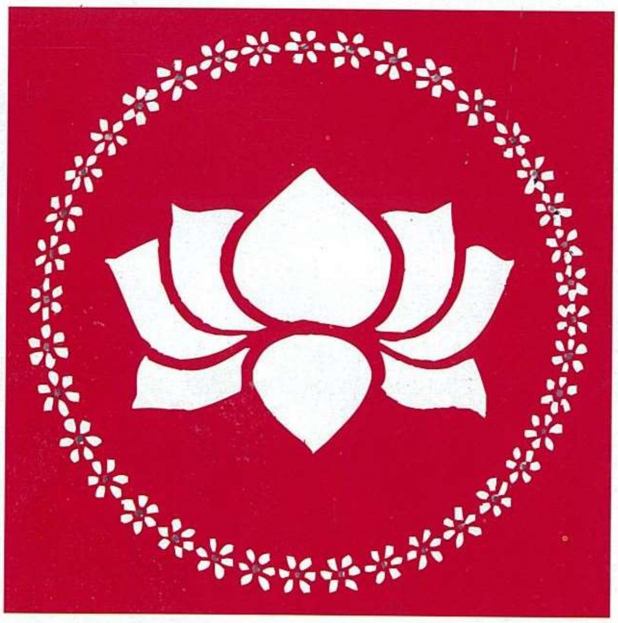

॥ श्री हरि ॥

જો દેખ્યો સો છાપ્યો

દ્વારે ટકોરા પડ્યા, દ્વાર ખોલી આવનારનું સ્વાગત કર્યું. યથાશક્તિ સન્માન્યા. તેઓની આજ્ઞાનું પાલન કર્યું. આપ પ્રસન્ન થયા. આપની પ્રસન્નતાની મહેંક સર્વત્ર વ્યાપી રહી.

હૃદયના દ્વારે ''સાંઝી''નું સ્મરણ વારંવાર થવું, દ્વાર ખોલ્યા અને 'સાંઝી'ની સન્મુખ થયો. ચિત્તની દોરીએ બંધાયેલા તોરણ, વલ્લભી સંગ રંગની લાલીનો આંગણે સાથીઓ. આપ 'સાંઝી'નું સ્વાગત કર્યું. આપ પ્રસન્ન થયા. આપની ઓળખ, આપના સ્વરૂપનું દર્શન કોણ કરાવે ?

આપને (સાંઝીને) મારા હૃદયમાં પધરાવીને પૂ. ગોસ્વામી બાળકો અને શ્રી વલ્લભના લાડીલા ભગવદીયો પાસે પધરાવીને લઈ ગયો. જ્યાં ગયો ત્યાં આપના સ્વરૂપનું ગુણગાન વિધવિધ રીતે થતું હતું. બેથી ત્રણ વર્ષ સુધી આપ 'સાંઝી' શ્રી વલ્લભની સૃષ્ટિ સાથેનો સંબંધ જોઈને અમારા ભરૂચના પ. ભ. ડૉ. શ્રી પિયૂષભાઈએ કહ્યું, ''સાંઝી ભલી બની આઈ.''

જતીપુરા નિવાસી પ. ભ. શ્રી રમેશજી ઉપમન્યુ દ્વારા કૃપાવર્ષાની હેલી શ્રીવલ્લભે વર્ષાવી. જેમનો સંગ અસ્મરણીય રહેશે.

આપણા સૌના શ્રી વલ્લભની કૃપાથી જ 'સાંઝી' સ્વરૂપની ઝાંખીનું અવલોકન છે. જીવ માત્ર અભિલાષી છે. પ્રગટ થવું એ શ્રી પ્રભુની ઇચ્છાની વાત છે. આપણે નિમિત્ત બનીએ છીએ. 'સાંઝી'ના સ્વરૂપનું દર્શન કરાવનાર સર્વ શ્રી વલ્લભકુળ અને શ્રી વલ્લભના કૃપાપાત્ર મારા વ્હાલા ભગવદીયોને મારા ભગવદ્ સ્મરણ સાથે દંડવત્ પ્રણામ.

- દાસાનુદાસ 'ગોપાલદાસ'

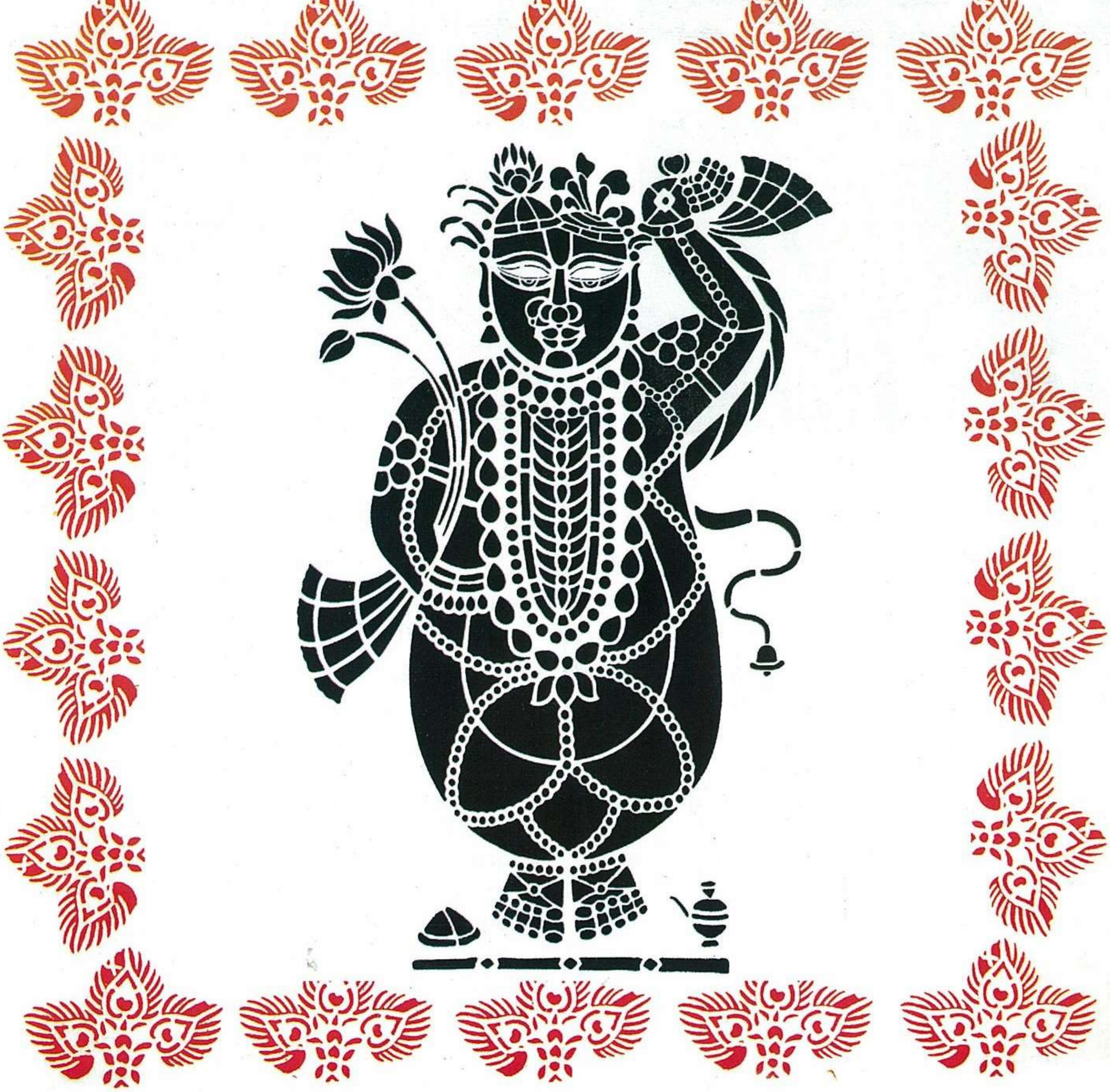

પાક્ કથન

શ્રુતિ વાકચ છે, ‘આનંદસ્ય હરેર લીલા‘

વ્રજમાં આનંદરૂપ શ્રીહરિજ લીલા બનીને વિરાજે છે, જેવી રીતે શ્રી યમુનાજી સાક્ષાત્ કૃષ્ણ સ્વરૂપ છે, એવી રીતે ગિરિરાજ પર્વત, વન અને ઉપવન, નદી અને સરોવર, વેણુજી અને વૃક્ષ, કૃષ્ણકથા, સેવા સાક્ષાત્ કૃષ્ણ સ્વરૂપ છે. બાળલીલા, પોઘંડ, કિશોરલીલા, રાસલીલા, માખણચોરી, ગોચારણ, સાંઝી અને બીજું પણ કાંઈક છે. આ લીલા પુરૂષોત્તમના વિવિધ સ્વરૂપ છે. જેમ કે ગોપીગીત, ‘તવકથામૃતમ્’ આ શ્લોકની સુબોધિનીજીમાં મહાપ્રભુજીએ કથા અને કૃષ્ણ સ્વરૂપની એકરૂપતા સાબિત કરી. એ જ પ્રકારે સાંઝી ચિતરવી અને કૃષ્ણના શૃંગાર કરવા, બેઉમાં કોઈ અંતર નથી. ❀

સાંઝી ચતુર સુજાનકી

‘‘ગોપ સોચ રહે હૈ કિ સાંઝી ચતુર સુજાન શ્રી કૃષ્ણને બનાયી હૈ।’’
‘‘ગોપી સોચ રહી હૈ કિ સાંઝી ચતુર સુજાન શ્રી રાધાજીને બનાયી હૈ।’’
એકાત્મક રૂપ હોતે હુએ ભી ભિન્ન રૂપ સે સાંઝી રચ રહે હૈ ।
સુજાન હી જાને કિ યે સાંઝી કિસને રચી ।
અતિ પ્રવીણ સુજાન શ્રી લલિતાજી હી જાને ।
પ્રથમ સાંઝી શ્રી રાધાજીકો સમર્પિત.
‘‘સાંઝીકે માધ્યમ સે મિલન ।’’
યહ ભેદ વો હી જાને, જો પ્રભુ કે (યુગલ સ્વરૂપકે) અંતર્ગત હૈ ।
‘‘એક પ્રાણ દો શરીર ।’’
‘‘યુગલ સરકારને એક હોકર સાંઝી બનાઈ।’’

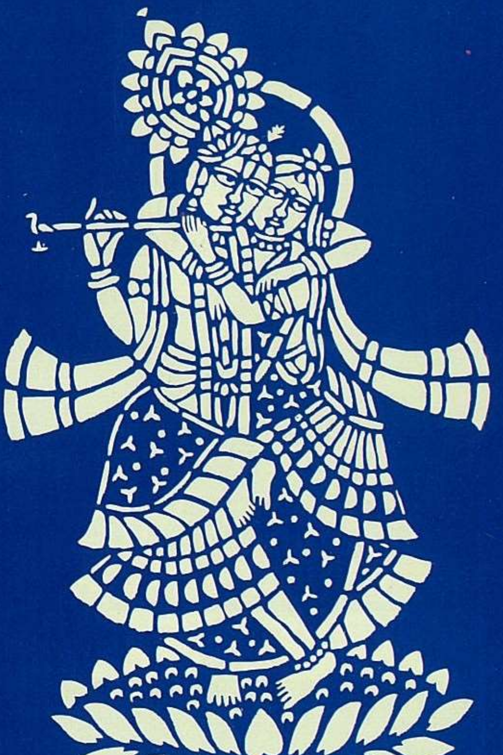

વિષય-સુચિ

પ્રાતઃસ્મરણ આર્શીવચન - કૃપા સૌભાગ્ય - આમુખ - પાક્ કથન ૧-૨૩

પહેલુ તરંગ અથગુરુકે નેત્ર કો વર્ણન - આચાર્યશ્રી મહાપ્રભુજીની જગત પર કૃપા દૃષ્ટી સાંઝી દ્વારા - દાન / સાંઝી - સાંઝી ''સો વો જાને, યા મૈ જાનું'' - સાંઝી - સજાવટ - પ્રગટ - સાંઝી - સાંઝીમાં વ્રજભક્તોના મનોરથ - રાસ કે સંબંધ મેં સાંઝી - લીલા પ્રેમ કી સાંઝી - સાંઝી નિકુંજ લીલાનું પ્રકરણ છે - સાંઝી - મર્યાદા - વ્યાપિ વૈકુંઠ - દેવલોકની સાંઝી - વૈકુંઠ લીલામાં સાંઝી - સ્વર્ગમાં સાંઝી - શ્રદ્ધા - શ્રાધ્ધ - શ્રાધ્ધના દિવસોમાં સાંઝી - પુષ્ટિ માર્ગમાં શ્રાધ્ધ - પુષ્ટિ માર્ગમાં - સાંઝી - સાંઝીનો આશ્રય - ગોપીકાઓં કા ચિત્ર સાંઝી મેં - સાંઝી અને વ્રજભક્તોનો વિરહતાપ - વિરહ સે સુખી હુઈ ગોપીઆ - સાંઝી - પરંપરા- પુષ્ટિ માર્ગની પરંપરા - સાંઝી સેવા - સાંઝી ભલી બની આઈ - વ્રજના લોક ઉત્સવ - સાત કુંવરના સાતે ઘરમાં લીલાઓ - સાંઝીમાં દ્રષ્ટિ ભાવનાનું સિંચન નવ સ્વરૂપો દ્વારા - સાંઝીની સેવામાં - વહુજી બેટીજી - પુષ્ટિ સંમ્પ્રદાયમાં - સાંઝીની રચના - શ્રી વલ્લભકુળના વહુજી - બેટીજી દ્વારા સાંઝી - આરતી - એક દરવાજો સાંઝી - કૃષ્ણપ્રેમ ૨૪-૬૬

બીજુ તરંગ સ્થલ-ચિત્ર - સાંઝી - સાંઝીના પ્રકાર - ચોકી ઉપર બનતી સાંઝી - રીતની સાંઝી - ભૂમિ - ચોક ઉપર બનતી સાંઝી - પ્રીતની સાંઝી - ગોબરની સાંઝી - ગોબરની સાંઝીમાં કોડી અને ફૂલનો શૃંગાર - ફૂલોની સાંઝીનું પ્રાગટ્ય - ફૂલોની સાંઝી પ્રિયા - પ્રીતમની એક ભાષા છે - મોહન બાગમાં સાંઝીના ફૂલ - ફૂલ ગોપીજનોના મનનું સ્વરૂપ છે - ફૂલોની સાંઝી તૈયાર કરવાની રીત - સાંઝી લીલામાં પ્રભુને છડી / ગેંદ - કેવળ સાંઝીમાં પ્રભુ સન્મુખ થતાં ફૂલો - ફૂલનો સંબંધ (ચરણામૃત) - ફૂલનો સંબંધ (વારૂણી) - ફૂલનો સંબંધ (અત્તર-સુગંધી) - સાંઝી જળની ઉપર - સાંઝી જળની અંદર - 'જલસાંઝી' મંદિર - જલ સાંઝી - મહાભારતમાં - કેળનાં પાનની સાંઝી - કેળની સાંઝી : શ્રીનાથજીમાં પૂનમથી અમાસ સુધી (ચિત્ર) - કોટની સાંઝી - ફળોની સાંઝી - લીલા મેવાની સાંઝી- સૂકા મેવાની સાંઝી લીલો મેવો ભાવના - સાંઝી - અનાજની - તેજાનાની સાંઝી - સાંઝી આવિર્ભાવ / તિરોભાવ - સાંઝીમાં સામગ્રીનો વિનિયોગ - સુકા રંગોની સાંઝીનો ભાવપક્ષ ભાદરવા ૧૫ થી અમાસની સાંઝી (ચિત્રો) - સાંઝીમાં નિત્યની આરતી. ૬૭-૧૧૫

ત્રીજુ તરંગ રંગની સાંઝી તૈયાર કરવાની સાધન સામગ્રી - ચસની સાંઝી - 'વ્રજમંડળ'માં સાંઝી : રંગોકી રોશની - ૨૦મી સદીના સાંઝી કલાના - માહિર ભક્તજન - સાંઝી લીલા દ્વારા અનુભવાયેલ ભાવદર્શન - સાંઝી બીબા અને મથુરા ૧૧૬-૧૨૬

ચોથુ તરંગ વ્રજપરીક્રમાના હસ્ત લિખિત ગ્રંથમાં સાંઝીનું વર્ણન - સાંઝી રુપ ભક્તિના માધ્યમથી - રાગોમાં રંગ ફૂલ અને ફૂલોના રંગ સાંઝીમાં અલૌકિક છે. - પુષ્ટિ માર્ગ મેં સાંઝી કે વીના નાહીં - શ્રીનાથજીમાં સાંઝી રાસલીલા, શ્રીનાથજીનો મુકુટ - રાસલીલાના જીવ - શ્રી સાંઝી લીલા - સાંઝ, સખી વેશ - વ્રજપરિક્રમા સાંઝી - લીલા - વ્રજ - વનિતા - વ્રજયાત્રા - વ્રજ પરિક્રમા સાથે સાંઝીનો સંબંધ -અતી અલૌકિક અદ્‌ભૂત સાંઝી - મોહન મહલ - કોટની સાંઝી ૧૨૭-૧૫૯

પાંચમુ તરંગ પુષ્ટિ માર્ગની ઝલક - જે કલામાં પ્રભુની દ્રષ્ટિ છે. - સાંઝી 'સત્સંગ'માં - પુષ્ટિ માર્ગની સાંઝી કલા - હમે ઉત્સવ ક્યોં મનાના ચાહિએ - બિટોરા - ગોબર સાંઝીની યાદ - ભારત વર્ષની પાચીન સાંઝી - સાંઝી પૃથ્વી પરિક્રમા - ભક્તિ કાવ્ય મેં સાંઝી કા કથન - ''રાજસ્થાન'' સાઁઝી સંસ્થા કે બારે મેં સામાન્ય જાનકારી -સાંજી (સાંઝી) ગુજરાતી વિશ્વકોષમાં ૧૬૦-૧૯૩

છઠ્ઠુ તરંગ સાંઝી ચિત્ર મિલાન - સાંઝીના પદ - કોટની આરતીના પદ - ચૌસઠ કલા - શ્રી વલ્લભ દ્વારા પુષ્ટિ સેવામાં ગુણ નિધાન શ્રીકૃષ્ણ સર્વસ્વ ૧૯૪-૨૩૯

અનુગ્રહમાં હેતુ........ ૨૪૦......

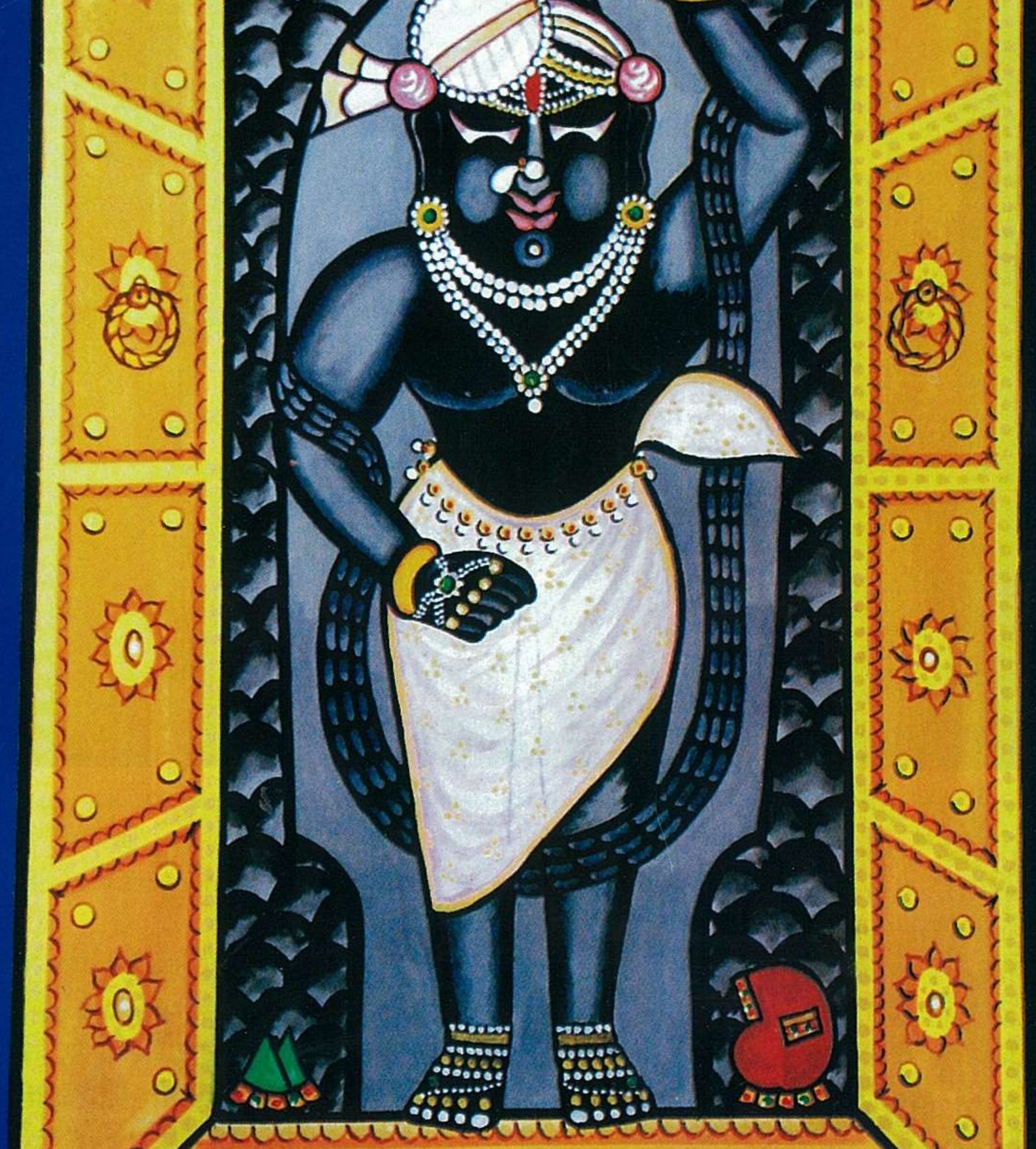

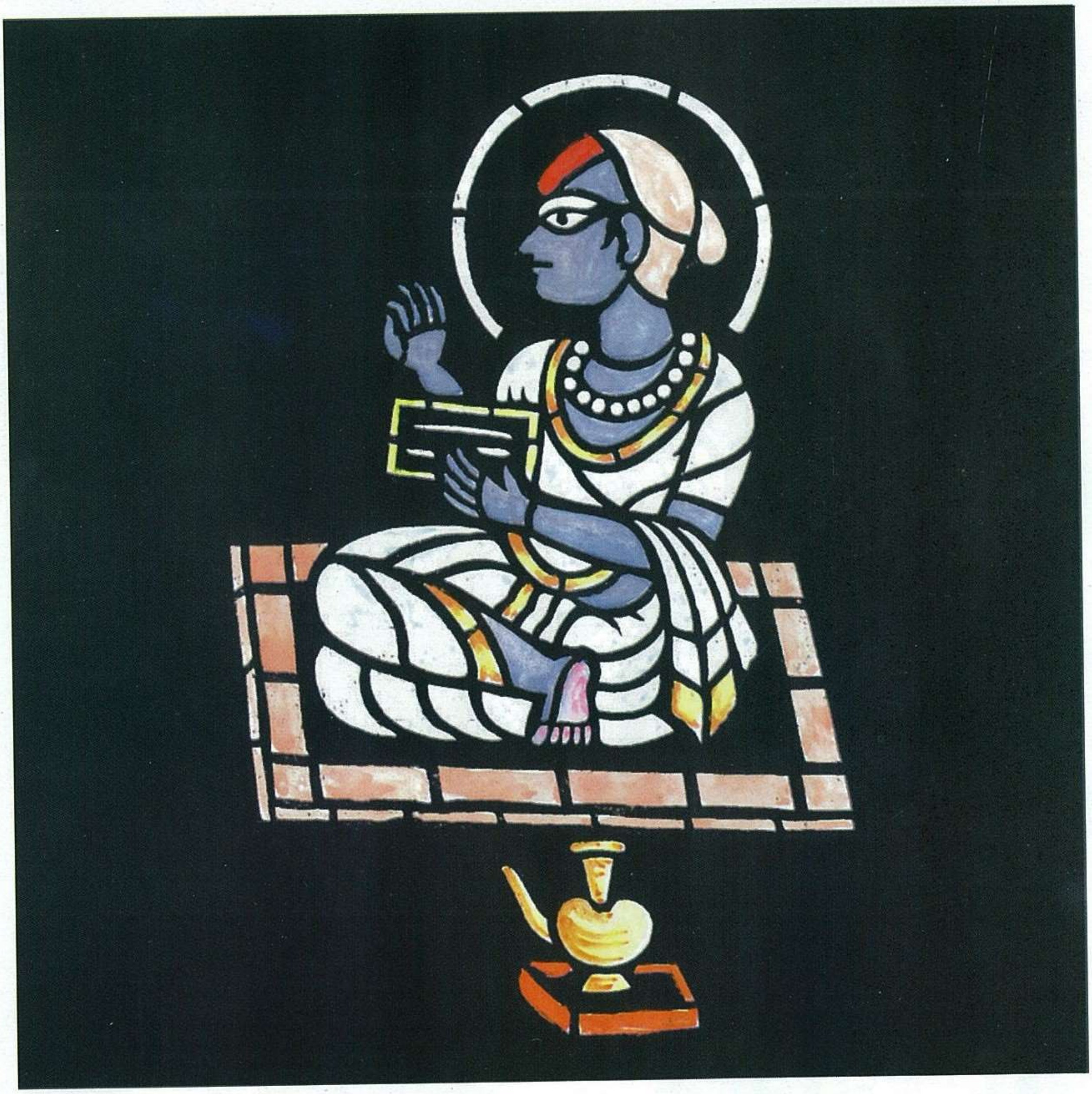

॥ अथ गुरुके नेत्र को वर्णन ॥

व्रजमंडलगुरुनैनमे, श्यामरंगव्रजवाल ।
प्रेमनीर जमुनाभरी, मध्यबिन्दुनंदलाल ।।१ ।।
स्वेतस्वेत व्रजरजलगी, अरुणचरणकी धूर ।
व्रजभूखन गिरवर लखो, सो है बरौनीमूर ।।२ ।।

વ્રજને કમલના આકાર રૂપ કહ્યો છે અને નયનને પણ કમલની ઉપમા આપી છે. શ્યામના રંગમાં વ્રજબાલા રંગાઈ છે, અર્થાત્ નેત્ર રૂપી વ્રજમાં જે શ્યામલતા છે, જે માનો કે વ્રજભક્તો મંડલ છે. વ્રજમાં શ્રી જમુનાજી છે, જે માનો કે નેત્રમાં પ્રેમનું જલ છે, જે જમુનાજીનો ભાવ છે. શ્યામ મંડલ (કાજલ જેવો ગોળાકાર)ની વચમાં એક ટપકું (બિન્દુ) છે, જે સ્વયં નંદલાલ છે. શ્યામ મંડલની ચારે બાજુ આંખમાં જે સફેદી છે તે વ્રજની રજ છે.

જેની બન્ને કિનારી પાસે જે લાલ રંગના દોરા છે, જે માનો કે શ્રી ઠાકોરજીના ચરણની લાલી (કુમકુમ) લાગેલી છે અને બરૌનીની જડ (પલકની ઉપરના કેશની જડ 'મૂળ') જ્યાં કાજળની શોભા લગાવો છે તે જ મનોગિરિરાજજી છે.

ભાવ : સાંઝી ભગવદ્‌લીલા મેં ગુપ્ત રસકા (અપ્રગટ રસકા) એક અંગ હૈ. યદી બાહર કે નેત્રોં સે દેખેંગે તો યહ એક સાધારણ ખેલ હી નજર મેં આયેગા. યદી ઇસમેં લીલા પ્રકરણ દેખના હો તો ગુરુકે નેત્રો કી આભા-છાયા-ઔર ઝલક સમઝની હોગી. તો હી યહી ખેલ સામાન્ય ન હોકર કે દિવ્ય ઔર અલૌકિક દિખાઈ દેગા. ઉસકે લિયે ઇન્હીં ભાવુક મહાનુભાવકા યહ ભાવભરા દોહા હમારે લિયે પૂર્ણ સહાયક હોગા. યહ દિવ્ય દૃષ્ટિદાન કરને મેં પરિપૂર્ણ સામર્થ્યવાન હૈ.

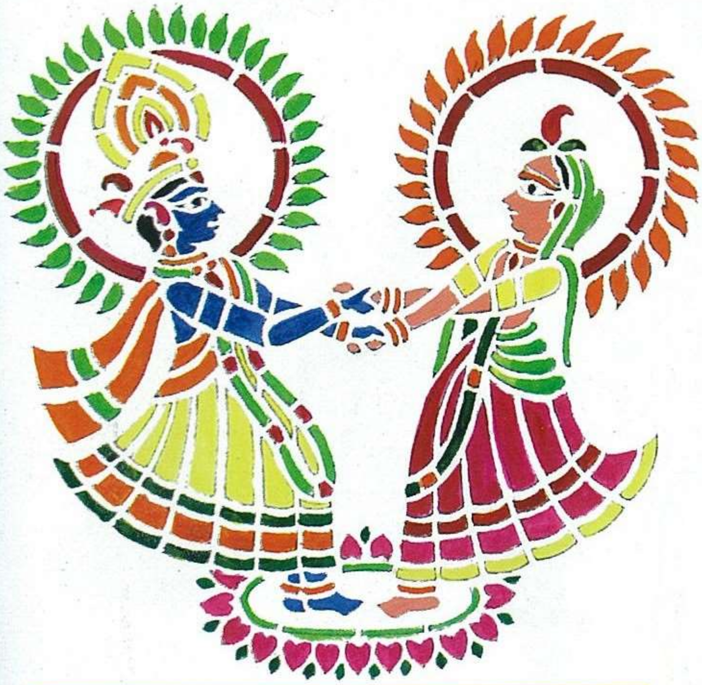

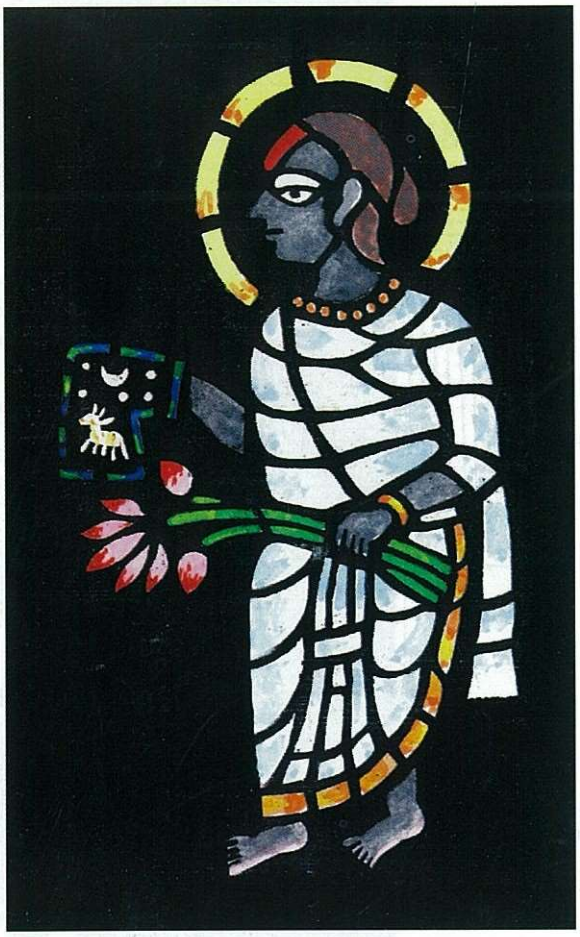

ધર્મની કલા :

કોઈ અંશ પ્રભુ તરફના રસ્તાનું જોડાણ કરાવે છે.
તે કલા ધર્મ છે સાંઝી કલા એક કલા ધર્મ છે.

આચાર્ય શ્રી મહાપ્રભુજીની જગત પર કૃપાદૃષ્ટિ - સાંઝી દ્વારા :

વ્રજમાં પારંપારિક રીત અનુસાર સાંઝી ગોબરની બનતી. ૫૦૦ વર્ષ પૂર્વે વૈષ્ણવાચાર્ય શ્રી મહાપ્રભુ વલ્લભાચાર્યજીએ પુષ્ટિ માર્ગ (સ્થાપના કરી) પ્રગટાવ્યો. શ્રી નાથજીના પ્રાગટ્ય પછી આપ શ્રી દ્વારા ''જય ગોપાલ''ના ઉચ્ચ ધ્વનિથી જય ઘોષણા થઈ. સર્વે વૈષ્ણવ જગત અને કૃષ્ણપ્રેમમાં વિહ્વળ જીવોનો પ્રવાહ, સમગ્ર ભારતવર્ષમાંથી વ્રજ તરફ આકર્ષાયો. સાથે લાવ્યા પોતાની લોકકલા, પરંપરાથી ચાલી આવતી સંસ્કૃતિ. જે લોકકલા સંસ્કૃતિને આપ શ્રીએ શ્રી ઠાકોરજીની સેવામાં વિધિવત્ વણી લીધી.

વૃદ્ધ વૈષ્ણવ ભક્તો દ્વારા જાણવા મળ્યું કે આજથી ૨૦૦ વર્ષ પૂર્વે સમ્પ્રદાયનો સૂર્ય મધ્ય આસમાને તપતો હતો. સમય જતાં પરિવર્તનની હવાથી શ્રી ઠાકોરજીના આનંદ - પ્રસન્નતામાં વધારો કરનાર, જનજીવનને પ્રભુના બંધનમાં બાંધી રાખનાર આપણી આ લલિતકલા સંસ્કૃતિ આપણાથી દૂર થઈ ગઈ, અથવા આપણે તેને ભૂલી ગયા. પરંતુ પ્રભુએ રચેલી રચના કોઈ પણ સમયે ઝાંખી પડતી નથી અથવા ખોવાઈ જતી નથી.

'વ્રજકે ઉત્સવ, ત્યૌહાર ઔર મેલે' (સાહિત્ય સંસ્થાન, મથુરા અને વૃંદાવન શોધ સંસ્થાન તરફથી (૪૦ વર્ષ પહેલાં) પ્રગટ થયેલ) ગ્રંથમાં લખ્યું હતું કે સાંઝી કલા વ્રજમાંથી ૫૦ વર્ષથી લુપ્ત થઈ રહી છે. આજે (૧૦૦ વર્ષથી) જગતભરમાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાયની હવેલીઓનો આંક ૩૦૦૦ ને સ્પર્શવા જઈ રહ્યો છે, જ્યાં વૈષ્ણવના હૃદયમાં ભક્તિનું સિંચન થાય છે. વૈષ્ણવ પરિવાર કરોડોમાં છે. ત્યારે શ્રી મહાપ્રભુજીએ પ્રગટ કરેલ સેવા માર્ગની પ્રણાલિકાનું વિશિષ્ટ સાંઝી છે. અંગ, શ્રીજીની સેવામાં વિનિયોગ થતી અવનવી શ્રી ઠાકોરજીની ૬૪ કલાઓ મુખ્ય છે. આ ચૌસઠ કલાઓનું એક મુખ્ય અંગ સાંઝી છે. ૫૦%ને સાંઝી શું છે? તેની ખબર નથી. સાંઝી પૂરવાની વિધિવત્ માહિતી વૈષ્ણવજગતમાં ૪૦%થી ૪૫%ને નથી. (જેમાં અમો પણ સામેલ છીએ). બાકી રહેલા ૫% વલ્લભી સૃષ્ટિના મહાનુભાવી પરમ પૂજ્ય ગોસ્વામી શ્રી વલ્લભકુળનાં બાળકો અને આપના પરમ ભગવદીયો પાસે આ સાંઝી કલા સેવાની મોટા ભાગની જાણકારી (માહિતી) ભંડારાયેલી છે. જરૂરત છે આ સાંઝી સેવાને મહાનુભાવો પાસેથી કૃપા નમ્રતાથી મેળવી પ્રકાશમાં લાવવાની, અને વલ્લભી વૈષ્ણવ પરિવારે પુષ્ટિ કલા સંસ્કૃતિના આપણા વારસાને આપણી નિત્ય સેવા ક્રમની સાથે ભાવથી જોડવાની.

આપણી સંસ્કૃતિમાં વ્રજની એક લોકકલા સાંઝી છે. જે સાંઝી કલામાં સંપૂર્ણ ભારતવર્ષની લલિત કલાઓનો સમન્વય થયો છે. જેમાં મુખ્ય દક્ષિણ ભારતની પરંપરા કોલમ(રંગોળી) કલાનો વ્રજ સાંઝી સાથેનો મેળાપ, જે સાંઝી કલામાં બાકીના પ્રદેશોનો પણ મહત્ત્વનો ફાળો જોડાયેલો છે. શ્રી વલ્લભાચાર્યજી અને આપનો પરિવાર, દક્ષિણ ભારતના તૈલંગ બ્રાહ્મણ હોઈ, ત્યાંની પરંપરા (કોલમ કલા) વ્રજ સાંઝીમાં મુખ્ય આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની, વ્રજ કલા સંસ્કૃતિમાં વિશેષ પ્રભાવ સાથે પ્રભુસેવામાં કોલમ સાંઝી જોડાઈ ગઈ.

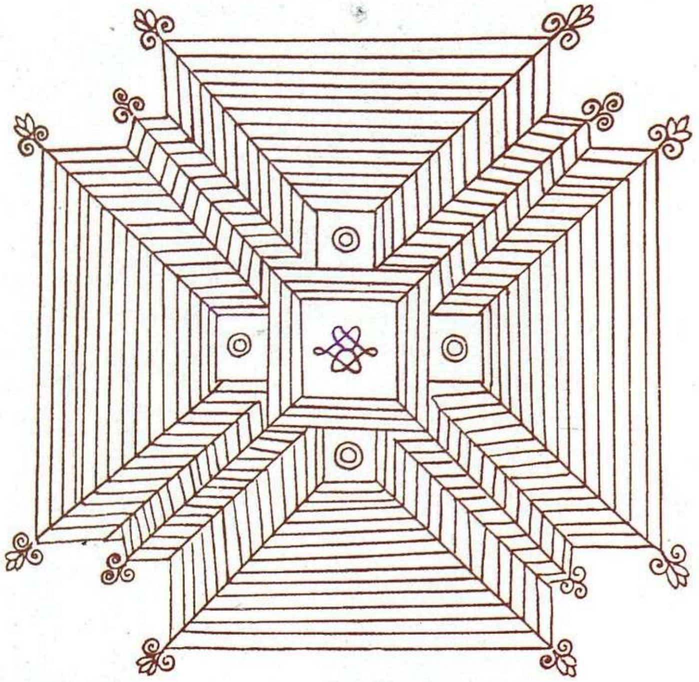

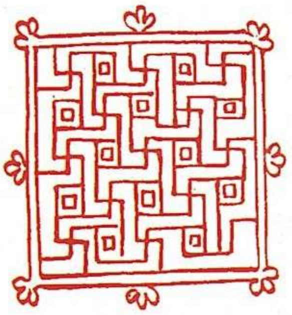

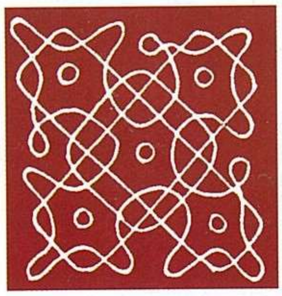

સાંઝી (કોલમ)ની રચના દ્વાર પાસે (ઘરની બહાર, ઊમરા પાસે) કરવામાં આવે છે. જે સાંઝી રચનાથી ઘરની ખુશહાલીની પ્રસન્નતાની, ઘરની સ્થિતિ-પરિસ્થિતિની, ઘરના વાતાવરણની, ઘરના પરિવારની મનોદશાની જાણકારી આવનાર મહેમાન સમજી કે ઓળખી જાય છે. તે ઘરની આધ્યાત્મિક, માનસિક અને ભૌગોલિક સ્થિતિ-પરિસ્થિતિની કોલમ-રંગોળી-સાંઝી દ્વારા, જાણકારી મેળવીને, આગંતુક મહેમાન પોતાનું માનસ તૈયાર કરીને ઘરમાં પ્રવેશ કરે છે. ગૃહપ્રવેશ પછી મહેમાન ઘરની પરિસ્થિતિ અનુસાર અથવા ઘરના વાતાવરણ મુજબનું વર્તન અને લાગણી વ્યક્ત કરે છે.

આ કોલમ, રંગોળી અથવા સાથિયા દ્વાર પાસે સિદ્ધ કરવાનું મહત્ત્વ છે. ઘરમાં પ્રવેશ કરનાર આગંતુક મહેમાન જે ભગવાનના સ્વરૂપમાં આવે છે, તે મહેમાનને ભગવાનનું રૂપ સમજીને પ્રસન્નતાથી આવકારવાનું, સ્વાગત કરવાનું, કે આપ અમારા ઘરમાં પ્રવેશ કરો તો અમારા ઘરનો પરિવાર પ્રસન્ન થશે, ખુશ થશે. આપ અમારા ઘરમાં પધારશો તો અમારા ઘરમાં આનંદ-ઉત્સવ અને તન-મન-ધનમાં તંદુરસ્ત વધારો થશે. આ હેતુથી ઘરના આંગણે પ્રવેશદ્વાર પાસે કોલમ-રંગોળી કે સાથિયાની રચના ઘરની સૌભાગ્યવતી લક્ષ્મી રૂપ સ્ત્રીજનો, સવારે વહેલા ઊઠી, વાસીદું કાઢી, સ્નાન કરીને, પ્રથમ કાર્ય આંગણે પ્રવેશદ્વાર પાસે ઊમરો પૂજવાનું, શણગારવાનું કરે છે.

ગુજરાતની પ્રાચીન સંસ્કૃતિ-પરંપરામાં પણ નિત્ય સવારે ઘરના મુખ્ય દ્વારના ઉમરા ઉપર કંકાવટીમાં રાખેલ કંકુથી સાથિયા દોરીને (પૂરીને), ફૂલ, ચોખાથી પૂજન કરવાનો રિવાજ/નિયમ છે. જેના પૂજન પાછળ ગૃહ પરિવારમાં પ્રભુની સાથે સુખ-સંપત્તિને આમંત્રિત કરવાનો શુભ આશય છે. આ શુભ ક્રમ આજના સમયમાં લુપ્ત થતો જાય છે. સૂર્યોદયથી શરૂ થતી આપણી આ પુણ્ય પ્રાચીન વેદ સંસ્કૃતિનો સૂર્યાસ્ત આપણે જોઈ રહ્યા છે. જો આપણે આપણી સનાતન ધર્મ સંસ્કૃતિની, પ્રભાતની મંગળ શરૂઆતને ગુમાવી દઈશું (છોડી દઇશું) તો આપણી પાસે શું રહેશે? આધુનિકતાની માયાજાળમાં આપણે આપણી ધર્મ સંસ્કૃતિનું વેદીમાં હવન કરી નિરાધાર થઈ રહ્યા છીએ.

ભારતવર્ષમાં એક માત્ર પુષ્ટિ સમ્પ્રદાય દ્વારા સમગ્ર વેદ સંસ્કૃતિને પ્રસ્થાપન કરનારા, જગદ્‌ગુરુ આચાર્યજી શ્રી મહાપ્રભુજી વલ્લભાચાર્યજીએ સમગ્ર સૃષ્ટિ ઉપર કલ્યાણમયી સૂર્યકિરણનો પ્રકાશ પાથર્યો છે અને પ્રભુ સેવામાં સાંઝી સેવા સિદ્ધ કરાવી ભારતવર્ષની પ્રાચીન પરંપરાને વણી લીધી છે. (ઉતારી છે.)

જેના પુણ્ય પ્રતાપે આપણે સૌ આ ગ્રંથ દ્વારા એકબીજા સાથે અતૂટ સાંસ્કૃતિક બંધનથી જોડાયેલા છીએ, પુષ્ટિ કલાના પ્રણેતા (જન્મદાતા) શ્રી મહાપ્રભુજીની કૃપાથી જ.

ભાવ વિશેષ :

સમર્પિત ભક્ત બલિકે યહાઁ જબ ભગવાન વામન પધારે થે, તો ઉન્હોંને કુછ ભારતીય સંસ્કૃતિ કે પ્રતીક ચિહ્નોં કો દેખ કર માંગનેકા નિશ્ચય કિયા થા । જૈસે કી બંધનવાર (તોરણ), જો પૂર્વજો કે આશીર્વાદ કે સ્વરૂપ હૈ; કેલાખંભા (કેળના સ્થંભ) ઉદાર ચિત્તવાલી લક્ષ્મીકા સ્વરૂપ હૈ । કલશ હૃદયકી ઉદારતા કા સ્વરૂપ । ડહેરીકા માંડના (ઉમરાનું પૂજન) મહાપુરુષો કે પધારને કા લક્ષણ હૈ । દરવાજે પર દાંયે ઔર બાંયે હલદીકે પાંચ-પાંચ હાથકે થાપે(થાપા) દશ પ્રકારકી ભક્તિકે લક્ષણ હૈ । ઉપર કહી દેવારાધના સ્થલમેં શિખરકા હોના, ધર્મકી કીર્તિ સર્વોપરી હૈ । તુલસી ગમલાકા હોના સુદૃઢ સ્નેહવાલી ભક્તિકા સ્વરૂપ હૈ । ઈસ પ્રકાર રંગોસે શાસ્ત્ર રીત પ્રમાણ ભારતવર્ષમેં રંગોળી અથવા સાંઝીકા સનાતન પ્રચલન હૈ । જીસકા પુન:ઉદ્ધાર વ્રજમેં આચાર્ય શ્રી વલ્લભને કિયા ।

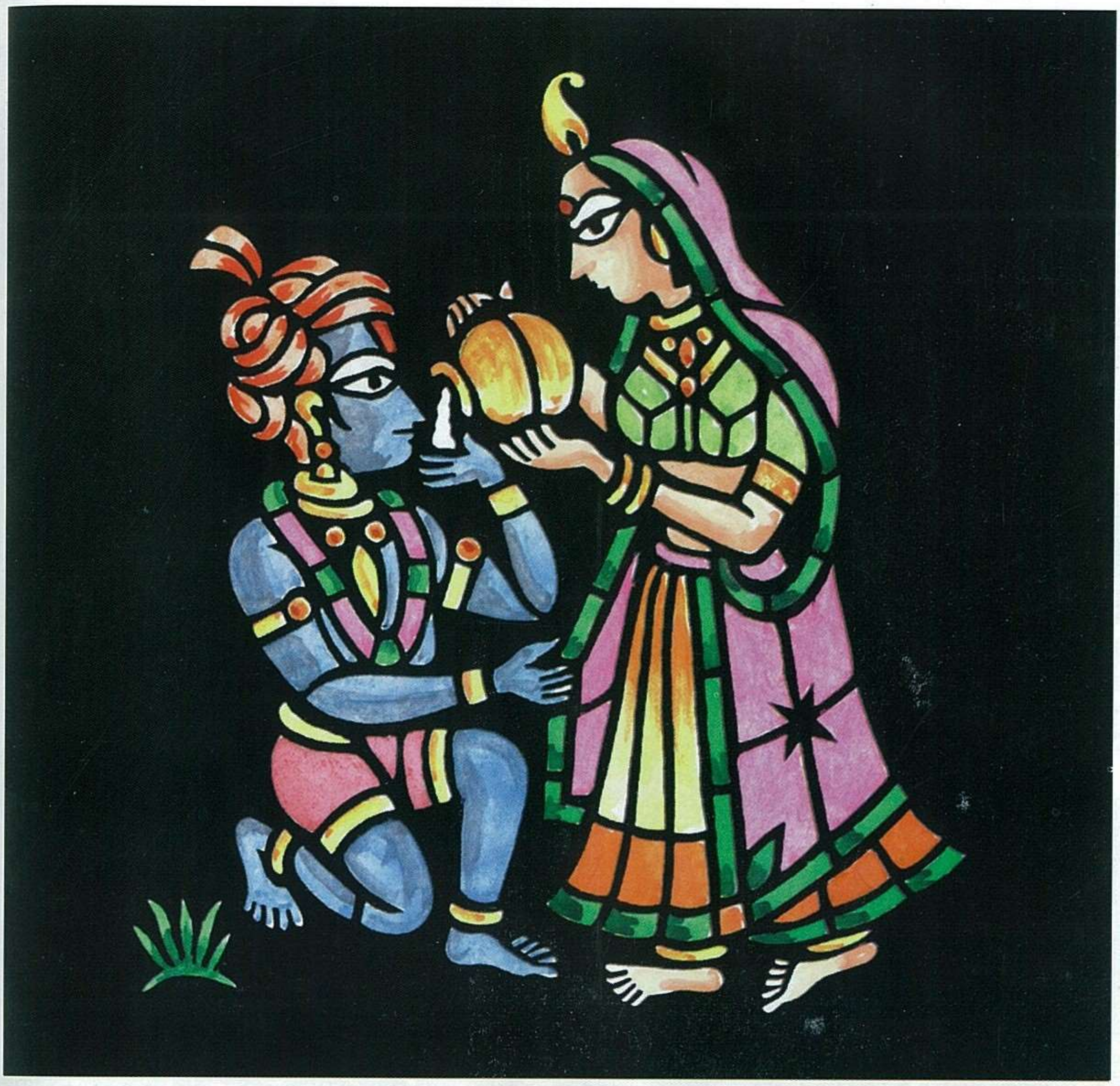

ચિત્રકાર : ગોપાલદાસ

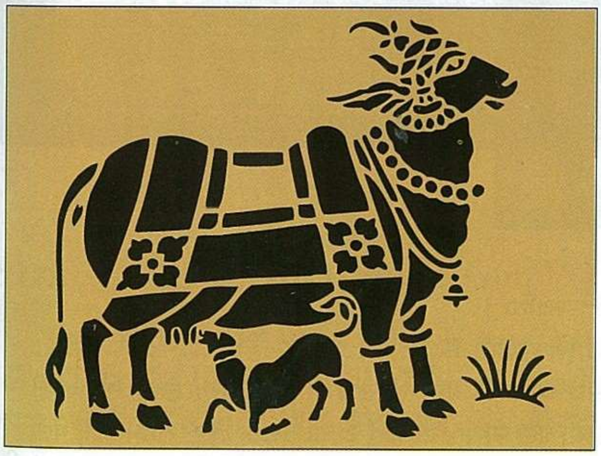

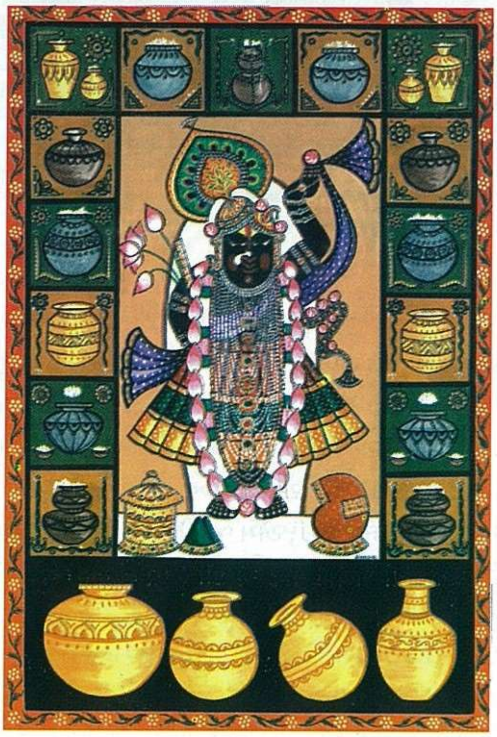

દાન સાંઝી

દાન આંતરમસ્તીના રસનું આમંત્રણ છે. દાન લીલાના સમયે હૃદયમાં (શ્રી સ્વામિનીજી અને વ્રજભક્તોના) રસનો આવિર્ભાવ થાય છે, અને એ રસને વિક્ષીત (સ્વરૂપાત્મક - સાકાર) કરવા માટે સાંઝી ચીતરવામાં આવે છે. સાંઝી વ્રજ-વ્રજલીલા વ્રજેશ - વ્રજભક્તોનું મધુર મિલન છે.

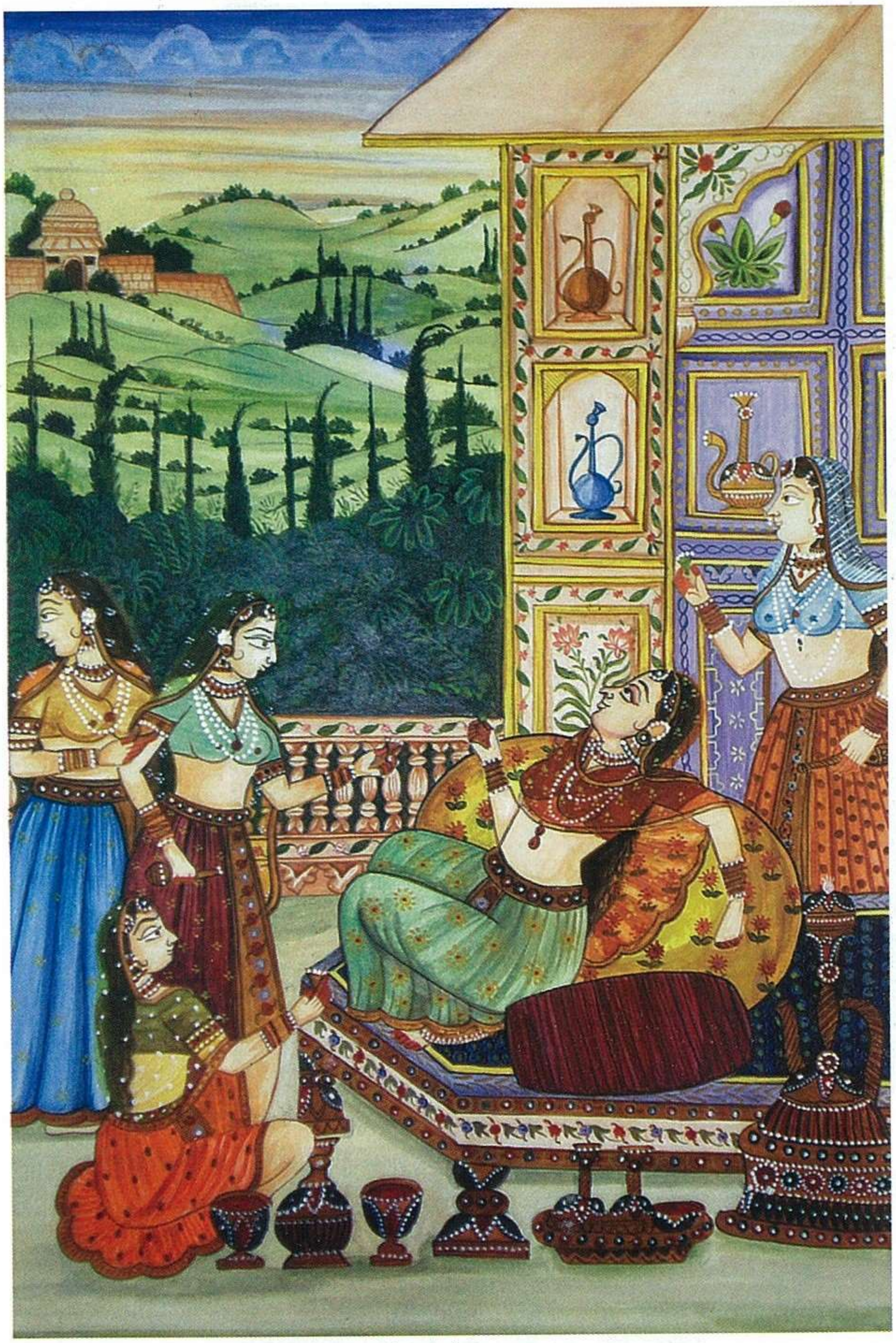

પ. ભ. શ્રી વૈષ્ણવદાસ કમ્બલવાળા (મથુરા)ના સૌજન્યથી

શ્યામા શ્યામ પુકારતી, શ્યામ રટતે શ્યામા ।
અલી અચંભો આજ બડ, જુગલ જપત નિજ નામ ॥

શ્રી ચંપકલતા સખી, ચંદ્રિકા સખીને કહે છે : હે અલી! હું આજ સુધી તો રોજ શ્રી રાધિકાજીને ઘેર જતી ત્યારે તેઓ કૃષ્ણ મિલનની આતુરતામાં વિહ્‌વળ (વિરહ) દશામાં કૃષ્ણ કૃષ્ણ પોકારતી અને તેવી જ રીતે કૃષ્ણ પણ રાધા, રાધાનું રટણ કરતા તે હું સાંભળતી પણ ખરી, પણ આજ તો મેં બન્ને ઠેકાણે મોટું આશ્ચર્ય દીઠું. બન્ને સ્વરૂપ પોતપોતાના નામનું રટણ કરી રહ્યા છે. તેનું શું કારણ હશે? ત્યારે ચંદ્રિકા સખીએ મંદ હાસ્ય કરતા કહ્યું કે, એ તો બન્ને સ્વરૂપ પરસ્પરનું ધ્યાન ધરીને તદ્‌રૂપ (યુગલ સ્વરૂપે) થયા છે. શ્રી શ્યામાજી જાણે છે જે હું તો કૃષ્ણ છું ને મારી રાધા ક્યાં ગઈ, એમ જાણીને શ્રી રાધાના નામને જપે છે. એવી રીતે શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર પ્રભુ પણ એમ જાણે છે જે હું તો શ્રી રાધિકા છું અને શ્રીકૃષ્ણ ક્યાં ગયા! માટે એ શ્રી કૃષ્ણનું નામ જપે છે. આવું તો કોઈક વાર મેં પણ જોયું છે. આ પ્રકારે હાસ્ય વિલાસ થયો.

મોહન 'સુરદાસ' કો ઠાકુર, મોહન શ્રી રાધેરાની॥

(સૌજન્યથી: સત્સંગ, ૧૯૯૫, ઓક્ટોબર)

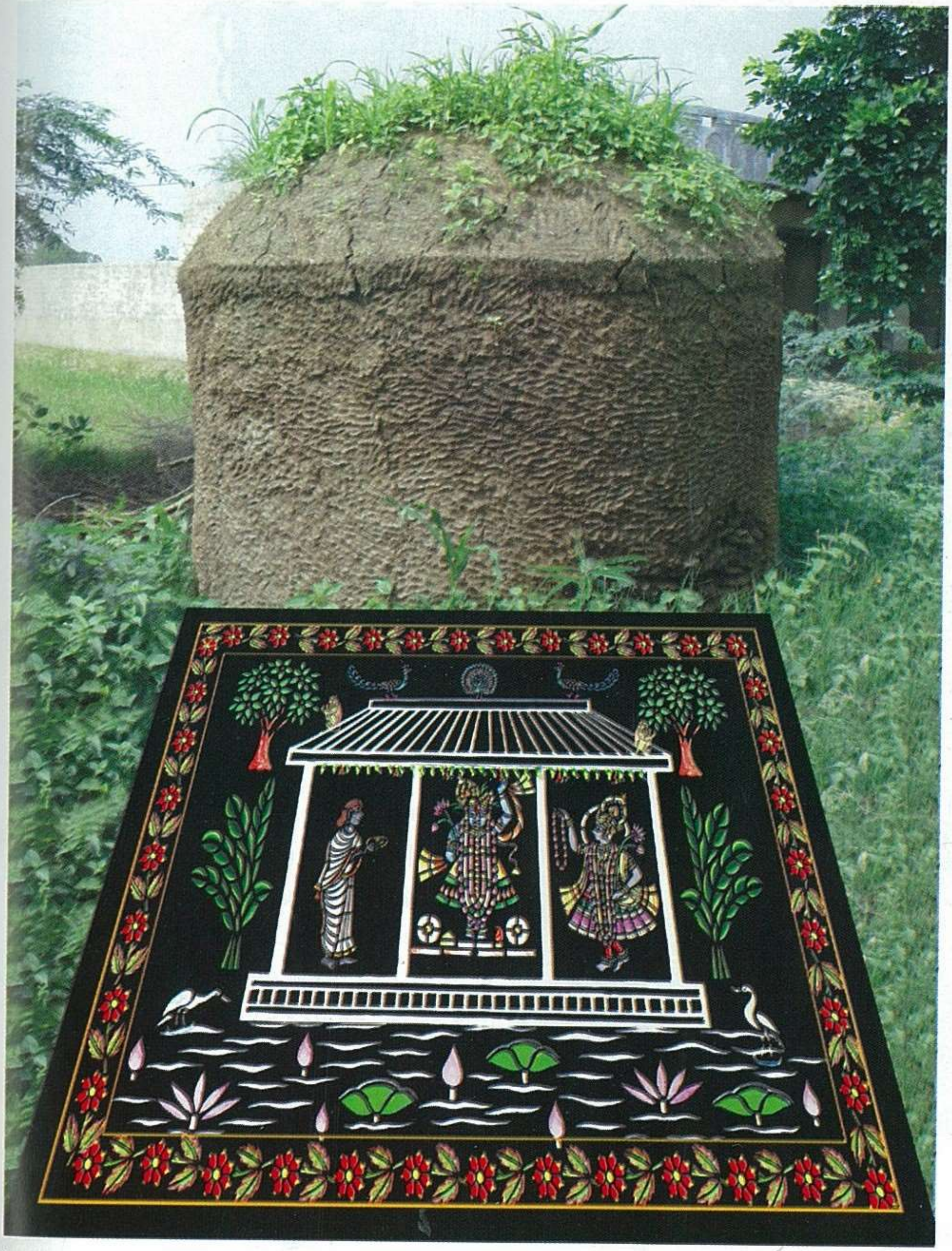

'વ્રજ'

ફોટો - સાંઝી : ગોપાલદાસ

સાંઝી - ''સો વો જાને, યા મૈં જાનું''

ગુપ્ત રીતિસે ભાવકો પકડનેવાલી સખી, ચતુર સખી હૈ । કહીં કભી પ્રિયા પ્રીતમકી રહસ્યમય લીલાએં ઉનકે હાવભાવ સેં, શ્રી અંગકે રતિ ચિહ્નોં સે સમઝ ગઈ હોગી। ઉન્હોંને વ્રજગોપીઓંકે મન રૂપી ફૂલ, પ્રશંસા રૂપી સુગંધ લેકર જો સાંઝી બનાઈ ઉસમેં ઉનકી વહ ગુપ્ત લીલા પુષ્પરચના કે બહાને પ્રગટ કી। સો ચતુર સખી કી સાંઝી ।

જૈસે કૃષ્ણદર્શન કે લિયે કુલ મર્યાદા કે ક્રમસે નવ ગોપવધૂકો મના કીયા કી 'તુમ કૃષ્ણદર્શન નહીં કરોંગે । શ્રી ગોકુલનાથ ઉસ નવવધૂકે વિરહકો દૂર કરનેકે લિયે, ઉનકે સાસકે સામને જાકર બેઠ ગયે। નવવધૂ કૃષ્ણ સે આગે અપની સાસકે સન્મુખ બેઠકર સાસકી આંખોં મે ગોકુલનાથકા પ્રતિબિંબ દેખને લગી। ગોકુલનાથ ભી ઉસકી સાસકી આંખોમેં નવવધૂકે મુખમંડલકી તીવ્ર દર્શનાભિલાષાકો દેખને લગે! યહ લીલા કિસી અન્ય સખીને છીપકર દેખ લી।

આજ વહી લીલા શ્રી સ્વામિનીજીકી આજ્ઞાસે સાંઝી મેં પ્રત્યક્ષ કરકે દિખાઈ! દર્શન કરને કે બાદ ગોપીઓને પૂછા લાલન સો, ''યે સાંઝી કૈસી હૈ?'' નિકુંજનાયક બોલે, ''યે કાહુ ચતુર સખીકી સાંઝી હૈ''। ''સો વો જાને યા મૈં જાનું।''

''અતિ રહસ્ય નિકુંજની લીલા-સાંઝી.''

જે લીલા હૃદયમાં હતી, તે લીલા નિકુંજમાં સિદ્ધ થઈ ગઈ. ''હૃદયની છાયા નિકુંજમાં પડી તે ચીતરાઈ ગઈ.''

''મોર ચિત્તે ચિત્તાએ આતેં હૈ।'' મોરનાં ઇંડાને ચિતરવાં નથી પડતાં, જેથી સાંઝી લીલા એ પ્રગટ લીલા છે. ✿

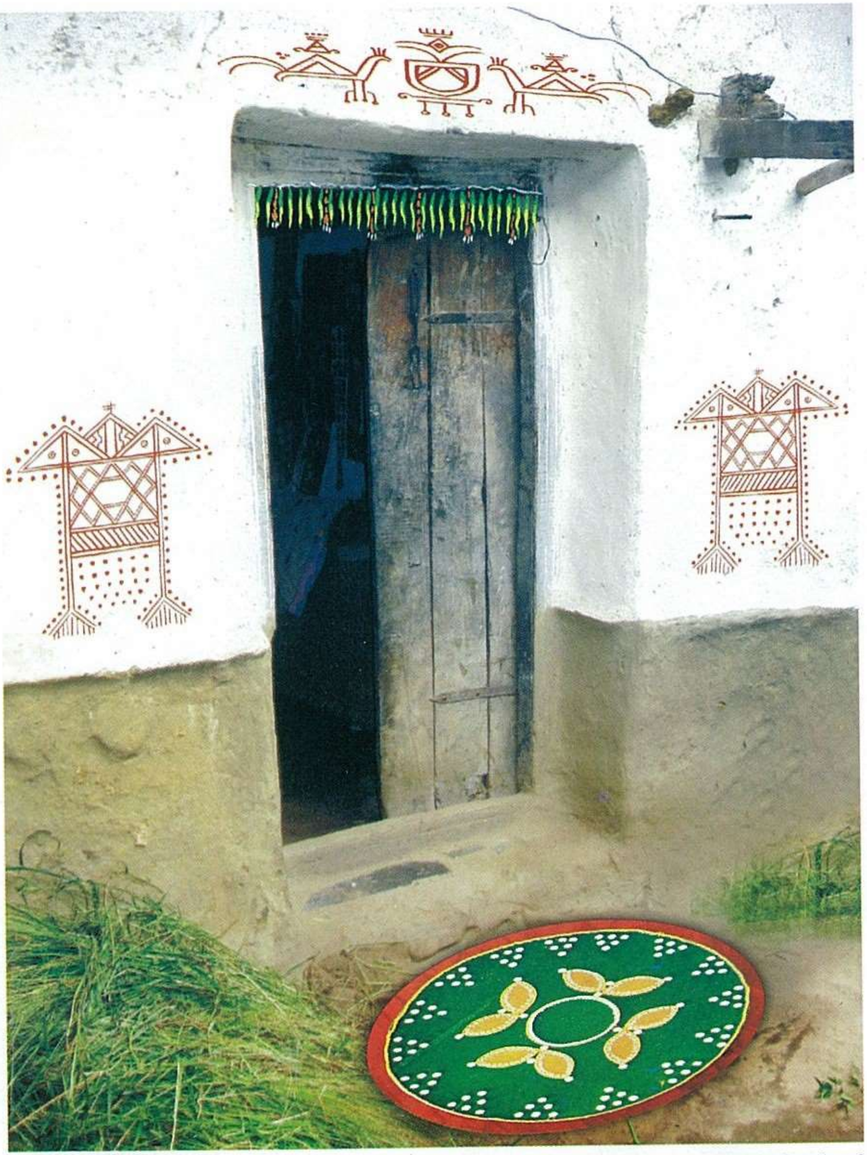

ચંપારણ્ય ગામના ઘરની ઓસરી

સાંઝી - સજાવટ

સાંઝી, વનદેવી, પુલિન્દીજીઓના યૂથની પરિપ્રેક્ષમાં સંદર્ભયુક્ત શ્રી યમુનાજીનું સ્વરૂપ છે. શ્રીજી સન્મુખની વિવિધ સામગ્રીની સજાવટ રસરીતથી કરવામાં આવે (મન ભાવન - પ્રભુપ્રેરિત) તેને સાંઝી કહેવામાં આવે છે.

સાંઝી એટલે સજાવટ.

''રંગોની સાથે, રંગોનો મેળ.''

''લીલા સાથે, લીલાને અનુરૂપ સજાવટ.''

''ઉત્સવ સાથે, ઉત્સવ સામગ્રીનો ભોગ.''

''ગુલાબ સાથે, ગુલાબી રંગ.''

''ચંપા સાથે, ચંપેઈ રંગ.''

''જૂઈ સાથે, જૂઈ રંગ.''

''દૂધની સફેદ સામગ્રી સાથે, ચાંદીનું પાત્ર.''

''આમરસ, કેસરી સામગ્રી સાથે, સુવર્ણનું પાત્ર.''

''તન અને મનની એકાગ્રતા.''

''પ્રભુ દ્વારા ભક્તનો અંગીકાર.''

''ભક્તનું પ્રભુલીલાને અનુરૂપ થવું.''

''આનંદ ને પરમાનંદનો અનુભવ.''

આનંદ - નંદાલયની લીલા - આ લીલામાં બધાનો પ્રવેશ છે. (પંખા-વસ્ત્ર)

પરમાનંદ - નિકુંજની લીલા - જેમાં પુરુષભાવનો પ્રવેશ નથી. શબ્દ સ્ત્રીલિંગમાં બોલાય અને ન બોલાય તેમાં 'જી' લગાડાય. (પંખી - વસ્ત્રજી)

આનંદ :

શ્રુતિ વાક્ય :''આનંદષ્ય હરેર લીલા.''

''આનંદ રૂપ હરિની સેવા નિત્ય છે.''

ઉપરોક્ત સેવા અને લીલા હવેલીમાં થાય છે. જેમના પ્રતિદિન પ્રમાણે અલગ અલગ ક્રમ અને અલગ અલગ ભાવ છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં નવ નંદ, નવ ઉપનંદ અને છ વૃષભાન મળીને કુલ ૨૪ (ચોવીસ) હવેલી છે.

નંદાલયની લીલા ગોકુલથી રાવલ (બરસાના) સુધીની છે. નવ નંદ : (૧) ગય (૨) વિમલ (૩) શ્રીષ (૪) શ્રીધર (૫) મંગલાયન (૬) મંગલ (૭) રંગબલીશ (૮) રંગોજી (૯) દેવનાયક

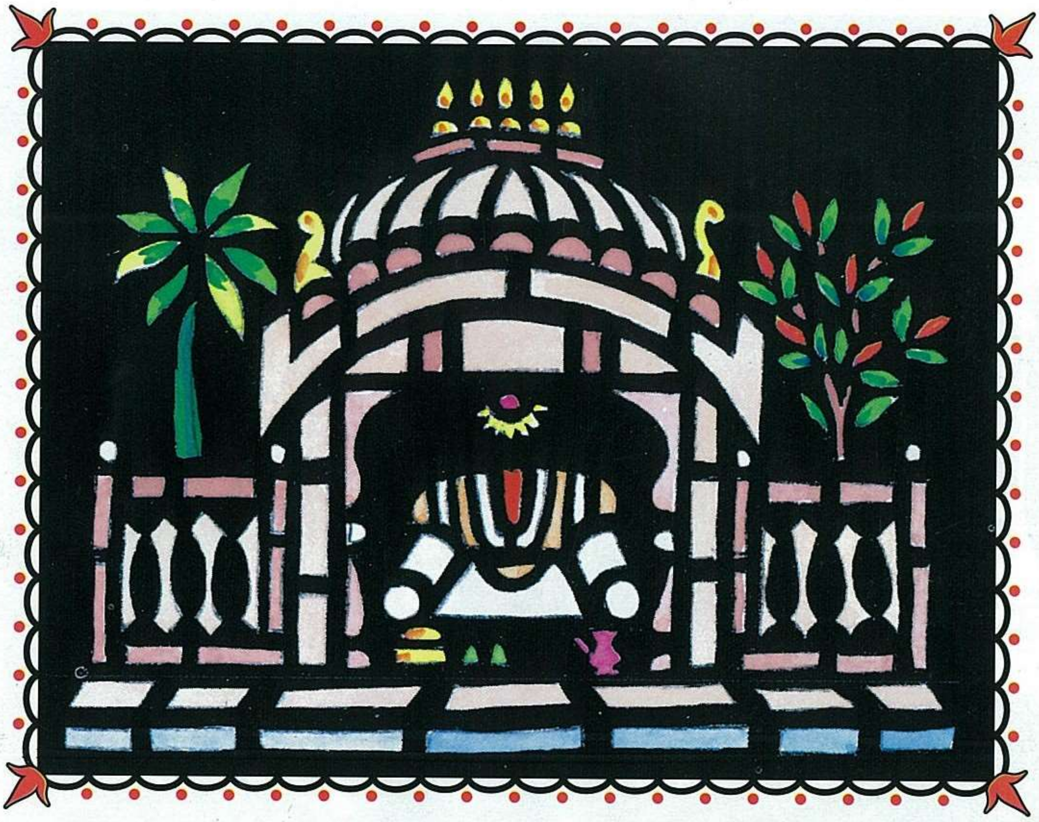

આ નવ નંદના ઘરમાં શ્રી ઠાકોરજી નિત્ય રમણ કરે છે.

નવ ઉપનંદ: (૧) રીતિહોત્ર (૨) અગ્નિભોક (૩) સાંભ (૪) શ્રીવર (૫) ગોપતી (૬) શ્રોત (૭) વ્રજેષ (૮) પાવન (૯) શાંત - આ નવ ઉપનંદના ઘરમાં પણ શ્રી ઠાકોરજી નિત્ય રમણ કરે છે.

છ વૃષભાન : (૧) નીતિવિત્ત (૨) માર્ગદ્ (૩) સુકલ (૪) પતંગ (૫) દિવ્યવાહન (૬) ગોપેષ્ટ, આ છ વૃષભાનના ઘરમાં પણ શ્રી ઠાકોરજી નિત્ય રમણ કરે છે.

એક માસના બે ભાગ કરીને એક વર્ષના ૨૪ પક્ષ છે. (પખવાડિયા ૧૫ દિવસના). આ એક વર્ષની ૨૪ હવેલીઓની અલગ અલગ સેવા પુષ્ટિમાર્ગીય સેવા પક્ષ કહેવાય છે.

પરમાનંદ :

શ્રી યમુનાજીની પુલિન ઉપર દ્વાદશ નિકુંજ છે: (૧) પુષ્પ (૨) ફલ (૩) રસ (૪) મધુ (૫) ગો (૬) દ્વાર (૭) નવનિકુંજ (૮) શશી (૯) પ્રેમ (૧૦) સિદ્ધ (૧૧) લક્ષ્મી (આભા) (૧૨) તુલસી. શ્રીમદ્ ભાગવત રાસ પંચાધ્યાયીમાં સ્વયં શ્રી ઠાકોરજીએ વૃંદાવનમાં આ બાર નિકુંજ રસ, ભાવ અને સ્વરૂપ સહિત ગોપીઓને બતાવી છે.

(૧) સ્વરૂપ : નિકુંજમાં ગોપીઓને તેમનું સ્વરૂપ બતાવ્યું.

(૨) રસ : ગોપીઓના સ્વરૂપમાંથી પ્રગટ થતો રસ બતાવ્યો. (આત્માનંદ) જે રસના દ્વારા શ્રી ઠાકોરજીને શું સુખ પ્રાપ્ત થાય છે તે બતાવ્યું.

(3) ભાવ : સ્વરૂપ અને રસ મળીને પ્રગટ થતો ભાવ શ્રી ઠાકોરજીએ ગોપીઓને બતાવ્યો અને કહ્યું, ‘‘હું આપના આ ભાવ વગર રહી શકતો નથી.’’ જ્યારે ગોપીઓની સમજમાં આ વાત આવી ત્યારે એમણે વિચાર કર્યો, જગતમાં જેટલી સ્ત્રીઓ છે, તેમની પાસે અમારા જેવો પતિ કોઈની પાસે નથી. જે પોતાની સ્વામિનીઓ વગર (સ્વરૂપ વગર) રહી શકતા નથી. જે પોતાની સ્વામિનીઓના ઇચ્છીત, અભીષ્ટ રસ વગર રહી શકતા નથી. (રસ વિના) અને તેમના હૃદયના ભાવ વગર રહી શકતા નથી.

તે પ્રભુ રાસમાં અંતર્ધ્યાન થયા. અદ્યાપિ, વ્રજગોપીઓએ પોતાના અંતર્ધ્યાન પ્રભુને બહુ જ પ્રકારથી શોધ્યા. રાસના છ મહિનામાં જ સાંઝીના દિવસ આવે છે. આ ભાવ રૂપ હરિ વિરહની દશામાં ગોપીઓના કરકમળોની રચનામાં સાંઝીના સ્વરૂપથી લીલા સહિત બિરાજે છે. થોડા કે વધારેના ભેદથી આ લીલા પરમાનંદ લીલા છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં માનસી અથવા વિપ્રયોગ, આ પરમાનંદ લીલાનો માર્ગ છે. માનસી એક જ પ્રભુ સુધી પહોંચવાનો માર્ગ છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં સફળતાપૂર્વક માનસીમાં શ્રી મહાપ્રભુજી પ્રમુખ છે. વિપ્રયોગમાં શ્રી ગુસાંઈજી પ્રમુખ છે, જેઓએ વિપ્રયોગના માર્ગથી પોતાના ચરણ પ્રભુ સુધી પધરાવ્યા. એટલા માટે જ શ્રી ગુસાંઈજીનું નામ શ્રી પ્રભુચરણ થયું.

જેવી રીતે સદેહ પ્રભુસેવામાં જવું એ એક પ્રકાર છે, તેવી રીતે દેહ અને મન સહિત ભગવદ્સેવામાં જવું - માનસી એક રસ્તો છે. ઠીક આવી જ રીતે દેહ-મન-આત્મા સહિત વિપ્રયોગના ભગવદ્સેવામાં જવાનો રસ્તો છે. માનસી અને વિપ્રયોગવાળા જીવ પરમાનંદ નિકુંજ લીલાના અધિકારી છે.

‘‘ચતુર સુજાન કી સાંઝી ‘સજાવટ’ હૈ।’’

‘‘બિના યમુનાજી કી કૃપાસે કૃષ્ણ કહાં મિલતે હૈ ?’’

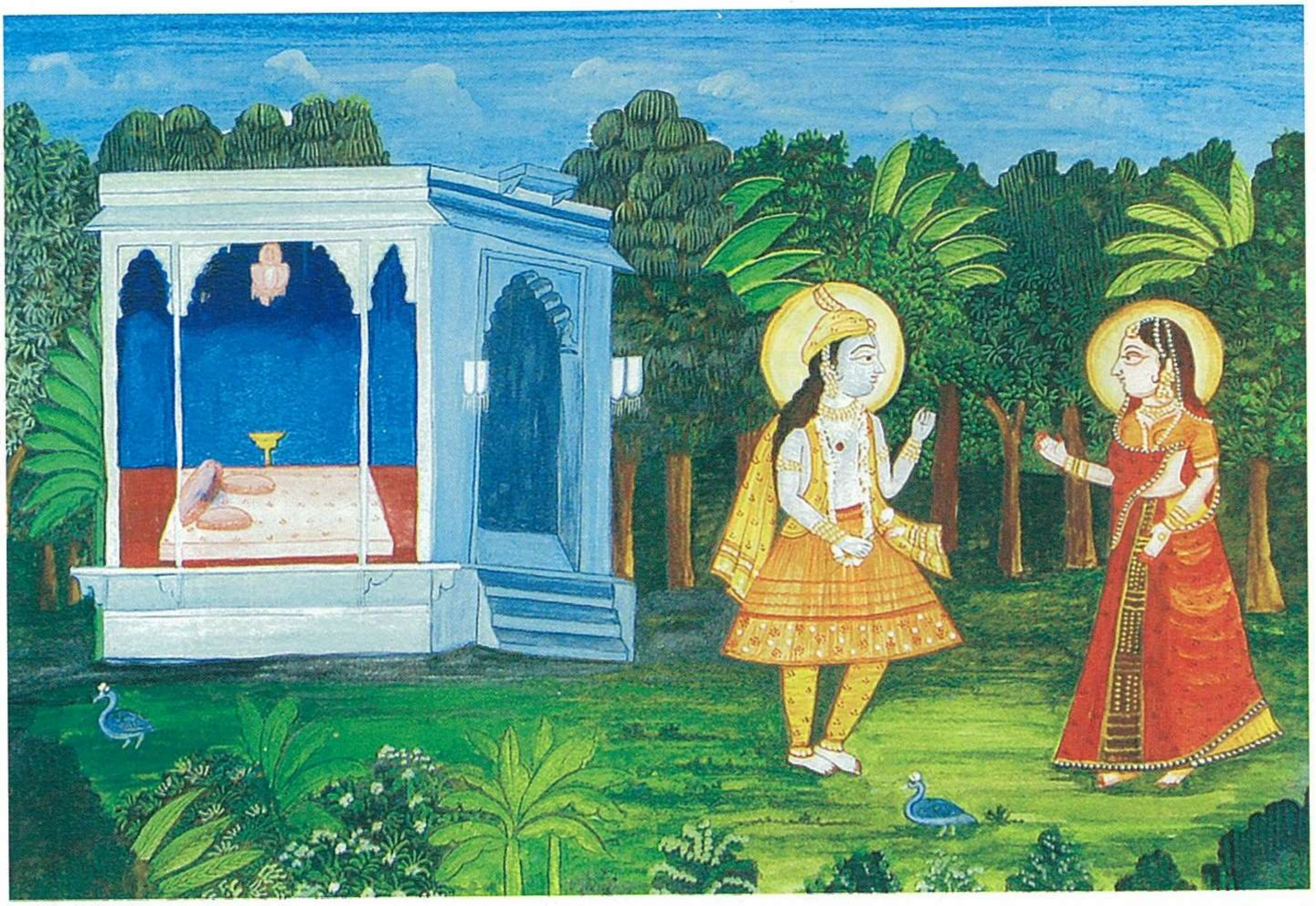

પ. ભ. શ્રી વૈષ્ણવદાસ કમ્બલવાલાના સૌજન્યથી

પ્રગટ - સાંઝી

શ્રી લલિતાજી અને શ્રી ચિત્રલેખાના ભાવમિલનથી શ્રી ચિત્રપ્રિયાજી (શ્રી યમુનાજી)ની કૃપાથી વિવિધ મનોરથ સિદ્ધ થાય છે. આપની આજ્ઞાથી સખી સમાજ મનોરથના શૃંગાર - સજાવટની રચના કરે છે.

શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી(નાથદ્વારા)ના કીર્તનિયાજી શ્રી રાધાકૃષ્ણજીના પુત્ર શ્રી ભંવરલાલજી સાથેના સત્સંગમાં આપે જણાવ્યું કે, સાંઝી દ્વારા ચિતરવામાં આવતી શ્રી જીની લીલા પ્રગટ સ્વરૂપાત્મક બની જાય છે.''હરિરસ વૃંદાવન સે આયો.''

બગીચામાં લતા - પતા - વનવેલી - વૃક્ષ - ફૂલો, સાંઝીમાં બીબાની અંદર જેમ જેમ રંગ પુરાય કે સાક્ષાત્ સ્વરૂપાત્મક બનીને ખીલી ઊઠે છે. બાગ હરિયાળો બની જાય છે. પક્ષીઓ સ્વરૂપાત્મક બની મધુર કલરવ કરી પ્રભુને આમંત્રણ આપે છે. જ્યાં સખીવૃંદ સહિત શ્રી ઠાકોરજી અને શ્રી સ્વામિનીજી સાંઝીમાં પધારે છે (ચિત્તમાં દર્શન આપે છે), ત્યારે લીલાના ખેલનો આરંભ થાય છે.

વ્રજભક્તો આ અનુપમ લીલાનો અનુભવ કરી અતિ પ્રસન્ન થાય છે; અતિ સુંદર ફૂલોની ભાવનાથી જરીનો બારીક ભૂકો (ચમક) છાંટીને લીલાની શોભા ઉપર વારી જાય છે; વધાવે છે.

યુગલ સરકારના શ્રમ નિવારણ અર્થે વિવિધ વ્યંજનો સિદ્ધ કરીને આરોગાવે છે. પ્રભુ અતિ પ્રસન્ન થઈને નિજ ભક્તોને લીલારસનું દાન કરે છે.

જેમ પુષ્ટિ માર્ગમાં ગૂઢ સ્વરૂપાત્મક ગોલોકસ્થિત લીલાની અંતર્ગત પોતાનું અતિ ગૂઢ માહાત્મ્ય લીધેલું છે, તેવી રીતે શ્રી આચાર્યચરણ તથા પુષ્ટિ માર્ગનાં પાંચ તત્ત્વોના પ્રાદુર્ભાવ મુજબ તથ્યનું નિરૂપણ અન્ય શાસ્ત્રોમાં પણ થયેલ છે.

આ લીલાઓ અને લલિતકલાઓ નિત્ય લીલામાં હોવાને કારણે સર્વસામાન્ય રીતે પ્રગટ ન હતી. તેને શ્રી આચાર્યચરણે 'અધ્યેદાનદક્ષશ્ચ' સ્વરૂપે લલિતકલા પ્રેમી રસસૃષ્ટિના પોષણને માટે પ્રગટ કરી છે. તે આજ દિન સુધી પુષ્ટિ સમ્પ્રદાયમાં પ્રગટ સ્વરૂપે બિરાજે છે.

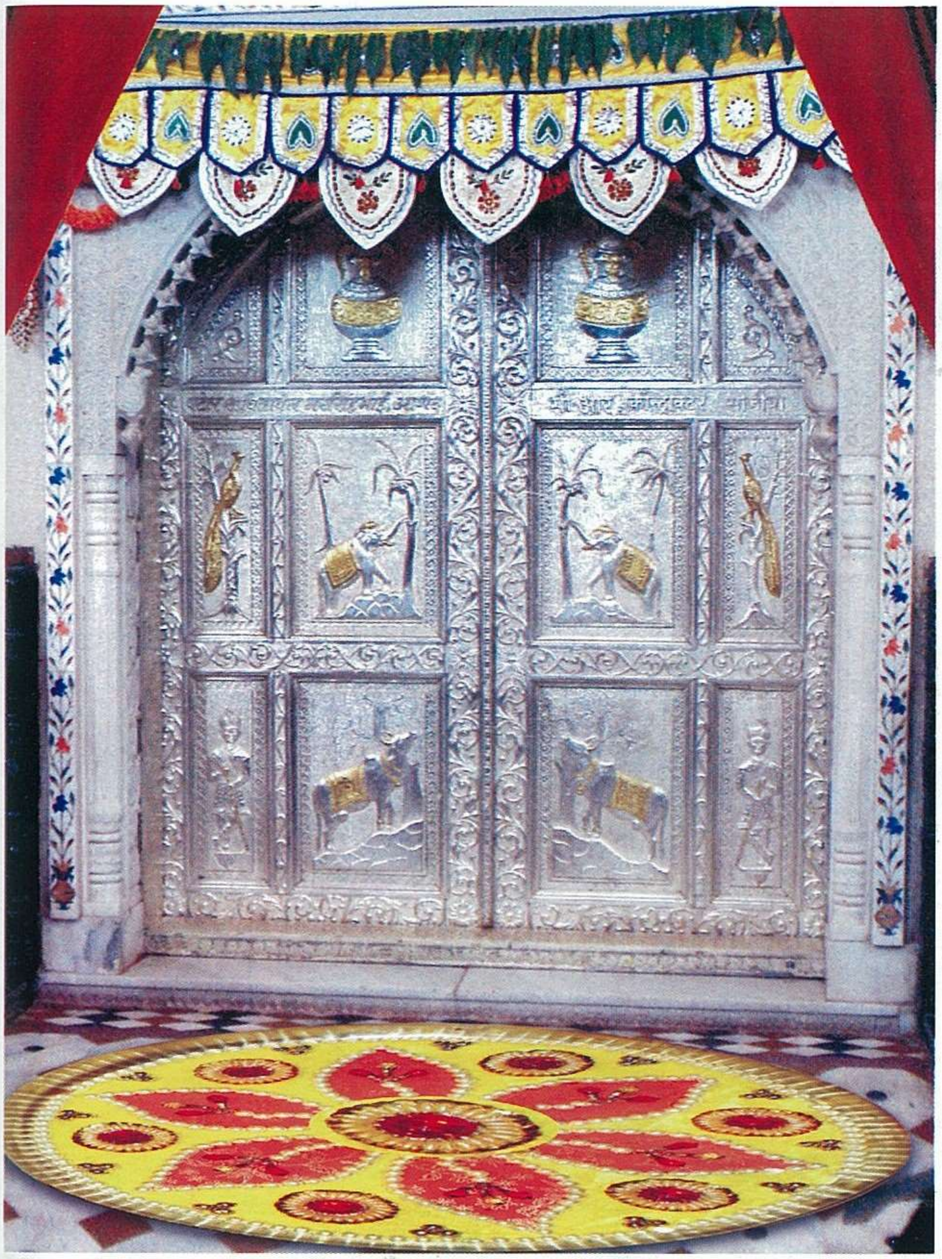

શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુજીના પ્રાગટ્ય બેઠકજી, ચંપારણ્ય

સાંઝીમાં વ્રજભક્તોના મનોરથ

વ્રજનાં બધાં જ ઘરના દ્વાર ઉપર શ્રી ઠાકોરજીનું સ્વાગત થાય છે. જુદા જુદા પ્રકારની સાંઝી આંગણામાં સિદ્ધ કરી પ્રભુને આકર્ષિત કરવાનો પ્રયાસ વ્રજભક્તો કરે છે. વ્રજભક્તોનો પરિતાપ દૂર કરવા પ્રભુ વનમાંથી પધારે છે. પ્રભુ એક ક્ષણ માટે વ્રજભક્તના દ્વાર પાસે સાંઝી (સજાવટ) જોવા માટે ઊભા રહે છે અને વ્રજભક્તોની શુદ્ધિ લે છે. પ્રભુને સાંઝી જોઈને ઇચ્છા થાય છે કે હું આ વ્રજભક્તોનો મનોરથ પૂર્ણ કરું. વ્રજભક્તોના ચિત્તની વૃત્તિ, પ્રભુ સાંઝીમાં દર્શાવેલ સંકેત દ્વારા નિહાળે છે અને ભક્તને ઇચ્છિત લીલાફલનું દાન આપે છે.

વ્રજભક્તોથી પ્રભુ પરિચિત છે. પ્રભુથી વ્રજભક્તો પરિચિત છે. આ સંબંધની જાણ લોકાતીતને નથી. જેથી સંસારની લોકલાજના હિસાબે પ્રભુને પ્રત્યક્ષ બોલાવી શકતા નથી, અથવા પોતાનો પ્રભુ સાથેનો સંબંધ ગુપ્ત રાખવા માગે છે.

ગોપીજન મનના વિવિધ મનોરથો પ્રભુને સન્મુખ કરવા પોતાનાં આંગણામાં સાંઝીનું નિર્માણ કરી, પોતાના મનના ભાવોને પ્રભુ સન્મુખ ખોલે છે; જે મનોરથો પ્રભુ વ્રજભક્તોને ઘરે જઈને રાત્રે પૂર્ણ કરે છે.

'સકલ વ્રજમાં પોઢ્યા વ્હાલો'.

પ્રભુ ગાયો ચરાવવા વનમાં પધાર્યા. પ્રભુના વિરહમાં વ્રજગોપીઓએ પોતાના ચિત્તને સાંઝીની રચના દ્વારા પ્રભુની લીલામાં પરોવ્યું. તે સાંઝી - સાંજના (સંધ્યાના) સમયે પૂરી થઈ, અને પ્રભુ ગાયોને ચરાવીને વનમાંથી ગોકુળ પાછા પધાર્યા, ત્યારે ગોપીજનોનો વિયોગ દૂર થયો. પ્રભુ સાથેનો વ્રજભક્તોનો પ્રતિક્ષણનો સંબંધ ટકાવી રાખવાની કડી *સાંઝી* છે.

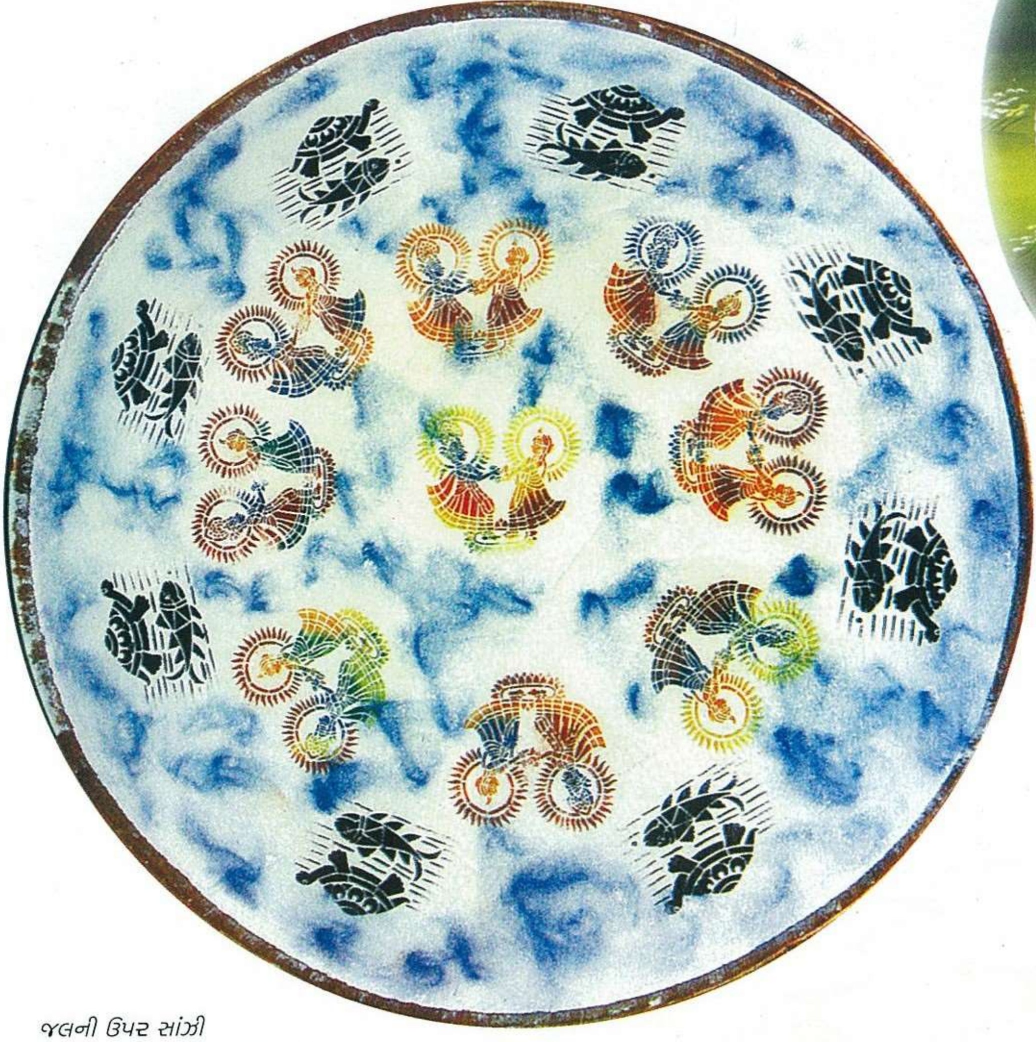

જલની ઉપર સાંઝી
સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ

રાસકે સંબંધમેં સાંઝી

જૈસે રસકા સંબંધ રાસસે હૈ ઔર ઉસમેં પ્રભુ કે સાથ વ્રજગોપીઓંકા સ્વરૂપસે રમણ હૈ ઠીક ઈસી પ્રકાર સાંઝીમેં વ્રજગોપીઓંકા પ્રભુમેં, પ્રભુકા વ્રજગોપીઓંમે પ્રચ્છન્ન રમણ હૈ।

જૈસે શૃંગારયુક્ત બીના ઘૂંઘટકે શોભાયમાન સ્ત્રી ઔર શૃંગારયુક્ત શોભાયમાન ઘૂંઘટવાલી સ્ત્રી કા જો ફર્ક હૈં, વહી ફર્ક રાસસ્થિત ગોપીઓંકા ઔર સાંઝીમેં એકાગ્ર સ્ત્રીઓંકા ફર્ક હૈ।

સાંઝીમેં ગોપીઓંકા રમણ અઘોષિત હૈ । શુકદેવજીને રાસલીલાકા સ્વરૂપ ઘોષિત કીયા હૈ। લેકિન સાંઝી લીલાકા સ્વરૂપ સ્પષ્ટ દિખાયા નહીં, કેવલ સંકેતમેં બતાયા હૈ। ✿

લીલા પ્રેમ કી સાંઝી

જિસ કર્તવ્ય નિષ્ઠામેં કૃષ્ણપ્રેમ હોતા હૈ, વે ભક્ત બ્રહ્માનંદ તક કે હી અધિકારી હૈ । જૈસેકી કૃષ્ણપ્રેમ કે વશીભૂત નંદાદિક ગોપોં કો બ્રહ્માનંદ કા દર્શન સ્વયં શ્રી નંદરાયકુમારને કરાયા । ઉસ બ્રહ્માનંદકે સુખોં કે તિ કુછ વિચાર કરકે વ્રજગોપીઓંને અપની ''સ્વીકૃતિ ત્યાગ દી.'' (ખંડન નથી કર્યું. સ્વીકાર કર્યો નથી.) તો ઉન્હેં પ્રભુ શ્રીમદ્ ગોકુલનાથજીને વેણુજી સે આજ્ઞા લેકર રાસ રસકા અધિકારી ઘોષિત કીયા । ઔર રાસરસદાન ભી કીયા । ઈસકે પીછે, વજહ યે હી હૈ કે સાંઝી કે સહારે અપના જીવનકા સદ્ઉપયોગ કરકે વે વ્રજગોપીઆં પ્રભુકે સ્વરૂપ મેં પહુંચી । રોમ રોમ તક પહુંચી ।

વ્રજગોપીઓં કો કૃષ્ણકી લીલા મૈંમ થા ।

નામ જપ મેં પરમાત્મા હમારે કામ આતા હૈ, ઔર લીલો મ કરને સે હમ પ્રભુ કે કામ આતે હૈ ।

''સાંઝી મેં કેવળ લીલા હૈ।'' ✿

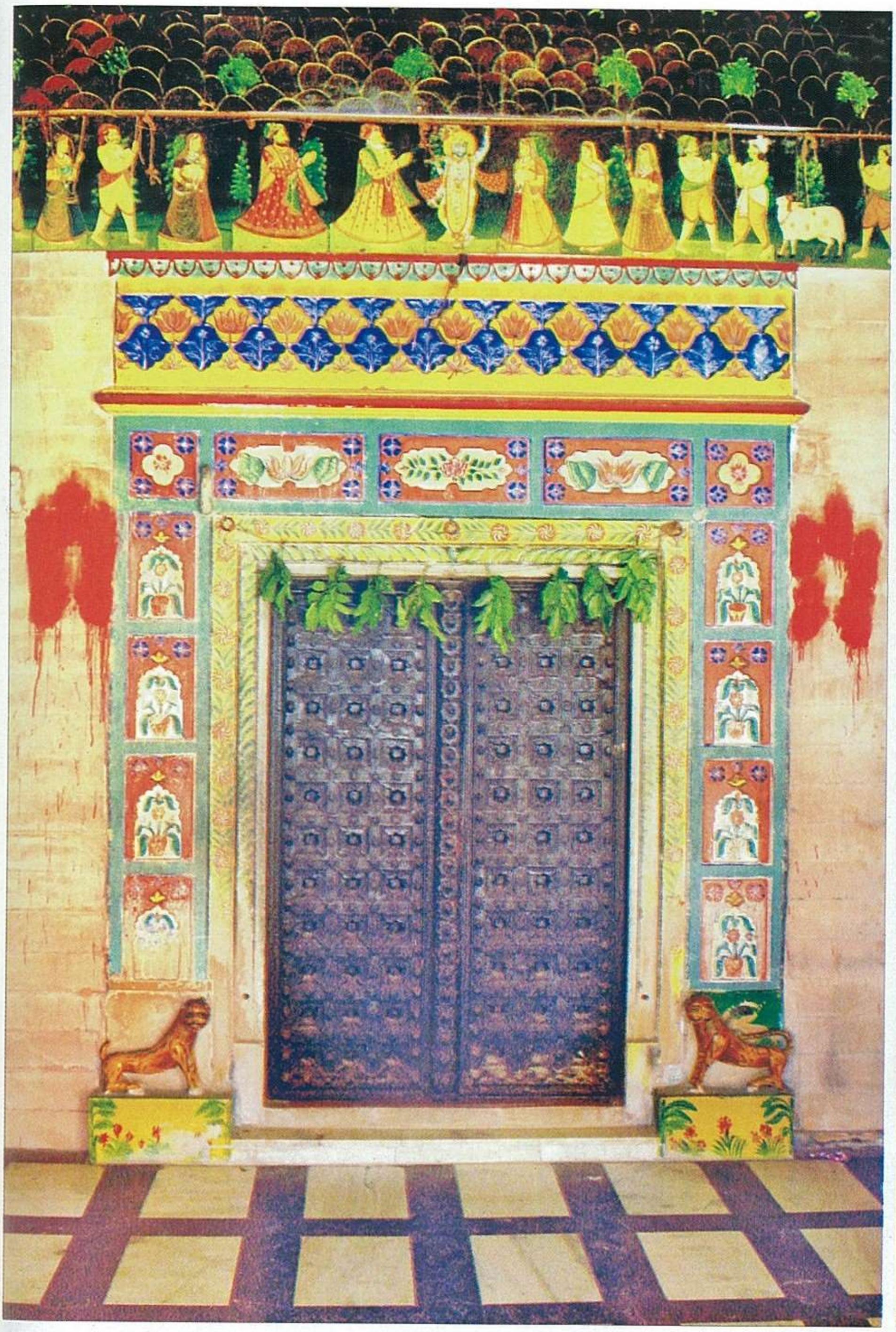

શ્રી મદનમોહનજીની હવેલીનું દ્વાર (કામવન)

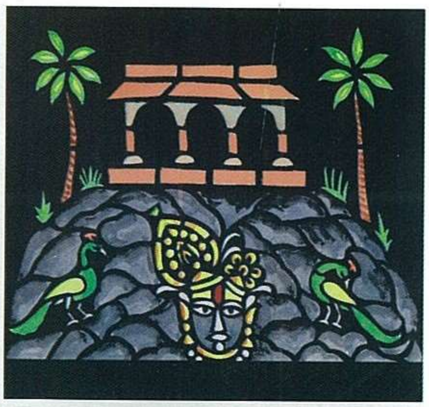

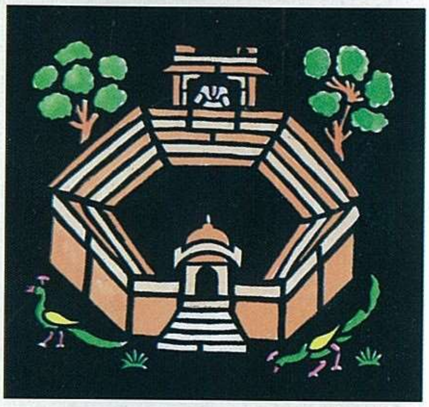

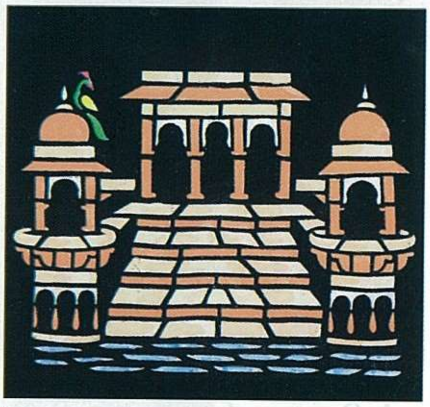

સાંઝી નિકુંજ લીલાનું પ્રકરણ છે

સાંઝી નિકુંજ લીલાનું પ્રકરણ (વિષય) છે. સાંઝી નંદાલય સાથે જોડાયેલ નથી, એટલા માટે સાંઝીની સજાવટ નિજ મંદિરની બહાર થાય છે. નિજ મંદિરની અંદર થતી નથી.

જેવી રીતે શ્રી ઠાકોરજીએ પોતાના સ્વરૂપમાંથી વ્રજને પ્રગટ કર્યું છે, તેમાં ગોપીજન સર્વસ્વ છે, તેવી જ રીતે વ્રજગોપીઓએ પોતાના સ્વરૂપમાંથી શ્રી ઠાકોરજીને રમણ કરવા માટે જે વ્રજ પ્રગટ કર્યું તે સાંઝી છે. શ્રી યશોદાજીએ પોતાના હૃદયમાંથી જે વ્રજ પ્રગટ કર્યું તે નંદાલય છે.

સાક્ષાત્ ભગવદ્ લીલા દ્વારા પ્રભુસુખને માટે જે વ્રજ પ્રગટ કર્યું, તે બાર વન અને બાર ઉપવન છે. સાક્ષાત્ સેવા રસ દ્વારા જે વ્રજ પ્રગટ થયું છે તે નદી, પર્વત, સરોવર, કુંડ અને પોખર છે.

એટલા માટે આખું વ્રજ શ્રી ઠાકોરજીના સુખ માટે છે. આ શ્રી ઠાકોરજીનું અવિચલ નિત્ય વિહાર કરવાનું સ્થળ છે.

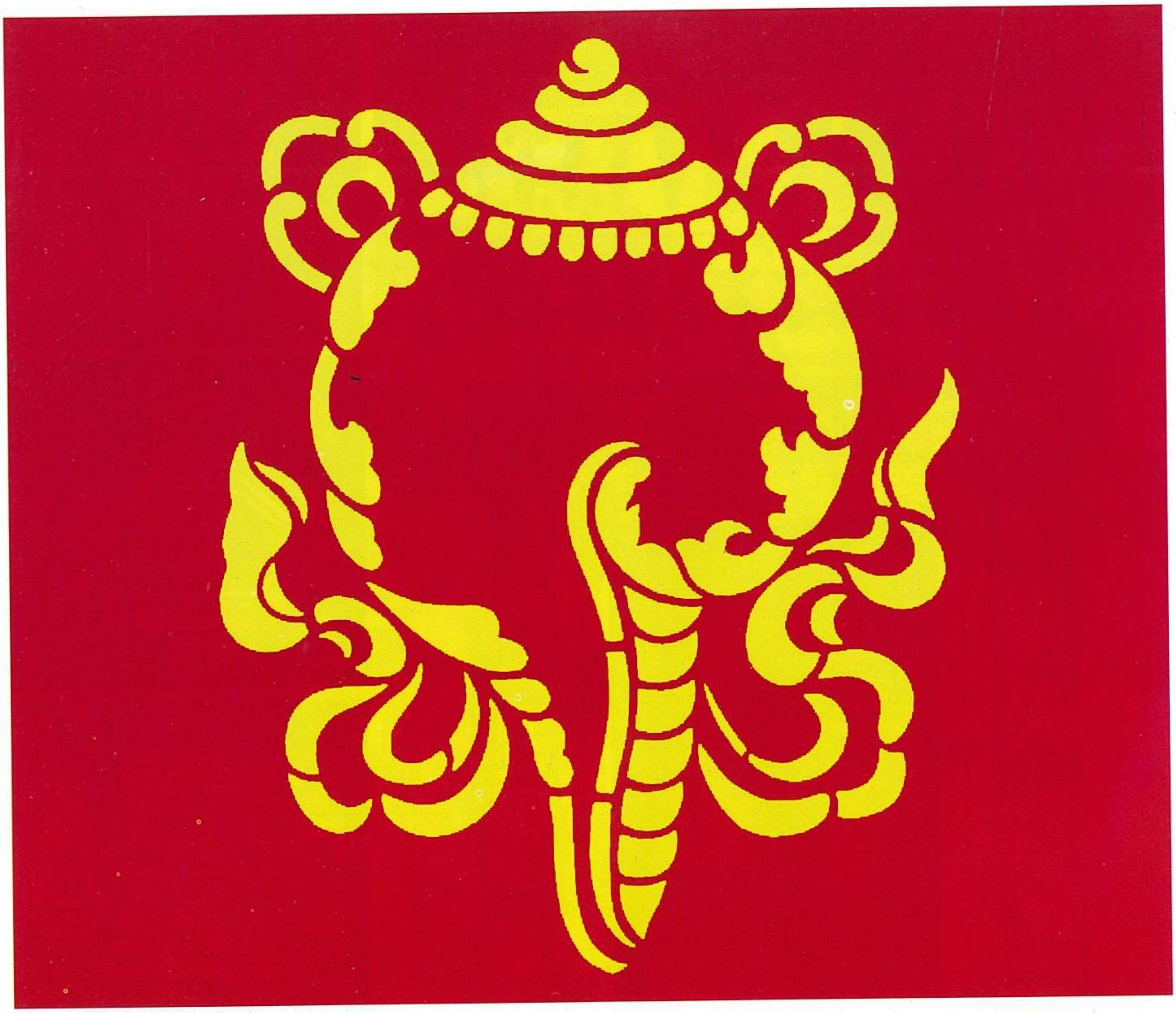

સાંઝી - મર્યાદા - વ્યાપી વૈકુંઠ

સાંઝી પૂજન મર્યાદામાં પણ જોવા મળે છે. વૈકુંઠ બે છે, (૧) રમા વૈકુંઠ - જ્યાં વેદનો અધિકાર છે. રમા વૈકુંઠમાં શ્રી ઠાકુરજી પાસે શ્રી દેવી (રમા) અને ભૂદેવી બિરાજે છે. ત્યાં સેવામાં ફૂલોની વિશિષ્ટતા છે. ફૂલોથી થતી પૂજાનો અર્થ છે સુકુમારતા અને ભક્તોના મનની સુગંધી અને નિત્ય નવીનતા. ત્યાં ફૂલોની પ્રધાનતા છે. ફૂલોનું તાત્પર્ય વેદ પ્રમાણિત છે. લક્ષ્મીજી પાસે સેવાનું સ્વરૂપ ફૂલોમાંથી આવ્યું. રમા વૈકુંઠમાં અધિકાર વેદનો છે અને વેદની પત્નીઓ શ્રુતિઓ છે. તે શ્રુતિઓ અહીં (વ્રજમાં) સાંઝી કળા અને સંગીતમાં સહયોગ પ્રદાન કરે છે. જેવી રીતે શ્રી ઠાકોરજીની સેવામાં એક માળાજીમાં કેટલાય પ્રકારનાં ફૂલ અને થાક સહિત સ્વરૂપોનાં દર્શન થાય છે, એવી જ રીતે શ્રી જી સન્મુખ કીર્તનમાં રાગમાલા ગવાય છે, જેમાં એક જ પદમાં ઘણા બધા રાગ હોય છે.

(૨) વ્યાપી વૈકુંઠ - જે બરાબર ગોલોકધામની નીચે છે. ગોલોકધામની ચરણારવિંદની છાયા વ્યાપી વૈકુંઠના મસ્તક ઉપર પડે છે. એટલા માટે પુષ્ટિ માર્ગમાં કયાંક કયાંક મિશ્ર પુષ્ટિ બોલીને વ્યાપી વૈકુંઠની ભાવના ગ્રહણ કરી છે. નંદાદિ ગોપોને અને વ્રજવાસીઓને જ્યારે બ્રહ્માનંદ બતાવ્યો હતો, ત્યારે તે વ્યાપી વૈકુંઠમાં બતાવ્યો હતો. ત્યારથી વેદમંત્રોનો પણ ભાવાત્મક અર્થ થવા લાગ્યો છે. શ્રીમદ્ ભાગવતમાં પણ કેટલાક લીલા સ્થળોમાં વેદોનો સાર ભાવ રૂપથી બતાવવામાં આવ્યો છે. દાખલા તરીકે શિવમંત્રની આરાધનામાં વેદમંત્ર છે.

॥ ત્ર્યંબકં યજામહે પુષ્ટિ વર્ધનમ્ ॥

આ વેદ ઋચાનો અર્થ મર્યાદા મુજબ નહિ, પુષ્ટિ ભક્તિ પ્રકારે થાય છે. ત્રય = 3 (ત્રણ), અંબા = મા, કમ = સર્વોપરી, અર્થાત્ જેમની ત્રણ માતા સર્વોપરી છે (દેવકી-યશોદા-રોહિણી) એવા કૃષ્ણને અમે આરોગાવીએ છીએ.

શા માટે આરોગાવીએ છીએ? ''પુષ્ટિભક્તિને પ્રાપ્ત કરવા માટે''. આ વેદમંત્રનો અર્થ ભાવાત્મક કર્યો છે.

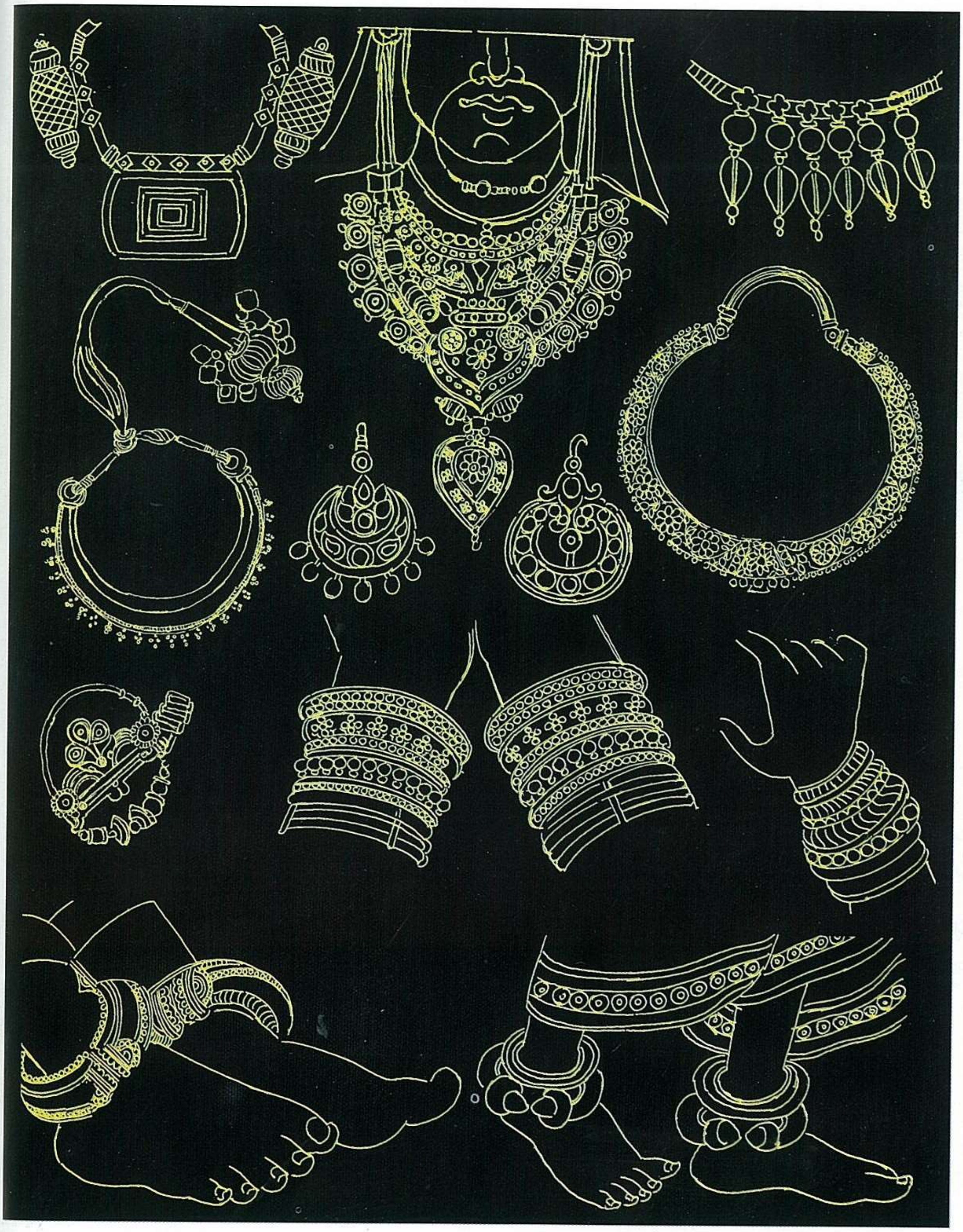

સૌજન્ય : 'રૂપસમ્હીતા' શ્રી વાસુદેવ સ્માર્ત. (શ્રી જયદીપ સ્માર્ત)

દેવલોકની સાંઝી

શ્રીમદ્ ભાગવતના પાંચમા સ્કંધમાં નામરૂપ, અનુમાન અને લક્ષણના ભેદથી ભૂગોળ અને ખગોળનું વર્ણન કર્યું છે. આમાં સુમેરુ પર્વતની ઉત્પત્તિનું વર્ણન છે. જેની ચારે બાજુએ ચાર વૃક્ષો આવેલાં છે તેવું વર્ણન આવે છે. કેરી, જાંબું, કદંબ અને વડ આ ચાર વૃક્ષો ઉપર, હાથી જેટલા મોટા કદનાં ફળ લાગે છે. (આવે છે). જ્યારે આ ફળ પાકી ગયા પછી નીચે પડે છે, ત્યારે તેનો રસ, ત્યાંની હવા, સૂર્યનાં કિરણ અને ત્યાંની ભૂમિ આ બધું એકબીજા સાથે ઓગળી (એકરસ થઈને) જાંબુનાદ નામનું સુવર્ણ તૈયાર થાય છે. ત્યાં આ ઓગળી ગયેલા સુવર્ણને લઈને દેવતાઓની સ્ત્રીઓ જુદી જુદી આકૃતિઓમાં અનેક પ્રકારનાં મનગમતાં ઘરેણાં બનાવે છે. સ્ત્રીઓનાં શરીરનાં ઘરેણાંનો શૃંગાર પોતાની મનોકામના, મનોવૃત્તિની એક ભાષાનું નામ જ શૃંગાર છે. બહુ જ ગંભીરતાથી આપણે વિચારીએ તો સાંઝી પણ આ ધર્મથી જોડાયેલી એક અબોલ ભાષાની સ્વરૂપાકૃતિ છે. જે પ્રમાણ છે. ✿

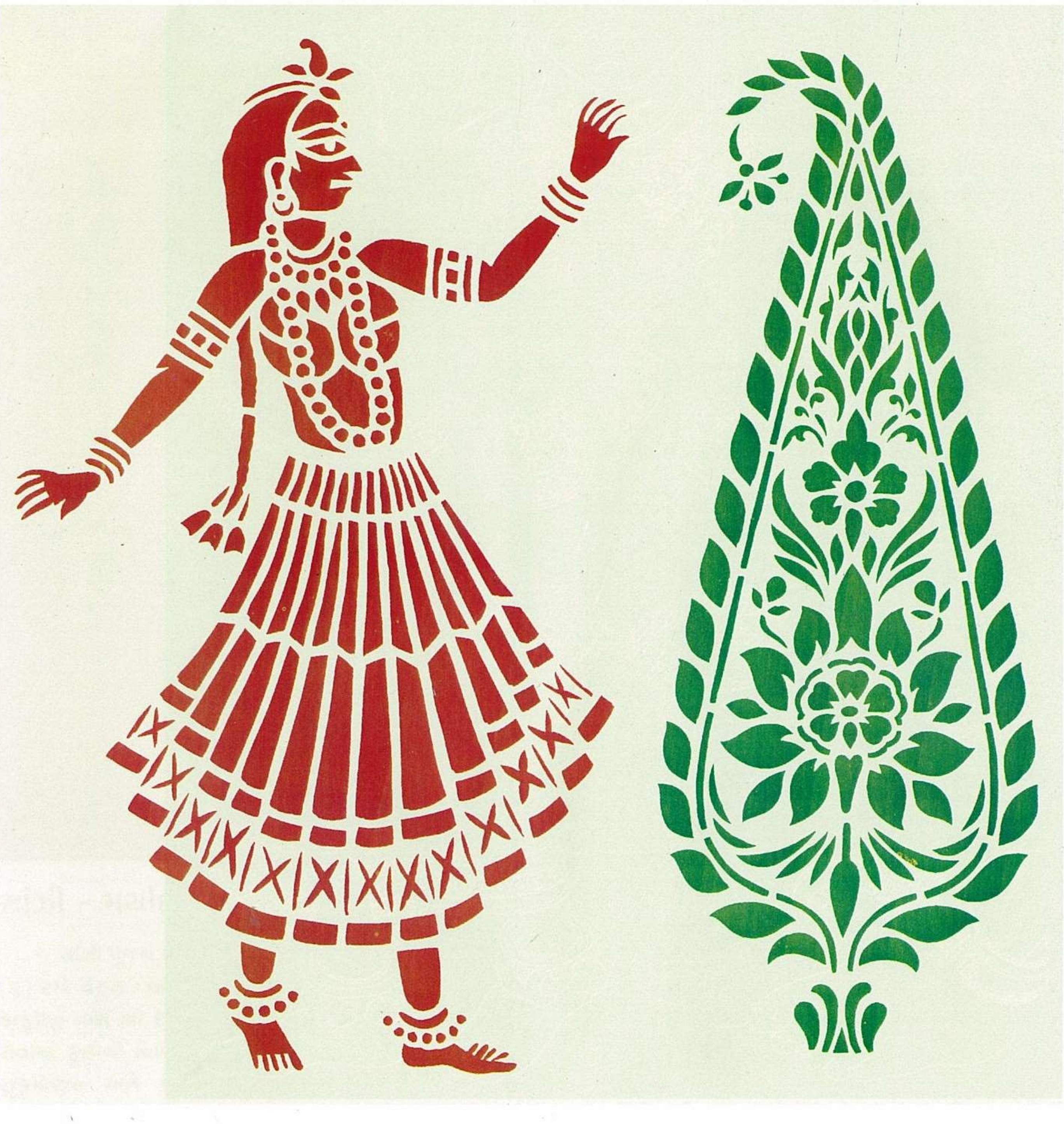

વૈકુંઠલીલામાં સાંઝી :

વૈકુંઠલીલામાં સાંઝીનો સંબંધ ફક્ત ભક્તિ સાથેનો જ છે.

સ્વર્ગમાં સાંઝી :

સ્વર્ગમાં સાંઝીની રચના ઈન્દ્રિયોની તૃપ્તિ માટે અને મનોત્સાહ વધારવા માટે થાય છે. સ્વર્ગમાં સાંઝી સ્વતંત્ર રૂપથી અને મનોત્સાહથી જન્મે છે. સ્વર્ગના એક દેવતાનું નામ ''પુષ્પ-ધન્વા'', ફૂલોનું ધનુષ્ય ધારણ કરતા કામદેવ છે. જેઓનો સંબંધ ફૂલોનાં પરિધાન શૃંગાર સાથે છે.

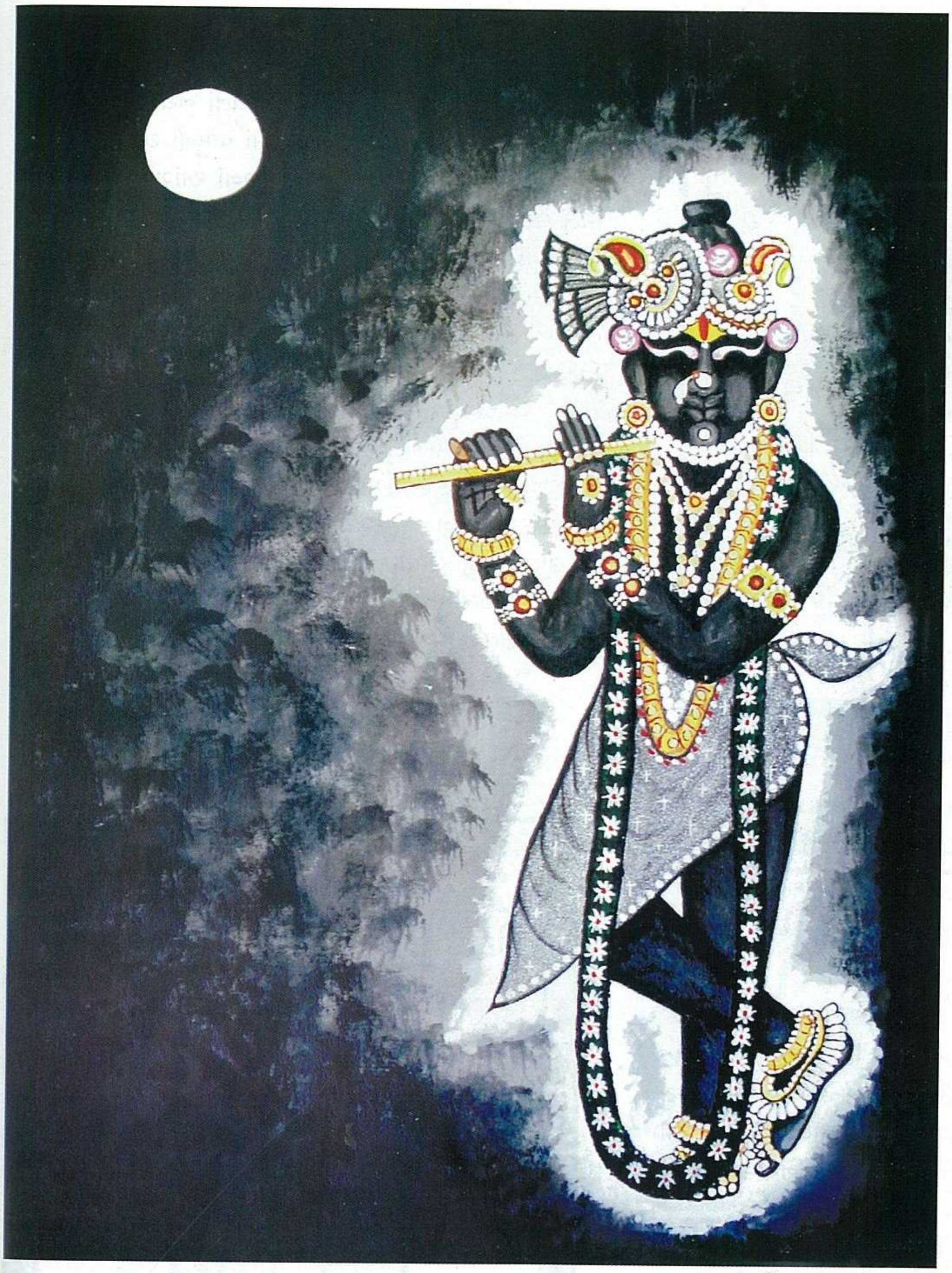

ચિત્રકાર : ગોપાલદાસ

શ્રદ્ધા - શ્રાદ્ધ

વ્રજ મેં જન્મ લેને કે બાદ, કૃષ્ણ કે લિયે અપની હોને કે બાદ, પુનઃ પહેલે સ્વરૂપમેં ન ચલી જાએ। જૈસે જડભરત રાજા, રાજા સે મૃગ, મૃગ સે પુનઃ બ્રાહ્મણ દેવ - માનવ, વાપસ અપની જગહ પર આ ગયે. (મનુષ્ય જન્મમાં).

વૈસે હી વ્રજગોપીઆં અપને પૂર્વજન્મમેં લોટકર નહીં જાના ચાહતી। પહેલે જન્મમેં યહ ગોપીઆં દંડકારણ્ય કી ઋષિ, વેદ કી ઋચા, દેવ સ્વરૂપ ઔર શાસ્ત્ર સ્વરૂપ થી। ઇસમેં કૃષ્ણ વિયોગ કા ભય હૈ। અતઃ સાંઝી ચિતરકર વ્રજકી લીલાસ્થલ મેં અપના ચિત્ત શ્રદ્ધાપૂર્વક, શ્રાદ્ધ કે દિનોમેં સ્થિર કર દેના, યહી લીલા સ્વયં કે દ્વાર સ્વયંકા શ્રાદ્ધ હૈ। અતઃ યહ લીલા શ્રાદ્ધકે દિનો મેં હી આતી હૈ।

શાસ્ત્ર કે પ્રમાણસે શ્રાદ્ધ કે દિનોં મેં પરલોક સે પિતૃશ્વરોકી આત્મા ભૂતલકે ઉપર સુગમતાસે આતી હૈ। ઔર અપના પરલોક વૈસીષ્ઠ (ખાસિયત) સુધારતી હૈ।

હમારી વ્રજગોપીઆં કૃષ્ણ સેવાકી ચાહના મેં વ્રજકી લીલાઓમેં, સાંઝી ચિતરકર અપના ચિત્ત વહાં રખકર અપની આત્માકા સદેહ વૈસીષ્ઠ સુધારતી હૈ। અતઃ હી ઇનકા ભગવત્ સ્વરૂપમેં પ્રવેશ હોતા હૈ।

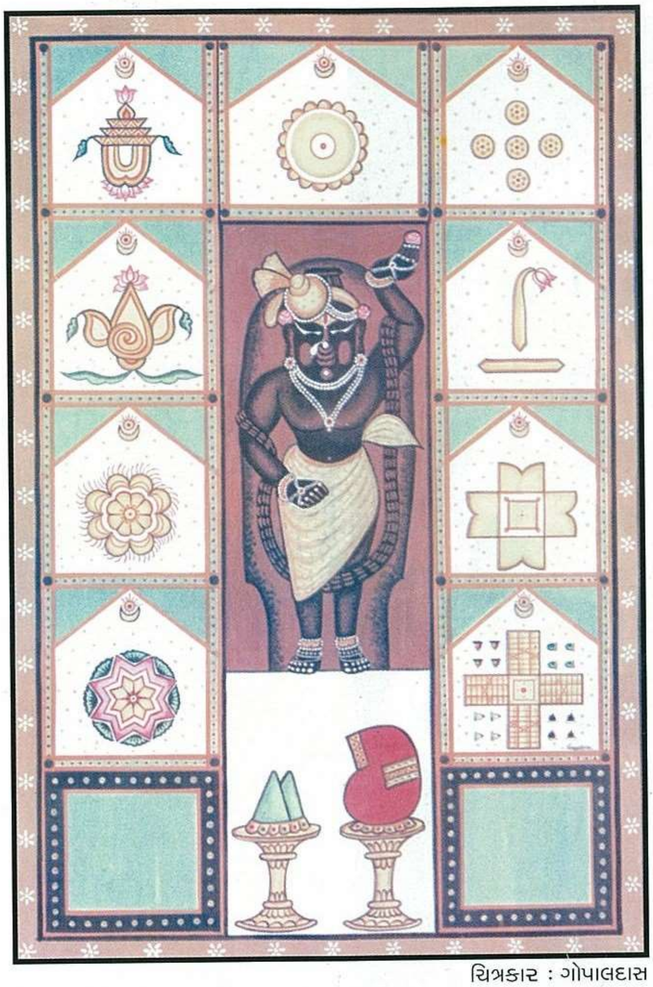

ચિત્રકાર : ગોપાલદાસ

પુષ્ટિ માર્ગમાં શ્રાદ્ધ

દામોદરદાસ હરસાનીજીના સગોત્રી (કુટુંબી) જો શ્રાદ્ધ કરતે તો શાસ્ત્રથી ઉદ્ધાર થયો છે, તો તેઓને શાસ્ત્રમાં વિશ્વાસ થશે. શાસ્ત્રનો ઉદ્ધાર રાહત માત્ર છે. ''વાસ્તવિક ઉદ્ધાર'' તો એ છે, કે જે શ્રી મહાપ્રભુજી દ્વારા વિચારાયેલો (નિર્માણ થયેલો) છે.

એટલા માટે દામોદરદાસજીના પિતૃઓનો વાસ્તવિક ઉદ્ધાર શ્રી મહાપ્રભુજી દ્વારા થવો, એવું જ કર્મ માનવામાં આવશે. જેવી રીતે મર્યાદામાં ભગવાન શ્રી રામચંદ્રજીએ વનમાં પોતાના પિતા દશરથનું શ્રાદ્ધ કર્યું હતું. જોકે ભગવત્ સંબંધ દ્વારા જ દશરથનો ઉદ્ધાર છે, છતાં પણ શ્રી રામની કૃપા છે, કે આપ શાસ્ત્રની મર્યાદાને માન્યતા આપે છે. દામોદરદાસજીના પ્રસંગમાં શ્રી મહાપ્રભુજીના દ્વારા વિદિત (કરાયેલું) કર્મ શાસ્ત્ર મર્યાદાની માન્યતા માત્ર છે. બાકી તો તેઓનો ઉદ્ધાર શ્રી મહાપ્રભુજી દ્વારા થઈ ચૂક્યો છે.

''સૌ યહ મારગ દમલા તોકુહુ પ્રગટ કિયો હૈ।''

(ઇતિ વ્યાક્યાર્થ)

સાર : ''સમ્પ્રદાયમાં શાસ્ત્રકર્મ પણ ગુરુદેવની આજ્ઞા અનુસાર કરવું.''

શ્રાદ્ધના દિવસોમાં સાંઝી

શ્રાદ્ધના દિવસોમાં શુભ કાર્ય થતાં નથી. જે દિવસોમાં શુભ કાર્ય ન થાય તે ખાલી દિવસોમાં પ્રભુની આરાધના માટે વ્રજક્ષેત્રમાં વ્રજકુમારીઓ પોતાનાં ઘરનાં આંગણામાં દરવાજા પાસે ઘરની દીવાલ ઉપર ગોબરની સાંઝી બનાવતી. જે ખાલી દિવસોમાં પોતાનો વિરહતાપ દૂર કરવા અને ઉત્સવવિહીન વ્રજભક્તો પોતાના વિરહની એકાગ્રતાને કેળવવા, પ્રભુની લીલાની સ્મૃતિ સાંઝીમાં વ્યક્ત કરી ઉત્સવ-પ્રિય શ્રી ઠાકોરજીનો વિશિષ્ટ ઉત્સવ મનાવતી.

શ્રાદ્ધના ખાલી દિવસોને અતિ ગૂઢ ઉત્સવમાં ફેરવી ગોપીજનોએ પોતાની હૃદયોગમ્ય વ્યથાને વ્યક્ત કરી, પ્રભુને ફળ રૂપે પ્રાપ્ત કરવા માટે સાંઝીની રચના કરી. પ્રભુસેવામાં વલ્લભકુળ અને વહુ-બેટીજીઓએ નિત્ય નૌતમ સાંઝીમાં વ્રજલીલાઓનું નિર્માણ (રચના) કરવાનો નિયમ (પ્રથા) શ્રાદ્ધના દિવસોમાં બનાવ્યો. શ્રી ઠાકોરજીને રીઝવવા માટે આ સાંઝી ઉત્સવ આજે પણ ક્રમશઃ ઉજવાય છે.

''શ્રી ઠાકોરજી ઉત્સવપ્રિય છે.''

*

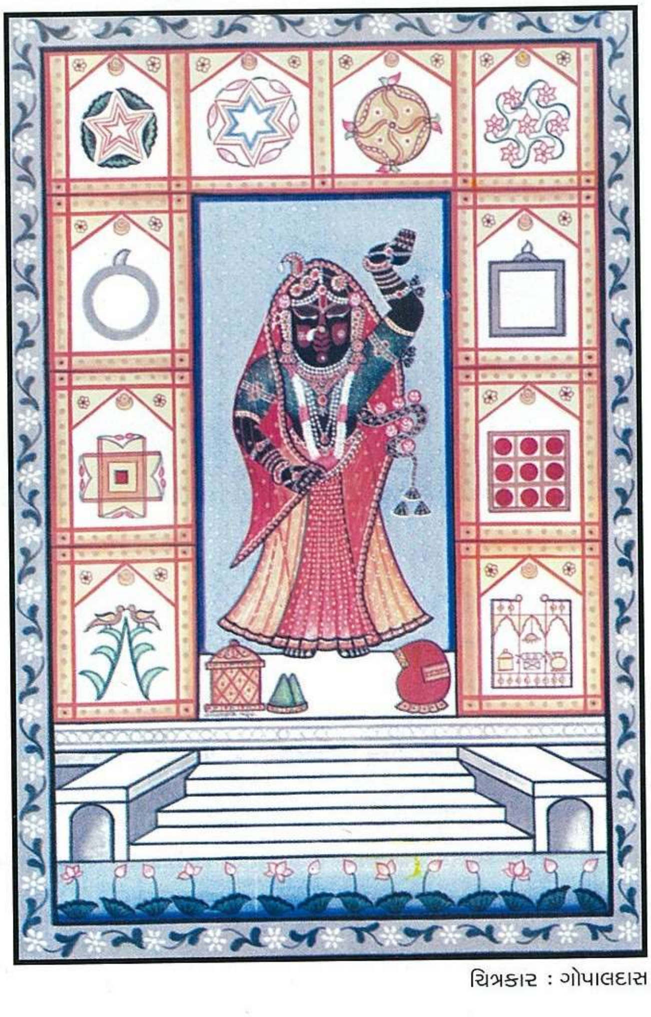

ચિત્રકાર : ગોપાલદાસ

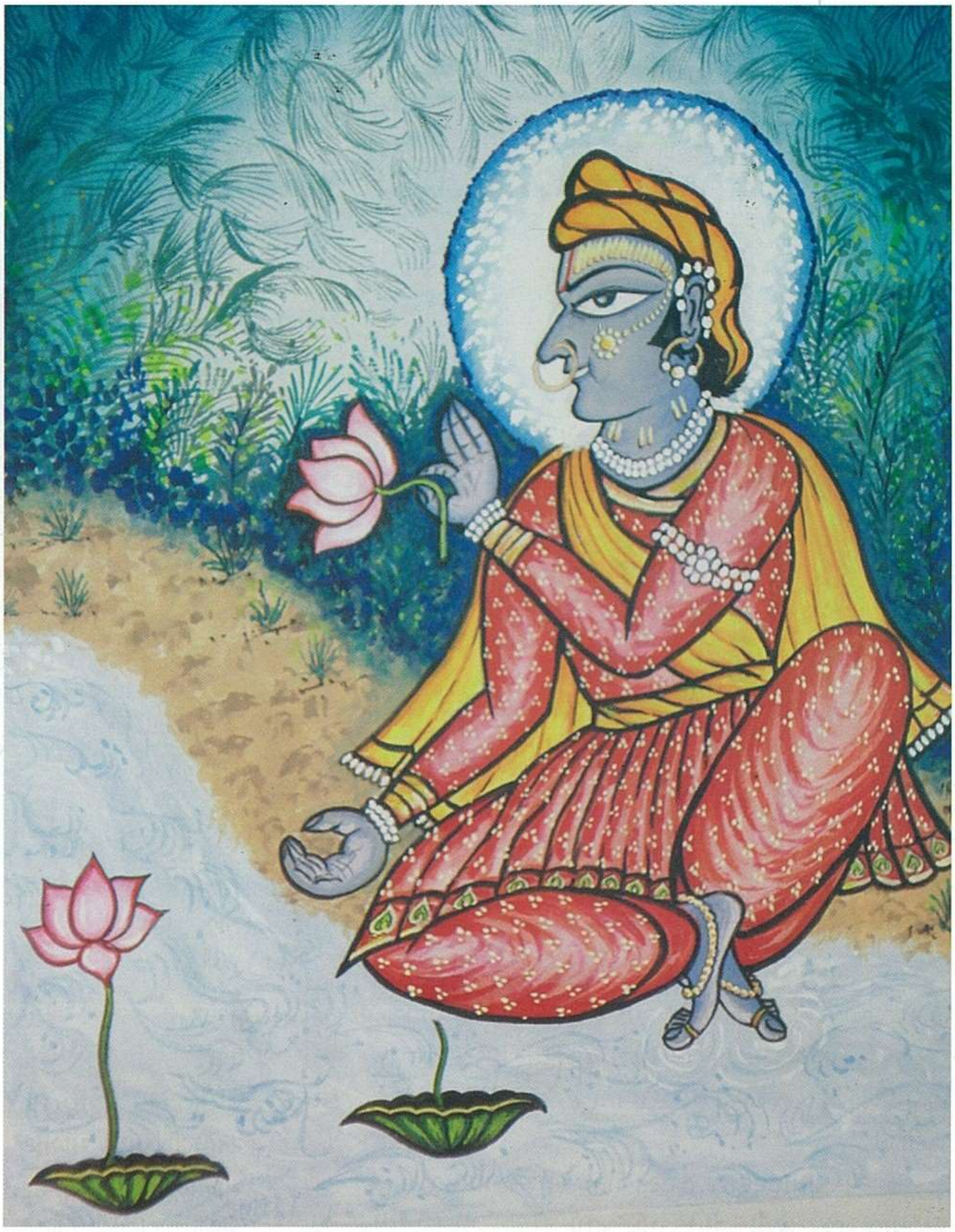

શ્રીયમનાજીની કુંજ (ચિત્રકાર : ગોપાલદાસ)

પુષ્ટિ માર્ગ - સાંઝી

શ્રી ગુસાંઈજીને દામોદરદાસ હરસાનીજીએ શ્રાદ્ધની દક્ષિણામાં દોઢ શ્લોક કહ્યો અને આગળ કહેવા કહ્યું, ત્યારે સંકલ્પ આગળ ધર્યો. દામોદરદાસ હરસાનીજીએ પ્રણાલિકાનું માહાત્મ્ય વધારીને એ પક્ષ આગળ ધરી, શ્રાદ્ધની સામે શ્રદ્ધા (ભક્તિ)નો પક્ષ આગળ કર્યો.

દામોદરદાસજીને સ્વયં શ્રી મહાપ્રભુજી નિત્ય લીલામાં સાથે લઈને પધારતા. [નિત્ય લીલા ગો. સ્વામી શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજશ્રી(કાંકરોલી)ની આજ્ઞા અને આશીર્વાદ સાથે આપશ્રીની સાન્નિધ્યમાં પ. ભ. દામોદરદાસ શર્માજીએ સિદ્ધ કરેલ સર્વોત્તમજીના ચિત્રજીના આધારે] જે નિજધામની લીલા સ્વરૂપ ચિત્ત સાથે જોડાયેલું, દોરાયેલું અને કોતરાયેલું (અંકિત થયેલું) હતું તેનું વર્ણન દામોદરદાસજીએ શ્રીગુસાંઈજી સન્મુખ કર્યું અને ચિત્તના ચિતારા એવા પરમ કૃપાળુ શ્રી ગુસાંઈજીએ સાંઝી લીલા દ્વારા ચિત્તના ચોરનારા શ્રી ઠાકોરજી સન્મુખ સેવા પ્રકારમાં સાંઝીનું પુનઃસ્થાપન કર્યું. આપની કૃપાદૃષ્ટિથી આપના સેવકજનોને લીલા દૃષ્ટિ કેળવવાનું અનોખું કલાત્મક દાન સાંઝી દ્વારા કરાવ્યું.

નિત્ય લીલાના સંબંધે જોડાયેલા રહેવા માટે શ્રી મહાપ્રભુજી (શ્રી સ્વામિનીજી સ્વરૂપા) દામોદરદાસને (શ્રી લલિતા સ્વરૂપા) કહેતા કે, ''દમલા, બડી બેર ભઈ, શ્રી ઠાકોરજીકી વાર્તા નાહીં કરિ.'' આ સંબોધન એકાંતમાં દામોદરદાસજી (લલિતાજી)ની સાથે બેસી, સખી રૂપના પ્રબળ વિરહાગ્નિને સંયોગાત્મક રીતે પ્રજ્વલિત કરી, લીલા વિરહ તાપાગ્નિમાં અન્યોન્ય બની જતાં.

આ વિરહ મિલનનો તાપાત્મક ભાવ પરસ્પર એકબીજાના હૃદયકમળ ઉપર સદા માટે છપાઈ (અંકિત-ચિહ્નિત) જતો. એ

છાપ-છાપા, કોતરાયેલા સ્વરૂપા રૂપ સાંઝી, સમ્પ્રદાયના દૈવી જીવોને જન્મોજન્મનું તાપ-નિવારણ કરવાની કૃપા ફળ રૂપ બની રહ્યું છે. દૈવી જીવોનો પરિતાપ દૂર કરવાનું પ્રાયોજિત ફલ ''સાંઝી''.

શ્રી દામોદરદાસ હરસાનીજી શ્રી મહાપ્રભુજીના અનન્ય કૃપાપાત્ર છે. જેવી રીતે પુષ્ટિજીવો ઉપર કૃપા કરીને શ્રી મહાપ્રભુજીએ આત્મનિવેદન કરાવ્યું છે, તેવી જ રીતે શ્રી દામોદરદાસજીને શ્રી મહાપ્રભુજીએ આત્મનિવેદનની સાથે સમ્પ્રદાયનું સર્વસ્વ પણ સોંપ્યું છે, કારણ કે ષોડશગ્રંથમાં શ્રી મહાપ્રભુજીએ ગોલોકધામ પધરાવવાની ભગવદ્આજ્ઞાનો ઉલ્લેખ કર્યો છે. કદાચિત શ્રી મહાપ્રભુજી ભગવદ્આજ્ઞા માનીને નિત્ય લીલામાં પધારે ત્યારે સંપ્રદાય કોને સોંપીને જાય? એના માટે આપશ્રીએ દામોદરદાસને કહ્યું છે, ''દમલા જો યહ મારગ તેરે લિયે પ્રગટ કીયો હે.'' જ્યાં સુધી નિત્ય લીલામાં દામોદરદાસને પધરાવવાનો પ્રસંગ છે, તે પુષ્ટિમાર્ગીય નિત્ય સેવા અને માનસી ચિંતન છે. તેથી દામોદરદાસજીને સાથે પધરાવીને લઈ જવું ઉચિત છે. શ્રીમદ્ ભાગવતના નવમા સ્કંધમાં સૂર્ય વંશના કોઈ રાજાનું નામ છે, કે કલયુગમાં ધર્મ નષ્ટ થવાથી એ સૂર્ય વંશી રાજા હિમાલયની કોઈક કંદરામાંથી બહાર નીકળીને ફરીથી ધર્મની સ્થાપના કરશે. એ આશયથી શ્રી મહાપ્રભુજીએ દામોદરદાસને જોયા છે, કે મારા (શ્રી વલ્લભ) પરમધામ ગમન પછી પુષ્ટિ માર્ગની સ્થાપના શ્રી વિઠ્ઠલનાથજીના હૃદયમાં દામોદરદાસ સ્થાપિત કરશે. આ પ્રસંગના આધાર પર વૈષ્ણવના સ્વરૂપની આદરણીય ભાવના સ્થાપિત થાય છે, જે પુષ્ટિ માર્ગને આપણે વૈષ્ણવ ધર્મ કહીએ છીએ. જે પોતાના સ્વામિની કૃપાપૂર્ણ રસ્તાથી આપેલી પુષ્ટિ માર્ગીય સેવા ભાવ સંપત્તિ (ગુરુવત્ ગુરુપુત્રેસુ) માનીને દીનતાના રસ્તે બધું જ્ઞાન ગુરુપુત્ર શ્રી વિઠ્ઠલેશ પ્રભુને સોંપી દીધું. અહીંથી વૈષ્ણવના સ્વરૂપની આદરભાવના શરૂ થાય છે.

શ્રીમદ્ પ્રભુચરણે પોતાના પૂજ્ય પિતૃચરણના સંપ્રદાય રહસ્યવાળાં વાક્યોને દામોદરદાસજીના શ્રી મુખથી સાંભળીને જે છે તે જ (જ્યોં કી ત્યોં) પ્રમાણે સ્વીકાર કરીને સૈદ્ધાંતિક રીતે આગળ વધાર્યાં છે. એમાં પોતાનું કશું પણ ઉમેર્યું નથી, કારણ કે વૈષ્ણવના મુખથી પ્રાપ્ત પૂજ્ય શ્રી પિતૃચરણનાં વાક્ય છે. બાકી બધા જ સંસારના શ્રોતા જયારે કોઈ ધર્મગ્રંથોમાંથી કશુંક જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરે છે, ત્યારે એના સ્પષ્ટીકરણ અને ખુલાસા માટે પોતાના સામર્થ્યનો ઉપયોગ કરે છે.

શ્રીમદ્ પ્રભુચરણ શ્રી વિઠ્ઠલેશ પ્રભુએ દામોદરદાસના બતાવેલા (કહેલા) માર્ગમાં કોઈ પણ પ્રકારનો ફેરફાર કર્યો નથી. કાંઈ પણ અવલેહના થવાની આશંકા થવાથી દામોદરદાસજીએ પણ શ્રીમદ્ પ્રભુચરણને બે ટૂક અક્ષરમાં સ્પષ્ટ કર્યું છે કે, ''રાજ યહ માર્ગ હાંસી ખેલકો નાંહી.'' લક્ષણા વૃત્તિથી દામોદરદાસજી સદા શ્રી મહાપ્રભુજી સાથે નિત્ય લીલામાં બિરાજે છે. ✿

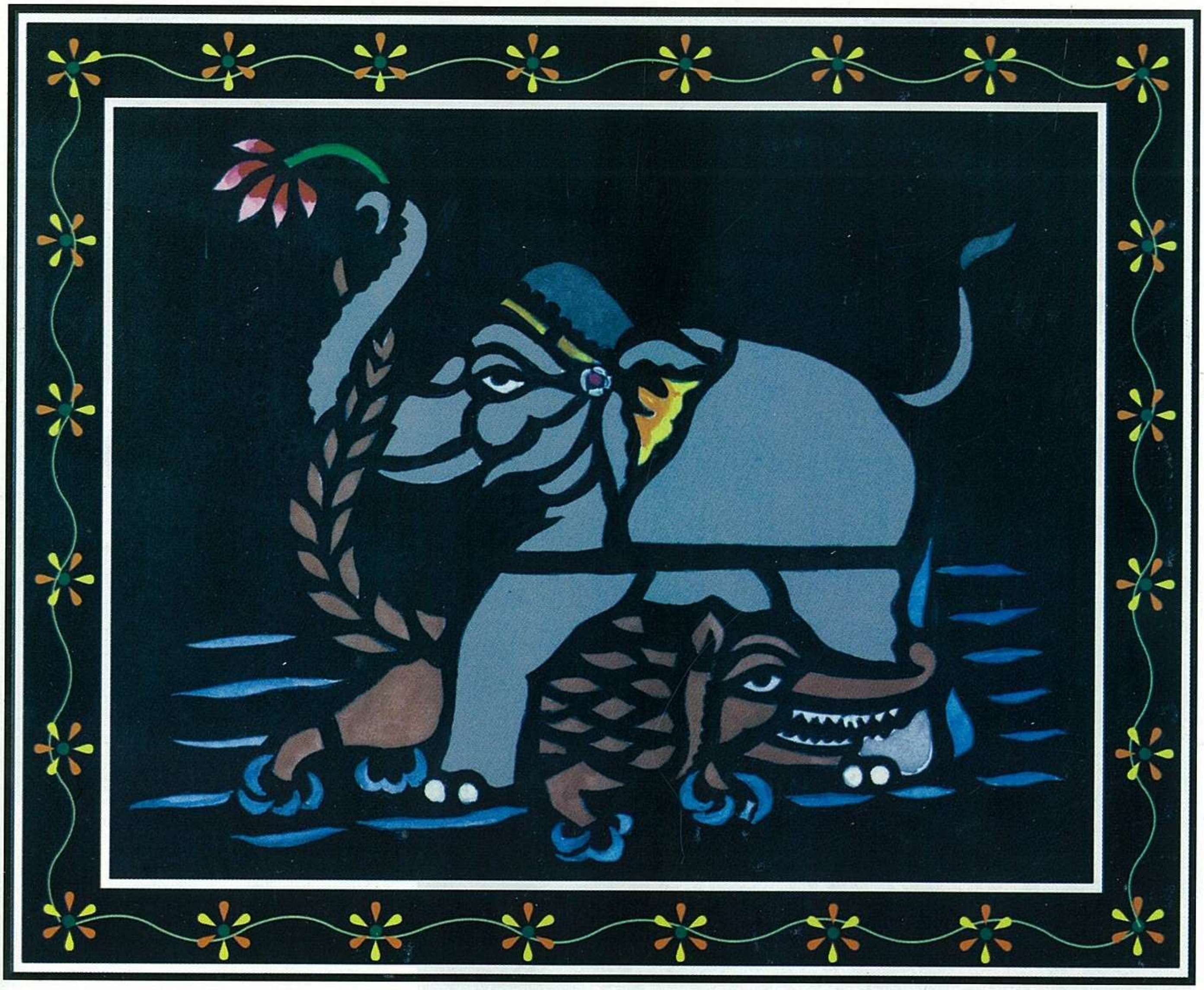

સાંઝીનો આશ્રય

શંકરનો આત્મવિશ્વાસ છે કે મારા મસ્તક ઉપર શ્રી ઠાકોરજીનાં ચરણારવિંદને સ્પર્શ કરતું જળ બિરાજે છે, જે જટામાંથી ગંગાજી થઈને ભૂતલ ઉપર વહે છે. જેમાં સ્નાન કરવાથી ભક્તોનાં પાપ ધોવાઈ જાય છે. જો તે જળ પ્રભુના ચરણારવિંદનું ચરણામૃત ન હોત તો ભક્તોના (જીવના) શરીરને પણ ઓગાળી નાખત.

સ્નાન કરવાથી પાપ તો જતાં રહ્યાં અને શરીર બહાર આવી ગયું. ઠીક આવી જ રીતે વ્રજલીલાથી વિરહણીના દેહ પણ બળીને રાખ થઈ જતા, જો સાંઝી રૂપી ગઈ કાલની સાંઝીલીલાનો આશ્રય આજે ન થયો હોત તો. સાંઝીના આશ્રયથી (રચનાથી) તેઓના દેહ નિત્ય રહ્યા, અને જીવન તાપ વિરહથી જીવનનો (દેહનો) અંત ના થયો.

વિચારશીલ વ્યક્તિઓનાં આંતરિક લક્ષણોમાં સાંઝી ભગવદ્ કથા લીલા ગુણાનુવાદનું મૂર્તિ રૂપ સ્વરૂપ છે. જેવી રીતે ગર્ભથી જન્મ લેવાવાળા બાળક અથવા બાલિકામાં, માતા અને પિતાના હાવ-ભાવ-ઉમીહાર-છબી-છટાનાં લક્ષણોથી માતા-પિતાની ઓળખ થાય છે તેવી રીતે કથા શ્રવણ રૂપી ધર્મ વ્રજગોપીઓનાં હૃદય રૂપી ગર્ભમાં પ્રવેશ કરે છે. કેટલાક સમય પછી એ ધર્મ સ્નેહથી સિંચન થઈને જ્યારે મૂર્તિ રૂપે બહાર પ્રગટ થાય છે, ત્યારે બહુ લીલાઓ સાંઝીના રૂપથી પ્રગટ થાય છે.

''અલૌકિક હૃદયમાં આવે છે.'' કથા સાંભળીને હૃદયમાં પ્રગટ થયેલા ભાવ સાંઝી સ્વરૂપે મૂર્તિમંત થાય છે.

વેણુનાદ સાંભળીને રાસમાં પધારેલી ગોપીઓને જ્યારે ભગવાને પાછા ઘેર જવા માટે કહ્યું ત્યારે તે બધી ગોપીઓનાં હૃદયમાં ભગવાનનાં તે વાક્ય વસી ગયાં હતાં. આ ચિંતાવાળાં વાક્ય વ્રજગોપીઓના દ્વારા ચરણારવિંદની નખક્રાંતિથી ભૂમિને ખૂરેદી (ખોદી)ને આડી - અવળી લકીરો (રેખાઓ)ના રૂપમાં પ્રગટ થયાં. આવી જ રીતે આનંદભર્યાં વાક્ય વ્રજગોપીઓના કરકમળથી સાંઝી રૂપે પ્રગટ થયાં.

।। विम्बाधराणी चरणेन् भूवम लिखन्त्योः ।।

(શ્રીમદ્ ભાગવત -૧૦ સ્કંધ - ૨૯ અધ્યાય - ૨૯ શ્લોક)

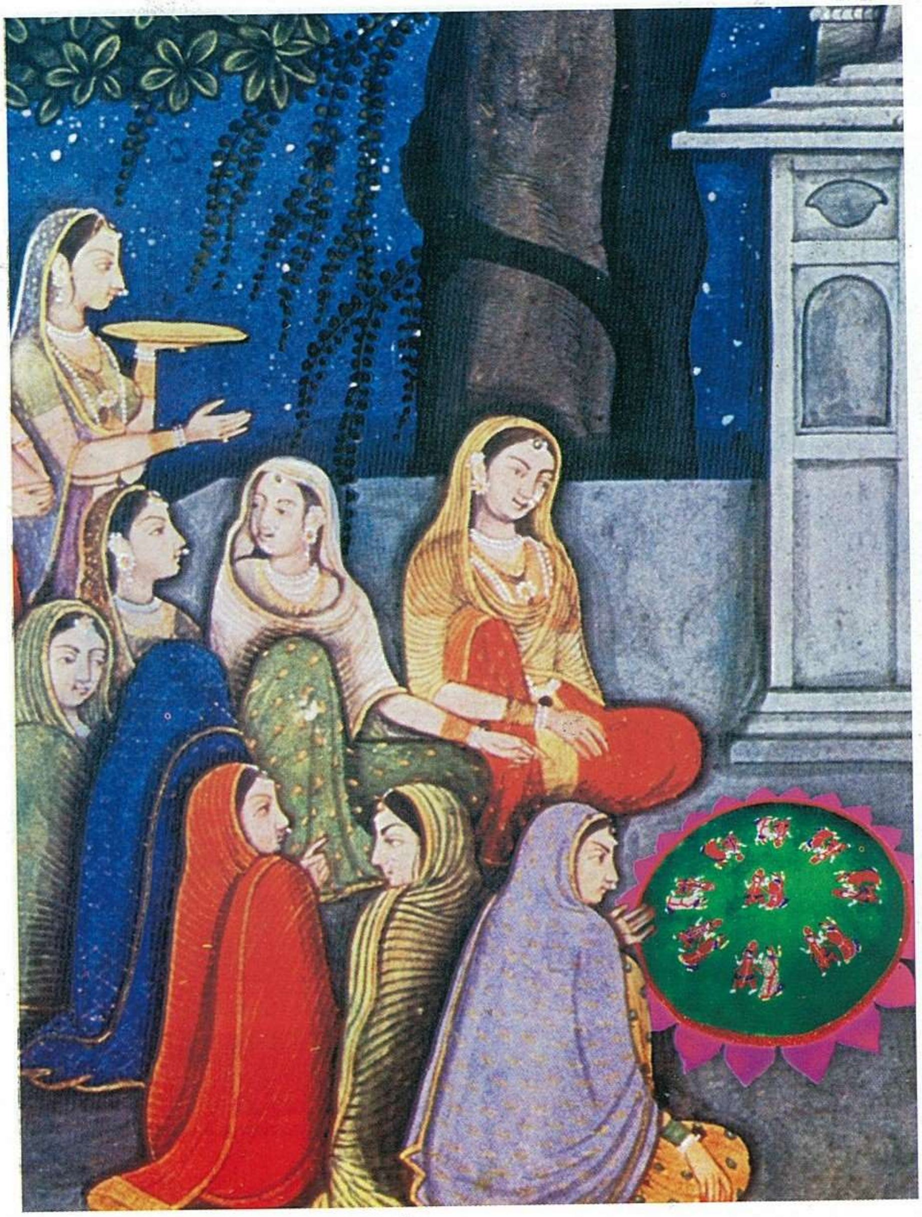

ગોપીઓંકા ચિત્ત સાંઝી મેં

શ્રી મહાપ્રભુજીએ ભ્રમરગીત કે પ્રસંગમેં કહા હૈ કી, ''વ્રજગોપીઓં કો પુષ્ટિ કે હિસાબસે કૃષ્ણ વિરહ સંભવ નહીં હૈ। ક્યોંકી કૃષ્ણ બ્રહ્મ હૈ। ઔર બ્રહ્મ સર્વત્ર હૈ।'' ઇસલિયે વિરહ અસંભવ હૈ, યદિ હૈ તો લીલાકા વિરહ હૈ।

વિરહ લીલા સંબંધકા હોતા હૈ। યશોદોત્સંગ કૃષ્ણ કે લીલાઓંકી અધિકારીણી શ્રી ગોપીજન હૈ। કલ જો લીલાકા વિરહ હુઆ હૈ, લીલા સ્થલ સહિત આજ અભી તક ઉસી સંયોગ રસમેં અપની વિરહાવસ્થા કો જીવનદાન દેકર અપને જીવન કો પરિપૂર્ણ બના રહી હૈ।

ગોપીગીત કા પહેલા શ્રોક, 'જયતિ તેધિઙ્કં'...

કુલ મીલાકર ગોપીગીત લીલાકા હી વિરહ હૈ। નંદ મહોત્સવકી લીલા કા વિરહ હૈ। નંદ મહોત્સવ કે ઉસ વિરહસે વ્યથિત કોઈ ગોપી પ્રાણ ધારણ કરનેમેં અસમર્થ હૈ, તો વહ નંદ મહોત્સવસે આગે ગોચારણ, આગે લીલાઓંકો સાંઝી મેં દેખકર અપને પ્રાણ ધારણ કરને મેં સક્ષમ હૈ।

જો ગોપી વિરહમેં પ્રાણ છોડનેકી સ્થિતિ તક પહુંચ ગઈ, વહ અપને પ્રાણ નહીં છોડ પાયી। ક્યોંકિ સાંઝીકી કલા કો ''સાંઝી ચિત્તના'' કહતે હૈ।

ઇસકા અર્થ યહ હૈ, ઉસ ગોપીને અપના ચિત્ત સાંઝી મેં દે દિયા। અબ મૃત્યુ ભી ઉસ ગોપી કે, ઉસ દેહ કો લે જા કર ક્યા કરેગી? જિસ દેહમેં ચિત્તકે લૌકિક રંગ ન મિલે। વહાઁ તો સબ અલૌકિક રંગ હૈ। અતઃ વહ લીલા કી પાત્ર હૈ। મૃત્યુને કહા યહ હમારી પાત્ર નહીં। અતઃ મૃત્યુ ઉસે નહીં લે જા શકે। અતઃ વિરહણીકા વિરહ મૃત્યુદાન કરનેવાલા નહીં રહા।

યહ સાંઝી કી ઉપસ્થિતિ કા ફલ હૈ, ઔર વિરહ શ્રી હરિરાયજી કે પ્રમાણસે દશમ દશા હૈ।

''સાંઝી વિરહી ગોપીઓના પ્રાણ બચાવવામાં સહાયક છે, મદદગાર છે.''

''સાંઝી ભૂતકાળની લીલાનું ચિંતન છે.''

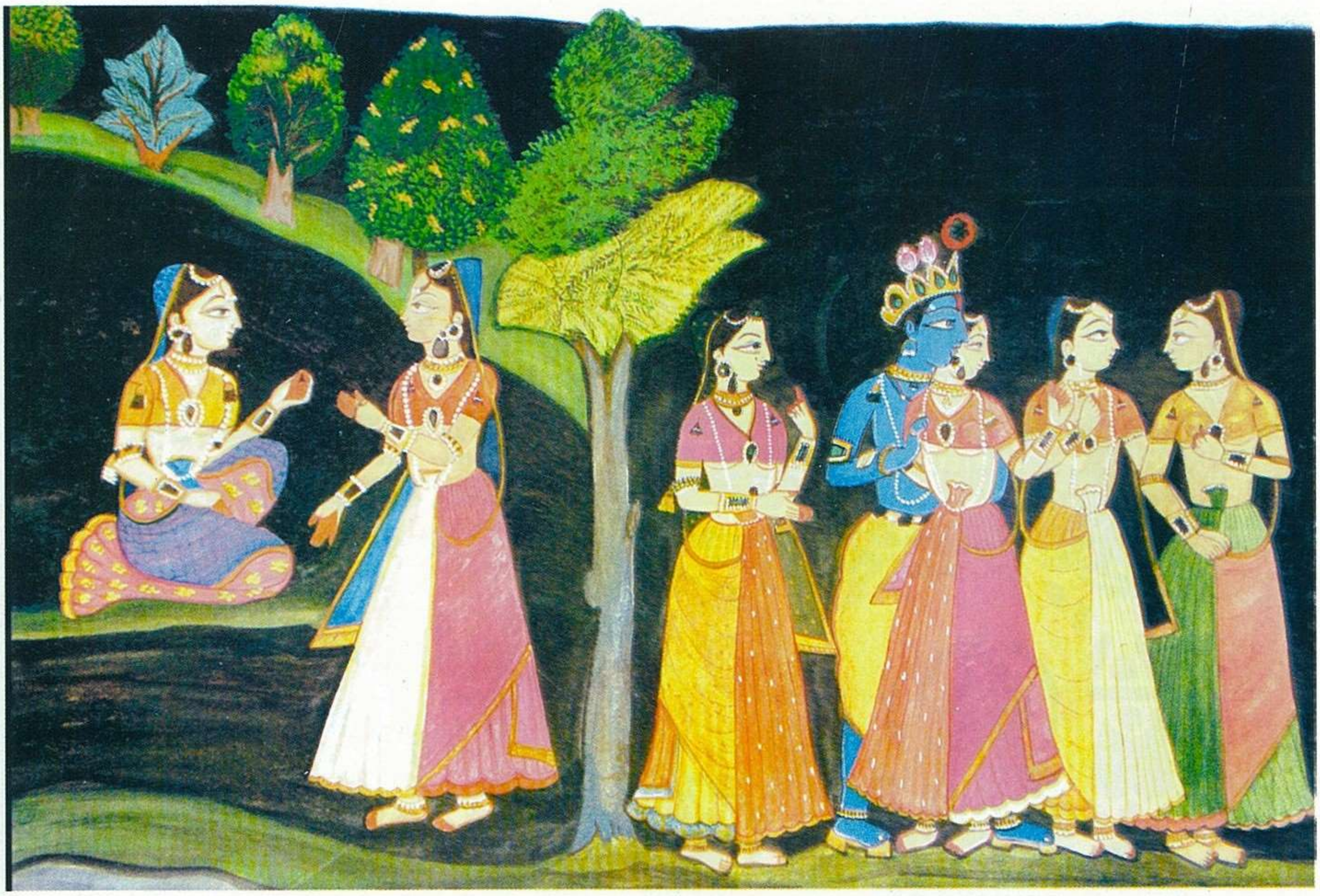

૫. ભ. શ્રી વૈષ્ણવદાસજી કમ્બલવાલા (મથુરા)ના સૌજન્યથી

સાંઝી અને વ્રજભક્તોનો વિરહતાપ

વાસ્તવિકતામાં ''આપણે જીવી રહ્યા છીએ.'' આપણું મૂળ સ્થાન શોધવા આપણો વિરહ છે. મૂળ સ્થાન સાથે આપણું વાસ્તવિક જીવન કેટલું જોડાયેલું છે. જેનું સંયોજન અને પ્રામાણિક્તાથી સંબંધિત સ્થળની વાસ્તવિકતાના પ્રવાહને વેગ આપવા માટે સાંઝીનું નિર્માણ વ્રજભક્તો કરે છે. ચિત્ત ઉપર છવાયેલી વિવિધ ઝાંખીનાં ધુંધળાં ચિત્રોને સ્પષ્ટપણે ઓળખવાના વિરહાત્મક પ્રયાસ રૂપે વ્રજભક્તો પ્રભુ સન્મુખ સાંઝી લીલાનું સ્વરૂપાત્મક સર્જન કરે છે. જલદીથી લીલા વિયોગના નિવારણ અર્થે પ્રભુની સન્મુખ સાંઝી ધરીને વ્રજભક્તો રાત્રીનો વિરહતાપ દૂર થવાની પ્રતીક્ષા કરે છે.

જિસકો હમ સંપ્રદાય કહેતે હૈ, વો શ્રી ઠાકોરજી કી ઇચ્છાકા ફલ હૈ.

વિરહસે સુખી હુઈ ગોપીઓં

જિસકો જ્ઞાનકી જરૂરત હોતી હૈ, વહ જ્ઞાની તૈરને કા જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર લે ઔર તૈરના ન સીખા ઉસે કહીં ભી ડૂબને કા ડર હૈ। જિસકો જ્ઞાનકી જરૂરત નહીં ઐસા વિરહસે કાષ્ઠવત્ જિસકા સૂખા શુષ્ક જીવન હૈ, ઉસકો વિરહસે સુખી હુઈ વ્રજગોપીયાં નૌકા રૂપ હૈ। જો અપને સહારે લીલા સાગર મેં સબકો રમણ કરાતી હૈ। ઇન વ્રજગોપીઓં કે સહારે કે બિના સાગરમેં કિતની બાર બ્રહ્મા, શંકર, લક્ષ્મી ગોતા ખા ગયે। (ભાગવત્ ૧૦ સ્કંધ)

(૧) સેવા = નિત્ય ઉત્સવ, મનોરથ

(૨) વસ્ત્ર (સાજ) = ઋતુ અનુસાર

(૩) શૃંગાર = ઋતુ અનુસાર

(૪) સુભગ રસ : ભગ = છ રસ (આરોગવામેં છ રસ હોતે હૈ) ખટરસ, જો જો સેવા કે અનુરૂપ ચતુર (દક્ષ) હોતે હૈ। રાજભોગ - શયનભોગ (રાજભોગાત્મિકા) = સુભગરસ (સામગ્રી)

યહ ચાર પ્રકારકી ગોપીઓં કે સત્સંગ સે ઓદ્ધવ કો યહ જ્ઞાન ગોપીઓં કે વિરહાનુભવસે મિલા થા। શ્રી ઠાકોરજીને યહી ચાર પ્રકાર કી ગોપીઓ (ચતુર વ્યૂહાત્મક) પ્રભુને અપને સ્વરૂપ મેં સેવા કરતી હુઈ ઓદ્ધવજીકો દિખાઈ થી। (નંદદાસજીકી રાસપંચાધ્યાયી)

ભ્રમરગીત

रोम रोम प्रति गोपीका हो गई सगरे गात।

कल्पतरु भयो सांवरो व्रज वनिता भई पात॥

ઉપરોક્ત સે આજકે શ્રી કે દર્શન કરકે યહ સમઝ પાયેંગે, દિન વ્રજગોપીઓંકે વિરહ સ્વરૂપ આજકી નિત્ય સેવા હૈ।

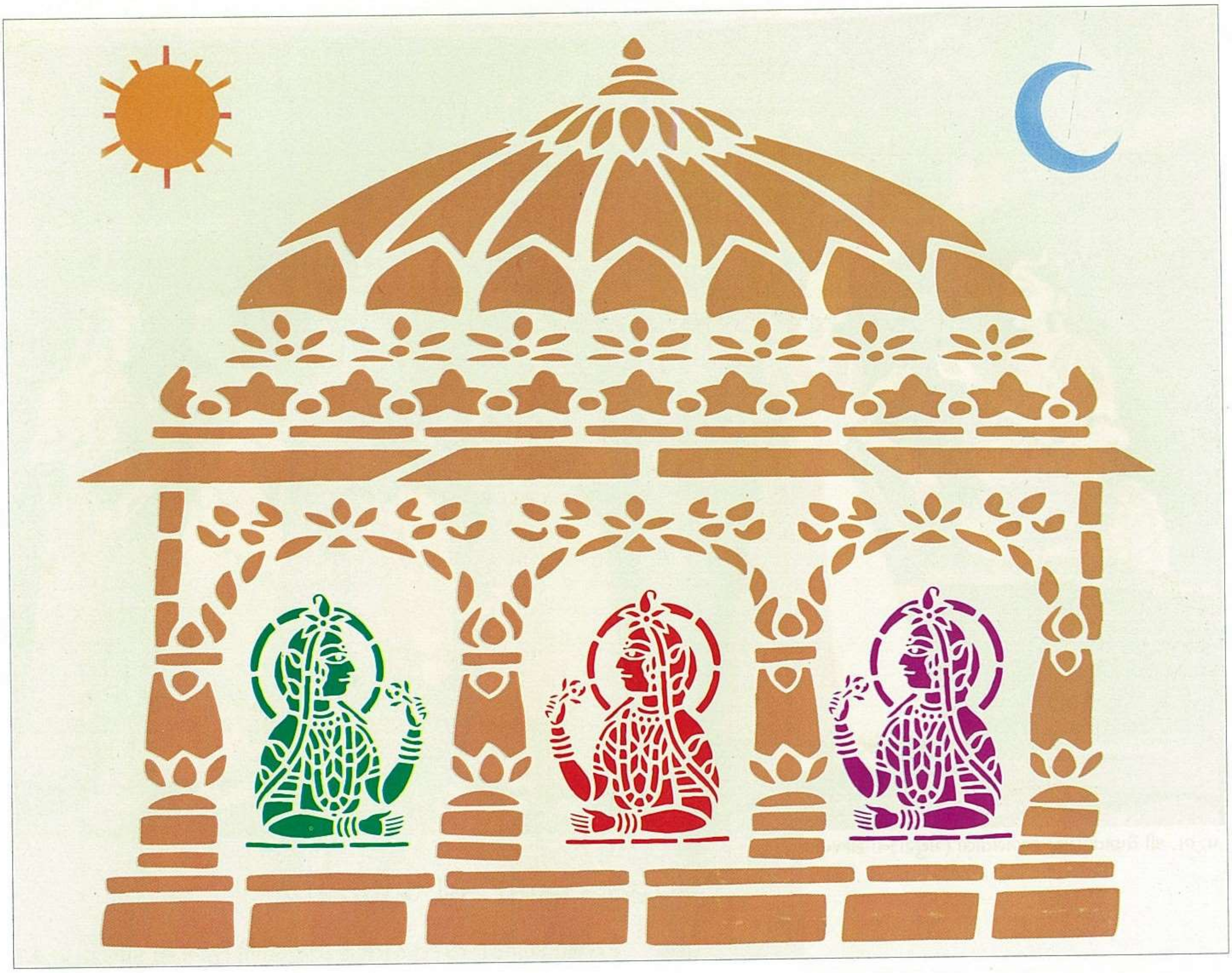

સાંઝી પરંપરા

શ્રીમદ્ ભાગવત દશમ સ્કંધ પૂર્વાર્ઘ જન્મ પ્રકરણમાં ભગવાન શિવને સમાધિમાં શ્રી ઠાકોરજીએ આજ્ઞા કરી કે, ''દેવતાઓને કહી દો કે, વ્રજમાં સ્ત્રી વેશ ધારણ કરે.'' શેષવેદ, ઋષિ, શ્રુતિને પૂર્વ કાળમાં (પ્રાકટ્ય) આજ્ઞા આપી હતી કે, ''વ્રજમાં સ્ત્રી વેશ ધારણ કરી પ્રગટ થજો. ત્યારે હું સ્વતંત્ર પુષ્ટિ લીલા કરીશ.'' આ વાક્યને અનુસાર વ્રજમાં રહીને જે સ્વતંત્ર પુષ્ટિ લીલા થઈ, તે જ પુષ્ટિ લીલા આજ દિવસ સુધી પૃથ્વી ઉપર જેમની તેમ કોઈ પણ પ્રકારથી અટક્યા વગર શ્રી વલ્લભકુળના સાન્નિધ્યમાં પુષ્ટિ હવેલીઓમાં થઈ રહી છે.

બીજી રીતે આપણે વિચારીએ તો સારસ્વત કલ્પ પર્યંતની સતત પ્રવાહી લીલાને જોવાવાળી આંખનું નામ પુષ્ટિ માર્ગ છે. ગંગોત્રી અને યમનોત્રીનું ઉદ્‌ગમ સ્થળ સહજ જોવા મળતું નથી, પરંતુ ભૂતળ ઉપર પર્વતોથી ઉતરીને ગંગા-જમના જ્યાં પહેલી વખત દર્શન આપે છે, આપણે તે જળને હાથમાં લઈને કહીએ છીએ કે, આ તે જળ છે જે ગંગોત્રી-જમનોત્રીમાં દુર્લભતાથી જોવા મળે છે. તેવી જ રીતે સારસ્વત કલ્પમાં થવાવાળી દુર્લભ શ્રી કૃષ્ણ લીલાઓ છે. તે સેવા રૂપી દુર્લભ પહાડોથી ટકરાઈને (અથડાઈને) વર્તમાનમાં નંદાલય સ્વરૂપ પુષ્ટિ માર્ગની હવેલીમાં જેમની તેમ એવી જ જોવામાં આવે છે.

અહીં વિચારવા જેવી મુખ્ય બાબત એ છે કે, શ્રી કૃષ્ણના પ્રાગટ્ય કાળથી લઈને, આજ સુધી નંદાલય, નિકુંજ અથવા સદાનંદ - પરમાનંદ સેવા પુષ્ટિ માર્ગમાં જેવી છે તેવી જ સ્થિત છે, એમાં કોઈ પણ પ્રકારની ભૂલચૂક અથવા સ્વેચ્છાચાર (અટકચાળું) થયો નથી. એટલા માટે પુષ્ટિમાર્ગથી, પુષ્ટિ થયેલ જે રીતરિવાજ છે તે જેમના તેમ જ છે. તેમાં કોઈ પણ પ્રકારની ભૂલચૂકની આશા રખાય નહીં.

''સેવા, સાજ, શૃંગાર, સુભગરસ શ્રી વલ્લભ પ્રગટાયો, વૃંદાવન નિકુંજકી લીલા હરજીવન સ્વાદ ચખાયો.'' જે ભગવદીય પુષ્ટિ માર્ગનો રસાસ્વાદ માણે છે, તે રસાસ્વાદ સારસ્વત કલ્પનો જ રસાસ્વાદ છે.

પુષ્ટિ માર્ગની પરંપરા

''પુષ્ટિ માર્ગની પરંપરામાં બાંધછોડ કરી નથી. ફેરફાર થઈ શકે નહીં અને ફેરફાર થવા માટેની કોઈ જગ્યા પણ નથી. એટલા માટે આધિમૂલક સેવા માર્ગનું સ્વરૂપ આજ પર્યંત જળવાઈ રહ્યું છે.''

(ગો. શ્રી તિલકરાયજી મહારાજશ્રી (રાજનગર) નાં વચનામૃત)

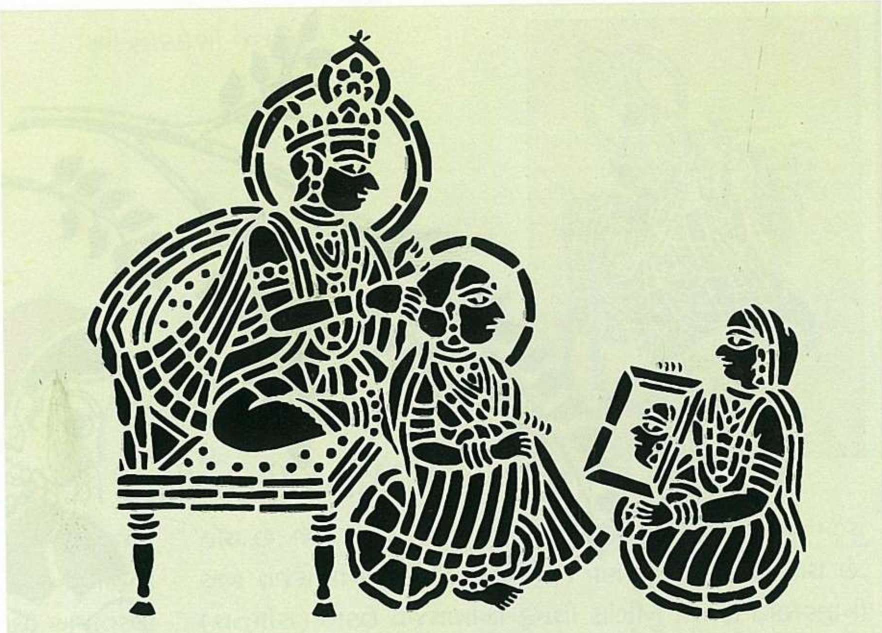

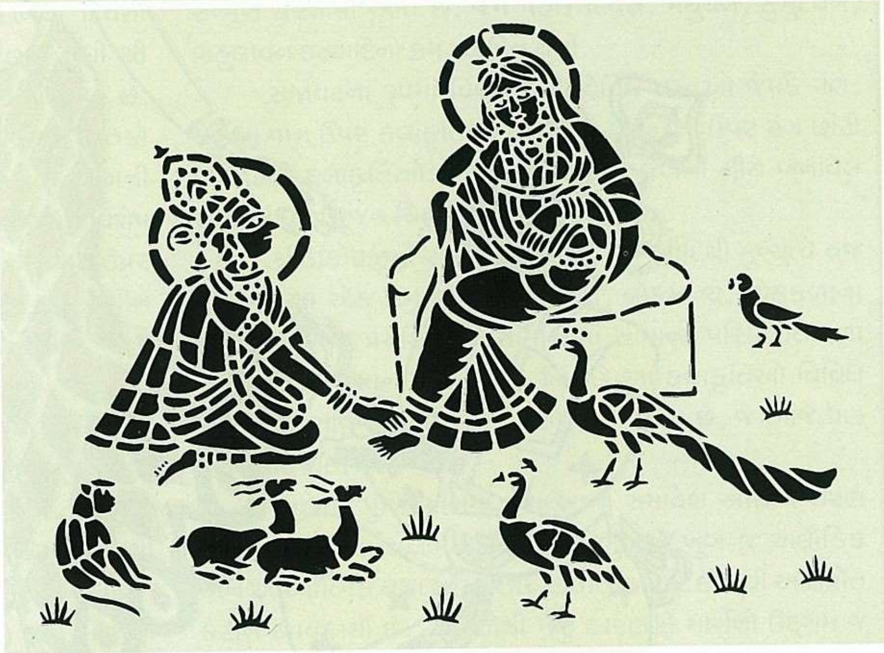

સાંઝી - સેવા

સાક્ષાત્ ભગવત્ સેવામાં અને સાંઝીમાં ભિન્નતા નથી. જેવી રીતે સેવામાં કીર્તન ગવાય છે, તેવી રીતે સાંઝીમાં ગીત ગવાય છે. સેવામાં બધા અલગ અલગ રીતે સેવા કરે છે. સાંઝીમાં પણ અલગ અલગ ભાગ લઈ સિદ્ધ કરે છે. સેવામાં શ્રી ઠાકોરજીને ભોગ ધરાવવામાં આવે છે. સાંઝીમાં પણ ભોગ ધરાવવામાં આવે છે. સેવામાં શ્રી ઠાકોરજીની આરતીનો નિયમ છે. સાંઝીમાં ફૂલોથી (દીપકથી નહીં) આરતી થાય છે. એટલા માટે વૈષ્ણવના ઘરમાં દીપકની બાટીવાળી (વાટવાળી) પ્રગટ આરતી નથી થતી. ફૂલ હાથમાં લઈ કૃષ્ણાશ્રય બોલીને આરતી થાય છે.

સાંઝીનું પ્રાગટ્ય રાસસ્થિત વ્રજગોપીઓથી થયું છે. એટલા માટે વ્રજગોપીઓ અત્યંત કોમળ (સુકુમાર) છે. જેથી સાંઝી પૂજન વખતે સામગ્રી પણ કોમળ (સુકુમાર) ધરાવે છે. કોઈ પોતાની પરિસ્થિતિ પ્રમાણે લડ્ડુ-મઠરી અથવા પોતાની શક્તિ પ્રમાણે કોઈ પણ ભોગ ધરાવે છે. બાકી તરલ સામગ્રી, રબડી, રસમલાઈ, પૂરી, માવાની સામગ્રી, ખુરચન અથવા દૂધઘરની ખીરનો ભોગ ધરવામાં આવે છે.

રાસમાં જે ચંદ્રમા છે તે અખંડ છે. તે ચંદ્રને શુક્લ પક્ષ અને કૃષ્ણ પક્ષ હોતા નથી, કારણ કે શુક્લ / કૃષ્ણ પક્ષ લૌકિક ચંદ્રમા હોય છે. વેદમાં પુરુષ સૂક્તમાં કહ્યું છે, ''ચંદ્રમા મનસોજાત:'', તો ભગવાનના મનથી જે પ્રગટ થયો છે, તે તો લૌકિક ચંદ્ર થયો. રાસમાં ભગવાને પોતાના મનને જ આજ્ઞા કરી કે, આપ ચંદ્રમા બનીને સ્થિર બનો. રાસસ્થિત વૃંદાવનમાં ભગવાનનું સાક્ષાત્ મનજ ચંદ્રમા બન્યા છે. આ વાત રાસ પંચાધ્યાયીની સુબોધિનીજીમાં સ્પષ્ટ છે.

''સાંઝીના રસ્તાથી શ્રી ઠાકોરજી સંપૂર્ણ રસમય પ્રકૃતિનો અંગીકાર કરે છે.''

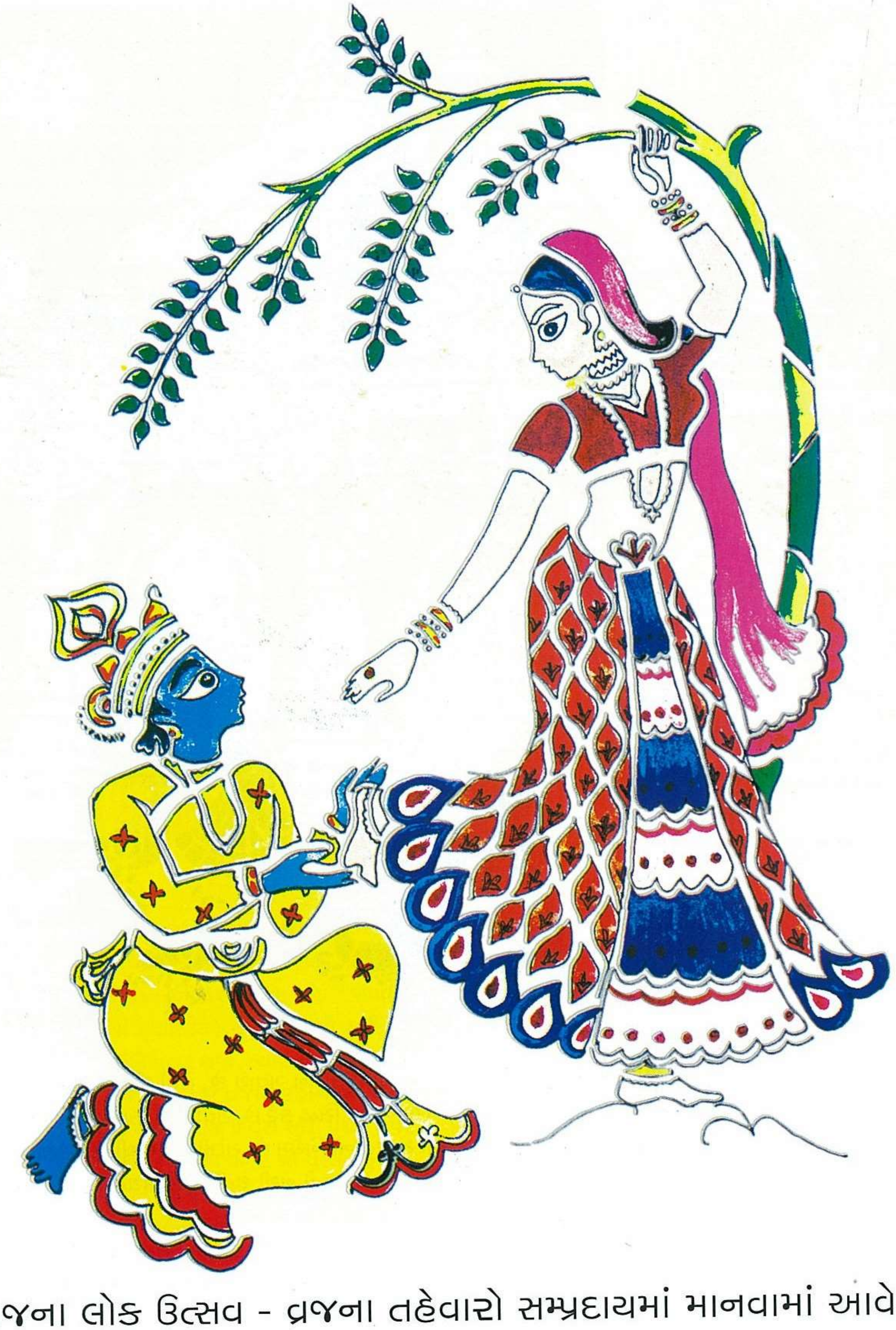

વ્રજના લોક ઉત્સવ - વ્રજના તહેવારો સમ્પ્રદાયમાં માનવામાં આવે છે.

ઉત્સવોના કીર્તન પ્રમાણે, વૃષભાન-નંદબાવાના પરિકર મળીને
ઉત્સવો ઉજવે છે. જેમાં મુખ્ય નાયક-નાયિકા (રાધા-કૃષ્ણ)
વ્રજવાસીઓના પ્રાણ છે. જે ઉત્સવો બારે માસ અને નિત્ય છે.

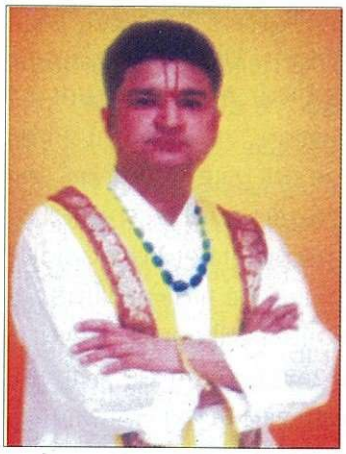

'શ્રી દ્વારકેશો જયતિ'

'સાંઝી ભલી બની આઈ'

પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ સંપ્રદાયની પ્રણાલિકા મુજબ પુષ્ટિમાર્ગની બધી હવેલીઓમાં (મંદિરોમાં) ભાદરવાના મહિના પૈકી, જે મુખ્યત્વે વામન જયંતિના પછી પૂનમથી અમાવસ્યા સુધી શ્રી ઠાકોરજીની નિત્ય સેવાના ક્રમમાં દાનના દિવસો કહેવાય છે. એટલે તે દિવસથી આગલી અમાવસ્યા સુધી શ્રી ઠાકોરજીને દાનનું દહીં (ગોરસ) ભોગ ધરાવવામાં આવે છે. રાજભોગમાં દર્શનમાં વિશેષમાં બધા ગોપી ગ્વાલોનાં મસ્તકો ઉપર મહુલીમાં દાન આપવા વ્રજભક્તો આવે છે તેવા દર્શનની ઝાંકી થાય છે અને તેની સાથે સાથે સંધ્યાકાળમાં વિશેષ કલાકૃતિરૂપ સાંઝી બનાવવામાં આવે છે. એ દહીંના સ્થાન ઉપર ગોપીઓના મસ્તકે ફૂલની છાબડીઓ પધરાવાય છે. પ્રાચીન કાળમાં મૂળરૂપે કુમારી કન્યાઓ જ સાંઝી બનાવતી હતી.

આધ્યાત્મિક પક્ષ

જન સામાન્ય ત્યોહારોના રૂપમાં આજ દિવસોમાં નવરાત્રિનું મહત્ત્વ છે. નવરાત્રિમાં મુખ્યત: માતાજીનું પૂજન થાય છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં પૂજનવિધાનને વિશેષ મહત્ત્વ નથી, કારણકે સેવાનો વિશેષ મહત્ત્વ છે. પણ એની ઉપેક્ષા પણ કરવામાં નથી આવી, કારણ માતા પણ પૂજનીય તો છે જ. જેમ દશેરાના દિવસે એક પાટલા ઉપર દશ ગોબરના પુલા (ગોળા) ધરી શ્રીજીની સન્મુખ તિબારીમાં ધરી કંકુ, અક્ષત, દુબડી (ઘાસ), ફૂલ વગેરેથી પૂજન કરાય છે. એ માતૃકાઓના પૂજનનો જ પ્રકાર છે - સૂક્ષ્મતાથી અલગ અલગ પ્રાન્તોમાં આના અલગ અલગ નામ છે. જેમ રાજસ્થાનમાં ગનગોરનો પ્રકાર એટલે શું ? - એટલે શિવ-પાર્વતીનું પૂજન, તો આ પણ ગૌર એટલે ગૌરીપૂજન છે. આ પૂજન પણ અધિકાંશ રૂપથી વ્રજમાં પણ કરવામાં આવે છે એટલે નંદદાસજીએ ગાયું, 'રાધાજુપૂજ લીની ઘનઘોર' જેમ એ જ પ્રકારે ગુજરાતમાં પણ ગોરીઓ ઉજવાય છે.

કુંવારી કન્યાઓ વ્રત આદિનો પ્રકાર કરે છે. ભાગવતજીમાં પણ આજ્ઞા છે, 'દાંપત્યાઅર્થે ઉમા સતિમ્' (દામ્પત્ય સુખી જીવનને લીધે ઉમા એટલે માતાઓનું પૂજન કરો) આપણે ત્યાં સેવાનું મહત્ત્વ અધિક હોવાથી કલાત્મક સુંદરતાની સાથે સાંઝી કલાના રૂપમાં જે ચિત્રામણ (ડિઝાઇન) બનાવવામાં આવે છે. તેમાં ઘણા ચિન્હો પૂજન પ્રકારના પણ હોય છે. જેને વ્રજપ્રદેશમાં લોકકલારૂપે ઉત્તરકલામાં પ્રચલન મળ્યું અને વ્રજયાત્રાનો (લીલીપરીક્રમાનો) પણ આ જ સમય હોય છે. (ચતુર્માસ) એટલે વ્રજયાત્રાના ક્રમથી સાંઝીનું ચિત્રણ ઠાકોરજીની સન્મુખ કરવામાં આવે છે. જેમ પહેલે દિવસે, મધુવન, કુમુદવન, બહુલાવન ઇત્યાદિનો ક્રમ સ્થાપિત થયો.

સજાવટના રૂપમાં વિશેષ કરી વિવિધ વસ્તુઓ જેમકે રંગ, કેળના પાન ઉપર કલાકૃતિઓ કાગળના બીબાંઓ ઉપર રંગ છાંટી બનાવાતી કલાકૃતિઓ. જળની ઉપર અને જળની નીચે બનાવેલ સાંઝીમાં ઘણા પૂજન ચિન્હો દૃષ્ટિગોચર થાય છે.

શ્રીઠાકોરજીની સામે ફૂલ, પાન, રંગો આદિથી મુખ્યત્વે વ્રજ પ્રદેશમાં આ એક સમૃદ્ધ અને વિકસીત, લોકમાન્ય, લોકકળાના રૂપમાં અતિશય પ્રચલિત છે. સામાન્યમાં સામાન્ય પરિસ્થિતિવાળા ગૃહસ્થો પણ પોતાના ઘર, દ્વાર, આંગણે આ કલાકૃતિઓ વિવિધ પ્રકારથી સુસજ્જિત સુંદર ચિત્રામણો કરતાં હોય છે, જે આજે પણ રૂબરૂ જોઈ શકાય છે.

આપણા પુષ્ટિ માર્ગમાં પણ આનો સમાવેશ આચાર્ય ચરણ જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ ખૂબ જ અલૌકિક અને આધ્યાત્મિક તથા સાંસ્કૃતિક, કલાત્મક દૃષ્ટિકોણથી ઓતપ્રોત કરીને આવકાર્યો છે. એક સૌથી મોટું કારણ કે માર્ગનો ઉદ્ગમ જ વ્રજમાંથી, તો ત્યાંનું બધું સારું આપોઆપ જ ઉમેરાય એમાં શો આશ્ચર્ય? અન્ય પ્રાંતોમાં સાંઝી વિષયક વધારે જાણકારી ન હતી. આ તો હવે પ્રચાર-પ્રસાર અને વિજ્ઞાનરૂપ પ્રચાર માધ્યમોના ઝડપી થવાથી, જેવા ટી.વી.માં જ બધું જોવાઈ જાય છે સંપર્ક વધવાથી સમસ્ત વિશ્વ એક કુટુંબની જેમ બની ગયાથી એકબીજાનો સંપર્ક અતિ સરળ અને સહજતાથી થવા લાગ્યો અને આ કલાઓનો પણ વિસ્તાર, વ્યાપ વધીને બધે પહોંચતો થયો તેમાં પુષ્ટિમાર્ગનો મોટો ફાળો ગણાશે. તો પણ સામાન્યમાં સાંઝી એ એક લોકકલાના રૂપમાં જ વ્રજમાં પણ વૃંદાવન, બરસાના, ગિરિરાજજી આદિ ક્ષેત્રોમાં પણ કલા અને પરંપરા તથા સુંદરતાના જ મુખ્ય પાસાં હેઠળ કરાય છે. કેવળ પુષ્ટિમાર્ગનાં સંદર્ભનાં મંદિરો અથવા હવેલીઓમાં જ સાંઝીનો આધ્યાત્મિક, આધિભૌતિક અને અલૌકિક મહાતમની જાણકારી મળે છે જે આપોઆપ શ્રીમદ્ આચાર્યચરણ વલ્લભાચાર્ય

મહાપ્રભુજીની ઊંડી સમજણ તથા અલૌકિક સામર્થ્યનો પરચો આપે છે. કેમ ન હોય ? આપના લીધે રચેલા શ્રી સર્વોત્તમ સ્તોત્રમાં શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી (શ્રી ગુસાંઇજી મહારાજ) આપના બીજા લાલજી આજ્ઞા કરે છે કે 'દયયા નિજ મહત્યમ્યમ કરિષ્યમ પ્રગટમ્ હરિ' તથા 'આનંદ પરમાનંદઃ શ્રીકૃષ્ણસ્યમ્ કૃપાનિધીમ્' તો આપ છે જ. એટલે કરી પ્રભુની સેવાચ્છાએ આ બધા અલૌકિક મહાત્તમ આપે પ્રગટ કર્યા અને ઠાકોરજીએ કરાવ્યા છે.

જેને કારણ સાંઝીનું અલૌકિક મહત્ત્વ આધ્યાત્મક અને આધિભૌતિક રૂપમાં કલાકૃતિ રૂપ થયું પણ એક બ્રહ્મવાક્ય છે કે સત્યની પ્રતિછવી પણ એટલી જ સત્ય હોય છે એટલે આ પથમાં ચિત્રજીની સેવા પણ અગત્યની છે. આ કોઈ નહી કહી શકે તો આ કલામાં શ્રી કૃષ્ણચંદ્ર પ્રભુ નંદનંદન યશોદાનંદન, ગોપાલક યશોદોત્સંગ લલિત એવા રાસબિહારી, ગિરિવરધારી, વેણુધારી બલદેવજીના ભૈયા તથા આપના સાથીસંગી અને સમસ્ત પરિકર રૂપ અલૌકિક સૃષ્ટિ, વન, ઉપવન, ગિરિ, લતા, વૃક્ષ, પશુ, પક્ષી, પત્તા વ્રજમાં પ્રગટ્યા ત્યારે જ તો કહ્યું છે કે વૃક્ષે-વૃક્ષે વેણુધારી, પત્રે-પત્રે ચતુર્ભુજ, વૃંદાવન લીલા કે કારણ ધાર રહ્યો જડતાઈ, ''વ્રજ, વૃંદાવન, ગિરિ, નદી, પશુપંછી - સબ સંગ, યામેં કહા દુરાઈયે પ્યારી યહ સબ મેરો અંગ.'' તો જેમ લૌકિકમાં પણ બાળકને પોતાની રમતગમતની, ખેલકૂદની વસ્તુઓ અને સ્થળ એ જ જોઈએ એમ ઠાકોરજીએ પણ ગૌલોકથી બધો સાધન-સરંજામ વ્રજભૂમિમાં પ્રગટ કર્યું છે, જે પ્રકારથી આપણા માર્ગમાં મનોરથો થાય છે, જે ભાવનો મનોરથ ગમે ત્યાં તેવું જ દૃશ્ય ઊભું કરવામાં આવે છે. પોતાના દૈવી જીવોને પૃષ્ઠભૂમિ તૈયાર કરવાની આજ્ઞા કરી. એટલે કહ્યું કે આ બધું અલૌકિક જ છે, જેમ સત્યની છબી સત્ય જ હોય છે તો સાંઝીમાં પણ જે આ ચિત્રામણ આ સૃષ્ટિ અને જીવોની કરવામાં આવે છે એ સ્વરૂપાત્મક છે અને એટલે સત્ય છે.

કહેવાનો તાત્પર્ય એ છે કે વિસ્તારથી સમજણ પુષ્ટિમાર્ગ આપે છે. પૂર્વ આચાર્યોની કૃપા, અથાક્ પરિશ્રમથી આ ભેદો પ્રગટ કર્યા છે અને શ્રી પ્રભુની પણ અનહદ કૃપા કે એમ થવા દીધું. જેમ આ પણ એમને જ કાંઈ ઇચ્છા હશે જે સાર્થક થઈ રહ્યું છે અને અમને એનો અતિશય હરખ છે. અમે આ કાર્યમાં સહભાગી છીએ. અમારા ચિર-પરિચિત પ. ભ. વૈષ્ણવ રૂવાળા પરિવારનાં પ.ભ.વૈ. શ્રી ગોપાલભાઈએ અમને વાત મૂકી, જે અમારા દાદાજીના સમયથી કૃપાપાત્ર, અગંદ વૈષ્ણવ રહ્યા છે, તેથી અમને કહ્યું કે બધા વિષયો પર સાહિત્ય મળી આવે છે અને છપાયેલું છે. પણ સાંઝી વિષય પર બહુ ઓછું સાહિત્ય-જાણકારી મળે છે. જે ગૂઢ ભાવનાત્મક હોય. જેનો પુષ્ટિમાર્ગ સિવાય ગૂઢાર્થ ભાવાત્મક નિરૂપણ શ્રી ગુસાંઈજીની કૃપા વગર થવું અસંભવ હોત. ''જો પે શ્રીવલ્લભ પ્રગટ ના હોતે, વસુધા રહેતી સુની નાતર, લીલા હોતી જૂની'' - જૈ જૈ શ્રી વલ્લભ પ્રભુ શ્રી વિઠ્ઠલેશ સાથે, નિજ્જન પર કરત કૃપા ધરત હાથ માથે - દોષ સબે દૂર કરત, ભક્તિ ભાવ હિયે ધરત, કાજ સબે સરત સદા, ગાવત ગુણ ગાયે - આપનો કર ગોકુલપતિ ભરત તાહી બાથે'

હવે પક્ષ આવે છે ભાવ, ભાવના, સેવા, કર્મનો. કારણકે કેવળ theoryથી practical થઈ જતું નથી. ભણી લેવાથી કામ પૂર્ણ થઈ જતું નથી. જેમ ભોજન કેમ બનાવવું? વાંચી લીધું તો ભોજન બની ના ગયું, બનાવવું પડે. એમ શ્રમ કર્યા વગર ફળ મળે નહીં. આ પણ હકીકત છે. તેમજ ભક્તિ પણ પાંચમો પુરુષાર્થ છે. શ્રમસાધ્ય છે. એટલે જ તો સેવા કરવી પડે. હાથ-પગ હલાવી પ્રભુને લાડ લડાવીએ તો જ આપણો ભાવ ઉદ્દીપન થાય. બાળક પર માતાને સર્વાધિક પ્રેમ હોય, પણ બાળક ભૂખ્યો થાય અને માતા દૂરથી હરખથી નિરખ્યા જ કરે તો શું એનું પેટ ભરાઈ જાય ? નહીં. ગોદમાં લઈ જ્યાં સુધી મમતાથી હાથ ફેરવી કાળજે લગાવીને એને ભોજન નહીં આપે ત્યાં સુધી તે છાનો થવાનો નથી. તો સેવા સાથે ભાવનું જોડાણ છે, એનું જ નામ યોગ. એકથી બીજું જોડાય તેને જ યોગ કહેવાય છે. તો આ પ્રકારે સમસ્ત સેવા પ્રણાલિકામાં બધી જ વસ્તુ, સાહિત્ય, સાજ, શૃંગાર, ભોગ, રાગ અને સેવાકાર્યનો વણ આધ્યાત્મિક, આધિદૈવિક, અલૌકિક મહાત્મ્ય છે. એટલે સાંઝીના પદો જે અષ્ટ સખાઓએ ગાયાં છે, તેમાં ગૂઢાર્થ ભાવ છવાયેલો છે. જેમ કહ્યું, 'છબડીયા વાંસ કી ફૂલેફૂલ ભરી' - આમાં આધિભૌતિકતાથી આધ્યાત્મનો વિવરણ છે કે જેમ આપણું શરીર એ વાંસની છાબડી કહી છે, એમ પણ કાષ્ટને સજીવતા છે જ. વૃક્ષ રૂપમાં જે વિવિધ પ્રકારના ફળ રૂપ કૃત્રિમ રંગ સુવાસોની ભરાયેલી છે. ક્યારે કટી પર ક્યારે હાથમાં તો ક્યારે માથે ચડી બોલે છે. પણ અંત તો ગતવા સર્વનું શ્રીકૃષ્ણના ચરણાર્વિંદમાં સમર્પણ જ પૂરણતાનો સૂચક છે. ભૌતિક વસ્તુ હોય કે ભાવ, ભાવના હોય, ત્યારે જ કહ્યું છે કે 'લીલા કે કારણ .... રહ્યો જડતાઈ' જેમ પદોમાં વિવિધતાથી ઉલ્લેખ કરાયેલો છે.

જેમ કે, 'લાડીલે ગુમાની દેખત દૃગન અધાની' - જેમાં કહે છે 'કુસુમ કલી હો બીનન આઈ, સોંધે સારી કમલ બદન પર (ભમર)', 'મધુપ કરત નકબાની પ્રભુ કલ્યાણ ગિરિધર છબી નિરખત, બાલ ત્રિયા છતીયા સિયરાની' તો સ્વસ્થ આપણને આ પદમાં શ્રી ઠાકોરજી સ્વામીનીજીના પ્રણય લીલાનું સુંદર વર્ણન મળે છે. તો ઉપરના પદમાં આધિભૌતિકતાનો ભાવ અને આ પદમાં અંતરંગ લીલા રૂપ આપના ઉદ્દીપન આલંબન વિભાવ આદિ ભાવ દર્શાવાયા છે.

તો કહેવાનો તાત્પર્ય કે જેમ ઘણાને આ પ્રશ્ન હોય છે કે ફલાની લીલા તે ક્યાંની, કયા સ્થાનની, કયા સમયની છે ? તો આપણા જે અષ્ટસખાઓના પદોમાં બધી જ લીલાઓનું વર્ણન બધા જ સ્થળો પૈકી મળી આવે છે. 'વૃંદાવન મેં લૂંટી જ દધી મેરી વૃંદાવન મેં લૂંટી' તો દાનલીલાના વિરામમાં ખાસ પ્રચલિત સ્થાન તો દાન ઘાટી, માનઘાટી, સાંકરીખોરનો જ છે અને વ્રજયાત્રાઓમાં પણ દાન ત્યાં જ મુખ્યત્વે લેવાય છે, પરંતુ એ પણ ધ્યાન આપવું એટલે જ આવા પ્રસંગોમાં બધામાં જ બે પ્રકાર મળી આવે છે - (૧) મોટી દાનલીલા અને (૨) નાની દાનલીલા. તો મુખ્ય સ્થાને મોટી પ્રકાર અને નિત્યમાં અલગ. કેમ, રોજ ગોપીના ઘેરથી દૂધ, દહીં, માખણની ચોરી કરતા એ એનું એક નિત્ય દાન જ છે. કારણકે ન હોત એ ભાવના અને ચોરીની જ ભાવના મુખ્ય હોત તો બધા મળીને આપને પકડાવી ન શકતા હતા કે પછી ફરી બીજા

દિવસે એ જ ગોપી એ ભાવના જ રાખતી કે હવે પછી પાછા પ્રભુ નંદનંદન મારા ત્યાં માખણ, દહીં આરોગવા ક્યારે પધારશે ?

બીજા પદમાં કહે છે, 'કેસર ફૂલ બીનત રાધા ગોરી...' તો સમસ્ત પદમાં કેસર એટલે કેસરીયો તો ગુજરાતીમાં ગરબો ગવાય જ છે કે 'કેસરીયો રંગ તને લાગ્યો ઓ ગરબા...' તો આ શું ભાવના છે ? જે ભાવના શ્રી રાધિકાજીની છે કે, 'લાલી મેરે લાલ, જીત દેખું ઉત લાલકી, લાલી દેખન મેં ચલી, મૈં ભી હો ગઈ લાલ' તો આ એક અંગઅનંગ થઈ જવાનો ભાવ છે. એટલા ઓતપ્રોત થઈ જવું કે આપના સિવાય બીજું કશું ન સોહાય. 'પ્રિત બંધી શ્રી વલ્લભ પદ સો... જબ તે અંગીકાર કિયો હૈ મેરો તબ તે અન્ય ન સોહાવે હો...'

હવે જેમ કહ્યું કે સેવા કરેથી થાય. તો એ શું થાય ? જેમ ભક્ત વૈષ્ણવ પોતાના હાથ વડે આ ક્રિયાકલાપ કલાકૃતિઓ જે એક અલૌકિક સૃષ્ટિ છે તે ઠાકોરજીના સન્મુખ પોતાના મન, વચન અને કર્મરૂપ ત્રેવડી, ત્રિવેણી રૂપ સેવાનો અનુભવ અને અંતરમાં દિનતા, સમર્પણ, સેવા અને ચિંતનનો જે ભાવ જેટલો સમય આ સાંઝી બનાવતા (જે ટાઇમ) જે કાલ આપણો જશે. એટલા સમય આપણી અથવા આપણાથી નવધાભક્તિ પૈકી સ્મરણ, કિર્તનમ્, અર્ચનમ્, વંદનમ્, દાસ્ય, સખ્ય, પાદ સેવનમ્ આ થાય છે. આ બધા ભક્તિના ભાવ કેળવાયા, કેમ ? તમે હાથ-પગ એટલે શરીરથી drawing ચિત્રામણ બનાવવામાં જોડાયા, મનમાં એ જ ભાવ, વિચાર, લીલાનો બોધ, ચિંતન થઈ રહ્યું છે અને મુખેથી અનર્ગલ પ્રલાપ એટલી બકવાસ કર્યા વગર પ્રભુના સ્મરણ સાથે આ કાર્ય કરવાથી આ સઘળું જે પૂર્વમાં કહ્યું, મનસા, વાચા, કર્મણા ભક્તિભાવ થયો.

તો જેમ રાસલીલાની પરમ દશામાં ગોપીકાઓ માટે શ્રી શુકદેવજી વર્ણન કરે છે કે તન, મન, મનસ્કા, મદપ્રાણા, મદર્થે ત્યક્ત દેહિકા, મદ આલાપા, મદ વિચેષ્ટિતા જેમને મારા કાજે પોતાનું તન, મન મને અર્પણ કરી દીધું છે. પ્રાણ પણ મને આપી દીધા છે અને મારી માટે જીવનને પણ ત્યાગવત જીવી રહ્યા છે. આવા પરમ વિપ્રયોગી ગોપીકાઓની આ દશા કેવી રીતે થઈ ? તો શ્રીમદ્ ભાગવતજીમાં જ આ ઉદાહરણ મળે છે અને કહે છે કે જે પ્રકારે મન, વચન અને કર્મ - ત્રણેયથી શ્રીકૃષ્ણાર્પણમ્ અસ્તુ જ જીવી રહ્યા છે, તે તો કેવળ પ્રાણ લૌકિકના લીધે ધારી રહ્યાં છે અને એમનું જીવન તો કેવળ શ્રી ગોપીજન વલ્લભપ્રિયંતમ નમમ એવું છે. શ્રી ગોપીજનવલ્લભની પ્રસન્નતા માટે જ, મારે લીધે નહીં.

જે કહ્યું કે બધી ચીજ-વસ્તુઓની પણ અલૌકિક ભાવના છે ત્યારે જ એ પૂર્ણપુરુષોત્તમ પ્રભુની સેવામાં આવી શકે નહીં તો એવું ભાગ્ય અને અધિકાર વગેરે કેમ પ્રાપ્ત થાય ? તો જે પણ વસ્તુઓ સેવામાં લેતા હોઈએ, જેમકે રંગો, એમને બનાવવા ઉખલી લાકડાં વગેરે, એમને મેળવવા માટેના પાત્રો સાંઝીના બીબાં બધા જેમાં પુસ્તકો કીર્તનના બધામાં ભગવદ્ વિનિયોગી સ્વરૂપની ભાવના કેળવવી અને એમને સન્માન, આદરભાવથી ઉપયોગમાં લેવા.

જેમ કહ્યું કે ચિત્રણ કરતાં નવધાભક્તિ રૂપ ત્રિવેણી સાર્થક થાય છે તે પણ ત્યારે જ થાય જ્યારે પૂર્ણ રૂપથી મન સેવામાં હોય અને ધ્યાન એકાગ્રતાથી એકાગ્ર ચિત્તની સ્થિતિ બને તો તેનું પૂર્ણ ફળ છે, જે ઉદાહરણ ગોપીઓનો કહ્યો.

જેમ ઉદાહરણ આવ્યું કે બધી લીલા, બધી જગ્યા થયેલ છે એવા વિવિધ પદો મળે છે એવી જ રીતે સાંઝી પણ એક વ્રજયાત્રાના ક્રમેથી વ્રજના બધા મુખ્ય લીલા સ્થળોનો સ્મરણરૂપ લીલાઓનું ચિત્રણ થતું હોય છે. સમાપનમાં કોટની સાંઝી આવે છે, જેમાં મોટો પરકોટો કિલ્લાની જેમ બનાવ્યો હોય છે અને એની અંદર બધા સ્થળો લીલાઓ એકસાથે સમાપન રૂપ એકઠી કરવામાં આવે છે. તો આ પ્રક્રિયા શ્રીમદ્ આચાર્ય ચરણોએ પોતાની સેવા પ્રણાલિકામાં ખૂબ જ સારરૂપ ગોઠવેલી છે. તો જેમ ચાર મુખ્ય પાસાં છે. (૧) ભોગ, (૨) શૃંગાર, (૩) રાગ, (૪) વસ્ત્રાદિક (સેવા સાહિત્ય) - તો જેમ ભોગના પ્રકારમાં આખા વર્ષના ક્રમમાં જે ભોગ રહ્યું હોય કે એવી કોઈ ત્રૂટી ઉણપ થઈ હોય, જાણે-અજાણે તો એની સમાપનરૂપ સમર્પણ વિધિમાં જેને ગુજરાતીમાં સરવાળો કહે છે, અન્નકૂટ ભોગ ઉત્સવ છે. એમ જ વસ્ત્ર માટે પવિત્રા અને રાગ, શૃંગાર માટે આ સાંઝીનો ક્રમ. સજાવટ કેવળ શ્રી ગોપીજનવલ્લભ પ્રયંતાન નમમ એવું છે. શ્રી ગોપીજનવલ્લભની પ્રસન્નતા માટે જ મારે લીધે નહીં.

ગોપાલભાઈએ જે આ (પુસ્તક) વિષય માટે જે દોડધામ કરી જે અથાક પરિશ્રમ કર્યો છે તેનાથી એમનો સ્પષ્ટરૂપે પુષ્ટિમાર્ગ લીધેની નિષ્ઠા, દ્રુઢતા, ભક્તિભાવનો પરચો મળે છે જે આજે માર્ગને આગળ ધપાવવા ખૂબ જ જરૂરી છે. જેનાથી બીજા બધા વૈષ્ણવોને માટે પણ એક સબળ ઉદાહરણ બની રહી છે, જે આવું માની બેઠા છે કે હવે માર્ગમાં કશું રહ્યું નથી અને કોઈ એકલા એને માટે શું કરી શકે તો આ એક બહુ મોટું ઉદાહરણ છે. અમારા કહ્યા મુજબ ગુરુ વાક્યોમાં વિશ્વાસ રાખીને એમને અમારા દિશાસૂચન મુજબ ચોફેર ક્યારે મથુરા, વૃંદાવન, બરસાના, ગોવર્ધન, કામવન, ગોકુલ આદિ વ્રજના સ્થાનો તથા ભારત વર્ષમાં કેટલાક સ્થાનો જ્યાંથી પણ જેનાથી એ જેમ પણ જે-જે માહિતી, સહાયતા મળી તેને માટે જેણે ભ્રમણ કરી બધું સાહિત્ય એકઠું કર્યું અને આજે પ્રભુ કૃપા કરીને આ કાર્ય પૂર્ણતાનો ફળ પ્રાપ્ત કરી રહ્યું છે તે અમારી માટે પણ ગૌરવની વાત થાય છે. નહીતર આજના સમયમાં ક્યાં કોઈને આ બધા માટે સમય, પૈસો કે રૂચિ રહી છે ? અને સૌની ઉપર વિશ્વાસ, દયારામભાઈના 'વિશ્વાસના મહેલમાં વસે મારો સાંવરીયો.'

કેવલ ।।શ્રી ગોપીજન વલ્લભ પ્રયંતાન ન મમ ।।
એવું છે શ્રી ગોપીજન વલ્લભની પ્રસન્નતા માટે જ, મારે લીધે નહીં

'ઇતિ શુભમ્ ભવતુ'

ભગવદીય

ગોસ્વામી રવિ કુમાર

(કાંકરોલી, વડોદરા)

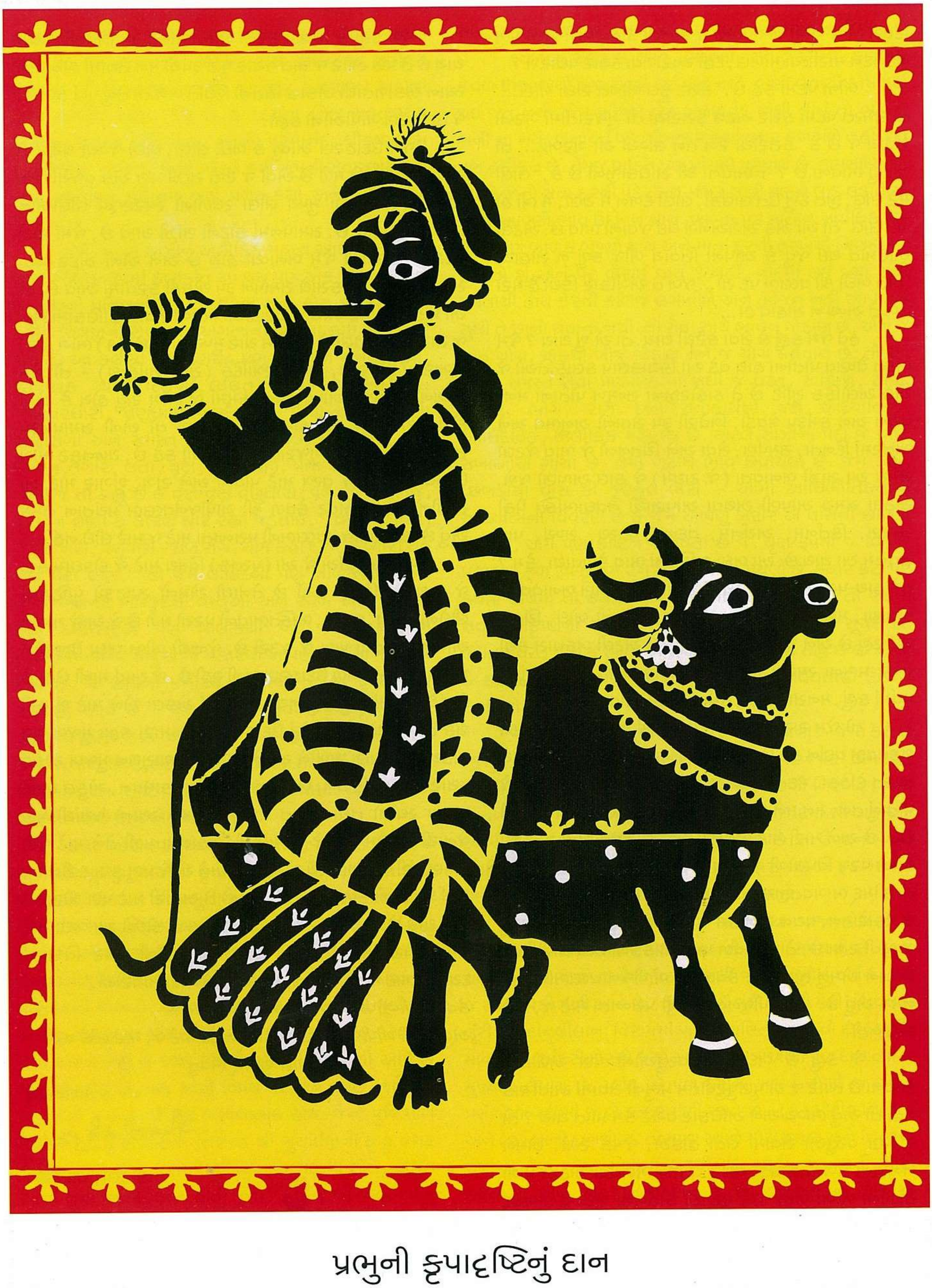

પ્રભુની કૃપાદૃષ્ટિનું દાન

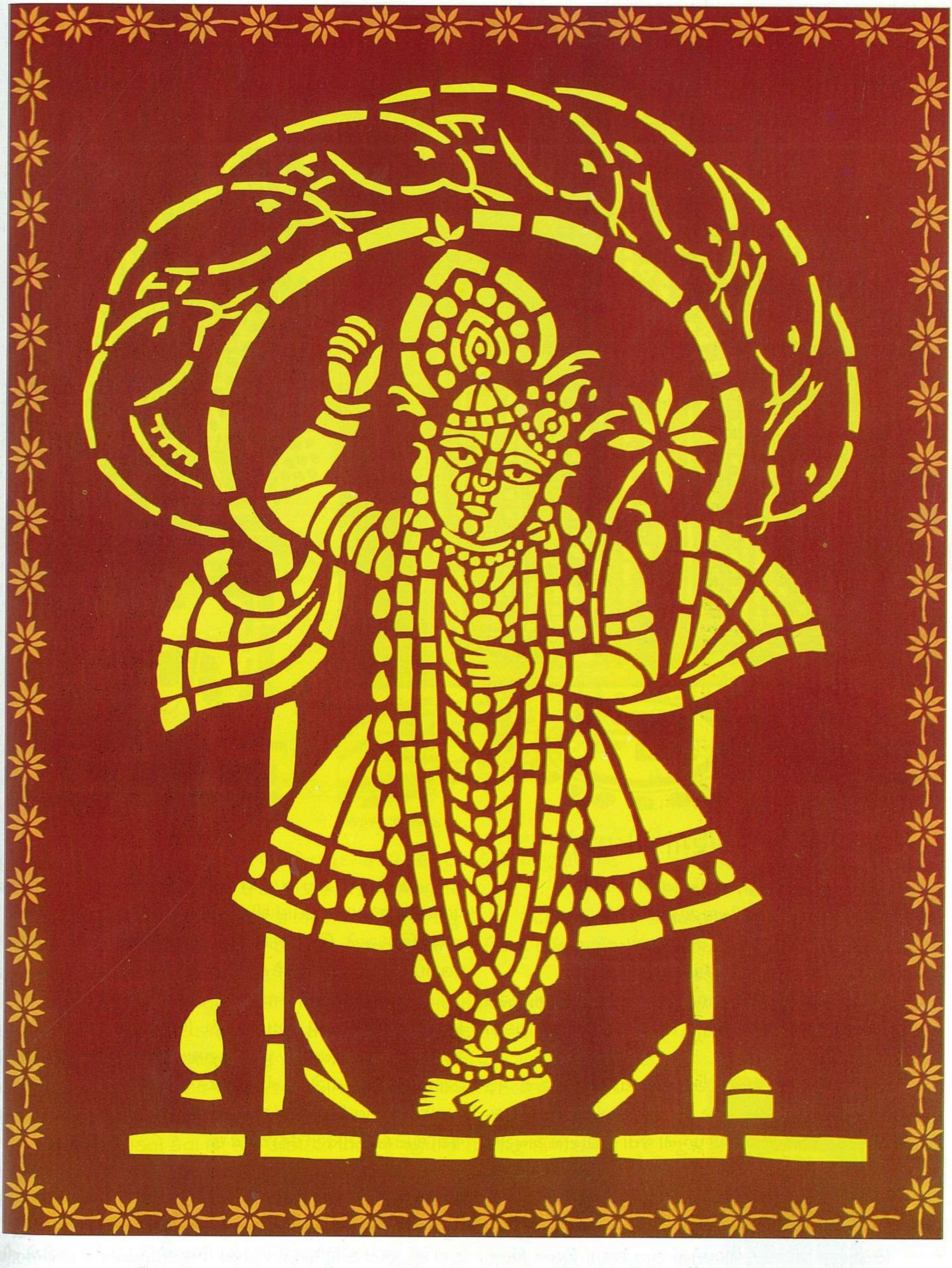

ભગવાનની સુંદરતા શાસ્ત્રો પ્રમાણે કલાકાર કેવી રીતે ચિત્રમાં ઉતારી શકે?

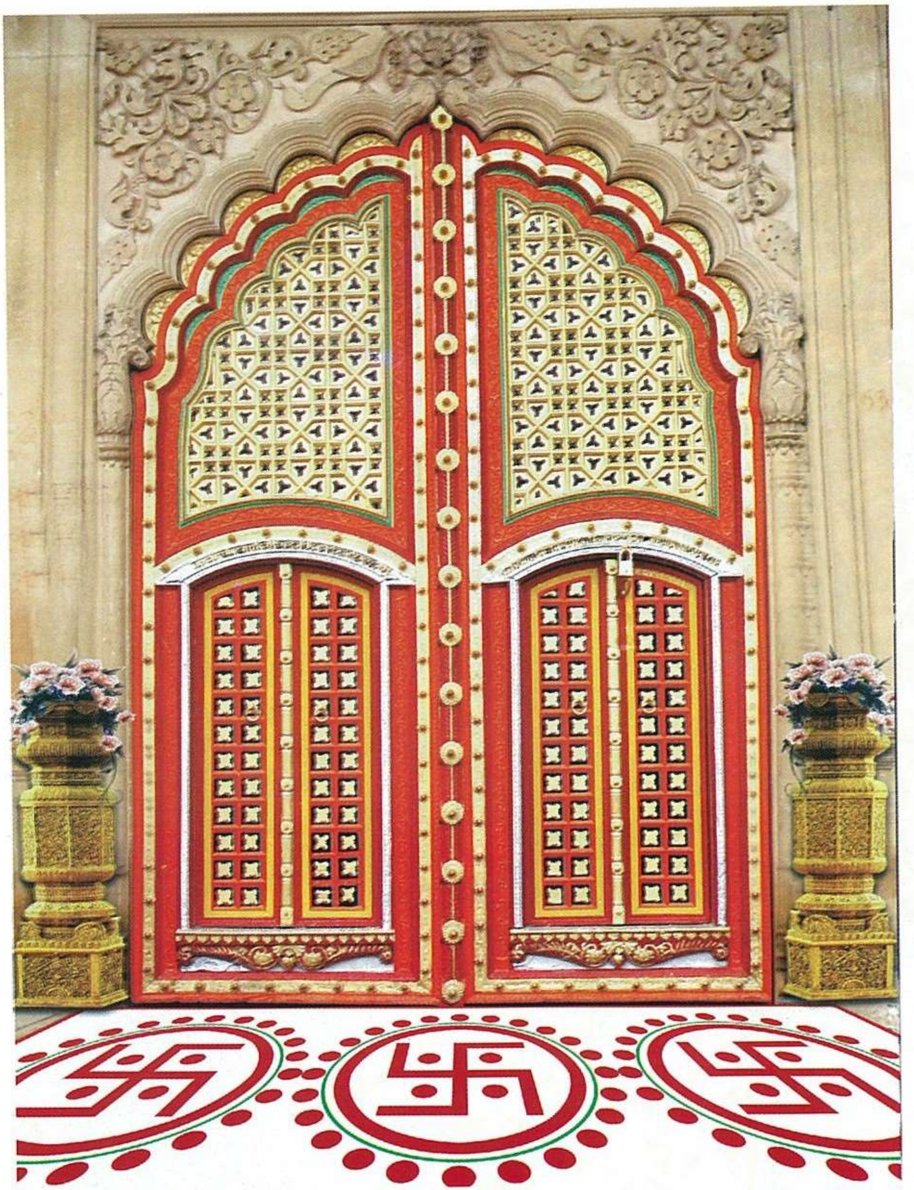

દ્વાર-વ્રજ (મથુરા)

સાત કુંવરનાં સાતે ઘરમાં લીલાઓ

મૂ. પ્રતિસદનશોભા અતિઘણી, ભણીવેદવદને ન જાય;
મકરન્દ માતા ભ્રમર ગુંજે, પક્ષીનાદ સોહાય. ૨૩
લીલાને અનુસાર કલરવ, કુજતા દ્વિજ શોભતા;
સ્વસ્વભાવત્યાગી ધ્યાનરાગી, કોઈક ભાવે લોભતા. ૨૪

શબ્દાર્થ - શ્રી વિઠ્ઠલેશ પ્રભુચરણના સાત કુંવરના દરેક ઘરની અતિ ઘણી અલૌકિક શોભાનું વર્ણન વેદ પણ કરી શકતા નથી.

વળી તેઓશ્રીના મન્દિર આગળ, વિવિધ પ્રકારની મત્ત સુગન્ધ ફેલાઈ રહેવાથી, તેની લપટ લેતા ભ્રમરો ગુંજારવ કરી રહ્યા છે. તેમ જ વિવિધ પક્ષીઓ પણ શ્રી પ્રભુની જેવી લીલા તેને અનુસાર મધુર ગાન કરતા શોભી રહ્યા છે. એટલું જ નહિ પણ તેઓ પોતપોતાનો જાતિ સ્વભાવ તજી દઈને શ્રીમદ્ પ્રભુચરણના ગાન ધ્યાનમાં મોહ પામી તદ્‌રૂપ બની ગયા છે.

વિવેચન - આ સાત બાળકોનાં સાત ઘરમાં ભિન્ન ભિન્ન પ્રકારની લીલાઓ છે. તે લીલાઓનું શ્રદ્ધાપૂર્વક દર્શન ધ્યાન કરનારને જાતિ સ્વભાવ જરા પણ બાધ કરતો નથી. જો પક્ષીઓના સ્વભાવ બદલાઈ શ્રી પ્રભુની લીલાને અનુસરે છે, તો પછી જ્ઞાનશક્તિ અને ક્રિયાશક્તિ સંયુક્ત માનવોના જાતિ સ્વભાવ પલટાઈ પ્રભુલીલાને અનુસરે તેમાં નવાઈ શું? ૨૩-૨૪

હે નિ:સાધનના ધન રૂપ પુષ્ટિપથપતિના ચિરંજીવી! આપ નિકુંજસ્થલીઓમાં શ્રી ચંદ્રાવલી રૂપ બિરાજો છો એવા આપનું સૌભાગ્ય ગૌરવ સ્વાધીન પતિકા સમાન સહજ સિદ્ધ છે. લીલા રસાવિષ્ટ પ્રીતમ પ્યારો નંદનંદન, અલબેલો નવેલો લલિત ધીરોદાત્ત આપશ્રીને વશવર્તી છે. આપ શૃંગાર રસમય સાક્ષાત્ શ્રી કૃષ્ણ જ છો, જેથી શ્રુતિઓ રસોવૈસ: કહી વર્ણવે છે.

આપ પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ કેવળ પ્રમેય રૂપ છો, રસિક ભક્તોના રસપ્રચુરત્તર ભાવ આગળ ભક્તાધીન છો. આપનું મહાન સ્વરૂપ ભૂલી જાવ છો અને ભક્તાધીન બની ભક્તોના અનંત મનોરથો પૂર્ણ કરો છો. આપ કોટિ કન્દર્પ લાવણ્ય ઉપર કોટિ કામદેવ વારીએ તો પણ ઓછા છે. આપની અમૃત દૃષ્ટિની રસવૃષ્ટિ કમનીય ભક્તોની

ચંપારણ્ય : ભુવન

કુંજ નિકુંજો પર થયા જ કરે છે, જેથી ભક્તોના હૃદયકમલ કલકત્તા રહે છે. અણુભાષ્ય પદ ચોથામાં 'વાક્‌મનોધિકરણ'માં કહે છે કે 'વાઙ મનસિ દર્શનચ્છબ્દાચ'.

કેવલ રસાધિપ હે મહા સૌદર્યના મેરૂ! શ્રી વિઠ્ઠલેશ કહું કે શ્રી ચંદ્રાવલીજી કે ''વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ'' કહું, આપની હલનચલન પ્રત્યેક વચનોની ઉઠાન ભ્રોંહ મરોર સમસ્યાઓ વેદની ધ્વનિઓ સહ પ્રત્યેક લીલા કમનીય છે.

તેનો અનુભવ દર્શનાતુર સેવકો પુષ્ટિ માર્ગીય મંદિરોમાં પ્રતિદિન નવીન નવીન પ્રકારનો કરે છે. હોરીના દિવસે, દાનના દિવસે, રાસના રંગીલા રસદાર દિવસે, હિંડોળાના દિવસે શ્રી યમુના કિનારે અનંત પ્રકાર કુંજ નિકુંજ ઉપકુંજ મહાકુંજોમાં પક્ષીગણો ન્હાવ ખેલ *સાંજી* છાક લીલા અન્નકુટોત્સવ નંદમહોત્સવ માન ગાન ધ્યાનાદિ અનંત રસલીલાના રસિકો રસથી દર્શન કરતાં રસાધિપને વંદતા તૃપ્ત થતા નથી.

જરૂર આ ભક્તો કેવા છે, કોઈ ઉત્કંઠિતા પ્રીતમને મળવાની ઉત્કંઠતા દાબી દબાય ના, અનુક્ષણે આતુરતા વધે, તેવા કંઈક પ્રકારના અનુપમ અલૌકિક મનોરથવાળા ભક્તો છે.

શ્રી વિઠલેશ પ્રભુચરણનો પરિવાર રસરોળ રસભરેલો છે. કુંજ નિકુંજમાં અનંત શોભાને ધારણ કરનારી સુંદર મુખી કૃષાંગ્યા શ્રી ચંદ્રાવલી તેનો પરિકર કેવો હોય? તેની દશા કેવી હોય? એ મલકતા મુખામ્બુજી, કોટિ મન્મથનું માન હરનારા મદનાતિ મનોહર દ્વાદશ નિકુંજ નાયકની મનહારિણી શ્રી રાધિકા, તેની પ્રિયમાં પ્રિય સખી છે. તેનો પરિકર પણ પ્રત્યેક નિકુંજની મહદ્ નાયિકા રૂપ જ હોય, તેમાં સંશયને સ્થાન નથી.

એ પરમ અલૌકિક સ્વરૂપાનંદ નિમગ્ન પરિકર હાલ પણ કંઈક સુખ આપ્યા કરે છે.

(જેના અંતરમાં જેવું તાન તેને તેવું માન છે.)

કેવળ મહા અલૌકિક આનંદ પરમાનંદની લહેર પશુપક્ષીથી લઈ જ્ઞાની ધ્યાની જડ કોઈને પણ ચડે તો જરૂર ઉપર કહી ગયા તેવા સર્વ મનોરથોથી મન મગ્ન થઈ ફરે છે. કૃપા માર્ગમાં ચઢેલા કૃપા પાત્રોને યુગ પ્રભાવી પીત રોગથી ગ્રશિત પરખી શકતા નથી.

શ્રી વિઠલેશનો શું શું અનુભવ આપું, એમને કેમ કેવા પ્રકારે વરણવવા? ગુપ્તરસ, સ્વપ્નદર્શન ગ્રંથ અને વિજ્ઞાપ્તિઓ અગાધ રસ રૂપ છે. આ શ્રી ચંદ્રાવલીજીના અંતરના આનંદની લહેર જેને ચડે તેની નિદ્રા, કામ, ક્રોધ, અન્યથા મોહ, લોભ કોઈ નસમાં ઊભો ન રહે તેવો એમનો પ્રગાઢ પ્રતાપ છે. પ્રેમગાભરી, વસમા વિરહ વિકલથી વિલાપતી, વૃન્દાવન-ભૂષિણીની કથા તો બધી જ સાંભળવા જેવી છે. શ્રી લલિતાજી રૂપ વૈષ્ણવશિરોમણિ દામોદરદાસ દ્વારા ભાવુકોનાં ભાગ્ય ખુલ્યાં છે. સર્વ કથારસ ત્યાંથી રેલો છે. શૃંગારકલ્પદ્રુમ શ્રી વિઠ્ઠલેશ પ્રભુના હૃદયમાંથી રસીલી રસદાર વાતને કઢાવનાર દામોદરદાસ જેવા પ્રભુએ પ્રકટ ન કર્યા હોત તો અનંત યોનિના આવેશને લઈ આવેલા જીવો શું જાણત? *સાભાર :*

શ્રી વલ્લભાખ્યાન : ૮ મૂ. પદ ૨૩/૨૪
(મૂળ સાથે - સુબોધિની ટીકા સહિત)

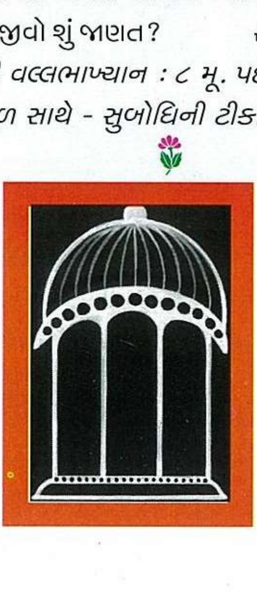

સાંઝીમાં દૃષ્ટિ ભાવનાનું સિંચન - નવસ્વરૂપો દ્વારા

એ રસેષના નવસ્વરૂપોમાં રસભીના સંસ્કારો છે, અને સાચે જ એ નવસ્વરૂપોમાં રસકેફ છે.

શ્રીવલ્લભપ્રભુ (૧) સૌથી ગહન મહારસના સંસ્કાર દેનાર શ્રીવલ્લભપ્રભુ છે. કારણકે, મહારસરૂપી સંસ્કારનું મૂળ તેમજ ભાષાને પ્રેરનાર ને શબ્દ કે ધ્વનિ ઉત્પન્ન કરનાર અને માનવોને સંસ્કારભાષા વ્યક્ત કરવાની ઈન્દ્રિયોને સતેજ કરનાર શ્રીમહાપ્રભુજી છે.

શ્રીનાથજી (૨) સૌથી મોટો વેપારી (શ્રીનાથજી) નિકુંજનાયક છે. કારણકે આખી પૃથ્વીનો વેપાર, દૈવીજીવોની દોરી, ને ભાવતાલ તેના હાથમાં છે, તેના ચોપડારૂપી સાહિત્યમાં એક બે સૈકાના જ હિસાબો નથી, પરંતુ તેમાં તો અનંતકાળના હિસાબો રાખવામાં આવ્યા છે, તેને કોઈ છેતરી શકતું નથી. તેના ચોપડામાં જમા-ઉધાર એવું ચોક્કસ છે કે તેમાં એક કોડીની પણ ભૂલ થતી નથી. દરેક જીવોએ જેવાં કે રાજા, રંક, સ્ત્રી, પુરુષ, બાળક, વૃદ્ધ, પશુ, પક્ષી ઇત્યાદિ દરેક પ્રજાએ પાઈએ પાઈનો હિસાબ તેને આપવો પડે છે.

શ્રી મહારાણી યમુનાજી (૩) સૌથી વધારે દયા કરનાર શ્રીમહારાણી યમુનાજી ''મા'' છે.

કારણ કે, માનવજાતને વાત્સલ્યભાવ શીખવવાની આ વિશ્વરૂપી શાળા તેણે ઉઘાડી છે, અને તેમાંથી એવી અદ્ભૂત રીતે તે દૈવીજીવોને ખેંચી રહે છે કે તે જીવો દીનતાથી આગળ વધી સારા સંસ્કારનો વિકાસ કરે છે, અને હજી કેટલાક તેના સંસ્કારો ઝીલી રહ્યા છે.

તેની આ વિશાળ પટરૂપી ગોદમાં ફક્ત માનવો જ વાત્સલ્યભાવ ને પયપાન કરી સંસ્કારરૂપી શિક્ષણ લે છે, એવું નથી, પરંતુ તેમાં તો પશુ, પક્ષી, પ્રાણી, જીવ, જંતુ, વનસ્પતી દરેકનો સમાવેશ થાય છે, ને દરેકનો વિકાસ (શરણરૂપી) થઈ રહ્યો છે. તે કેટલીક ઉદાર ''મા'' છે? અને તેની ધીરજ પણ અખૂટ છે, તે ગંભીરને શાંત છતાં ઘણી જ ચંચળ ને પ્રેમાળ છે. જગતમાં આદર્શ ને પ્રેમાળ ''માતા'' શ્રીયમુનાજી છે.

....

શ્રી મથુરેશજી (૧) સૌથી મોટો ઇતિહાસકાર શ્રી મથુરેશ છે. (હાલ ગોકુલ-પહેલાં કોટા) કારણ કે, આ જગતનો ઇતિહાસ ઘડનાર જ તે છે, તેની યોજના પ્રમાણે પૃથ્વી પર પ્રજાઓ અને ઉપપ્રજાઓ જન્મે છે, ને મરણ પામે તેની યોજના પ્રમાણે જ ભૂતળ પર શ્રીવલ્લભની આજ્ઞાનુસાર તેનું પ્રાગટ્ય શ્રીવલ્લભકુળમાં બાળકરૂપે થાય છે ને અનેક લીલાઓ કરી બતાવે છે.

શ્રી વિઠ્ઠલેશજી (૨) સૌથી મોટો પૃથ્વી રચનાર શ્રી વિઠ્ઠલેશ છે. (નાથદ્વાર-મેવાડ) કારણ કે પદાર્થ માત્ર તેમજ તમામ પ્રકારની શક્તિઓ, વીજળી, પ્રકાશ, ગરમી વિગેરે તેણે ઉત્પન્ન કર્યા છે, પામર મનુષ્યો તો તેનો ફક્ત (ઉપયોગ) વપરાશ કરી જાણે છે. તેણે કરેલી પૃથ્વીની રચના અકળ ને અગાધ છે, પામર જીવોનું તે સમજવાનું શું ગજું?

શ્રી દ્વારકેશજી (૩) સૌથી મોટો કલાકાર શ્રી દ્વારકેશ છે. (કાંકરોલી, રાજસ્થાન મેવાડ) કારણ કે દ્વારકેશ પ્રભુ સૌંદર્યરૂપ છે. સર્વ કળાઓનો સર્જનહાર તથા પ્રેરનાર તે છે, પૃથ્વી પર જે કંઈ અલૌકીકતાભર્યું છે, તે અમુલ્ય છે, કેમકે તેની પાછળ શ્રી દ્વારકેશ પ્રભુના કળામય શ્રીહસ્ત રહેલા છે.

શ્રી ગોકુલનાથજી (૪) સૌથી મોટો ચિત્રકાર શ્રી ગોકુલનાથજી છે. (શ્રીમદ્ ગોકુલ-વ્રજમાં). કારણ કે આ સૃષ્ટિ ઉપર જે કંઈ છે તે તેણે આલેખેલા સુંદર ચિત્રોમાં બતાવેલા નિયમ, રંગ, ભાવ ને કલમ દોરી, તે પ્રમાણે ચીતરીને જ રચાયું છે.

શ્રી ગોકુળચંદ્રમાજી (૫) સૌથી મોટો સંગીતકાર શ્રી ગોકુળચંદ્રમાજી છે. (કામવન-વ્રજમાં) કારણ કે તે નૃત્યમાં નીપુણ છે. રાગ, રાગણી, તાલ, નૃત્ય પ્રથમ તેણે રચ્યાં ને બતાવ્યાં છે, તેમજ તેના નામ, નિયમો પણ તેણે જ બનાવ્યાં છે. તેણે શરદ્‌ની રાતમાં રાસ રચ્યો, ને ત્રીભંગી સ્વરૂપે મહારાસ રમ્યો.

શ્રી બાળકૃષ્ણજી (૬) સૌથી મોટો નૃત્યકાર શ્રીબાળકૃષ્ણજી છે : (સૂરત) કારણ કે નંદાલયમાં જનની જશોદાની ગોદમાં, તેમજ ગોપાંગનાના આંગણામાં બાલનૃત્ય કરી ખેલનાર તે છે અને બાલનૃત્યના ભાવ રચનાર તે છે, તેમજ બાળલીલા બતાવનાર પણ તે જ સ્વરૂપ છે.

શ્રી મદનમોહનજી (૭) સૌથી મોટા કામને જીતનાર શ્રી મદનમોહનજી છે. (કામવન-વ્રજમાં) કારણ કે આખી પૃથ્વી પર ''કામ'' તેણે વિચારપૂર્વક સર્જ્યો છે. ને તેના ઉપર વિવિધ પ્રકારનાં કામશાસ્ત્રો રચાવ્યાં છે, બાદ તેણે પ્રાણીમાત્ર તેમજ મનુષ્ય જાતી માટે કામ ઉત્પન્ન કર્યો છે, પરંતુ સમય (ૠતુઅનુસાર) પ્રમાણે તેમાં ફેરફાર કરે છે. પૃથ્વી પરનાં માનવીઓ ને પશુ-પક્ષી, પ્રાણી તેમજ જીવજંતુ તેની યોજના પ્રમાણે સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન કરે છે.

આ દ્રષ્ટિ ભાવના આવવાથી, અને સમજવાથી માનવોમાં જો માલિકભાવ ન રહે ને તેનામાં સાચી સંસ્કારિતા, દીનતા, નમ્રતા આવે તો આપણા વૈષ્ણવજનો (ભાઈ-બહેનો) પોતપોતાની સંસ્કારીતા, શક્તિ,ને ભાવ પ્રમાણે પ્રભુનું જ્ઞાન, વિજ્ઞાને કળા ને સમજવા પ્રયત્ન કરે તો પ્રયત્નમાં જરૂર સિદ્ધિ મેળવી શકાય.

સ: આભાર : વેણુધર - જાન્યુ.૧૯૫૬

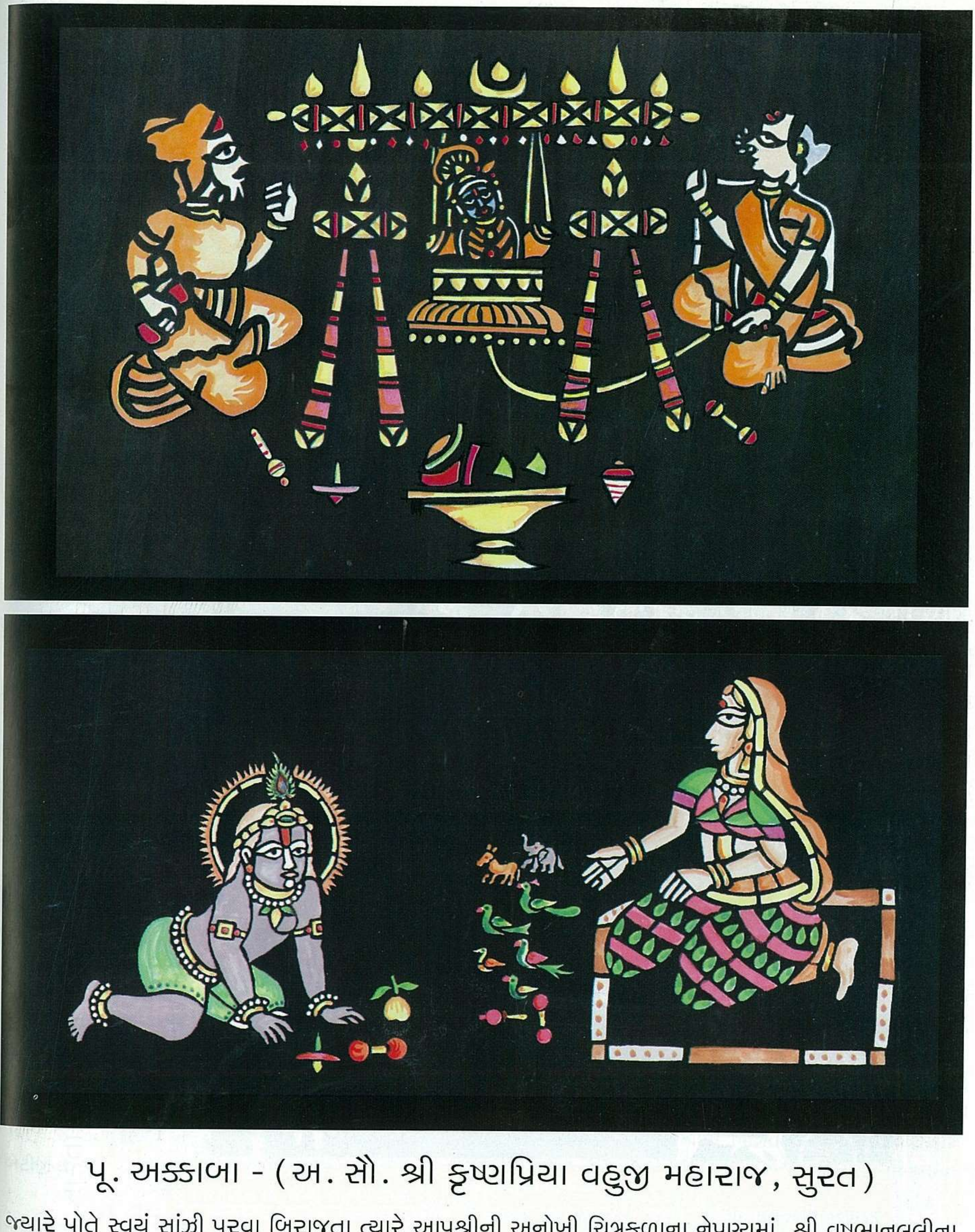

પૂ. અક્કાબા - (અ. સૌ. શ્રી કૃષ્ણપ્રિયા વહુજી મહારાજ, સુરત)

જ્યારે પોતે સ્વયં સાંઝી પૂરવા બિરાજતા ત્યારે આપશ્રીની અનોખી ચિત્રકળાના નૈપુણ્યમાં, શ્રી વૃષભાનલલીના નૈપુણ્યની અલૌકિક ઝાંખી થતી. આપશ્રીની રંગ પૂરણી પણ ઉત્તમ કક્ષાની રહેતી.

[સૌજન્ય : રાસેશ્વરનો રસથાળ (૧૯૯૧) - શ્રી ગોવિંદ પ્રભુ ટ્રસ્ટ - સુરત]

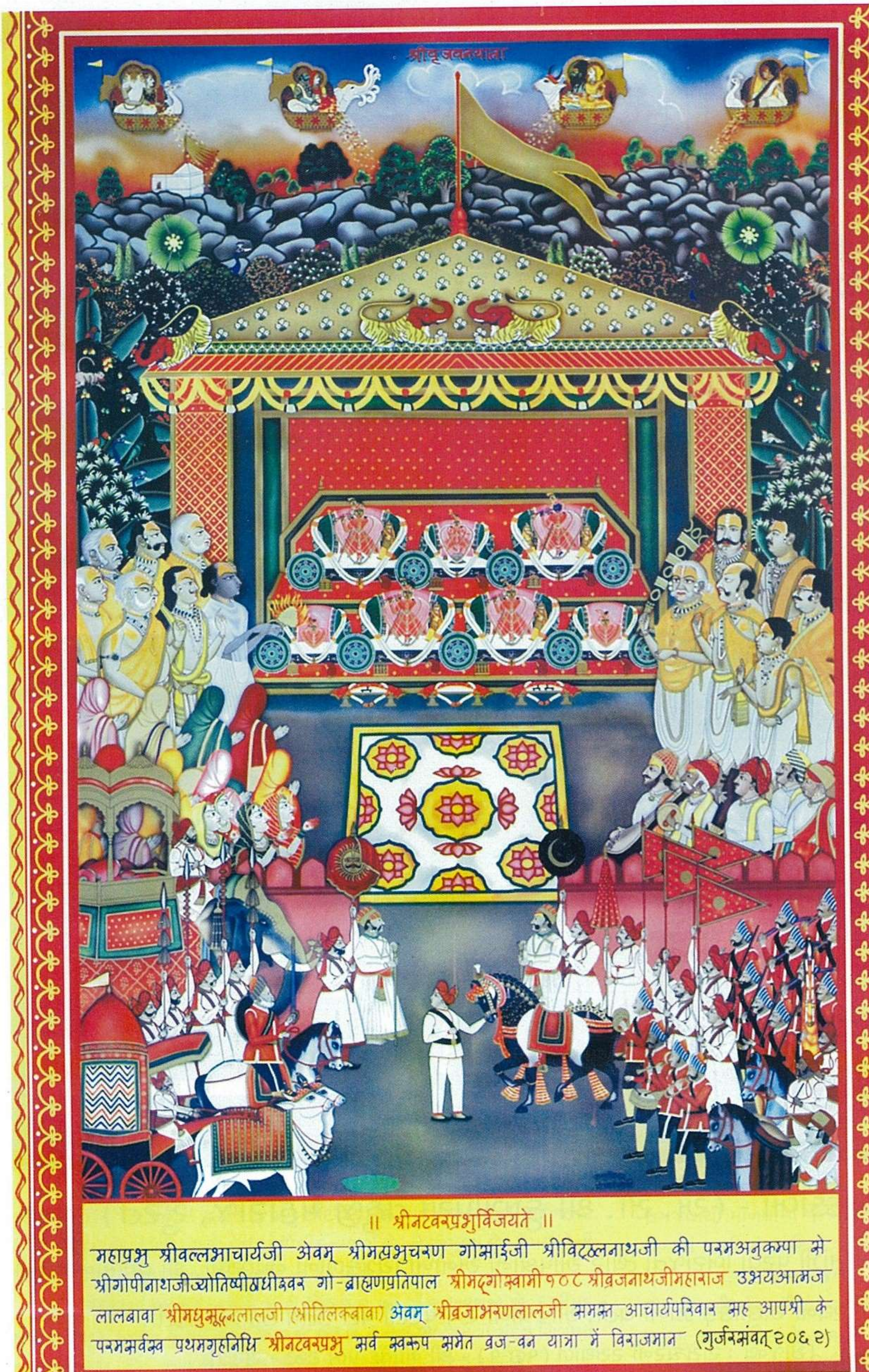

॥ श्रीनटवरप्रभुर्विजयते ॥

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी अेवम् श्रीमत्प्रभुचरण गोस्वाईजी श्रीविट्ठलनाथजी की परमअनुकम्पा से श्रीगोपीनाथजीज्योतिष्पीठाधीश्वर गो-ब्राह्मणप्रतिपाल श्रीमद्गोस्वामी १०८ श्रीव्रजनाथजीमहाराज उभयआत्मज लालबावा श्रीमधुसूदनलालजी (श्रीतिलकबावा) अेवम् श्रीव्रजाभरणलालजी समस्त आचार्यपरिवार सह आपश्री के परमसर्वस्व प्रथमगृहनिधि श्रीनटवरप्रभु सर्व स्वरूप समेत व्रज-वन यात्रा में विराजमान (गुर्जरसंवत् २०६२)

શ્રી વલ્લભ પરિવારનો સાંઝી ઉત્સવ

સૌજન્ય : ગોસ્વામી હવેલી (અમદાવાદ)

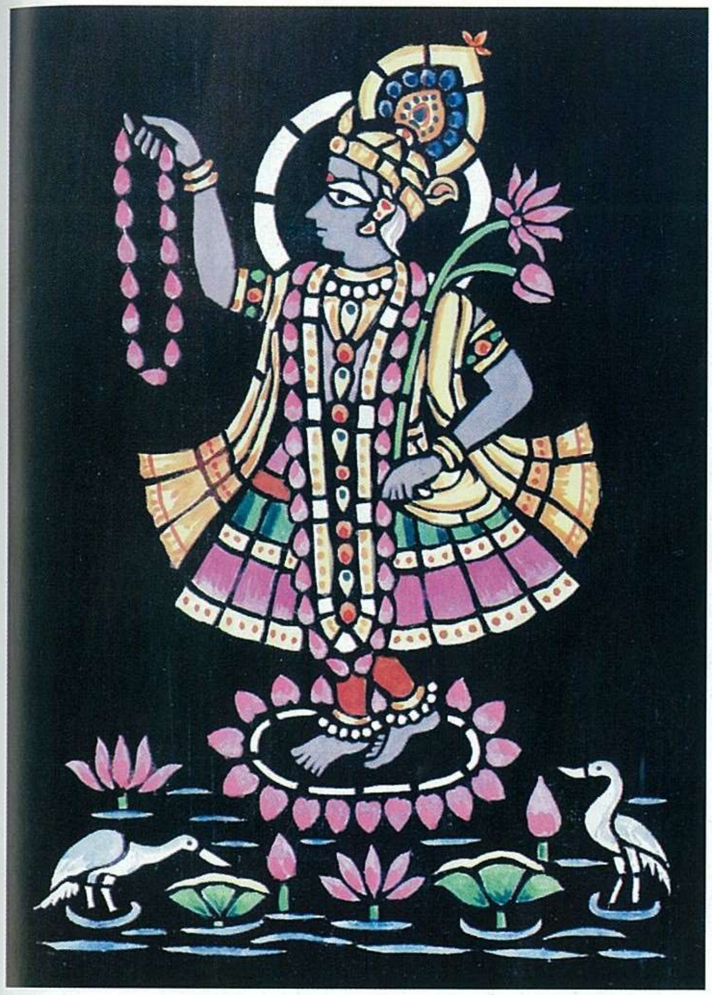

સાંઝીની સેવામાં વહુજી બેટીજી

શ્રીમદ્ ભાગવત મહાપુરાણ દશમ સ્કંધમાં કુમારિકા પૂજન એટલે કાત્યાયની વ્રતનો પ્રસંગ આવે છે, જે અહીં સમજવાનું અનિવાર્ય છે.

કુમારિકા અર્થાત્ બધા જ પ્રકારના ધર્મશાસ્ત્ર જે જન્મ લઈને આવ્યા છે, તે કુમારિકા છે. કુમારિકા 'બે' પ્રકારની હોય છે. (૧) વિવાહિત (અન્યપૂર્વા) અને (૨) અવિવાહિત (અનન્યપૂર્વા)

વિવાહિત : એક વિવાહિત છે, જેમને પતિ મળ્યો છે પણ સેવા મળી નથી. બાકી પોતાના પતિના વિષયમાં બધી જ માહિતી એને છે.

બીજી વિવાહિત છે, જેને પતિ મળ્યો છે અને સેવા મળી છે. પતિની સેવા માટે બધું જ જાણે છે અને કરે છે. (પતિ શબ્દનો અર્થ સેવા ધર્મ).

અવિવાહિત : એક કુમારિકા જે પુષ્ટિ માર્ગમાં અવિવાહિત બેટીજી છે, (શ્રી વલ્લભકુળમાં) જે કુમારિકાજીનું સ્વરૂપ છે.

બીજી કુમારિકા જે વિવાહિત છે, જેનાં લક્ષણ ઉપર બતાવ્યાં છે તે પુષ્ટિ માર્ગમાં વહુજી છે.

(૧) વિવાહિત જે પતિને ત્યાં ગઈ છે, જેને પતિની સંપૂર્ણ સેવા મળી નથી.

(શ્રી... સેવાની પૂર્ણ રીત બતાવી નથી.)

(૨) વિવાહિત જેમને સંપૂર્ણ પતિ સેવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો છે.

(શ્રી...ની સેવાની પૂર્ણ રીત બતાવી.)

આ ધર્મશાસ્ત્ર પુષ્ટિ માર્ગમાં બેટીજી અને વહુજી છે. સેવાની પ્રમુખ (મુખ્ય) રીતોમાં શ્રી વલ્લભકુળનાં વહુજી અને બેટીજીનું નિજી પ્રાધાન્ય હોય છે. જેવી રીતે આરતી માંડના, ચોક માંડના નિજ મંદિરની ડહેરી માંડના, સાંઝી માંડના, છઠ્ઠી માંડના આદિ બીજી બધી મૂર્તિમાન અવતરિત ધર્મશાસ્ત્ર સ્વરૂપ ધારણ કરીને આ સેવાના કાર્યને વહુજી અને બેટીજીના સ્વરૂપથી સંપાદિત કરવામાં આવે છે. અતઃ આ ધર્માચરણ શાસ્ત્ર પ્રમાણે છે, કારણ કે ધર્મશાસ્ત્રો દ્વારા આ સેવાનો પ્રારંભ થાય છે.

આ વહુજી અને બેટીજી બન્ને પુષ્ટિ માર્ગમાં ભાવ રૂપ લક્ષ્મી છે. જે રીતે ક્ષીરસાગરની લક્ષ્મી લૌકિકમાં કોઈ પણ પ્રકરાનું રાજસ, તામસ, સાત્ત્વિક, સામર્થ્ય દાન કરવા માટે સહાયક છે, તે જ પ્રમાણે પુષ્ટિસ્થ: પુરુષોત્તમની મનોરથમયી, સેવામયી, ભાવમયી અલૌકિક ત્રિવિધ સૃષ્ટિમાં ભાવ લક્ષ્મી સ્વરૂપ વહુજી અને બેટીજી સામર્થ્ય (શક્તિ) પ્રદાન કરવામાં સહાયક છે.

વહુજી અને બેટીજીને આરતી-સાંઝી સિદ્ધ કરવામાં સહાયક સેવકજન તે પણ શાસ્ત્ર પ્રમાણ છે. શ્રી મહાપ્રભુજીએ શ્રી ભાગવતની પ્રમાણિકતામાં (વૃત્રાસુર વધોપેતં) શબ્દ પ્રમાણ રૂપ કહ્યો છે. વૃત્રાસુરે ચતુઃશ્લોકીમાં પ્રાર્થના કરી છે કે, ''દાસાનુદાસો ભવિતાસ્મિ ભૂયઃ। જ્યારે વહુજી, બેટીજી કોઈ સેવા સંભાળે (કરે) છે ત્યારે તેમના હાથ નીચે જે સેવકજન છે તે ''દાસાનુદાસો ભવિતાસ્મિ'' આ પંક્તિની ભાવનાથી અનુયાયી છે. જે અત્યંત બડભાગી છે, કારણ કે નિકુંજની લીલાઓમાં દાસાનુદાસની ભાવનાથી સેવક થવું, કયાં સુધી કહી શકાય.

''બરનો ન જાય.''

સૌભાગ્યવાળા ગોપીજનોનું 'સાંઝી વ્રત' છે. કુમારિકાઓનું 'કાત્યાયની વ્રત' છે.

શેષ :

ધર્મશાસ્ત્રમાં બે પ્રકાર છે :

(૧) એક એ છે જે શ્રી કૃષ્ણની સેવા બતાવે છે. એક ધર્મશાસ્ત્ર એ છે જે શ્રી કૃષ્ણની સેવાની ફક્ત વાતો જ કરે છે, સેવા સુખ જાણતા નથી.

(૨) બીજા એ છે કે જે શ્રી કૃષ્ણ સેવાની ફક્ત વાતો કરે છે, જે સેવા સુખ જાણે છે અને વાત કરીને શ્રી કૃષ્ણની સેવા બતાવે છે, તે શ્રીમદ્ ભાગવત અને ગીતા આદિ શાસ્ત્ર છે. એવી રીતે વિવાહિત - અવિવાહિત કુમારિકાઓનો પરિચય સમજવો જોઈએ.

શ્રી વલ્લભાચાર્યજીએ આ બે પ્રકારના ગ્રંથોનો પ્રમાણ સ્વીકાર કર્યો છે. જે શાસ્ત્ર સેવા સુખ વર્ણન કરે છે તે પ્રમાણ છે અને જે શ્રી કૃષ્ણની ચર્ચા કરે છે અથવા શ્રી કૃષ્ણની સાંભળેલી ચર્ચાનું વર્ણન કરે છે. શ્રી વલ્લભાચાર્યજી એ ગ્રંથોનો સ્વીકાર કરે છે.

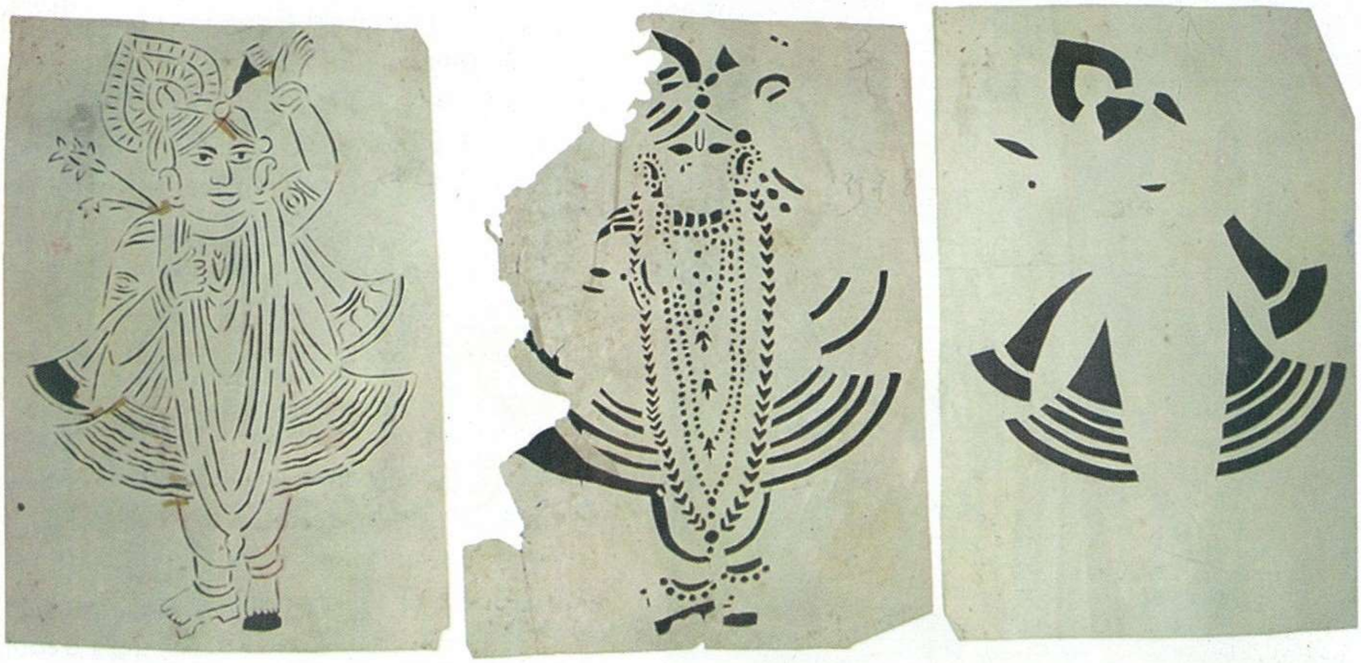

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન ચસની સાંઝીના ખાંકા

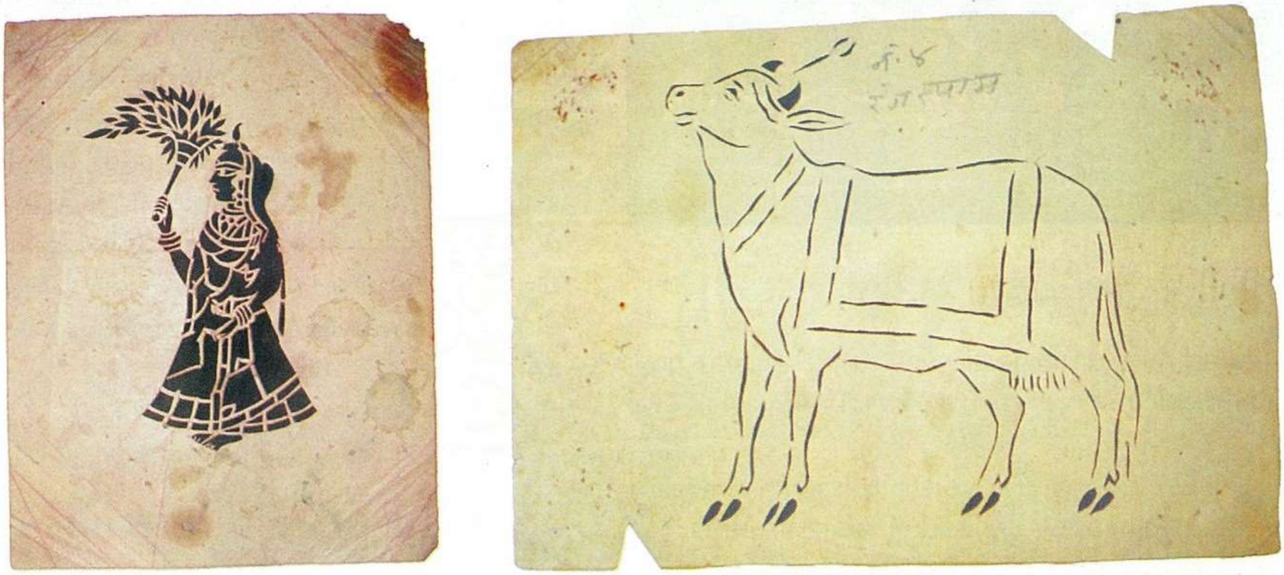

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન સાંઝીના ખાંકા (શ્રી વિદ્યુભૂપણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

પુષ્ટિ સમ્પ્રદાયમાં સાંઝીની રચના શ્રી વલ્લભકુળના વહુજી-બેટીજી દ્વારા :

પુષ્ટિ સમ્પ્રદાયમાં સાંઝીની રચના શ્રી વિઠ્ઠલેશ પ્રભુનાં બેટીજી તથા સાતે બાળકોનાં વહુજી દ્વારા અંગીકાર થતી. તેનું પ્રમાણ આપના શ્રી હસ્તથી કાગળ ઉપર દોરાયેલાં પ્રાચીન રેખા-ચિત્રોથી જાણવા મળે છે.

શ્રી વલ્લભકુળના વહુજી, શ્રી સ્વામિનીજી અને બેટીજીને શ્રી યમુનાજીના ભાવથી માનવામાં આવે છે.

''તટસ્થ નવ કાનન પ્રકટ મોદ પુષ્પામ્બુના.''

શ્રી સ્વામિનીજી અને શ્રી યમુનાજીનાં હૃદય નિકુંજ-પુલિંદ તટ ઉપર પ્રગટ થવા માટે, ફૂલ અલૌકિક અને દિવ્ય છે. એટલા માટે વહુજી અને બેટીજી દ્વારા સિદ્ધ સાંઝી અલૌકિક અને દિવ્ય ભાવનાનું દાન આપે છે. શ્રીસ્વામિનીજી, શ્રી યમુનાજીના સ્વરૂપ રૂપા વહુ-બેટીજી દ્વારા જ્યારે સાંઝી સિદ્ધ થાય છે, ત્યારે શ્રી ઠાકોરજી પ્રસન્ન થાય છે.

સાંઝીમાં પૂરવામાં આવતી શ્વેત (સફેદ) અને નીલ (ભૂરા) રંગની સામગ્રી શ્રી યમુનાજીના ભાવથી હોય છે. બાકી બીજા રંગો શ્રીસ્વામિનીજીના ભાવથી સાંઝીની રચનામાં પધરાવવામાં આવે છે.

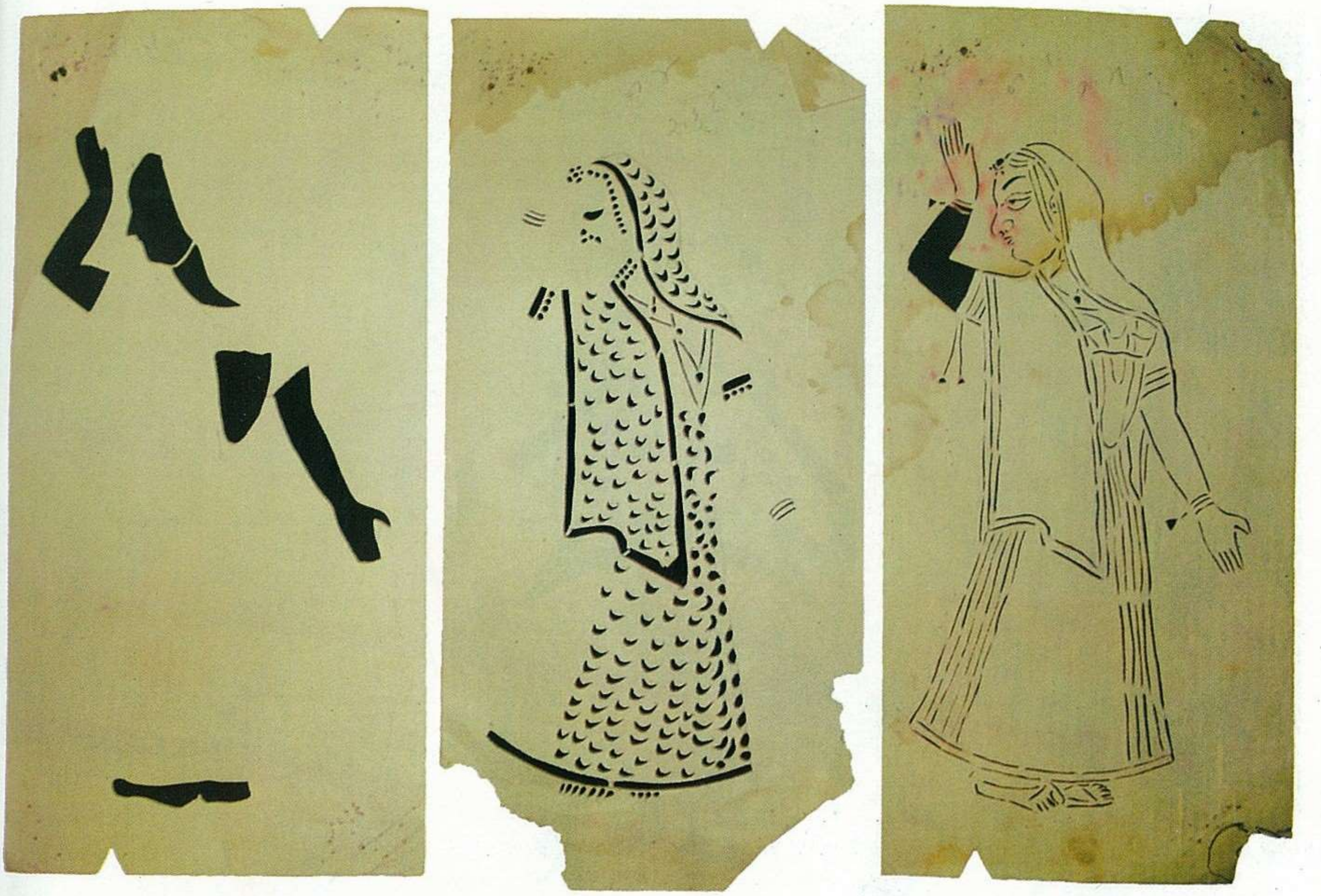

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન ચસની સાંઝીના ખાંકા (શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

પ્રભુકી વિરુદ્ધ ધર્માશ્રયલીલા :

ભૂત, ભવિષ્ય વર્તમાન હૈ, ઔર નહી હૈ વો સાંઝી મેં હૈ,
(પ્રભુકી વિરુદ્ધ ધર્માશ્રયલીલા)

''ભૂતકાલ મેં જો પ્રભુ મિલે હૈ। વહ જો ચિંતન હૈ,
આજ કે વિરહ મેં હમ કો જીવિત રખને મેં સહાય કરૈ।
અન્યથા વિરહાનલમેં પ્રાણ નહીં બચેંગે।''

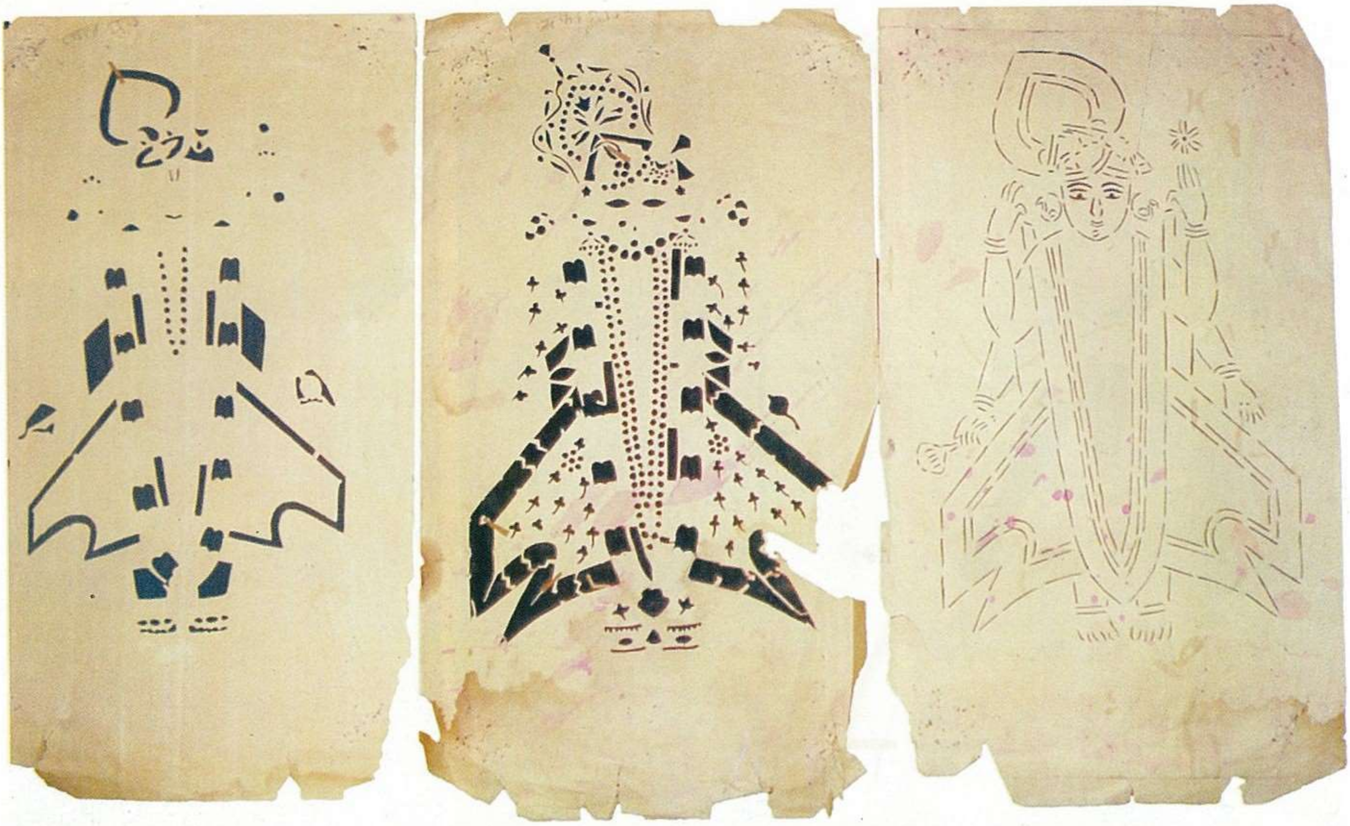

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન રાસની સાંઝીના ખાંકા (શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

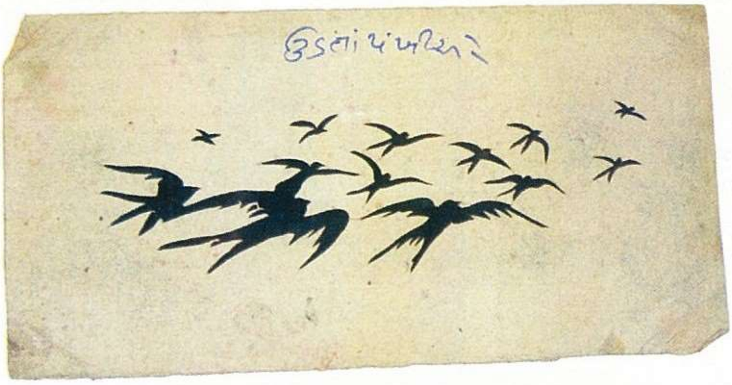

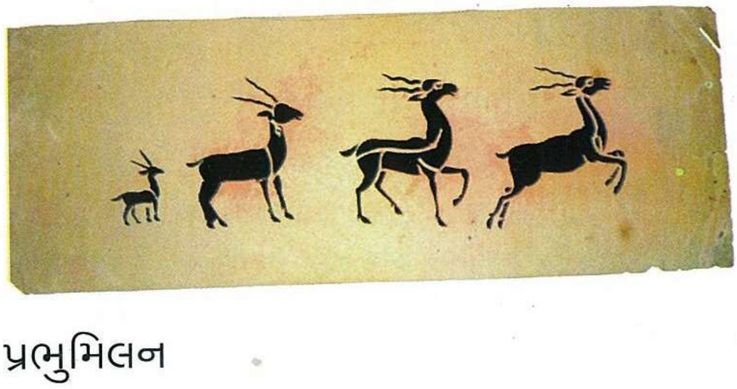

પ્રભુમિલન

ગઈ કાલનું પ્રભુમિલન અને આજના મિલન માટેના વિરહ... વચ્ચે, ગઈ કાલના મિલનનું ચિંતન આજની શરૂઆત છે. સાંઝીમાં નિર્માણ છે ગઈ કાલના મિલનનું ચિંતન.

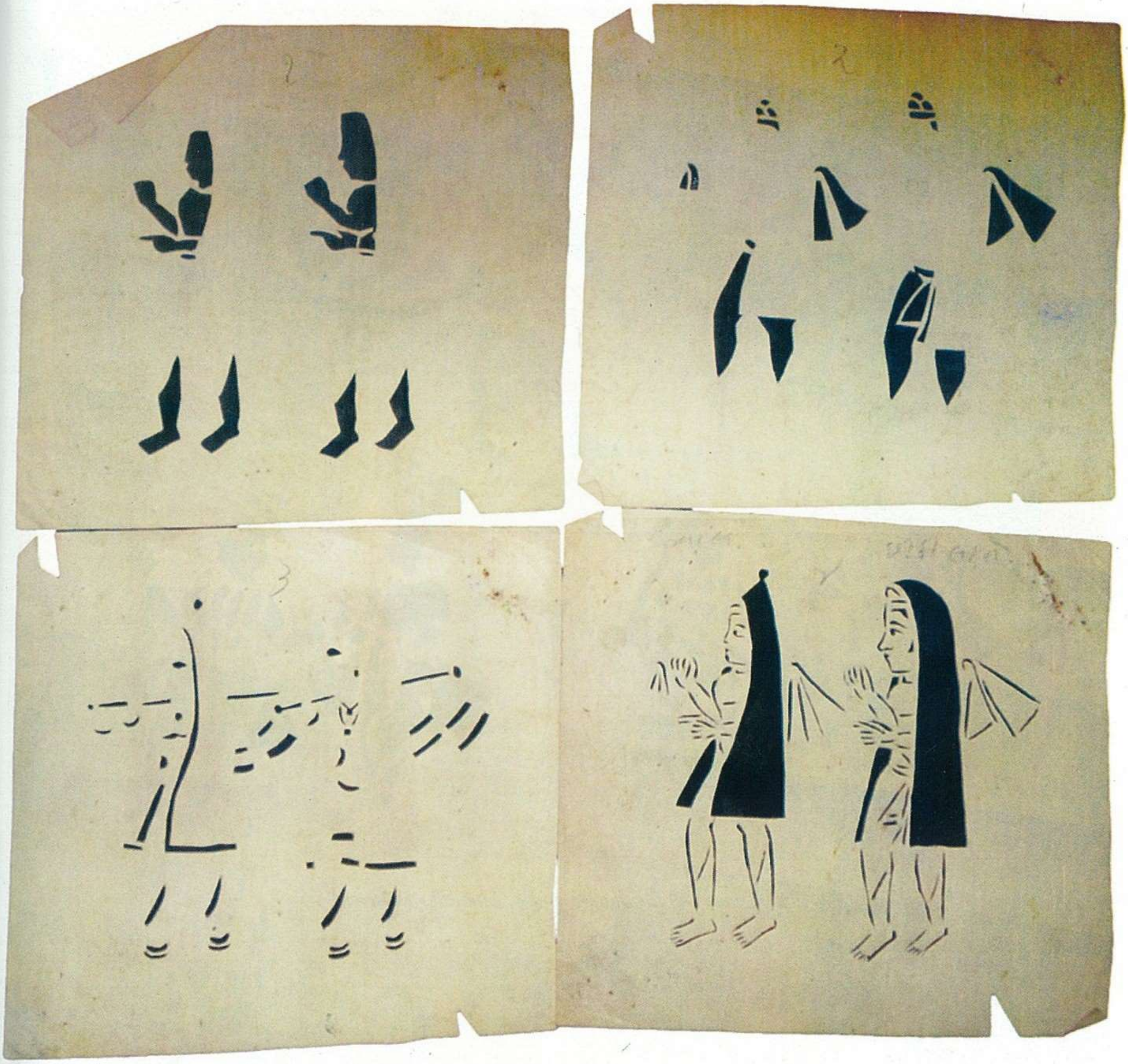

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન ચસની સાંઝીના ખાંકા (શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

એક દરવાજો સાંઝી - કૃષ્ણપ્રેમ :

''ફરીથી પાછલા જન્મમાં જતા ના રહે માટે સાંઝીમાં મન લગાવ્યું.'' જૈસી મતિ વૈસી ગતિ, જેવો જેનો સંબંધ તેવું તેનું મન, તેવો તેનો આગલો જન્મ.

પ્રભુના સ્વરૂપમાં પહોંચવાનો એક દરવાજો સાંઝી છે.

પ્રભુના ધામમાં પહોંચવાનો દરવાજો કૃષ્ણપ્રેમ છે.

''ગોવિંદ તિહારો સુયશ નિગમ નેતિ નેતિ કહી ગાવે.''

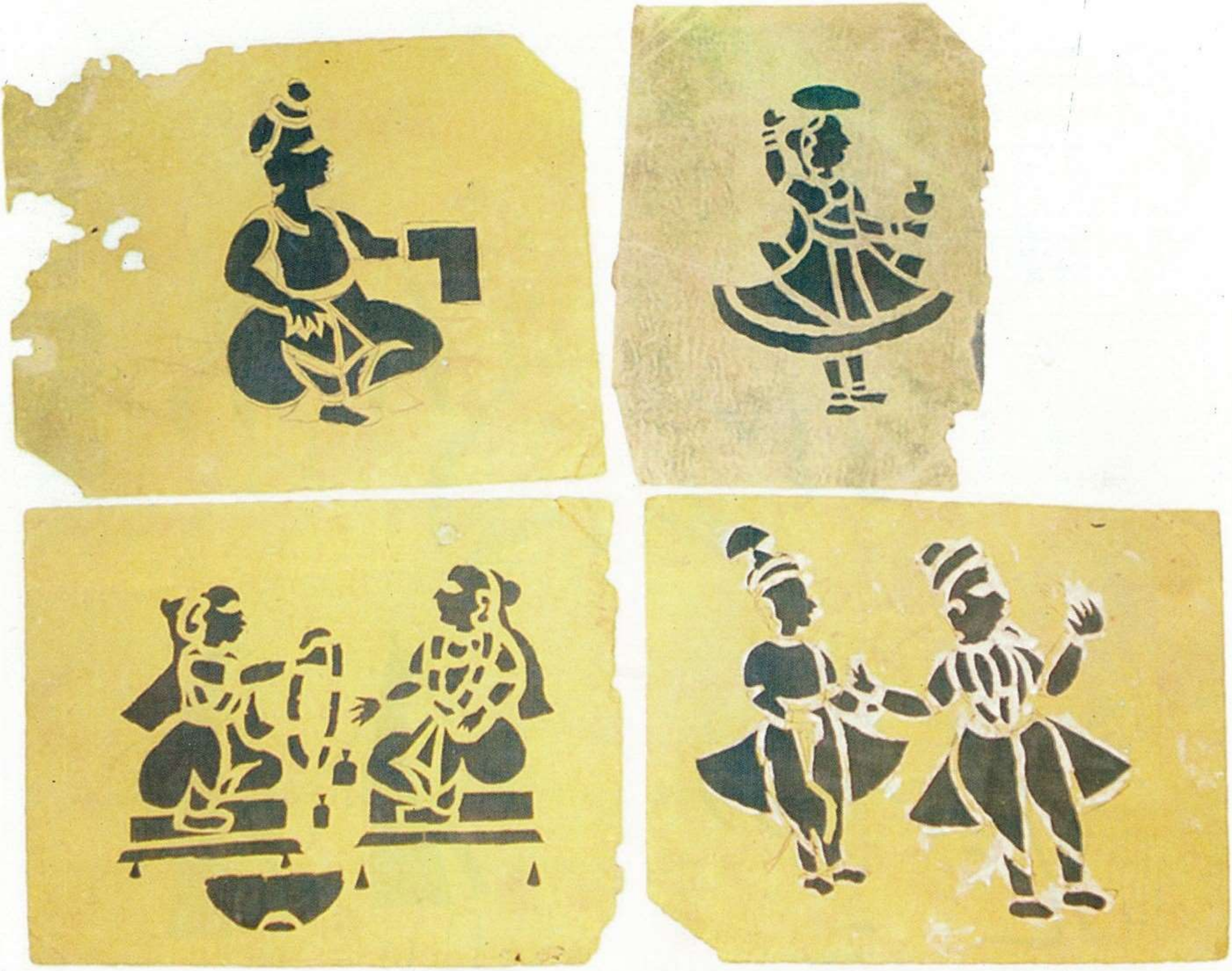

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન સાંઝીના ખાંકા (શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

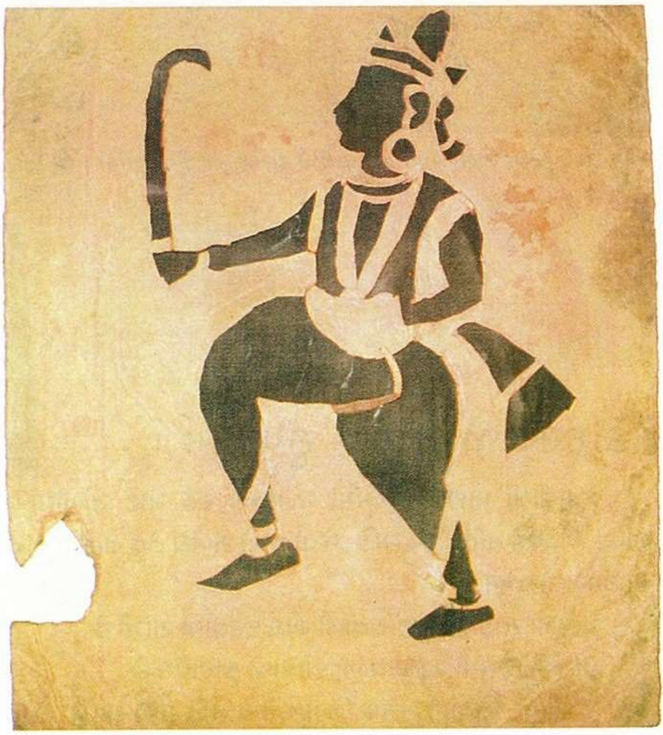

જાડા પૂંઠા ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન સાંઝીના ખાંકા
(શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

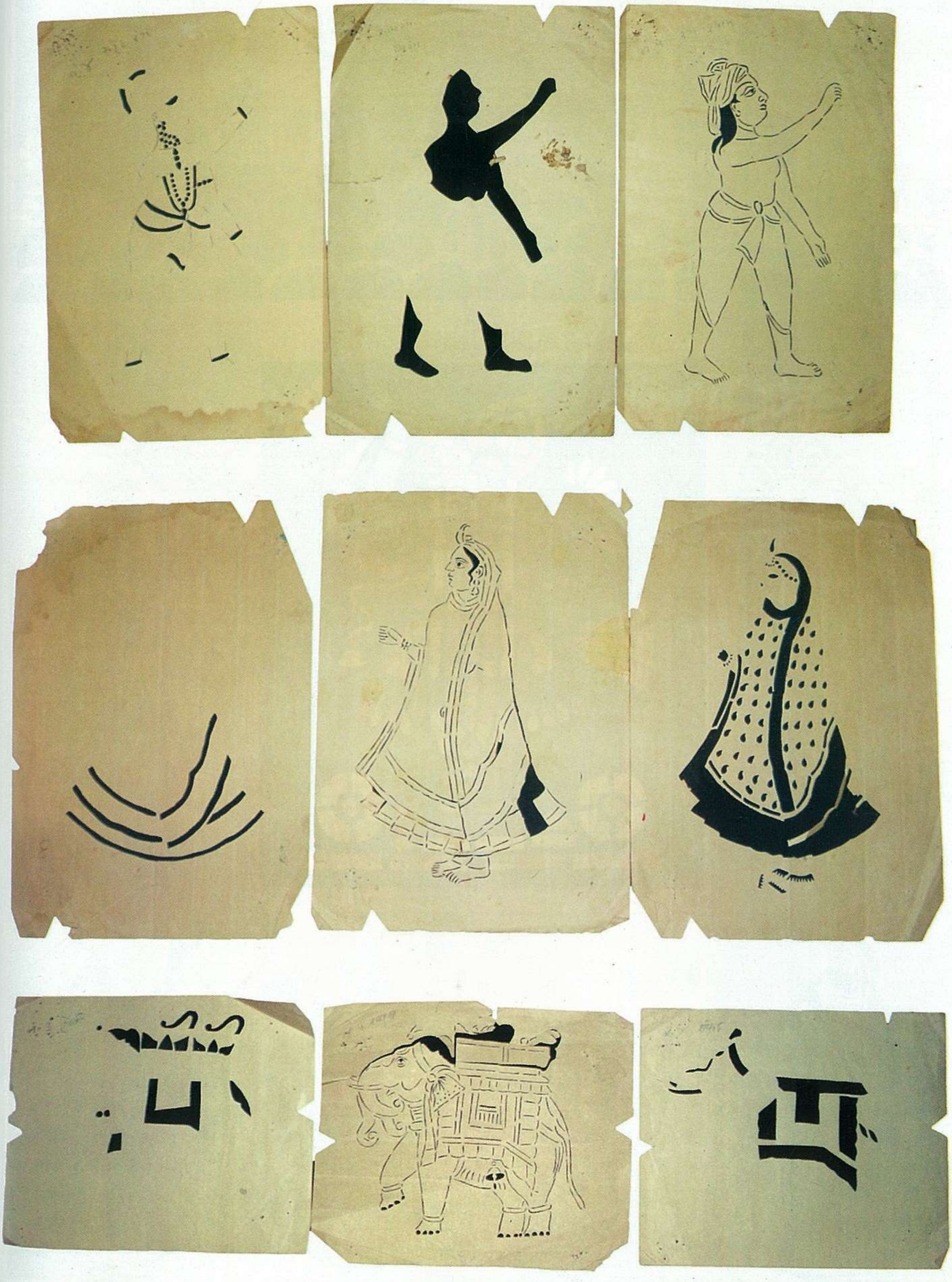

કાગળ ઉપર કોતરાયેલ, ૧૫૦ વર્ષ પ્રાચીન ચસની સાંઝીના ખાંકા (શ્રી વિદ્યુભૂષણજી શર્માજી, અમદાવાદના સૌજન્યથી)

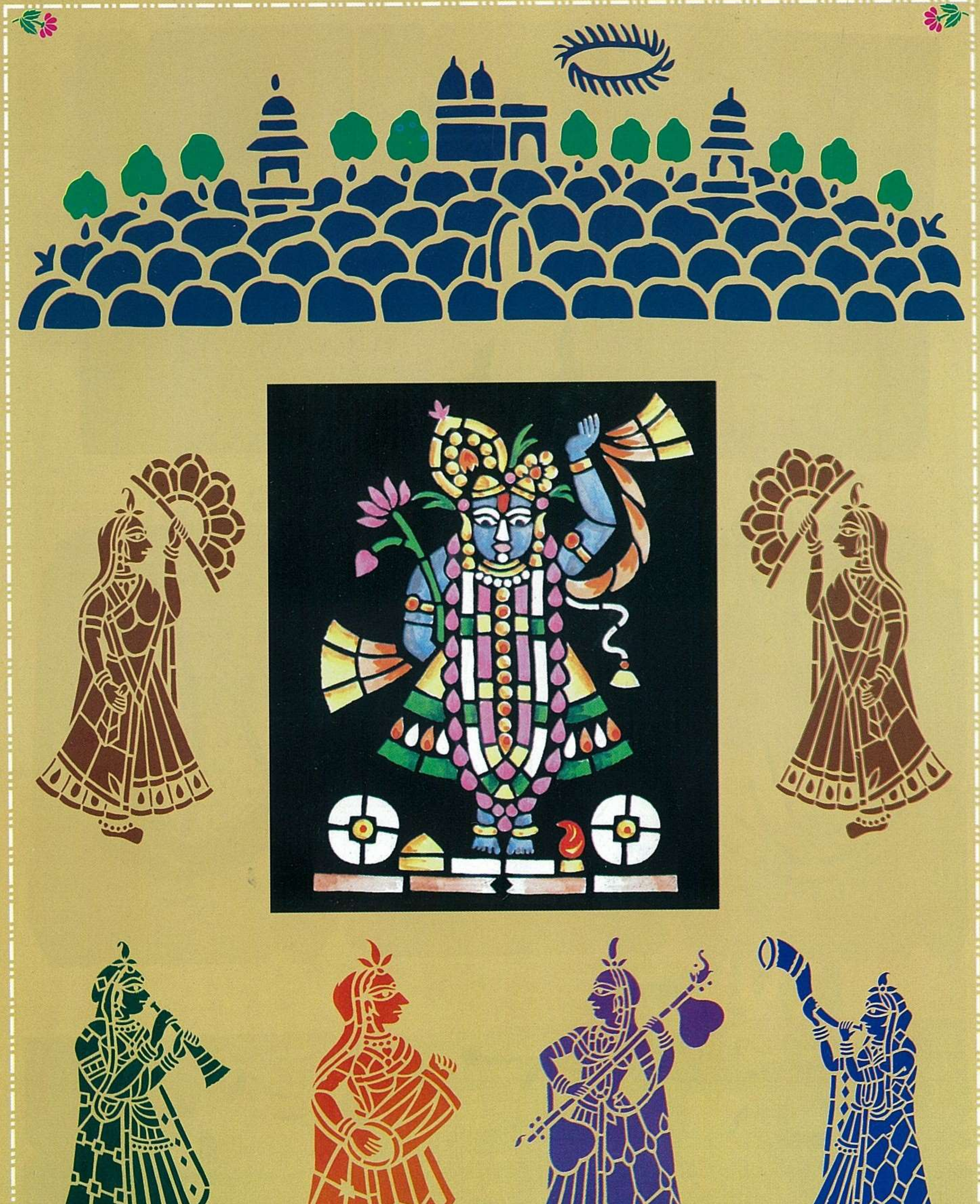

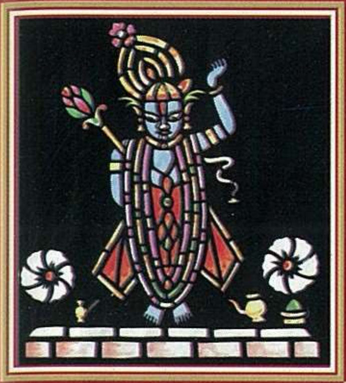

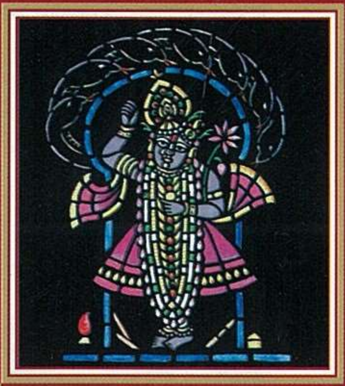

સ્થળ - ચિત્ર - સાંઝી

બાગ - બગીચા - પશુપક્ષી - વન - ઉપવન - નદી - પર્વત-કુંડ આદિ જગ્યાનું દૃશ્ય જે પોતાની જગ્યાએ સાક્ષાત્ પ્રગટ છે, સાંઝીમાં.

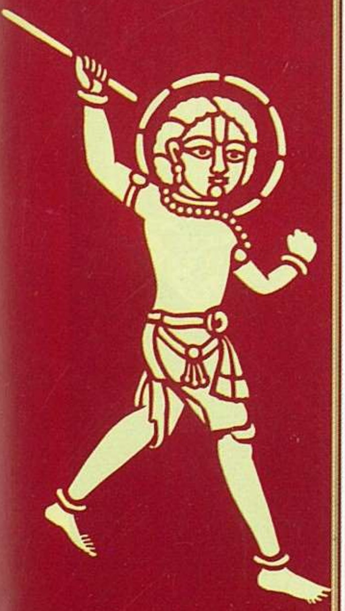

સાંઝીના પ્રકાર

સાંઝીના બે પ્રકાર છે.

(૧) *જળની સાંઝી :* રસભેદ છે. જળમાં સાંઝી રંગોથી અને ફૂલોથી સિદ્ધ થાય છે.

(૨) *સ્થળની સાંઝી :* ગોબરથી દીવાલ ઉપર સાંઝી, ફૂલોની સાંઝી, કોરા રંગોની સાંઝી, કેળનાં પાનની સાંઝી, ફળોની સાંઝી, અનાજની સાંઝી, સૂકો મેવો અને તેજાનાની સાંઝી, રત્નોની સાંઝી સંપ્રદાયમાં રચાય છે.

ચોકી અથવા સ્થળ ઉપર બનાવેલી સાંઝીની રચના શ્રી સ્વામિનીજી અને શ્રી ઠાકોરજી દ્વારા થાય છે.

પુષ્ટિ પ્રભુની લીલા નૌતમ છે. રાસમાં મનથી ચંદ્રમાને બનાવ્યો અને સામગ્રી વેણુનાદથી પ્રગટ થઈ.

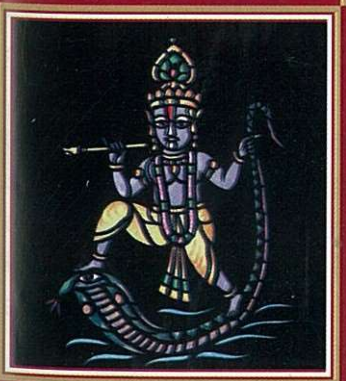

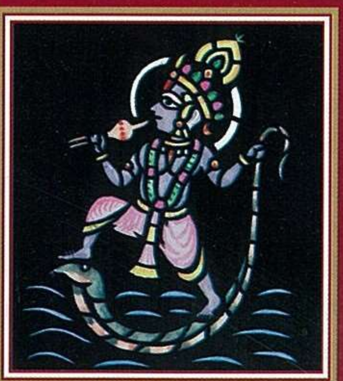

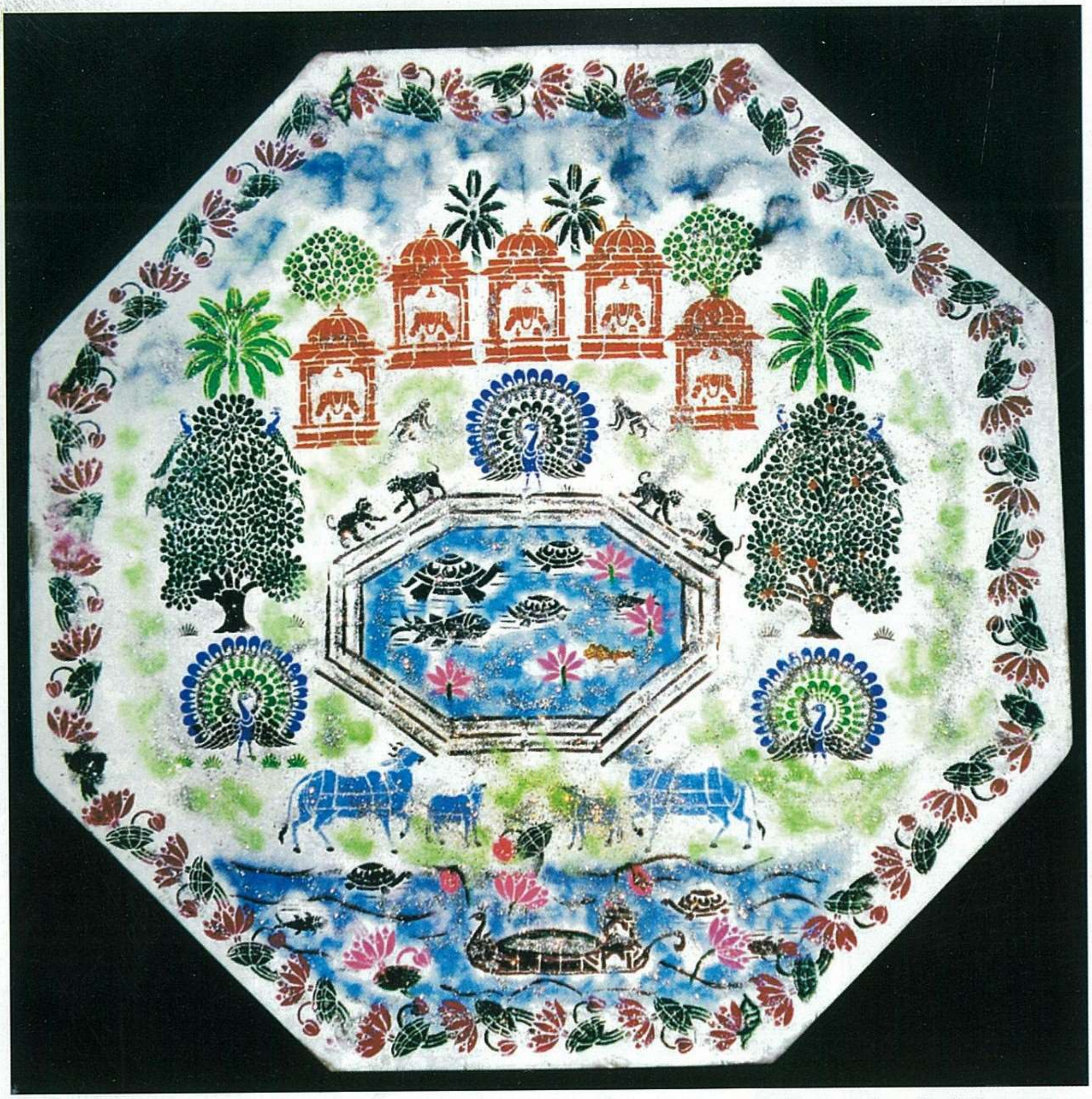

સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી (અમદાવાદ)

ચોકી ઉપર બનતી સાંઝી - રીતની સાંઝી

જે રીતે વેદમાં શ્રી હરિને બિરાજવાનું સિંહાસન હોય છે, અને તેમાં ચારે બાજુ વેદ બિરાજે છે, તે પ્રમાણે પુષ્ટિ માર્ગમાં પણ પ્રભુને બિરાજવાનું સિંહાસન છે. ત્યાં શ્રી રોહિણીજી અને શ્રી યશોદાજી આદિ માતાઓનો અધિકાર હોય છે. આવી જ રીતે નંદાલયમાં ચોકી હોય છે. ત્યાં ચાર પ્રકારની શ્રુતિઓ અથવા ગોપીઓનો અધિકાર હોય છે. આ અધિકાર ભૂમિ નંદાલયમાં ચોકી કહેવાય છે. અહીં શ્રુતિઓનો અધિકાર છે અથવા તો ગોપીજનોનો અધિકાર છે.

શ્રુતિ અને ગોપીઓનો અધિકાર વારંવાર બદલાતો રહે છે.

શ્રી ગોવર્ધન પર્વતની સાત કોસી પરિક્રમામાં નવ કંદરા છે. એક એક કંદરાની માલિક, શ્રી સ્વામિનીજી સહિત અષ્ટસખી છે. એક સખી એક કંદરાની માલિક છે. તેની આધીનતામાં બધી સખીઓ આજ્ઞાનું પાલન કરે છે. પ્રત્યેક કંદરામાં ચાલીશ (૪૦) દિવસની સેવા ગોવર્ધન સ્વરૂપ શ્રી નાથજીના સ્વરૂપમાંથી પ્રગટ થઈ છે. નવ કંદરા અને ચાલીશ દિવસની સેવા, જેના ગુણાંકથી ૩૬૦ દિવસ, આખા વર્ષની સેવા. સ્વાભાવિક છે કે અમુક ૪૦ દિવસની સેવા જે પ્રમુખ (મુખ્ય) સ્વામિનીજીના અધિકારમાં છે, એ જ કંદરામાં બીજા ૪૦ દિવસની સેવા બીજી સ્વામિનીજીના અધિકારમાં આવી જશે. આવી રીતે અધિકાર બદલાતા રહે છે. અષ્ટછાપ પરવારી કવિ હરજીવનદાસજીએ કહ્યું છે :

''સેવા, સાજ, શૃંગાર, શુભગ રસ શ્રી વલ્લભ પ્રગટાયો ।
વૃંદાવન નિકુંજકી લીલા, હરજીવન સ્વાદ ચખાયો ॥''

અહીં ધ્યાન રાખવાની વાત એ છે કે, શ્રી ગોવર્ધનની નવ કંદરામાંથી નિત્ય સેવા મનોરથ સહિત પ્રગટ થઈ છે. શ્રી યમુના પુલિન પર દ્વાદશ નિકુંજ છે, જેમાંથી ઉપરોક્ત સેવા, સાજ, શૃંગાર શુભગ રસના ભાવનું પ્રાગટ્ય થયું છે. શ્રી પ્રભુચરણ ગોકુલનાથજી

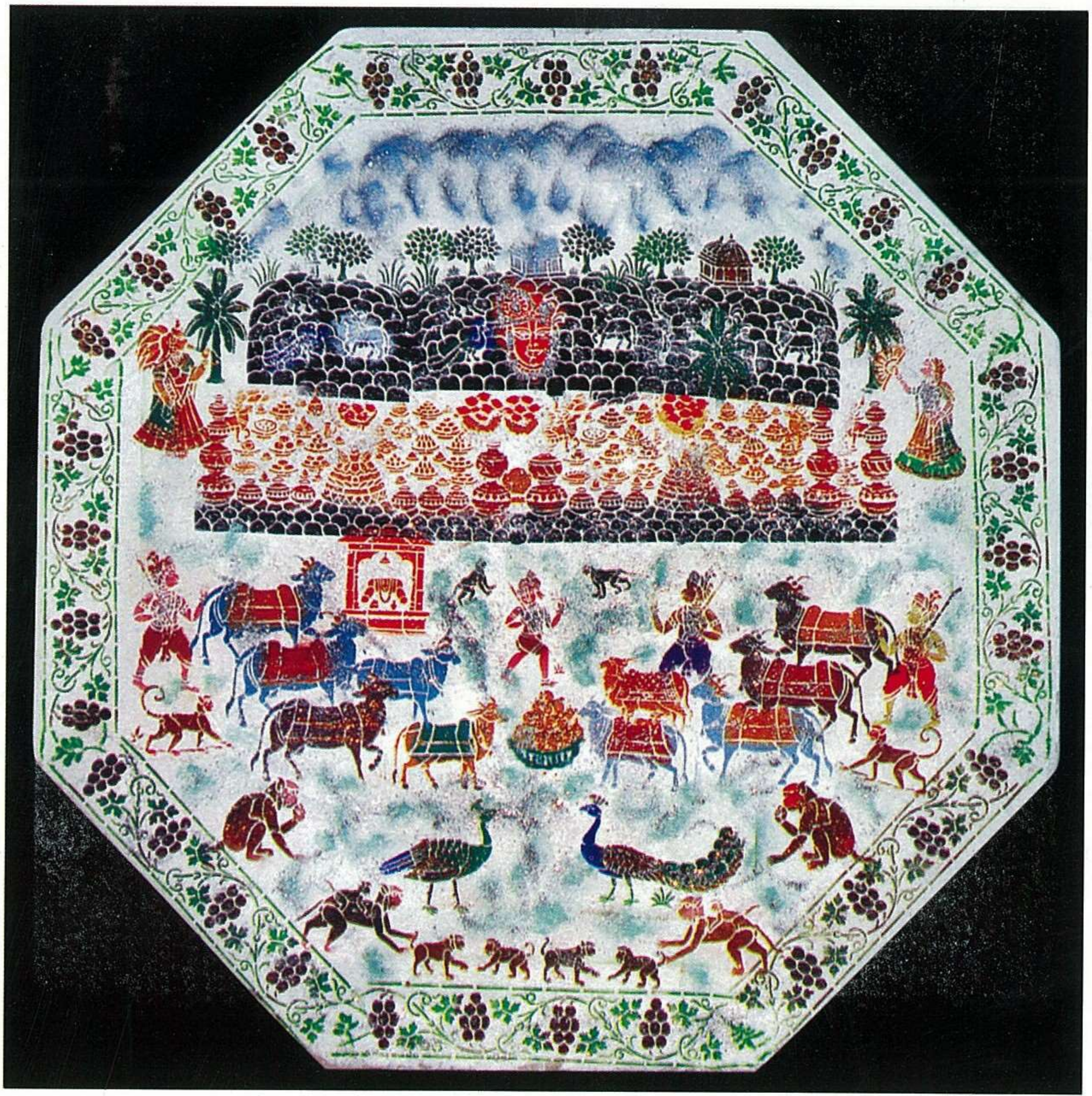

સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી (અમદાવાદ)

શ્રી હરિરાય મહાપ્રભુજી અને લીલા ભાવનાવાલા શ્રી દ્વારકેશજીએ આ ભાવનાઓનું વર્ણન કર્યું છે.

ભાવના શબ્દ શાસ્ત્ર પ્રમાણિત છે. શ્રી કપિલદેવજીએ દેવહુતીને સાંખ્ય ઉપદેશમાં ભક્તિનું વર્ણન કરતી વખતે ચરણચિહ્નોની ભાવના બતાવી છે અને શ્રીમદ્ ભાગવતના ૧૨મા સ્કંધમાં શંખ, ચક્ર, ગદા, પદ્મની ભાવના બતાવી છે. એથી નિશ્ચય માનવામાં આવે છે કે ભાવના શાસ્ત્ર પરંપરા છે.

નિત્ય સેવામાં ગાદીજી, તકિયાજી, પીછવાઈ હોય છે. ભાવનામાં એનો અર્થ, ગાદીજી શ્રી યશોદાજીની ગોદ છે; તકિયાજી ગોદીના પાર્શ્વ (જંઘા) ભાગ છે; પીછવાઈ શ્રી યશોદાજીની ઓઢણી છે. ગાદીજી, તકિયાજી, પીછવાઈ વગેરે નિત્યની રીતમાં છે. જે કંદરામાંથી પ્રગટ થયા છે અને તેની ભાવના નિકુંજમાંથી આવી છે.

અષ્ટછાપ કવિઓએ ભાવનાને જગ્યાએ જગ્યાએ કીર્તનમાં વણી લીધી છે.

''તે ચોર્યા મન માખન મેરા રી.''

શ્રી સ્વામિનીજીના શ્રી અંગમાં બાર રાશીઓની ભાવના :

''મેષસી અચલ હોઇ બેઠી વૃષભાન લલી, કરકે શૃંગાર,
તુ સિંહવન ચલો આજ મિથૂન કે રાજ.''

શ્રી ઠાકોરજીની પતંગ ઉડાડવાની લીલા :

''કાન ઉડાવત ચંગ (પતંગ) સખી રી, મેંઇતસો ઉત
આંગન હેલો રી ॥ એક અચંબો મોય સખી, યાને ખેંચી
દોર, ખીંચો મન મેરો રી ॥

ઉપરોક્ત પ્રમાણોના આધારથી સમગ્ર સાંઝી લીલામાં ભાવના પ્રધાન છે. ભાવનાવાળા પ્રભુ સદા વ્રજગોપીઓનાં હૃદયમાં નિવાસ કરે છે. અતઃ સાંઝીને નિત્ય લીલાની સાથે સાથે ભાવનાત્મક પણ ગણવામાં આવે છે.

એટલા માટે આ શ્રુતિઓ અને ગોપીજન નિત્ય અને ઉત્સવની સેવામાં પોતાનો અધિકાર જતાવે છે. ચોકી ઉપર સિદ્ધ થવાની સાંઝીની સેવા રીતની સેવા છે.

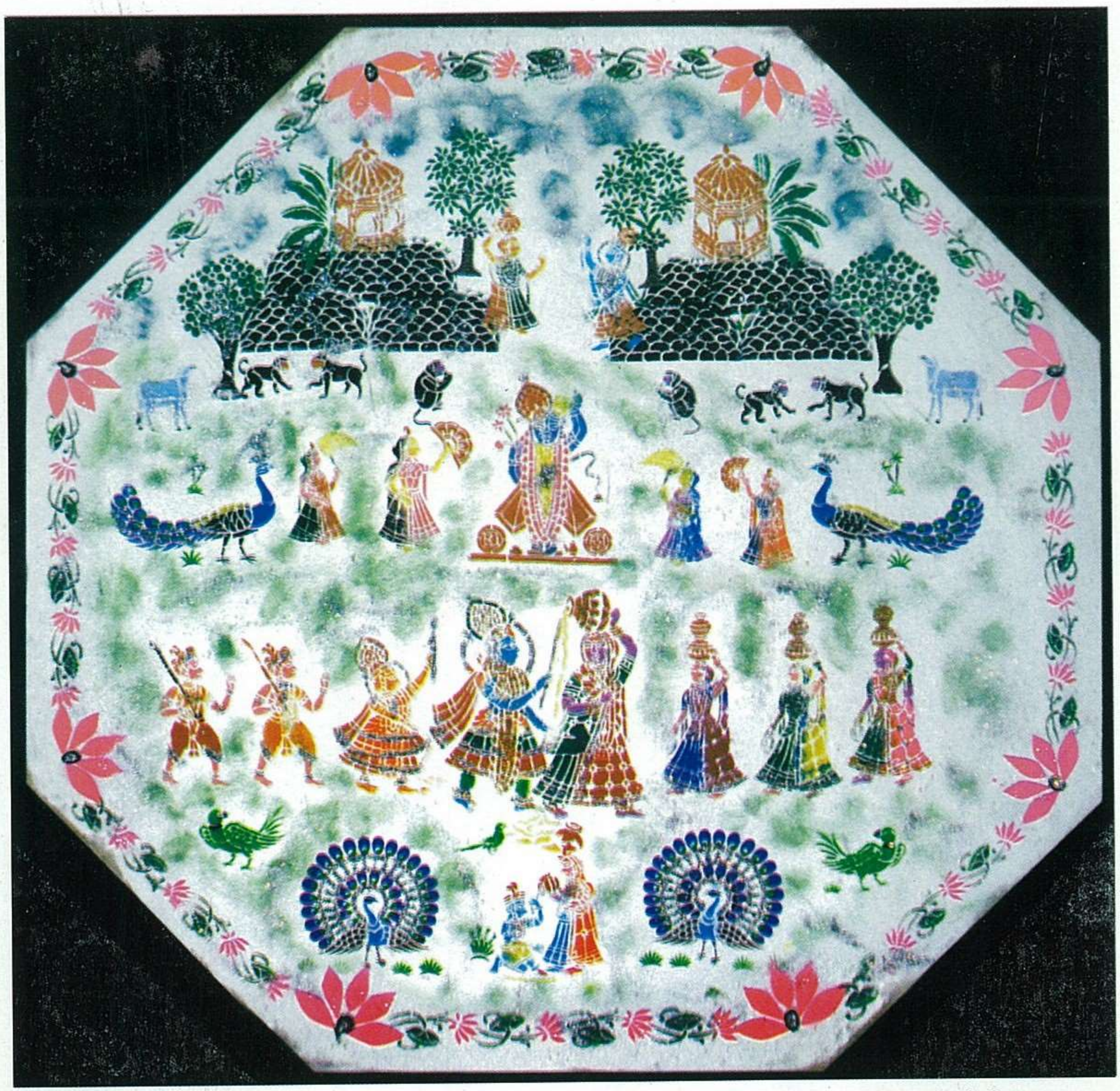

સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી (અમદાવાદ)

નંદાલયની પુષ્ટિ પદ્ધતિમાં રીતનો જન્મ (ઉદ્‌ભવ) રતિથી થયો છે. અતઃ રતિ પુષ્ટિ ભક્તિનો સ્થાયી ભાવ છે. આ કારણે સાંઝીના દિવસોમાં ચોકીની સાંઝી સિદ્ધ કરવી, ૧૫ દિવસમાં કોઈ પણ દિવસે અથવા રોજ ચોકી ઉપર સાંઝી સિદ્ધ કરવી, સ્થાયી ભાવ છે.

ચોકી આપણી સુવિધાને અનુસાર કોઈ પણ પ્રકારની હોય અથવા કોઈ પણ જાતની હોય પરંતુ પ્રથમ માન્યતા લાકડાની (કાષ્ઠની) ચોકીની છે.

આ લાકડાની ચોકી ત્રણ પ્રકારની હોય છે.

(૧) ચાર ખૂણાવાળી (ચતુષ્કોણ) = શ્રુતિ અથવા ચાર ગોપીઓનો અધિકાર.

(૨) છ ખૂણાવાળી (ષટ્કોણ) = ભક્તિ માર્ગીય નંદ અને વૃષભાનજીના છ ધર્મ અધિકાર.

(૩) આઠ ખૂણાવાળી (અષ્ટકોણ) = (અ) ચાર શ્રુતિ અને ચાર ગોપીઓના સંમિલિત અધિકાર.

(બ) આઠ કોણવાળી શ્રી યમુનાજીનાં સેવોપયોગી આઠ ઐશ્વર્ય.

(ક) આઠ સ્વામિનીજીઓના આઠ ભાવ-વિચાર.

કાષ્ઠ : ભગવદીયના હૃદયનું સ્વરૂપ છે. ભગવદીયના હૃદયનાં બે લક્ષણ સ્પષ્ટ હોય છે. (૧) એક સેવાના ભાવ રૂપ આર્દ્રતા મળવાથી હૃદયની દશા કંઈ જુદી જ હોય છે. (૨) બીજું અનોસર પછી તાપ મળવાથી હૃદયની દશા (શુષ્કતા) (સૂકા) લાકડાના જેવી હોય છે. આ ભગવદીયોના ભાવને અનુસાર કાષ્ઠ નિર્મિત ચોકીનો આશય સમજવો જોઈએ. કાષ્ઠની ચોકી ભગવદીયોનાં હૃદય રૂપ છે. કોઈક રીતે આ હૃદય ઉપર આ સાંઝી લીલા ક્યાંકથી આવીને પ્રગટ થાય છે, અથવા તો બિરાજે છે. આ રીતની પ્રધાનતા છે.

ચોકીની સાંઝીમાં નિશ્ચિત પ્રકારે સાંઝી મંડાય છે. જેમાં સૂકા રંગ અથવા બીજું જે કાંઈ નિશ્ચિત છે તેનાથી સાંઝી મંડાય છે. ચોકીની સાંઝીમાં સ્વરૂપ પધારે છે, તેથી ચોકીવાળી રીતની સાંઝીથી આ વાત સમજાય છે કે કૃષ્ણજન્મ પહેલાં નંદયશોદા અને અન્ય વ્રજગોપોના ઘરમાં સાંઝી પૂજન થતું આવ્યું હતું. જે વાત-વિધિ પહેલાં ક્યારેક હતી, તે જ વિધિ આજે પણ છે. એને રીત કહેવાય છે.

* * *

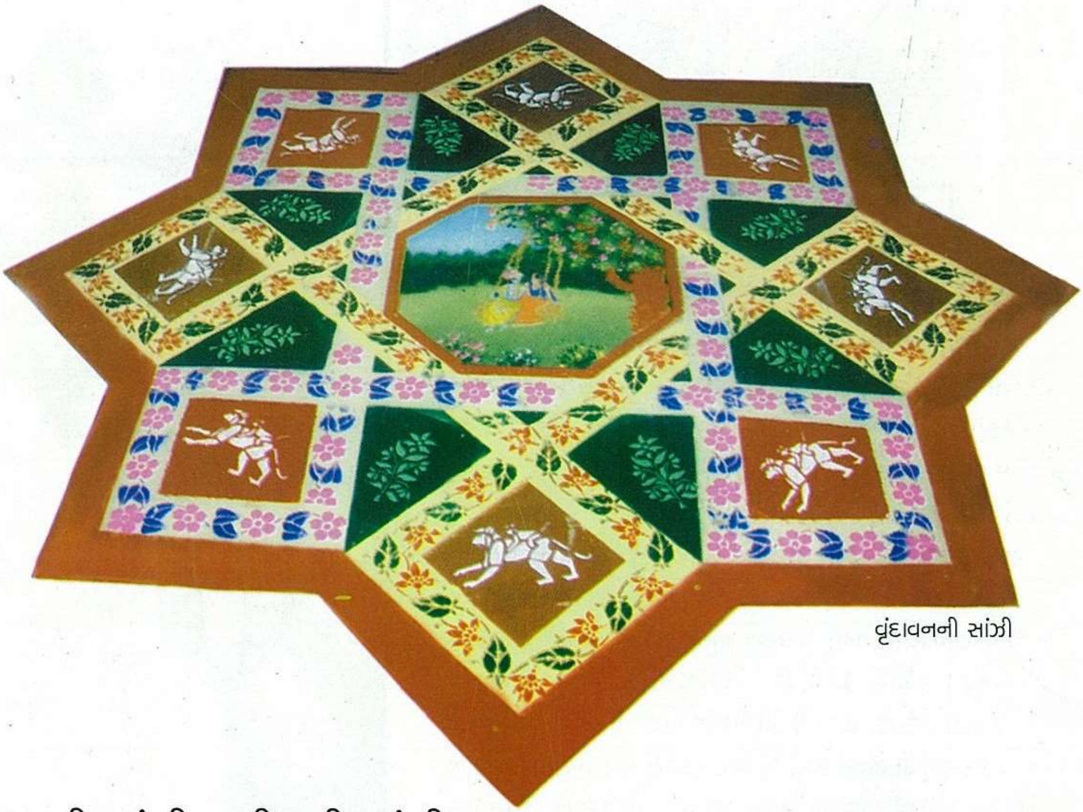

વૃંદાવનની સાંઝી

ભૂમિ/ચોક ઉપર બનતી સાંઝી - પ્રીતની સાંઝી

ભૂમિ/ચોક ઉપર સાંઝી ચીતરાય છે, અથવા સિદ્ધ કરાય છે. આપણા માર્ગમાં એને પ્રીતની સાંઝી કહે છે, કારણ કે ગોલોકધામમાં શ્રી કૃષ્ણ અને શ્રી રાધાજીનાં હૃદયની જે પ્રીત છે, તે લીલાના સમયમાં તે જ પ્રીતિ વ્રજભૂમિનું સ્વરૂપ ધારણ કરે છે. એટલા માટે વ્રજભૂમિને પ્રેમધામ કહેવામાં આવે છે.

પ્રેમના માર્ગમાં બધાંને આવવાનો અધિકાર છે. એટલા માટે શ્રી ઠાકોરજીના સન્મુખ ભૂમિ ઉપર સિદ્ધ કરવામાં આવતી અથવા ચીતરવામાં આવતી સાંઝી પ્રીતની સાંઝી કહેવાય છે.

પ્રીતને કંઠે લગાવવામાં આવે છે. એટલા માટે શ્રી ઠાકોરજી ભૂમિ ઉપરની પ્રીતની સાંઝીને કંઠે લગાવે છે. આ સાંઝીમાં લીલું ઘાસ, ફૂલ (જેમાં જબાકસુમના ફૂલ આવે નહીં), ફળ, પાન, મોતી, જલ, રંગ, રજ, કોડી, અન્ય કિંમતી ઝવેરાત, જડાઉ વસ્તુ, ચમકીલા પથ્થર, ગુંજા, અનાજ (ધાન), દાળ (મસૂર આવે નહીં), શાકભાજી (ટમાટર, ગાજર, મૂળી, મોગરી વગેરે આવે નહીં), જે નામથી, રૂપથી અને ભાવથી શુદ્ધ છે તેનો જ અંગીકાર થાય છે.

વ્રજમાં નિવાસ કરતા તીર્થની રજ, વ્રજની નદી, ગૌશાળા, પર્વત, વન-ઉપવન, હાથીને બાંધવાની જગ્યાની રજના ખિલોના બનાવીને, છીપલા - કોડી, નાના શંખ, વૃક્ષની છાલ, સૂકાં અને લીલાં પાન, નાની મોટી જોઈતી વૃક્ષની ડાળીઓનો ઉપયોગ થાય છે. કેવડા-ગુલાબજળ ઋતુ પ્રમાણે અત્તર-સુગંધી અને સોના-ચાંદીનો પણ ઉપયોગ થાય છે, કારણ કે આ પ્રીતની સાંઝી છે, અને પ્રીતમાં બધાંનું સ્વાગત અને સમાવેશ છે.

થાળમાં જળની સાંઝી - અંતર પ્રીતની સાંઝી.

પ્રીત બે રીતની હોય છે. (૧) સ્પષ્ટ - પ્રગટ પ્રીત (ઉપર કહ્યા પ્રમાણે), (૨) અંતર પ્રીત, જે જળની સાંઝી છે. જળનો અર્થ થાય છે પાતાળ લોક. શ્રીમદ્ ભાગવત અનુસાર સર્વપ્રથમ સનકાદિક ઋષિઓએ સંકર્ષણ (શેષ)ના મુખથી કૃષ્ણ લીલા સાંભળી છે, જ્યાં જળની પ્રધાનતા - પાતાળ લોકમાં છે. જળની સાંઝી, પાતાળ લોકમાં વર્ણિત કૃષ્ણ લીલાઓનું એક અંગ છે અથવા શ્રી યમુનાજીના હૃદયમાં પ્રગટ થવાવાળી સાંઝી જળની સાંઝી છે.

ગર્ગસંહિતામાં ગિરિરાજ ગોવર્ધન પર્વતની ચારે બાજુ બિરાજમાન તીર્થ જેવાં કે માનસી ગંગા, રાધા કુંડ, કૃષ્ણ કુંડ, અષ્ટ સખીઓના કુંડ, કુસુમ સરોવર, નારદ કુંડ, કિલ્લોલ કુંડ, ચંદ્ર સરોવર, સંકર્ષણ કુંડ, ગોવિંદ કુંડ, લલિતા કુંડ, નવલ કુંડ, અપ્સરા કુંડ, શ્યામધાક, સુરભિ કુંડ, ઐરાવત કુંડ, હરજી કુંડ, ઋદ્ર કુંડ, ગુલાલ કુંડ, શુષ્ક કુંડ, બિલછુ કુંડ - આ બધા કુંડ ગિરિરાજજીના દેવ સ્વરૂપનાં અલગ અલગ અંગ માનવામાં આવે છે. આ અંગ રૂપ જળાશયોમાં વ્રજની શોભા વ્રજગોપીઓએ સાંઝી કહીને, સાંઝીના નામથી સિદ્ધ કરી તે આ જળની સાંઝી છે. સિદ્ધ કરવાનો અર્થ એ થાય છે કે, લીલા પ્રસંગમાં જે થવાનું હતું તે થઈ ગયું છે. એના પછી કંઈ પણ થવાની ગુંજાઈશ રહેતી નથી. જળની સાંઝી પ્રાયઃ સાંઝીના અંતિમ દિવસોમાં શ્રીજી સન્મુખ આવે છે.

સાંઝીના માધ્યમથી વ્રજ લીલા શ્રી ગોવર્ધનનાથજીના શ્રી ઠાકોરજીના સ્વરૂપમાં બિરાજમાન કરાવી દીધી, કારણ કે પુષ્ટિ લીલા ભગવત્સ્વરૂપમાંથી પ્રગટ થાય છે.

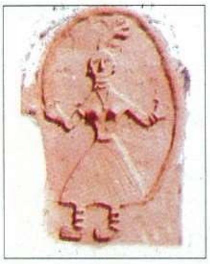

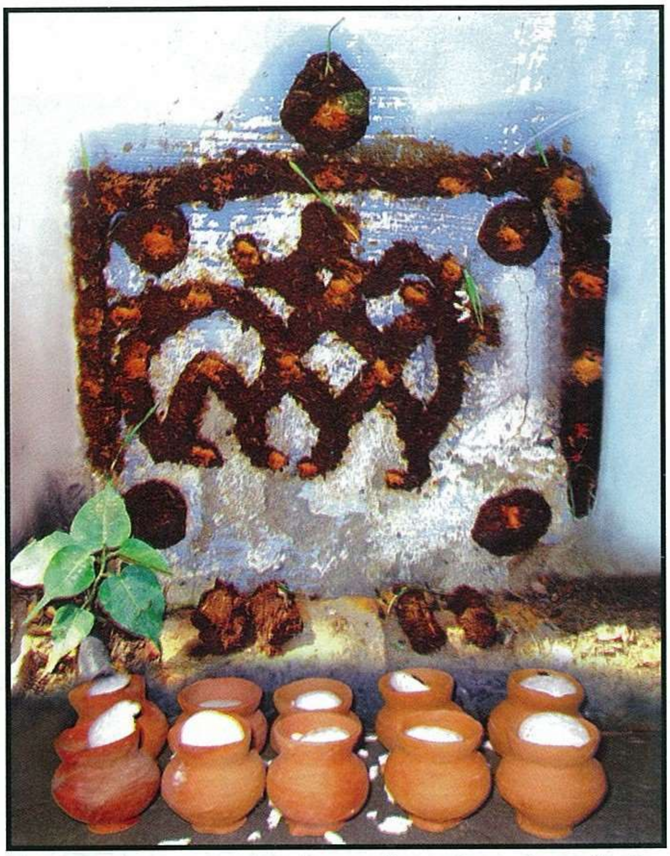

ગોબરની સાંઝી, બરસાના

ગોબરની સાંઝી

જે ગાયોને માતૃત્વ નથી મળ્યું તેને વાછરડાં કહેવાય છે. વાછરડાંના સુકાયેલા ગોબરને (છાણને) આણ્ને કહેવામાં આવે છે. વાછરડાં જે જંગલમાં ચરવા માટે જાય, ત્યાં તેનું ગોબર પડ્યું પડ્યું એમ જ સુકાઈ જાય તેને આણ્ને કહેવામાં આવે છે. યજ્ઞમાં તેનો જ ઉપયોગ થાય છે, તેવું વિધાન છે.

સમ્પ્રદાયમાં કેટલીક વસ્તુને ઉપયોગમાં લાવતાં પહેલાં, તેનું અધિવાસન કરવામાં આવે છે. આ ગોબર એટલું બધું શુદ્ધ છે, કે તેને અધિવાસનની જરૂરત નથી પડતી. તેનો સીધો જ (સિદ્ધ સમજી) પ્રયોગ થાય છે. વ્રજકુમારીકા આ ગોબરથી સાંઝીની રચના કરે છે. વ્રજની ગોપીઓ ગાયોની ખીરકમાં જઈને પોતાના કરકમળથી સ્પર્શ કરી ગોબર એકઠું કરતી હોય છે અને તેને એક સ્થળેથી બીજા સ્થળ સુધી લઈ જવા માટે માથા ઉપર મૂકે છે. અષ્ટસખી જે કૃષ્ણના વેણુનાદ સાંભળવાવાળી ગાયોનું ગોબર પોતાના મસ્તક ઉપર ધારણ કર્યું હોય, તે ગોબર આ જગતમાં કયું એવું ફળ છે કે તે ન આપી શકે? અર્થાત્ બધાં જ ફળ આપી શકે છે. એટલા માટે વ્રજગોપીઓ સાંઝીમાં ગોબરનો આશ્રય લે છે. (સહારા લેતી હૈ.)

ગોવર્ધન પૂજા : સમસ્ત ગોપ-ગોપીઓના તરફથી ગિરિરાજની પૂજા થઈ રહી હતી. શ્રી વૃષભાનજી પોતાના ઘરની દેખરેખ માટે બદરોલા નામની સખીને બરસાનામાં છોડીને આવ્યા હતા. બદરોલાને શ્રી ઠાકોરજીને આરોગાવવાનો તાપ થયો. શ્રી ગોવર્ધનધરે પોતાની સહસ્ત્ર ભુજાઓમાંથી એક ભુજા બદરોલાની સામે પ્રગટ કરી, તે સમયે બદરોલા ગાયનું ગોબર એકઠું કરી રહી હતી. ત્યારે તેણે ત્યાં ગોબરથી ગિરિરાજ સ્વરૂપ સિદ્ધ કર્યા અને પૂજા કરી. ઉપસ્થિત ભુજાને સામગ્રી સમર્પિત કરી અને શ્રી ઠાકોરજીએ સામગ્રી આરોગી ત્યારથી ગોબરના ગિરિરાજજી વગર પ્રગટ ગિરિરાજની પૂજા નથી થતી. આથી ગોબરનું માહાત્મ્ય પ્રગટ થયું.

બદરોલા વૃષભાનકી મહી વિલોમનહાર,
તાકી બલી લીની હરિ અપની ભુજા પસાર.
(અન્નકૂટનાં કીર્તન પ્રમાણે)

લીલા પ્રસંગ - ૧

કોઈ સમયે વ્રજગોપીઓએ શ્રી ઠાકોરજીના શૃંગારને બદલવા કે ગણવા માટેની ચેષ્ટા કરી ત્યારે શ્રી ઠાકોરજીને પોતાની પાસે ટોળામાં (વૃન્દમાં) બોલાવ્યા, અને વિનંતી કરી કે અમે કાંઈ કામ કરીએ છીએ તેની ગણત્રી આપે કરવાની છે. એક એક ગણત્રી ગણવા માટે આપના શ્રીમુખ ઉપર ગોબરની એક એક ટીપકી (બિંદી) લગાવીશું. જેથી આપ બહુ સુંદર દેખાશો.

બાલસુલભ ભોળા શ્રી ઠાકોરજી આ વાત માની ગયા અને વ્રજગોપીઓએ એટલી બધી ગોબરની ટીપકી લગાવી, જેથી બધા જ શૃંગાર ગોબરના દેખાવા લાગ્યા. આજથી શ્રી ઠાકોરજી શૃંગાર કલ્પતરુ થયા. આ લીલા રાસધારીઓમાં પ્રસિદ્ધ છે.

જે ગોબર (છાણ) પ્રભુનો શૃંગાર થઈ શકે, તે સાંઝીમાં કેમ શૃંગાર ન બને?

લીલા પ્રસંગ - ૨

એક વખત હોળીમાં વ્રજગોપીઓએ વિચાર્યું કે આ કૃષ્ણ પ્રતિદિન અમારાથી જીતીને જતા રહે છે. આજે તેમનાથી એવો બદલો લેવો છે, કે તે પણ યાદ રાખે, અને એમની માતા યશોદા અને નંદબાબા બધા યાદ કરે કે અમારો પુત્ર (બેટા) આવો છે.

જ્યારે અહીં કૃષ્ણ આવે (હમારે બરસાનેમેં) ત્યારે બધી જ ગોપીઓએ મળીને પકડવાના અને એમની 'મા'એ જે શૃંગાર ધરાવ્યા છે તે બધા શૃંગાર ઉતારી (વડા) લેવાના, પછી નખશિખ ગોબરના શૃંગાર તૈયાર છે તે ધરીને એમને યશોદાજી પાસે લઈ જવાના. વ્રજગોપીઓએ એવું જ કર્યું. શ્રી ગુસાંઈજીના સેવક મહાનુભાવ રસખાનજીનું પદ અહીં સ્મરણને યોગ્ય છે.

કીર્તન : ગોબર ભરો ભડુઆકે, મુંહસે ગાઓ ગારી,
કહે રસખાન એક ગારીપે, સોઆદર બલિહારી.

આવા ગોબરના શૃંગારના કૃષ્ણ વ્રજગોપીઓની સાંઝીમાં જોવા મળે છે.

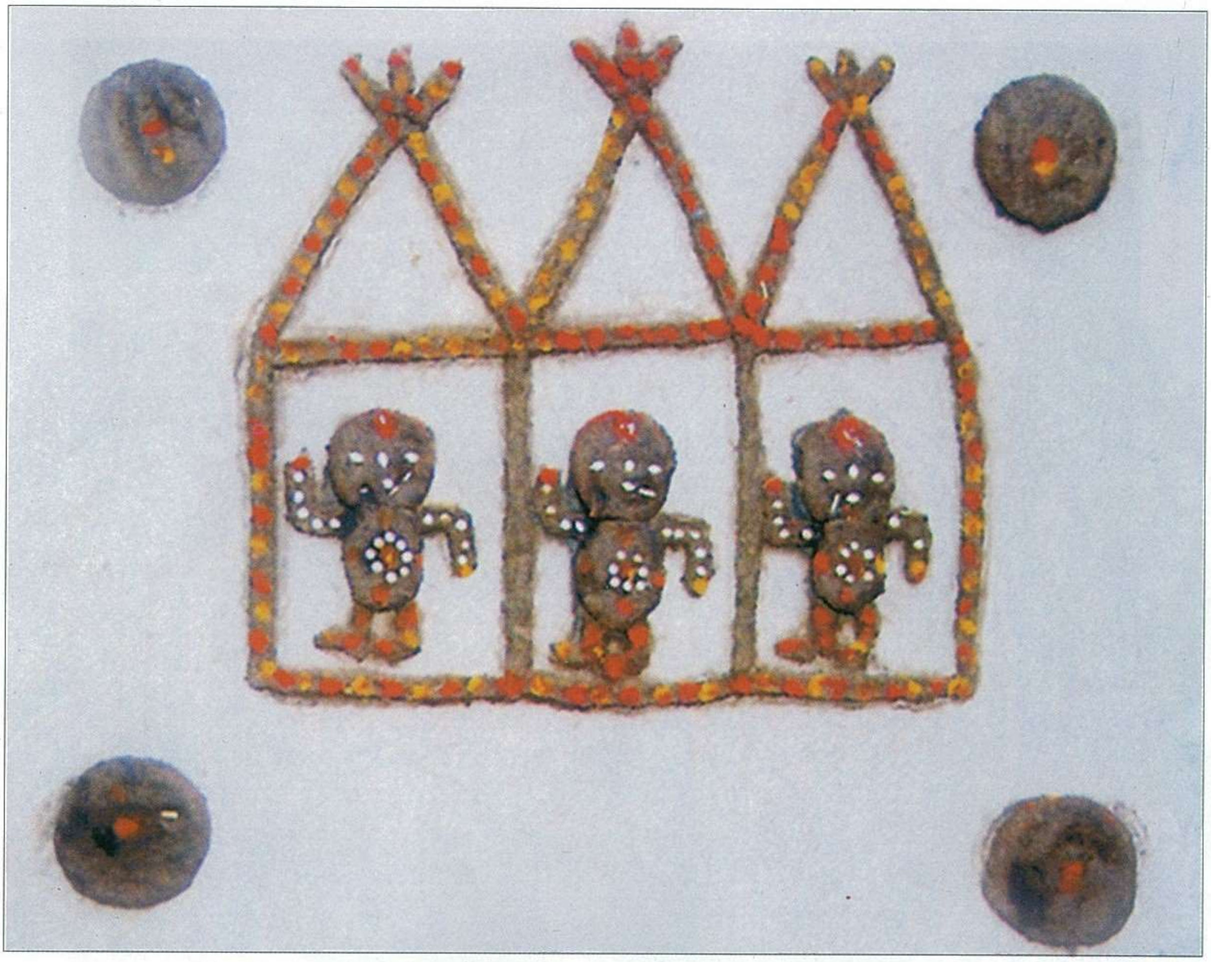

ગોબરની સાંઝી (બરસાના)

ગોબરની સાંઝીમાં કોડી અને ફૂલનો શૃંગાર

સાંઝી પોતાની જગ્યાએ બહુ જ કિમતી વસ્તુ (ચીજ) છે. લોક વ્યવહાર, શાસ્ત્ર સિદ્ધાંત ભગવત્ પ્રેમ આ ત્રણે દૃષ્ટિથી બહુ જ કિમતી વસ્તુ છે. પરંતુ ગોબરની સાંઝીમાં કોડીઓનો શૃંગાર કરીને વ્રજગોપીઓએ શ્રી ઠાકોરજીને એ બતાવ્યું છે કે, ''આપનો પ્રેમ ફૂલોના જેવો અતિ મૂલ્યવાન અને અતિ સરસ છે. એની સામે અમારો પ્રેમ કોડી ભર મૂલ્યનો છે. ક્યાં આપ અને ક્યાં અમે? અમારા પ્રેમની આપના પ્રેમથી ક્યારેય બરાબરી ન થઈ શકે.''

ફૂલ સુકુમાર (કોમળ) છે કોડી કઠોર છે. ફૂલ આપના વૃંદાવનમાં પ્રગટ્યાં છે, કોડી ખારા સમુદ્રમાંથી પ્રગટી છે. ફૂલોનું રસપાન આપના ભક્ત ભ્રમર કરે છે, કોડીનો ભોગ તુચ્છ કીડ (જંતુ) કરે છે. આપનાં ફૂલ પ્રયાસ કરીને ચૂંટવામાં આવે છે, કોડી તો ખારા સમુદ્રના કિનારે પડી રહે છે અને તેને એમ જ ભેગી કરીએ છીએ. આપનાં ફૂલોમાંથી તો સુગંધી (અત્તર) પ્રગટ થાય છે, જે કોઈ સુખીને પણ સુખી બનાવે છે; કોડીમાંથી તો ભસ્મ બનાવવામાં આવે છે, જે કોઈ દુ:ખીનું દુ:ખ ઓછું કરે છે, પણ સુખી નથી કરી શકતી.

આપનાં ફૂલ શંકરને ત્યાં પાર્વતીના શૃંગાર બને છે, જે પાર્વતી આપના બધા જન્મોની કથા સાંભળવાની ઇચ્છા રાખે છે. આ કોડી તો શંકરને ત્યાં નંદીશ્વરના કેવળ શૃંગારના કામમાં આવે છે, જે નંદીશ્વર એટલો જ ધર્મ જાણે છે કે, ''ધર્મના જાણકાર હોવા છતાં નંદીશ્વર, ઋષિઓને શ્રાપ આપે.'' એટલા માટે તેનો શૃંગાર કોડીઓની કિમતથી જ થાય છે.

શ્રીમત્ પ્રભુચરણે પ્રથમ વાર તાનસેનને કોડીની સાથે એક હજાર મુદ્રાઓ આપી (પ્રદાન કરી). આવી જ રીતે આપના મૂલ્યવાન પ્રેમની સામે અમો વ્રજગોપીઓનો પ્રેમ કોડી સમાન છે. સેવકનો ધર્મ એ છે કે આપની સેવા અધિકથી અધિક કરે અને ઓછામાં ઓછી માને, આ અર્થમાં કોડીનો સંબંધ છે. અહીં આપણે એવું નહીં કહી શકીએ કે વ્રજગોપીઓના પ્રેમની કિમત કોડીથી માપી શકાય, પરંતુ તે ગોપીઓ સ્વયં પોતે જ એમ માનતી હતી, તો આપણે બધાં તેમાં શું કરી શકીએ?

અહીં શ્રી ગુસાંઈજી ચરણની વિશિષ્ટતા છે કે આપ શ્રીએ ગોપીજનોનો પક્ષ આગળ કર્યો છે, પોતાનું પ્રયોજન આગળ નથી રાખ્યું.

આપ પોતે આપના સ્વયં મત પ્રગટ કરતા તો ગોબરની જગ્યાએ સોનાની સાંઝી થતી અને કોડીની જગ્યાએ હીરાના શૃંગાર ધરાવત!

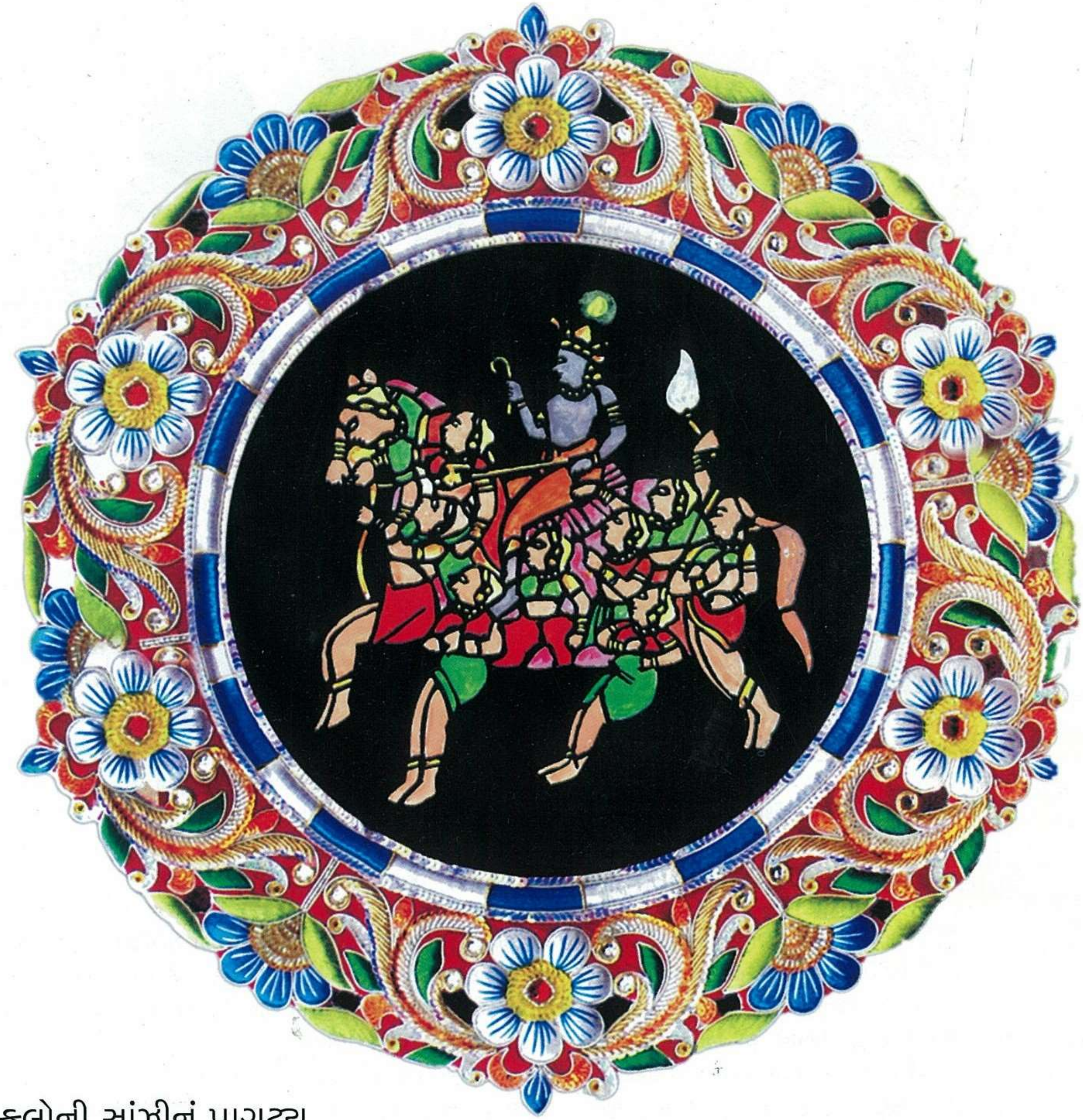

ફૂલોની સાંઝીનું પ્રાગટ્ય

રાસ રચનાના સમયે શ્રી ઠાકોરજીએ શ્રી વેણુજીને જે જે આજ્ઞા કરી તેવી જ વૃંદાવનની રચના પ્રભુએ કરી. તે વૃંદાવનની રચના સમસ્ત ફૂલોની પરાગથી થઈ હતી.

પ્રભુના નિજધામની સેવામાં નિમગ્ન રહેવાવાળી ગોપીઓનું આંતરિક સ્વરૂપ પુષ્પ અને પુષ્પોનું પરાગ જ હતું. અહીં વ્રજમાં ઉપસ્થિત આ વ્રજગોપીઓ લતા સ્વરૂપ છે. બધાને પોતાના આત્મા અને પ્રાણની જાણકારી હોય છે. એવો ભક્તિ માર્ગનો નિયમ છે.

રાસમાંથી પાછા ફર્યા પછી વ્રજગોપીઓને જે જે લીલાઓનો, પ્રભુ દ્વારા દેખાડવાથી જે જે જોયું હતું, એ જ રાસના સ્થળની યાદમાં પોતાના મન રૂપી પુષ્પ, પ્રાણ રૂપી સુગંધી, પરાગ રૂપી આત્માના સંબંધથી જે ભગવલ્લીલા ચિત્રિત કરી તે ફૂલોની સાંઝીના પ્રાગટ્યનું સ્વરૂપ છે, અથવા તો કારણ છે.

સ્વકીયજનોની આ ભાવભરી લીલાને જોવા માટે સ્વયં શ્રી ઠાકોરજી પણ કોઈને ખબર ન પડે તેમ સંતાઈને દાખલ થઈ જાય છે.

આ વાત અષ્ટછાપનાં કીર્તનોથી પ્રમાણિત છે.

સમગ્ર વ્રજનું રસ રૂપ સ્વરૂપ, આ વ્રજની લીલા, સ્વયં રસ રૂપ છે. જેવી રીતે વહેતો રસ અગ્નિના તાપ પર, અમુક પ્રકારની ચાસણીથી જામીને સ્થાયી અને સ્થિર થઈ જાય છે, આ સ્થાયી અને સ્થિર સ્વરૂપ, રસ રૂપમાંથી જ જન્મ લે છે, તેવી જ રીતે વ્રજગોપીઓની મધ્યમાં બિરાજમાન શ્રી કૃષ્ણ રસ રૂપ છે. ભક્તિ માર્ગીય વિરહતાપના સંયોગથી સ્થાયી અને સ્થિર રસ રૂપ છે.

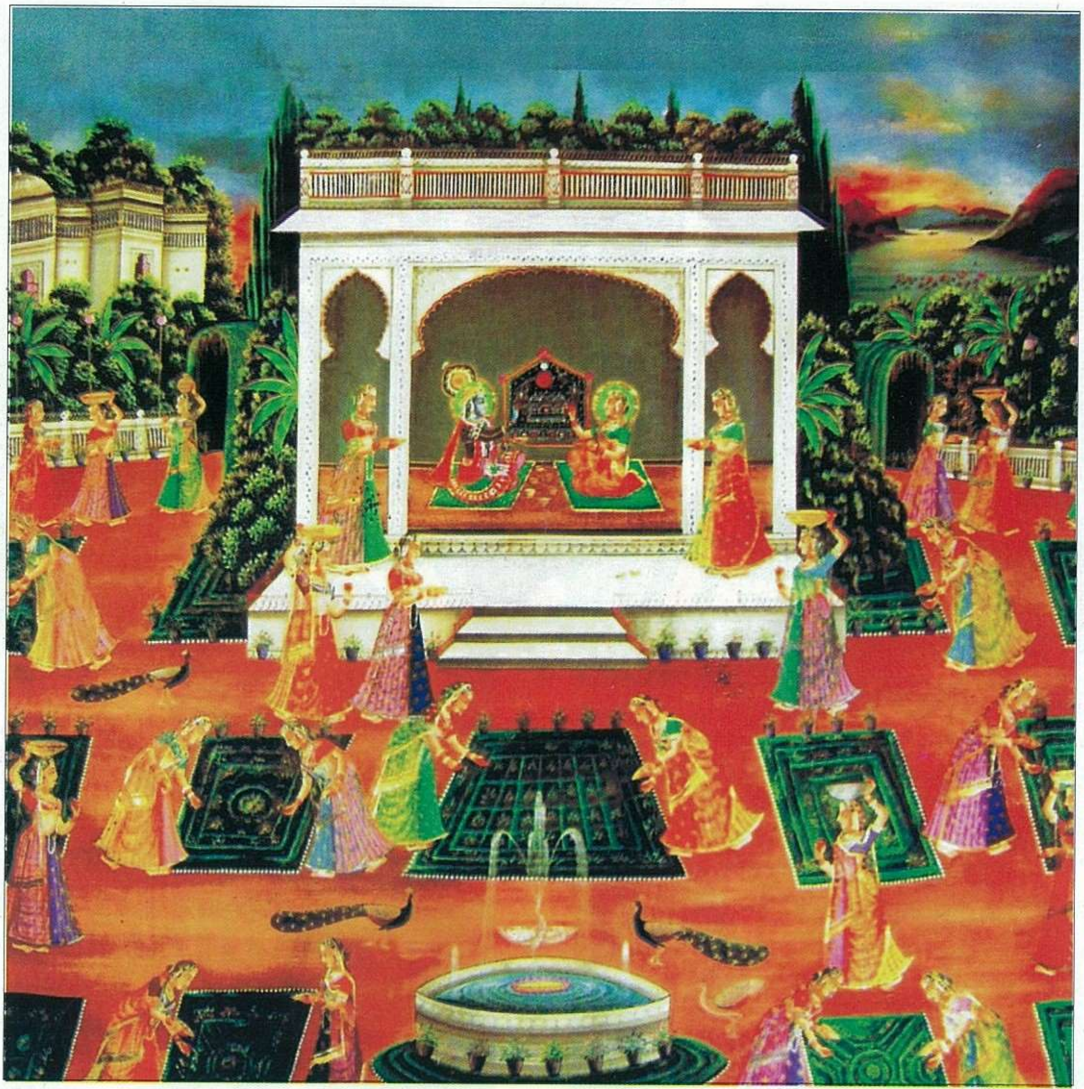

'સાંઝીની પીછવાઈ' સૌજન્ય : ગોસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ

ભકિતમાર્ગીય વિરહતાપના સંયોગથી સ્થાયી અને સ્થિર રસરૂપ ગોપીજનોનું પ્રાગટ્ય છે. કયારે દધ મંથનમાં પણ માખણનું પ્રાગટ્ય છે. જ્યારે શ્રી કૃષ્ણ ઉજ્જવલ રસ રૂપ હોય છે, ત્યારે દીનતા ભાવની પરાકાષ્ઠાથી પણ ગોપીજન અને લીલાસામગ્રીનું પ્રાગટ્ય થાય છે. શાસ્ત્રોમાં કયાંક ઉલ્લેખ છે કે, શ્રી ઠાકોરજીના શ્રી અંગમાંથી પુષ્ટિ ધર્મ સ્વરૂપ શેષજીનું પ્રાગટ્ય થયું અને તેમનો શ્વેત (સફેદ) છે. શેષ ભગવાનની ગોદમાંથી ગોલોકનું પ્રાગટ્ય થયું. એ જ ગોલોકની ગોદમાંથી શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજી અથવા શ્રી નવનીતલાલજીનું પ્રાગટ્ય થયું. આ શ્વેત દ્વીપના પતિ છે. આ શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીના વામ સ્કંધમાંથી (નિગમ કલ્પતરૂકા પોષણ યહાંસે હોતા હૈ) શ્રી યમુનાજીનું પ્રાગટ્ય, જેવા કે છાપેલી ચૂનરીનાં વસ્ત્ર હોય છે તેવા શૃંગાર ધારણ કરેલાં શ્રી યમુનાજીનું પ્રાગટ્ય થયું. પ્રથમ શ્રી યમુનાજીનું પ્રાગટ્ય ચૂંદડી ઓઢેલા વસ્ત્રમાં થયું છે. આ કારણે ચૂંદડી ઓઢેલ શ્રી યમુનાજીનાં દર્શનની પ્રમુખતા છે. આ ચૂંદડી મહોત્સવ છે.

શ્રી નાથજીના દાયાસ્કંધમાંથી ગૌર તેજ શ્રી સ્વામિનીજીનું પ્રાગટ્ય છે. આ એ જ ગૌર તેજ છે કે જેના વગર શ્રી કૃષ્ણની સેવા પૂરી થતી નથી. શ્રી નાથજીના સ્વરૂપમાં આ જ ગૌર તેજ બિરાજમાન છે.

શ્રી ઠાકોરજીનાં ચરણારવિંદની ગુલ્ફ (પગની એડી ઉપરના ગોળ ઉપસેલા ભાગની વચ્ચેનો ભાગ)થી રાસ મંડળનું પ્રાગટ્ય થયું. શૃંગાર સાગર અહીં જ છે. શૃંગાર કલ્પતરૂનો જન્મ (પોષણ) પણ અહીંથી થયો છે. શ્રી ઠાકોરજીની બન્ને પિંડલીઓથી (ચરણથી ઘૂંટણની વચ્ચેનો ભાગ) દ્વાદશ નિકુંજનું પ્રાગટ્ય થયું છે. બન્ને ઘૂંટણમાંથી શ્રી વૃંદાવનનું પ્રાગટ્ય થયું છે. આ ઘૂંટણથી નૃત્ય કરવાના સમયે મયુર નૃત્યની ભાવના પ્રગટ થઈ છે. બન્ને જાંઘમાંથી લીલા સરોવર પ્રગટ થયા છે. આ સરોવર ગોપીજનોનાં હૃદય છે. આ સરોવરમાંથી લીલાં કમળ પ્રગટ થાય છે. આઠ સખીઓનાં હૃદય સરોવરથી પ્રગટેલાં આઠ કમળમાંથી ચાર શ્રી યમુનાજીની પાસે છે અને બાકીનાં ચાર કમળ શ્રી નાથજીની પાસે છે.

શ્રી ઠાકોરજીના કટી પ્રદેશ (કમર)થી વ્રજ ભૂમિનું પ્રાગટ્ય છે. આ વ્રજ ભૂમિ સ્વર્ણમય, મણિમય (હીરા, પન્ના, માણેક, મુક્તા, મોતી, પદ્મરાગ, નીલમ, કોસ્તુભ, મરકતમણિ) છે. આ દશ મણિઓમાંથી પુષ્ટિ માર્ગીય આત્મનિવેદન સહિત દશ પ્રકારની ભક્તિની રીત અને તેની અલૌકિકતા અને દિવ્યતા પ્રગટ થઈ છે. ઉદર રોમાવલી (નાભિ કે આસપાસ વાલા રોમ)થી લીલા સંબંધી પક્ષીઓનું પ્રાગટ્ય છે. આ પક્ષીઓને માટે માધવીલતા પણ અહીંથી પ્રગટી છે. સુક, મોર, હંસ, ચાતક, પપીહા, કોયલ, ચકોર, કપોત,

સૌજન્ય : ગોસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ

ચકલા-ચકવી, ખંજન અને વિશેષમાં તમચર, શ્રી કૃષ્ણ સેવાપરક ભક્તોના આ દશ (૧૦) સ્વભાવ છે. (પુષ્ટિપથ મર્મ યહ ધર્મ દશવિધ કહૈ. આ પક્ષીઓનો સ્વભાવ સ્વીકાર કરવો એ જ સેવકનો ધર્મ છે.

નાભિથી સેવા કમળનું પ્રાગટ્ય છે. આ કમળમાં સહસ્ત્ર દલ છે. શ્રી હરિરાયજી મહાપ્રભુજીની સેવા ભાવનાનું પોષણ અહીંથી છે. આ માટે શ્રી કૃષ્ણસેવા સાકાર અને સ્વરૂપાત્મક છે. ત્રિબલી (નાભિ ઉપર ત્રણ વળ પડે છે તે)થી ત્રિવિધ વાયુનો જન્મ થયો છે. જે રાસમાં, વેણુનાદમાં, વનવિહારમાં વખતો-વખત પ્રગટ થતો રહે છે. એ જ કારણથી ગ્રીષ્મ કાળમાં શ્રી ઠાકોરજીને પંખી (પંખાની) સેવા થાય છે અને એ પંખી (પંખા) શ્રીજીની પાસે બિરાજે છે.

હાંસડી (હંસલી)થી મથુરા અને દ્વારકા પ્રગટ્યા છે. જેમાંથી પુષ્ટિ, મર્યાદા પુષ્ટિ અને ત્રીઋટપુષ્ટિ પ્રગટી છે. કોણીની નીચેની બન્ને ભૂજાઓથી અષ્ટસખા - સુબલ, તોક, શ્રીદામા, વિશાલ, ઋષભ, અર્જુન, ભોજ, કૃષ્ણ, સુબાહુ-નું પ્રાગટ્ય થયું. અને બન્ને કલાઇઓમાંથી (કાંડામાંથી) નવ નંદ પ્રગટ્યા છે. હથેલીઓમાંથી નવ ઉપનંદ પ્રગટ્યા છે અને બન્ને કોણીની ઉપરની ભૂજાઓથી છ વૃષભાનનું પ્રાગટ્ય છે. શ્રી અંગની રોમાવલીથી અગણિત (ગણી ના શકાય) ગોપ-ગ્વાલ-વ્રજવાસીઓનું પ્રાગટ્ય છે અને મનથી ગાય અને બેલ (બળદ)નું પ્રાગટ્ય છે. બુદ્ધિથી ચારા (લીલું ઘાસ)નું પ્રાગટ્ય છે. એટલા માટે દશેરાના દિવસે શ્રી ઠાકોરજી જ્વારા શ્રી મસ્તક ઉપર ધારણ (અંગીકાર) કરે છે. આ જ્વારા પુષ્ટિ માર્ગમાં ભક્તિનું અંગ છે અને નાના નાના વેલા અને ઝાડપાન પુષ્ટિમાં ભક્તિનું વિક્ષીત અંગ છે. વેણુનાદવાળા પક્ષી આ જ ઝાડીવાળાં વૃક્ષોની ડાળીઓ પર બેઠાં છે તેમ જણાવ્યું છે. વામ ચરણારવિંદની નખક્રાંતિથી ગંગાજી પ્રગટ્યા છે. આ ગંગાજીનું સાકાર સ્વરૂપ પુષ્ટિ માર્ગમાં 'મંગલાચરણ'માં થાય છે. 'ચિંતાસંતાન હંતારો...'

મંગલાચરણનો જન્મ થયો તે શબ્દ બ્રહ્મનું સ્વરૂપ છે. ''યદપાદાંબુજરેણવઃ''થી જીવ ગંગાવત્ પાવન થાય છે. બન્ને ચરણારવિંદની શેષ નખક્રાંતિથી મર્યાદા અને પુષ્ટિ ભક્તિ પ્રગટ થઈ છે.

આ શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીના આત્માથી પ્રાણવલ્લભા સ્વામિનીજી પ્રગટ્યાં છે. આ લેખમાં બે સ્વામિનીજીઓનું પ્રાગટ્ય બતાવ્યું છે. એક સ્કંધથી અને એક પ્રાણથી, આ બે સ્વામિનીજી રાસમાં મુખ્ય છે. જેઓની વચ્ચે (મધ્યમાં) શ્રી કૃષ્ણ એક છે.

(તાસામ્ મધ્યે દ્વો રહ્યો / શ્રીમદ્ ભાગવત રાસ પંચાધ્યાયી)

શ્રી ઠાકોરજીનાં નેત્રોમાંથી પ્રગટ તેજથી શ્રી ગોવર્ધન પર્વત પ્રગટ થયો. (મુખારવિંદ સહિત પૂરા) આ ગોવર્ધન પર્વતમાં નવ (૯) કંદરાઓમાં ૪૦ દિવસના ક્રમથી બાર માસની સેવા છે. પુષ્ટિ માર્ગના શ્રી ઠાકોરજી નીચી દૃષ્ટિના તેજથી આ સેવાને જોઈ રહ્યા છે. આ દૃષ્ટિ કરવી જ પ્રભુના તરફથી અનુગ્રહ છે. શ્રી ગિરિરાજ ગોવર્ધન પર્વતનું નામ સત્સૃંગ (સાત શિખરવાળા) થયું છે.

શ્રી કૃષ્ણના સ્વરૂપથી પ્રગટ થયેલી બન્ને સ્વામિનીજીનો જે પ્રેમ છે તે વેણુજી છે. એ પ્રેમને શ્રી ઠાકોરજી ઓષ્ટોં (અધર) ઉપર ધરાવે છે. શ્રી ગિરિરાજ ગોવર્ધનના સાત શિખર વેણુના સાત સ્વર છે. શ્રી યમુનાજીની દ્વાદશ નિકુંજનું સુખ, કોમળ અને તીવ્રના ભેદથી, બાર સ્વરોનું પ્રાગટ્ય છે. શ્રી ઠાકોરજી અને બન્ને શ્રી સ્વામિનીજી સંગીતના ત્રણ ગ્રામ (મંદ્ર, મધ્ય, તાર) છે. પુષ્ટિ માર્ગીય હવેલી સંગીત આ વિચારથી દિવ્ય અને અલૌકિક છે.

આ પ્રમાણે ઉપરોક્ત ભાવનાથી વ્રજાધીશ શ્રી કૃષ્ણ જ્યારે વ્રજગોપીઓને સાંઝીની શોભા બનાવતા જુએ છે, ત્યારે શ્રી હરિ એમાં મોહિત થઈને વ્રજગોપીઓના ભાવનાના રસ્તેથી ગોપ્ય રીતિએ પ્રવેશી જાય છે.

* * *

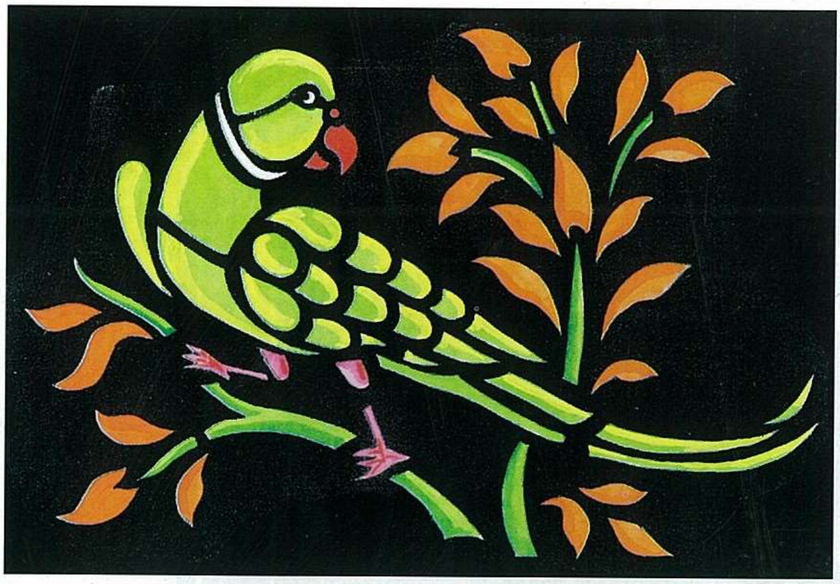

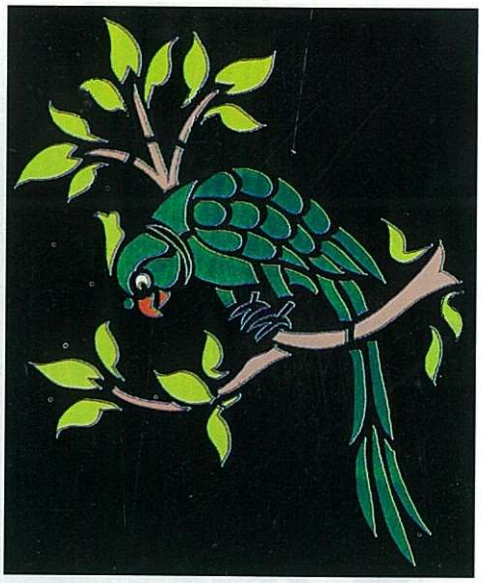

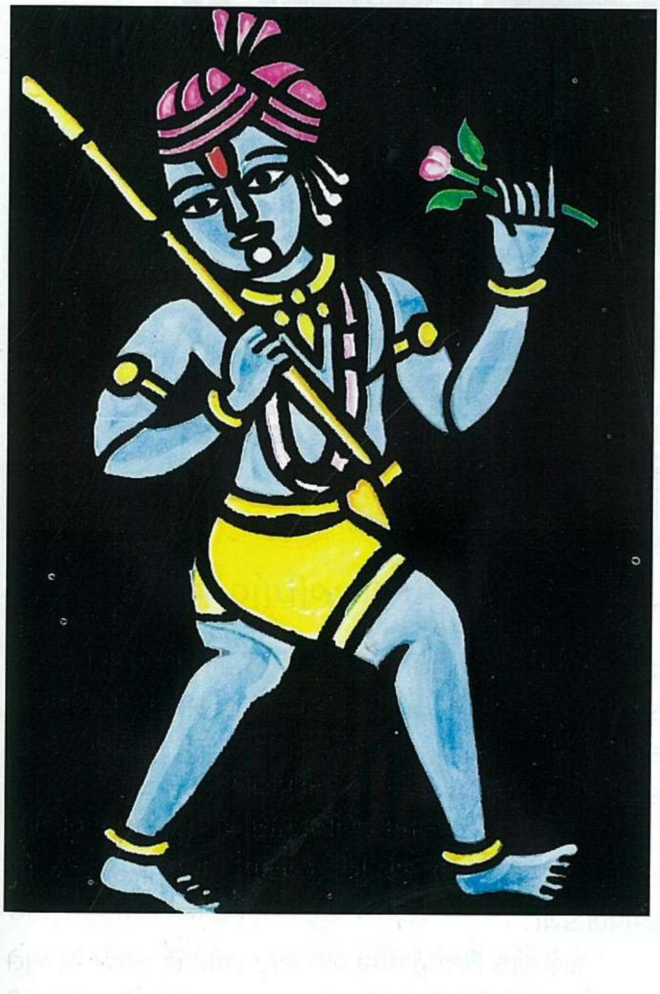

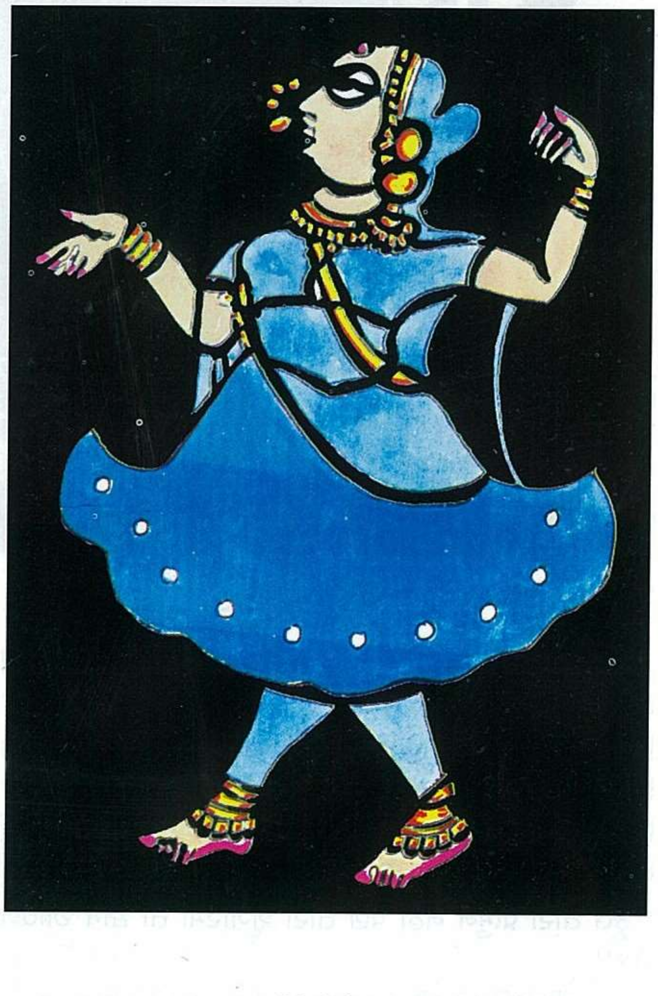

ફૂલોની સાંઝી પ્રિયા-પ્રીતમની એક ભાષા છે :

મર્યાદામાં પણ ભગવાન શ્રી રામે સીતાજીનો શૃંગાર, વનમાં રહેતા હોવા છતાં, એક દિવસ ફૂલોનો કર્યો હતો. એ પછી શ્રી રામચંદ્રજીએ સીતાજીને વિનંતી કરી હતી કે હું આપની તથા મારી વચ્ચે વિયોગલીલા કરવા ઈચ્છું છું. આ વિયોગલીલા કરતાં પહેલાં ફૂલોનો શૃંગાર કરીને, પોતાની કોમળતાનો પરિચય શ્રી રામજીએ શ્રી સીતામાં સ્થાપિત કર્યો. મર્યાદામાં પણ ફૂલો કોમળતાની ભાષા છે.

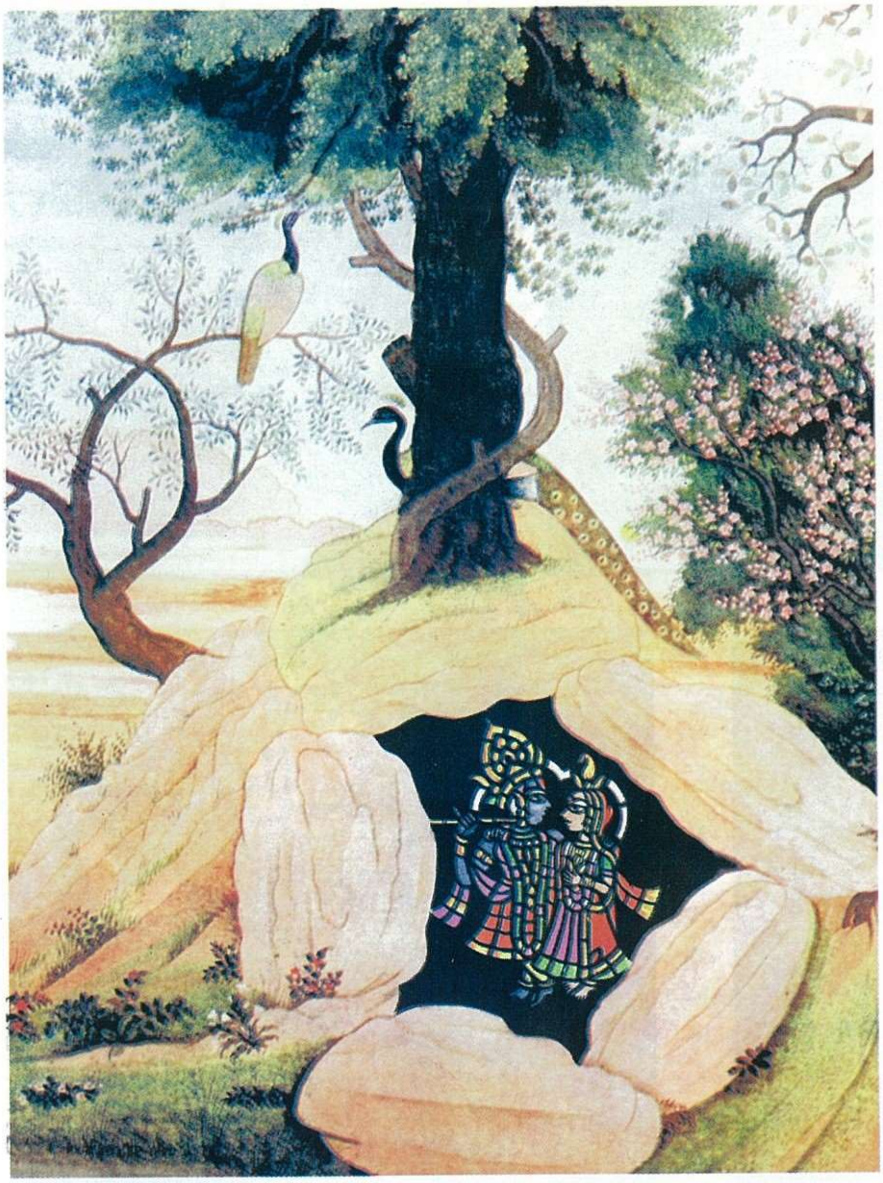

મોહન બાગમાં સાંઝીનાં ફૂલ

કુસુમવન, કુસુમ સરોવર અને સખીવન (હાલ સખીતરા ગામ)માં મોહન રૂપી બાગ મઘમઘી રહ્યો છે. મોહન રૂપી બાગમાં ફૂલ ખીલ્યાં છે, જે ફૂલથી સાંઝી સિદ્ધ થાય છે. જ્યાં શ્રી સ્વામિનીજી સાંઝી માટેનાં ફૂલ વીણવા આવ્યાં, ફૂલ વીણતાં વીણતાં એક ફૂલ શ્રી સ્વામિનીજીના હાથમાંથી જમીન ઉપર પડ્યું. જમીન ઉપર પડેલું ફૂલ પ્રભુને કામ ન આવે. શ્રી ઠાકોરજીએ કહ્યું, ''ફૂલ તારા પ્રભુને નહીં પણ તારા શૃંગારમાં તો કામ આવશે ને?''

બીજા દિવસે શ્રી ઠાકોરજી સ્વયં ફૂલ તોડીને ઊભા રહ્યા. મોહન બાગની માલણ મનમોહનને પ્રસન્ન કરવા મોહિત (મનમોહના) બની ગઈ. મનમોહનાની સાંઝી લીલાની મોહિની મદ-મસ્ત બની. શ્રી ઠાકોરજીને આ લીલામાં કઈ રીતે સમાવિષ્ટ કરવા, તેનું ધ્યાન ચિત્તમાં ધરવા લાગી.

શ્રી લલિતાજી સાંઝી પૂરી રહ્યા હતા. શ્રી સ્વામિનીજીએ પૂછ્યું, ''આ શું કરે છે?'' શ્રી લલિતાજીએ કહ્યું કે, ''આ સાંઝી વ્રત કરવાથી મન માગ્યો વર મળે છે.'' આ વ્રત કેવળ કુમારી કન્યાઓ જ કરી શકે. વ્રતનું ફળ છે, પ્રભુવરની પ્રાપ્તિ. જે ફળનું દાન દેવા માટે પ્રભુ સ્વયં, સખી રૂપ ધારણ કરી, શ્રી સ્વામિનીજીના બરસાના મહેલમાં પધાર્યા.

સખી રૂપના, શ્યામા સખીએ પોતાના મોહન રૂપી બાગના બધાં અલૌકિક પુષ્પો સાંઝીની રચનામાં પ્રિયાજીને સ્નેહવશ સમર્પણ કર્યાં.

રાત્રે એક સૈયાજી ઉપર બેઉ સ્વરૂપ પોઢે છે ત્યારે ભેદ ખૂલે છે. શ્રી સ્વામિનીજીએ કહ્યું, ''પ્રભુ, આ કઈ લીલા?'' શ્રી ઠાકોરજી કહે, 'જે કારણે વ્રત રાખ્યું છે, તે વ્રતનું ફલ સ્વયં આપની સામે છે.'

યુગલ સરકાર નિત્ય લીલા વિહારમાં પરોવાઈ ગયા.
''વેશ બદલીને શ્રી ઠાકોરજીનું પધારવું,''
''ઉપરનો દેખાવ કરે છે.''

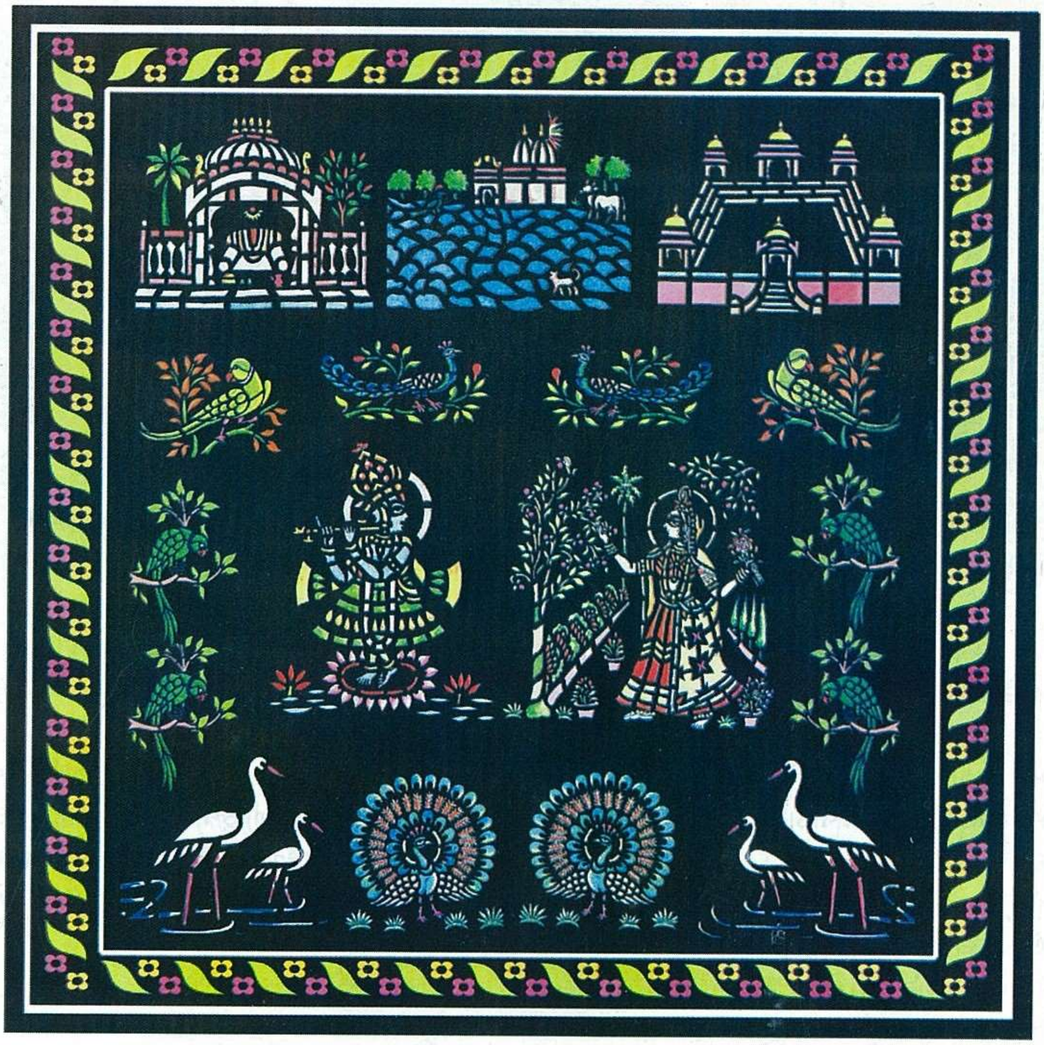

સાંઝીનાં ફૂલ ગોપીજનોનાં મનનું સ્વરૂપ છે:

મનની વાત કહેવા માટે સાંઝીમાં ફૂલોનો પ્રયોગ વધુમાં વધુ થાય છે.

કમળ :

સંસાર સરોવરમાં જન્મ લીધા પછી, માયાના કાદવમાં બધા જ ફસાયા છે, છતાં પણ કોઈ ભગવત્ સેવા અનુરાગી સંસારના ભોગોને છોડીને પોતાનું મન પ્રભુસેવામાં લગાવે છે. એવા ભક્તોનાં મન કમળનાં ફૂલ જેવાં છે.

આમાં કોઈ ભક્ત જ્ઞાન, ભક્તિ અને કર્મની મિશ્રિત ભાવનાથી જોડાયેલા રહે છે, તે ભક્ત શ્વેત કમળ/રક્ત કમળ (લાલ કમળ)નું રૂપ ધારણ કરે છે. નિશ્ચય એવા ભક્તોનાં મન રૂપી શ્વેત અને રક્ત કમળ દિવસના ખૂલે છે અને રાત્રે બંધ થઈ જાય છે.

જે ભક્તોનાં મન કર્મ અને જ્ઞાનથી ઉપર જઈને માત્ર પુષ્ટિ ભક્તિમાં લીન રહે છે, તેઓનાં મન રૂપી કમળ નીલ કમળ બનીને પ્રગટ થાય છે. નીલ કમળ સદા ખીલેલાં રહે છે, તે રાત્રે બંધ થતાં નથી.

ગુલાબ :

જે ભક્ત સર્વ ત્યાગની સાથે પ્રભુભક્તિમાં જોડાઈ ગયા છે, તે ભક્ત અનેક (વિવિધ) પ્રકારથી આ પ્રપંચાત્મક સંસારમાં દુઃખ ભોગવી પ્રભુસેવાનો ત્યાગ નથી કરતા. આવા ભક્તોનું મન ગુલાબનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે અને સાથે ગુલાબની ડાળીઓ ઉપર કાંટા હોય છે.

બેલા :

કેટલાક ભગવદ્ભક્ત એવા હોય છે, જે આ લૌકિકમાં અનેક પ્રકારથી ફસાયેલા હોવા છતાં, યથા સમય હરિસેવામાં સર્વ ત્યાગપૂર્વક મન લગાવે છે. આવા ભક્તોનું મન પ્રભુસેવાના માર્ગમાં બેલાનાં ફૂલ રૂપી કહેવાય છે. બેલા એટલે વેળા (સમયે).

રાતરાણી :

જે હરિસેવક લૌકિકમાં જન્મ લીધા પછી પ્રપંચથી મુક્ત નથી થતાં અને સૂર્યોદયથી સૂર્યાસ્ત સુધી લૌકિકમાં લીન રહે છે, પોતાનો

સમસ્ત (બધો) લૌકિક પૂરો કર્યા પછી, રાત્રે પોતાના પ્રભુની સેવામાં મન લગાવે છે, એમનું મન રાતરાણીનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે.

જુહી :

જેમણે હરિ-ભક્તિ માર્ગમાં પોતાનું મન, બધાથી છોડાવીને, કેવળ પ્રભુથી જ પોતાનું હૃદય જોડેલું છે એવા ભગવદીયોનાં મન જુહીનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે. જુ- જોડાવવું, હી-હૃદય (હૃદય પ્રભુ સાથે જોડાયેલું)

સોનજુહી :

જે ભક્તોનું મન સો (૧૦૦) સાથે નથી જોડાયું, કેવળ એક પ્રભુ સાથે હૃદય જોડાયું છે, એવા ભક્તોનાં મન સોનજુહીનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે.

(સો - ૧૦૦, ન - નથી, જુ- જોડાવવું, હી - હૃદય)

ચમેલી :

શ્રીમદ્ ભાગવત્માં ભ્રમરગીતના પ્રસંગમાં, વ્રજગોપીઓએ ઉદ્ધવજીને પૂછ્યું, ''હે ઉદ્ધવ, અગર અને ચંદનની સુગંધવાળી, આપની ભૂજાઓને તે કૃષ્ણ, અમારા કંઠમાં ક્યારે મળશે.'' એવી ગૃહિણીના કંઠમાં તે કૃષ્ણએ ભાવથી વારંવાર ભૂજા રાખી, એવા વ્રજભક્તોનાં મન ચમેલીનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે.

(ચ - વારંવાર, મેલી - કંઠમાં પધરાવવું)

પીત ચમેલી :

જે ગોપીજનોના કંઠમાં શ્રી પ્રભુએ ભૂજા પધરાવી ત્યારે ગોપી દ્વારા પ્રભુને અથવા પ્રભુ દ્વારા ગોપીને, કપોલ ચુંબન આપ્યું. (કપોળનું રસપાન કર્યું.) આવી લીલાના ગોપીજનોનાં મન પીત ચમેલીનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે. (પીત - પાન કરવું.)

કુંદ :

કૃષ્ણ લીલામાં જે હરિસેવાપરાયણોનું મન સદા પ્રફુલ્લિત રહે છે, તેમના જીવનમાં ક્યારે એક ક્ષણ માટે લૌકિક આવી જાય છે, તો તેઓને બહુ જ દુઃખ થાય છે. એવા પ્રભુસેવકોનું મન કુંદનાં ફૂલ બનીને પ્રગટ થાય છે. પ્રભુસેવા વગર એમનું મન કુંદ (દુઃખી) થઈ જાય છે. (પાસે હોવા છતાં ન આપવું અને મેળવવાની આશાવાળાને દુઃખ થવું તે કુંદ કહેવાય છે.)

કુંદરસ્ય કુંજામું પષ્ય જાતંચ નવ કાનને ।
અમુના કુંદ કુંજેન સખી મેકિંપ્રયોજનં ॥

હે સખી ! આ નવીન વનમાં પ્રગટ થવાવાળી કુંદની કુંજને જો. તેને જોવાથી આપનું દુઃખ દૂર થઈ જશે.

હે સખી ! જે કુંજમાં ''મુ'' અક્ષર નથી, તેની સાથે મારે શી લેવા દેવા ? અર્થાત્ કુંદની કુંજથી મારું દુઃખ દૂર થઈ જશે.

સંસ્કૃતમાં અમુના નો અર્થ એના વડે થાય છે. પરંતુ અહીં ચતુર નાયિકાએ, અ = નહીં, મુ = મુ (કુંદની આગળ 'મુ' નથી તે), ના = સંબંધ નથી.

''કુંદ નહીં, મુકુંદ જોઈએ.''

ફૂલોનો સંબંધ જ્યાં ભક્તોનાં મનથી છે, તો એ નિશ્ચયપણે માનવું પડે કે કોઈ છૂપા (છીપે) અર્થમાં મનની વાત કહેવામાં ફૂલ એક ભાષા છે. જેવી રીતે શ્રી નાથજીના કરકમળોમાં, શૃંગાર સમયે ચાર કમળ ધરાવવામાં આવે છે, એનો ભાવ છે, ''શ્રીનાથજી કહે છે. હું ચાર પ્રકારના ભક્તોમાં લીલા કરું છું.'' (રાજસ, તામસ, સાત્વિક, નિર્ગુણ.)

શ્રીમદ્ ભાગવત્ - ત્રીજા સ્કંધમાં જય વિજયને શ્રાપ મળ્યા પછી વૈકુંઠનાથ પાનની બીડી આરોગીને ગરુડ ઉપર બિરાજીને સનકાદિકોની સામે શ્રીહસ્તમાં કમળ ફેરવતા આવ્યા. આ કમળ ફેરવવાનો અર્થ એ થાય કે હું કાંઈક લીલા કરવા માંગું છું. અતઃ ફૂલની સાંઝી એકબીજા સાથે પોતાની વાત કહેવાની એક ભાષા છે.

રાસ પંચાધ્યાયીમાં અંતર્ધ્યાન થયા પછી શ્રી ઠાકોરજી એક સખીને લઈને વનમાં આગળ ચાલી ગયા. ત્યાં તે એક સખીનો વનમાં પુષ્પ (ફૂલ) વીણીને શૃંગાર સિદ્ધ કર્યો હતો. પુનઃ તે સખીને વિરહરસ દાન કરાવ્યું.

અહીં તો પહેલાં ફૂલોનો શણગાર કર્યો પછી છોડીને જતા રહ્યા. અહીં સૂચિત થાય છે કે, હે સખી ! છું આપને છોડીને જઈ રહ્યો છું. આ વિષયમાં હું કઠોર નથી, કારણ કે મનથી ફૂલોની જેમ કોમળ છું. આપણા ઠાકોરજી ફૂલોનો શૃંગાર કરાવીને પોતાની કોમળતાનો પરિચય આપે છે. ❀

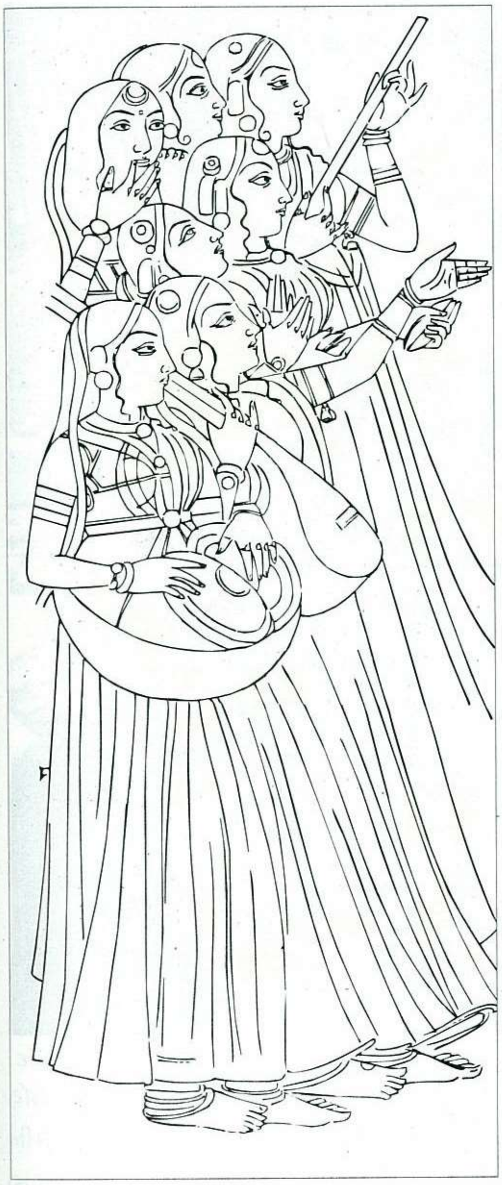

સૌજન્ય : 'રૂપસમ્હીતા' શ્રી વાસુદેવ સ્માર્ત.

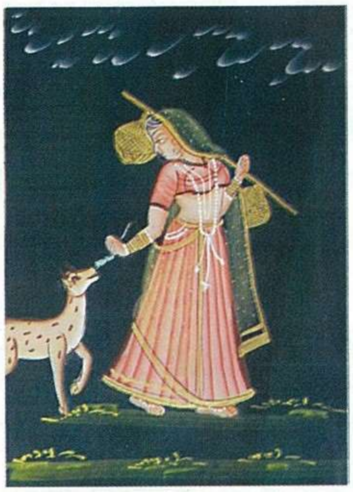

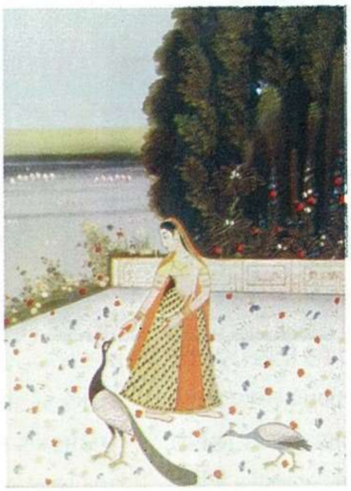

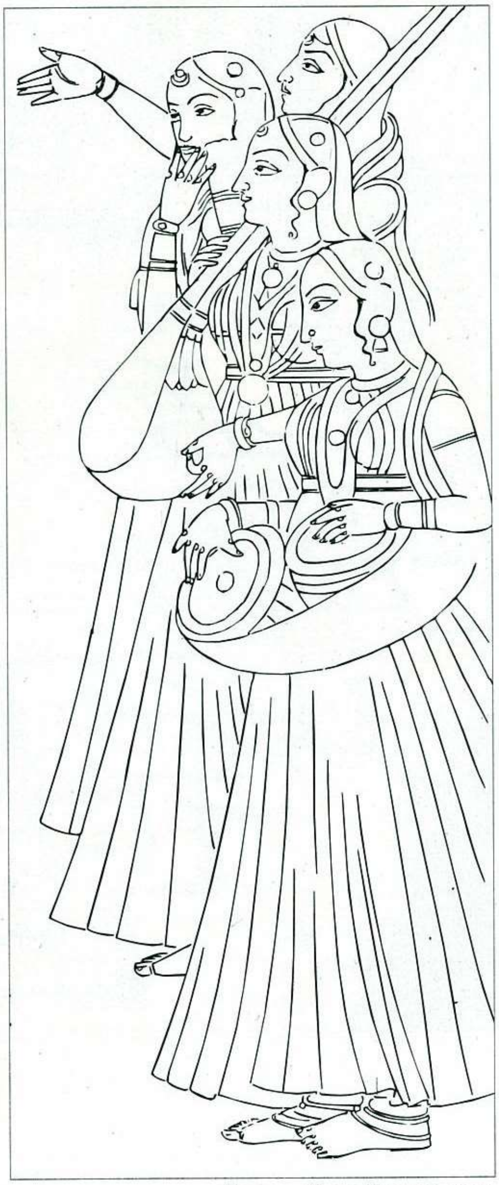

સૌજન્ય : શ્રી અરવિંદભાઈ, ભરૂચ

ફૂલોની સાંઝીમાં રાગરાગિણી

ફૂલોનો સંબંધ રાગરાગિણી સાથે જોડાયેલો છે. રંગ અને સ્વરૂપની આકૃતિ ગોપીજનો છે. ગોપીજનો ફૂલોના રંગોની અંદર રહેલી રાગરાગિણી છે. શ્રીજીની સન્મુખ ''સાવન હિંડોળાની સાંઝીનું નિર્માણ કરતી વખતે ગોપીજનોનાં વસ્ત્રોમાં જુદા જુદા રાગરાગિણીનું નિર્માણ થાય છે.

સાંઝીમાં વાદળોની સજાવટ આછા શ્યામ રંગનાં ફૂલોથી કરવામાં આવે છે અને વાદળોની વચ્ચે સીધી રેખામાં છૂટા છૂટા અંતરમાં સફેદ રંગનાં ફૂલોની નાની નાની કળીઓ મૂકીને વરસતી વર્ષાની બુંદોનું સર્જન થાય છે. કેસરી અને પીળા રંગનાં ફૂલોની સજાવટથી વૃંદાવનની વ્રજસ્થલીની રચના પ્રગટ થશે. ભૂરા (નીલા) રંગનાં ફૂલોની સજાવટ દ્વારા પ્રગટ થતા શ્રી યમુનાજી, લીલા રંગની લીલી (હરી) લતાપતાઓથી કદમનું વૃક્ષ. જેમાં કદમનાં ફૂલો મૂકીને ખીલવવા. જેની ડાળી ઉપર વિવિધ રંગોનાં ફૂલોથી હિંડોળાની રચના પધરાવવી.

જ્યાં શ્રી ઠાકોરજીનાં સ્વરૂપ પધરાવીને, સન્મુખ ગોપીજનોનું દર્શન સાંઝીમાં પ્રગટ થાય છે.

આ હિંડોળા લીલાની સાંઝીમાં ગોપીજનોનાં વસ્ત્રોમાં લીલા (હરે) રંગોની છટા છે. તો આ લીલાનું (રાગરાગિણી સાથેનું) સાંઝીમાં શુદ્ધ મલ્હારના સ્વરૂપનું ચિત્ર છે. આ સાંઝી લીલામાં ગોપીજનો પોતાના પ્રીતમની સન્મુખ શુદ્ધ મલ્હાર રાગનું ગાન કરી રહી છે.

''સાવન હિંડોળા'' લીલાની રચના ઉપર મુજબની સાંઝીમાં ચિતરવામાં આવી છે. પરંતુ ગોપીજનોનાં વસ્ત્રોમાં શ્યામ રંગનાં ફૂલોની છટા હોય તો આ સાંઝી ચિત્રનું સ્વરૂપ બદલાઈને મેઘમલ્હાર થઈ જશે. જ્યાં ગોપીજનો મેઘમલ્હાર રાગનું ગાન કરી રહી છે.

''સાવન હિંડોળા'' લીલાની રચના ઉપર મુજબની પરંતુ ગોપીજનોનાં વસ્ત્રમાં સ્વર્ણચંપાઈ રંગની છટા હોય તો આ લીલાનું સાંઝીમાં સ્વરૂપ બદલાઈને વૃંદાવની મલ્હાર થઈ જશે, જ્યાં ગોપીજનો વૃંદાવની મલ્હાર રાગનું ગાન કરી રહી છે.

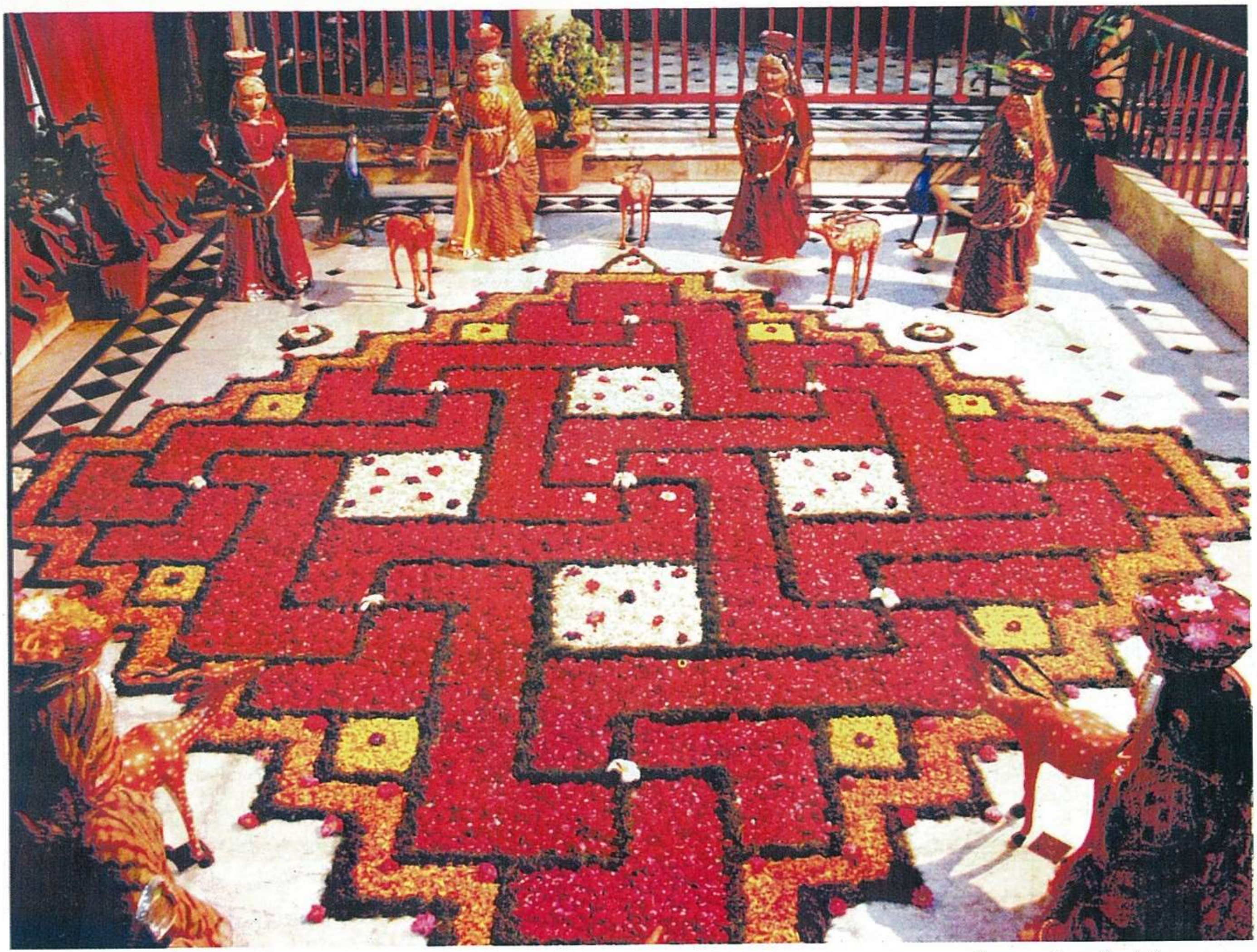

સૌજન્ય : ગોસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ.

ફૂલની સાંઝી તૈયાર કરવાની રીત

ચોકી ઉપર અથવા શ્રીજીની સન્મુખ ચોકમાં સફેદ જાડું કપડું, પાણીમાં ભીનું કરીને પાથરવું. જેની ઉપર સફેદ મલમલનું કપડું પાણીમાં ભીનું કરીને પાથરવું. જાડું કપડું અને સફેદ મલમલનું કપડું એકસરખા માપનું હોવું જરૂરી છે. જેના ઉપર મનભાવન પ્રભુપ્રેરિત કલાત્મક સાંઝીની આંખો બંધ કરી ભાવના કરવી અથવા અગાઉથી નક્કી કરેલ ભાવને અનુરૂપ સાંઝીની રચના કરવી. ફૂલોની સજાવટ સાથે સાથે પાણીનો આછો છંટકાવ કપડા ઉપર કરતા રહેવું. અનેક પ્રકારનાં રંગબેરંગી ફૂલોથી સજાવટ કરવી. ફૂલોની સાંઝીમાં કોયલનાં ફૂલ મુખ્ય રૂપે વપરાય છે. જૂઈ, ચંપા, માલતી, ચમેલી, મોગરો, ગુલાબ્, ગુલેવાસ, હારશૃંગાર, પીતચમેલીનાં ફૂલો અને આ ઋતુમાં આવતાં ફૂલોનો સાંઝીની રચનામાં ઉપયોગ થાય છે. હરીપત્તી (લીલાં કોમળ પાંદડાં)ને કાતરથી બારીક કાપીને વ્રજવનની રચનાનો ભાવ પ્રગટ કરવામાં આવે છે.

ફૂલની સાંઝીની સજાવટમાં પાણીનો છૂટથી ઉપયોગ કરવો, જેનાથી ફૂલ લાંબા સમય સુધી સુકોમળ રહેશે. અહીં ખાસ ધ્યાનમાં રાખવાનું કે પાણીનો છંટકાવ કપડા ઉપર કરવો, ફૂલો ઉપર કરવો નહીં.

ભાવના :

ફૂલની સાંઝી શ્રી સ્વામિનીજીના ભાવથી રચાય છે. નીચે પાથરવામાં આવતું કપડું શ્રી વ્રજભૂમિના ભાવથી પાથરવામાં આવે છે. જેના ઉપર જળ (પાણી)નો છંટકાવ કરવામાં આવે છે, તે જળ શ્રી યમુનાજીની ભાવનાથી કરવામાં આવે છે. ફૂલની સાંઝી શ્રી પ્રિયા - પ્રીતમને મળવાનું બહાનું છે.

સાંઝી લીલામાં પ્રભુને છડ઼ી / ગેંદ

ફૂલ વ્રજભક્તો કે મન કે સ્વરૂપ હોતે હૈ । યે વહાં ફૂલ હોતે હૈ, જિનકા અત્તર (ઇત્ર) નીકલતા હૈ । ફૂલો મેં અત્તર નીકલનેકા અર્થ ભગવત્ પરખ તાત્પર્ય, સેવા પરખ આત્મધર્મ. ભગવત્ સુખ વિચારનેવાલા મૂલ વિચાર જહાં હોગા, વહાં પુષ્પ રૂપી મનસે અત્તર નીકલેગા । અતઃ વહી ફૂલ સેવોપયોગી હૈ। ભાગવત મેં દેવકી કે યહાં જન્મ લેનેવાલે પ્રસંગ મેં મનકા વર્ણન હૈ। કૃષ્ણ જન્મકે સાડે આઠ શ્લોકમેં મનકા વર્ણન હૈ। રાસ પંચાધ્યાયીકે પ્રારંભમેં મનકા વર્ણન હૈ। ઉદ્ધવ કે ગોકુલસે મથુરા જાને પર મન કા વર્ણન હૈ । કુલ મિલાકર ભક્તિ માર્ગીય અલૌકિક મન કે બીના, અલૌકિક આનંદકા કોઈ ભોક્તા નહીં હો સકતા । યહી અલૌકિક મન નિત્ય સેવામેં રાજભોગમેં ગેંદ બનકર આતા હૈ । ફાલ્ગુન માસ મેં ઇસ ગેંદ કા વિશેષ રહસ્ય હૈ। સાંઝી કે દિનોં મેં ઇસ ગેંદ કા છબીલી છટાવાલા રહસ્ય હૈ । ઇસી તરહસે શ્રી ઠાકોરજી કો ગાય ચરાને મેં છડ઼ી દી ગઈ હૈ । શ્રી ગોવર્ધન ધારણ કરને મેં છડ઼ી બિરાજતી હૈ । ફાલ્ગુન માસ મેં હોલી કે ખેલ મેં ફૂલકી છડ઼ી બિરાજતી હૈ । સાંઝી કે દિનોં મેં ભી ફૂલકી છડ઼ી આતી હૈ।

યશોદા કે ઉખલ બંધન મેં ભી છડ઼ી કા પ્રયોગ હૈ । યહ છડ઼ી શ્રી સન્મુખ જબ કભી, જહાં જિસ રીતસે આતી હૈ, યહ છડ઼ી પુષ્ટિ ધર્મકા સ્વરૂપ હૈ । પુષ્ટિ માર્ગીય આચાર્ય પધારતે હૈ તો ઇસી છડ઼ી કો લેકર છડ઼ીદાર આગે ચલતા હૈ ઔર વહ ‘સાવધાન’ ઐસા શબ્દ બોલતા હૈ । છડ઼ીદાર કે વક્ષસ્થલ કે સામને છડ઼ી હોતી હૈ । ઇસકા અર્થ હે આગે આગે છડ઼ી રૂપ પુષ્ટિ ધર્મ ચલ રહા હે । ઇસકે પીછે ધર્મ કે સંરક્ષક આચાર્ય ચલ રહે હૈ।

જહાં શ્રી ઠાકોરજી કી સેવા હોતી હૈ, વહાં છડ઼ી બિરાજમાન હૈ। ઇસકા અર્થ પુષ્ટિ ધર્મ સ્વરૂપ ધારણ કર શ્રી ઠાકોરજી કે પાસ સદૈવ બિરાજમાન હૈ । વેદશાસ્ત્ર યા અન્ય ધર્મગ્રંથો મેં વર્ણિત ધર્મ (કહા ગયા ધર્મ) કેવળ લૌકિક ઔર અલૌકિક કે ઉપર શાસન કરને કે કામ મેં આતા હૈ । લીલા સૃષ્ટિ કા ધર્મ સ્વતંત્ર હૈ । વહ ધર્મ પુષ્ટિ સૃષ્ટિ કી અંતરંગ રસાત્મક ભાવનાઓંકો સંભાલને કે કામ મેં આતા હૈ।

સાંઝી મેં પ્રિયા પ્રીતમકી અંતરંગ લીલાએં હૈ । ઇસલિયે યહાં પર કીર્તનકારોં કે દ્વારા શ્રી ગુસાંઈજીકી પદ્ધતિ કે દ્વારા છડ઼ી ઔર ગેંદ કા ઉપયોગી વર્ણન હૈ। જિતને પ્રકાર કે ફૂલો મેં રંગ હોતે હૈ, સરસતા હોતી હે, સુકુમારતા હોતી હૈ, ઔર સુગંધ હોતી હૈ, આભા હોતી હૈ, આકર્ષણ શૈલી હોતી હૈ સેવોપયોગી ભક્તિ માર્ગીય મનમેં યે સબ લક્ષણ હોતે હૈ। અતઃ મન હી જબ બાહર પ્રગટ હો કે આતા હૈ, તો ફૂલ કી ગેંદ કા રૂપ ધારણ કરતા હૈ।

સાંઝી મેં દો ફૂલોં કી છડ઼ી ઔર દો ફૂલોં કી ગેંદ કા રીત મેં વર્ણન આતા હૈ। એક છડ઼ી ઔર એક ગેંદકા અર્થ હોતા હૈ, *ભાવ* ।

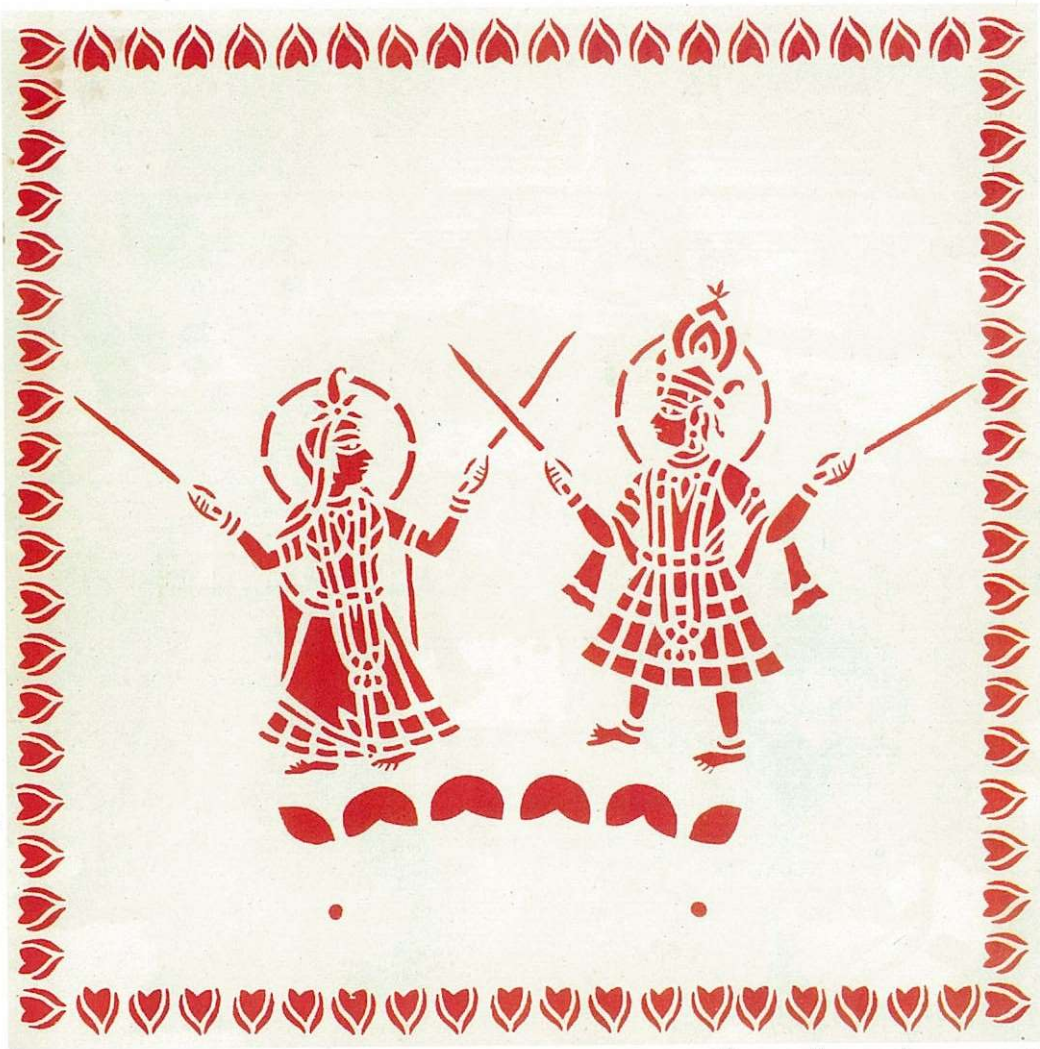

સૌજન્ય : શ્રી ભાનુભાઈ શાહ, અમદાવાદ

દૂસરી છડ઼ી ઔર ગેંદકા અર્થ હોતા હૈ, *ભાવના* । ભાવ પક્ષકા નિર્ણય હૈ, પ્રભુકી તરફસે ચાહના । ભાવના શબ્દ કા અર્થ હૈ, સીમંતિનીઓં કી તરફસે ત્યાગ । ઇસીલિયે વ્રજગોપીઓને લોકવેદ સે ઉપર ઊઠકર જિસ છડ઼ી રૂપ ધર્મકા ત્યાગ કિયા, જિસ ગેંદ રૂપ મનકા ત્યાગ કિયા ઇસી ત્યાગ સે શ્રી કૃષ્ણ રસાત્મક હુએ । શ્રી કૃષ્ણને લોકવેદ રહિત લીલા સંમત જિસ ધર્મકો અંગીકાર કિયા, વૈસે હી ફૂલોં કે સમાન સુકુમાર મનકો જન્મ દિયા । જિસસે લીલા રસકી ચાહના પ્રગટ હુઈ।

નંદાલય નિકુંજકી સભી લીલાએં ઈન્હીં દો માપદંડો સે વિચારણીય હૈ। ઈન્હી બાતોં સે નિર્ણય લેને પર શ્રી મહાપ્રભુજી કા સ્વરૂપ ''પૃથક્શરણ માર્ગોપદેષ્ટા'' સિદ્ધ હોતા હૈ।

છડ઼ી ઔર ગેંદ કે આદાનપ્રદાનમેં રસ કા દાન ઔર આકર્ષણ હૈ। ગેંદ કો ફેંક કર લીલા રસકા દાન સિદ્ધ હોતા હૈ। છડ઼ી સે ગેંદ કો અપની તરફ ખીંચ કર રસ કા આકર્ષણ સિદ્ધ હોતા હૈ। યહ રસ જબ ઈન્દ્રિયોં મેં સ્થિર હો જાતા હૈ, તો રોમ રોમ સે રસ છલકતા હૈ। યહી છલકનેવાલા રસ રાસમેં શ્રમકણ (પ્રસ્વેદ) કા રૂપ ધારણ કર રસ વૃંદાવનકી યમુના બના। (વૃંદાવન - નિજ વૃંદાવન સ્વરૂપ વૃંદાવન રસ વૃંદાવન) ઉસી યમુના જલસે ઝારીજી ભરી જાતી હૈ। ''પ્રિયા અંગ સંગમ શ્રમ સરિતા, જામ ઉરેહ વહો।''

યહી ધર્મ રૂપ છડ઼ી ઔર યહી મન રૂપી ગેંદ કભી ગ્રીષ્મ ઋતુમેં પુષ્પ નિકુંજ સે બાહર આકર ફૂલ મહેલ બનતે હૈ। ઈસકે નિર્માણ મેં પુષ્ટિ ધર્મ, પુષ્ટિ મર્મકા જાનકાર મન રૂપી ગેંદ શોભા કે પ્રમુખ કારણ બનતે હૈ। (''ચલો કીન દેખન કુંજ કુટી મદનગોપાલ જહાં મધ્યનાયક મન્મથ ફોજ લૂંટી'')

વહાં કુંજ કુટી દેખની હૈ યા નહીં, ઉસ ફૂલ મહેલમેં અપના પુષ્ટિ ધર્મ ઔર અપના પુષ્ટિ સેવોપયોગી મન પહેચાનતા હૈ। પહેલે તો યહી દર્શન કરના હૈ।

યહી છડ઼ી ઔર ગેંદ શયનમેં વડે હોતે હૈ। ઈસકા અર્થ હોતા હૈ કી શ્રી ઠાકોરજીને અપના મન ઔર ધર્મ શ્રી મહાપ્રભુજી ઔર શ્રી ગુસાંઈજીકો સોંપ દિયા। ઈસકો સ્વીકાર કરને કે બાદ હી શ્રી ગુસાંઈજી, શ્રી મહાપ્રભુજીકો હૃદયમેં રખકર જો વચનામૃત કરતે હૈ, ઉસમેં કહા હૈ કી ''વેણુગીત પુન યુગલ ગીતકી રસ બરખા વરસાઈ.'' ક્યોંકી શ્રી ઠાકોરજીને છડ઼ી રૂપ ધર્મ ઔર ગેંદ રૂપી મન શ્રી મહાપ્રભુજી જીનકે હૃદય મેં સાક્ષાત્ બેઠે હૈ ઉન્હેં શ્રી ગુસાંઈજીકો સોંપ દિયા હૈ। ઈસી કારણ સે શ્રી ગુસાંઈજી કા સ્વરૂપ કેસર યુક્ત ગૌર કાંતિ ઔર કેસરી ધોતી ઉપરના હૈ। યહ પરમાનંદ લીલા મેં ધર્મ ઔર મન કા રંગ હૈ।

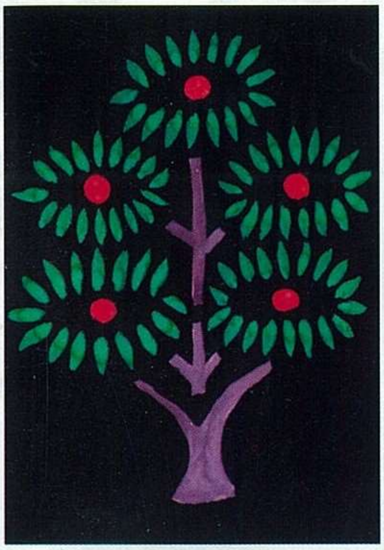

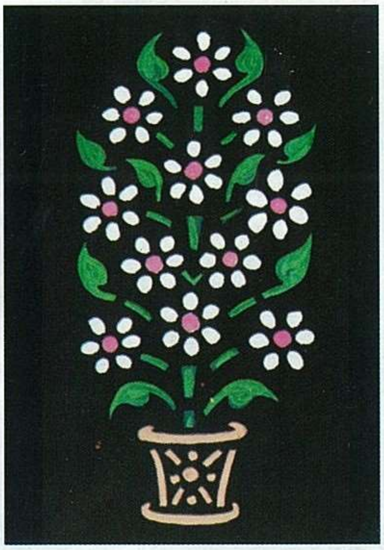

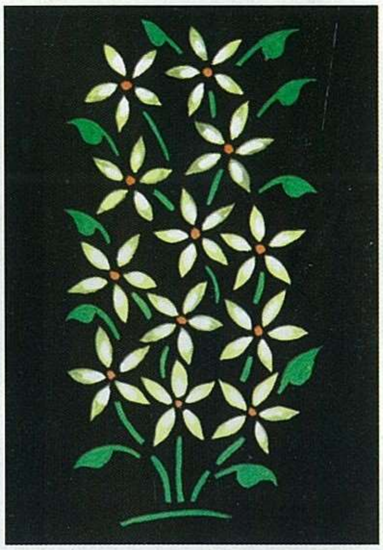

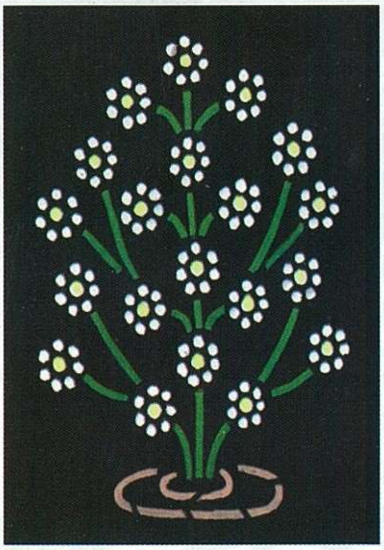

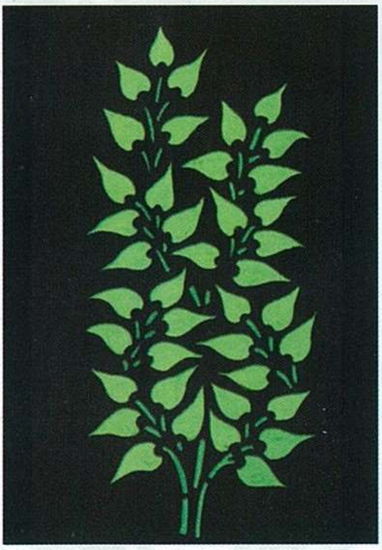

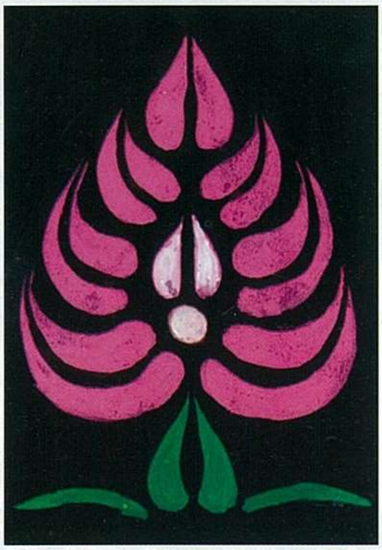

કેવળ સાંઝીમાં પ્રભુ સન્મુખ થતાં ફૂલો :

પૂર્વ સતી પાર્વતીના શાપથી બ્રહ્મા, વિષ્ણુ, મહેશ અને ઇંદ્ર વૃક્ષ રૂપ થયા અને એ ચારે દેવોની અર્ધાંગનાઓ પણ શાપથી સુગંધ વિનાની વેલો થઈ છે. એટલે પીપળાના વૃક્ષ રૂપે વિષ્ણુ થયા, વડ રૂપે શંકર થયા, ખાખર રૂપે બ્રહ્મા થયા અને ખીજડાના વૃક્ષ રૂપે ઇંદ્ર થયા છે.

એ જ પ્રકારે લક્ષ્મીજીની સેવા રૂપે, માલતી વેલનાં ફૂલોનો અંગીકાર ઉષ્ણ કાળમાં થાય છે, અને સતીની સેવા રૂપે મધુમાલતીનાં ફૂલોનો અંગીકાર શીત કાળમાં થાય છે. બ્રહ્માણી એટલે સાવિત્રીની સેવા રૂપે બોઘન વેલનાં (ચાર રંગનાં) ગુલાબી, સફેદ, પીળાં અને લાલ રંગનાં ફૂલોનો અંગીકાર પ્રભુના શ્રી અંગ ઉપર થતો નથી પણ વર્ષા ઋતુમાં સાંઝી પુરાય ત્યારે તેમાં થાય છે. એ પ્રકારે ઇંદ્રાણીનાં કીરમજી રંગનાં બામ ફૂલોનો ઉપયોગ પણ સાંઝી પુરાય તેમાં થાય છે, અગર તો હિંડોળામાં ચમરી કરાય તેમાં બામ અને બોઘન વેલનાં ફૂલો લેવાય. એટલે બોઘન વેલ, બામ વેલ અને કરણનાં ફૂલો ગુલાબી અને પીળા રંગનાં તેમ જ ગલગોટાનાં ફૂલો, બટનનાં ફૂલો હિંડોળા અને સાંઝી લીલાના દિવસોની રાહ જુએ છે, કારણ કે તે દિવસોમાં તેઓ બધા પ્રભુ સન્મુખે થઈ શકે છે. એ બધી વેલો અને ફૂલોમાં કેવળ રૂપ અને રંગ હોય છે પરંતુ સુવાસ રૂપી ગુણ હોતો નથી, એટલે તે કેવળ પ્રભુ સન્મુખ થાય છે. જો કે આજ સુધી કોઈએ પૃથ્વીનાં સૌંદર્યની શોભા રૂપ વૃક્ષ, વેલ, ફૂલોનો આ રીતે પ્રભુસેવા સાંનિધ્યમાં ઉપયોગ કર્યો નહોતો, પરંતુ શ્રી આચાર્યજી પ્રગટ થયા બાદ એ રીતે વ્રજનાં વૃક્ષોમાં કદમ અને કેળ અહર્નિશ પ્રભુ સાંનિધ્ય અને સેવામાં અંગીકાર થાય છે.

(સૌજન્યથી : 'વ્રતોત્સવ ભાવના', સત્સંગ, ૧૯૯૩. પાના નં. ૧૨૭ / ૧૨૯)

ફૂલોનો સંબંધ (ચરણામૃત) :

ફૂલોની સાથે કેસર, ઈલાઈચી, લવિંગ અને પાણી ભેળવીને શ્રી ઠાકોરજીને જ્યેષ્ઠાભિષેક કરાવવામાં આવે છે. શ્રી ઠાકોરજીને જ્યેષ્ઠાભિષેક કરાવેલું પ્રસાદી જલ અને હલદી ઘાટીની માટી સાથે ભેગી કરી પ્રસાદી ચરણામૃત સિદ્ધ થાય છે.

ફૂલોનો સંબંધ (વારુણી) :

શ્રી બલરામજી જે વારુણી પીએ છે, તે કદમાનાં ફૂલોમાંથી તૈયાર કરવામાં આવતો રસ છે. આ વાતનું પ્રમાણ કાશીનાગરી પ્રચારણી સભામાં ખુલાસાવાર રજૂ થયું છે.

ફૂલોનો સંબંધ (અત્તર - સુગંધી) :

ગુલાબ, મોગરો, ચમેલી, ચંપો જેવાં વિવિધ ફૂલોને અનેક પ્રતિક્રિયામાંથી પસાર કરી અત્તર-સુગંધીનું નિર્માણ થાય છે, જે સુંગધી શ્રી ઠાકોરજીની સેવાનું આવશ્યક અંગ છે.

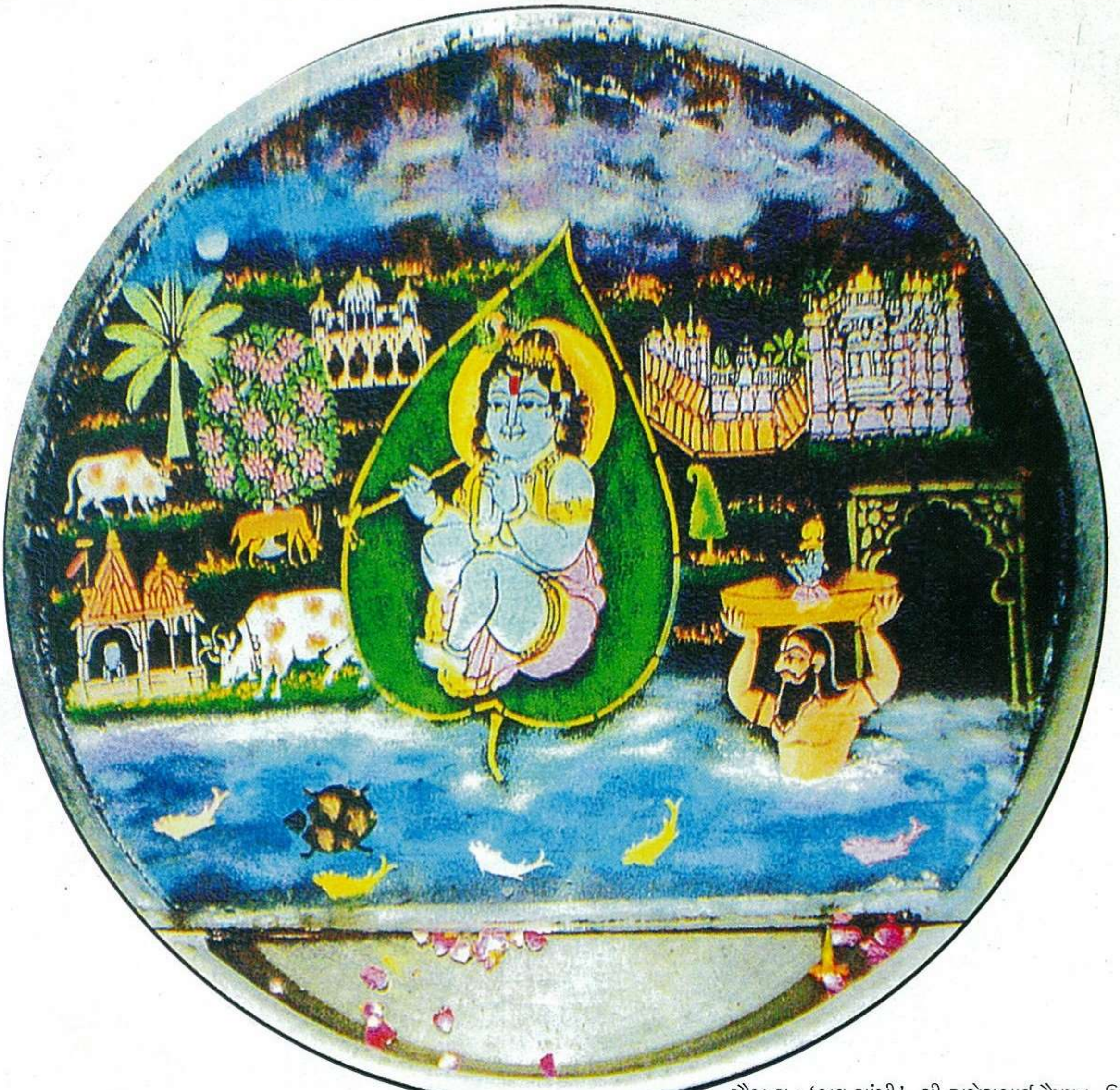

સૌજન્ય : 'જલ સાંઝી', શ્રી રાજેશભાઈ વૈષ્ણવ, ઉદયપુર

સાંઝી - જળની ઉપર

થાળ કે મોટી કથરોટમાં કિનારી સુધી પાણી ભરવું. થાળ કે કથરોટનું તળિયું, જમીનની સપાટી સાથે એક સપાટીવાળું હોવું જરૂરી છે. જેથી સાંઝીના રંગો પાત્ર હાલવાથી એકબીજા સાથે ભળી (મિક્ષ) ના જાય. પાણીની સપાટીથી એક દોરો ઉપર રહે તે રીતે લાકડાની પાતળી પટ્ટીની આડાશ મૂકવી. થાળના વ્યાસના બે ભાગ થાય તે રીતે પાણીની વચ્ચે પટ્ટી મૂકવી. જેના એક ભાગ ઉપર (૧) મીણથી બનાવેલ રંગ અથવા (૨) શંખજીરુનું પાતળું પડ (થર) અને તે રીતે પાણી ઉપર એકસરખું ભભરાવવું. આ પડની એકસરખી સપાટીએ જામી જાય એટલે તેની ઉપર સાંઝીનાં બીબાં મૂકી કોરા રંગ છલનીથી પાડવા, બીબાની કિનારી વાળી સાવધાનીપૂર્વક પકડીને રંગ છાંટવા. જેથી બીબાનું નીચે દબાણ પડ્યા સિવાય ઉપાડી શકાય. લાકડાની પટ્ટીથી તૈયાર થયેલ બીજા ભાગ ઉપર, શ્રી યમુનાજીના (જલ સ્વરૂપ) સ્વરૂપમાં કમળ વગેરેની સજાવટ કરવી અને શ્રીજી સન્મુખ ધરવી.

નોંધ : મીણના રંગ બનાવવા માટે, પ્રથમ મીણ અને કોરા રંગને વાસણમાં મેળવીને ગરમ કરવા. એકરસ થાય એટલે ઠંડા પાડીને ખાંડણીમાં ખાંડવા. ખાંડવાની જરૂરત ત્યાં સુધી પડશે કે જ્યાં સુધી રંગ / મીણનું મિશ્રણ એકદમ બારીક થઈ જાય. પછીથી બારીક કપડાથી તેને કપડછાણ (ગાળી) કરી લેવું. આ રંગ વોટરપ્રૂફ બને છે અને તરલ હોવાથી સાંઝી નયનરમ્ય બને છે. આ રંગ આછા રંગીન હોય છે. જેનો પાણી ભરેલા થાળમાં બેઇઝ(સપાટી) તરીકે ઉપયોગ કરવામાં આવે છે. આ પ્રાચીન પદ્ધતિ થોડી મહેનત માગે છે. તેનાથી તૈયાર કરેલ સાંઝી સુંદર અને મોહક લાગે છે.

ભાવના : જલની સાંઝી શ્રી યમુનાજીના ભાવથી રચાય છે. ભાદરવા મહિનામાં ઓતરાચીતરાનો તાપ લાગે છે. જ્યારે તાપ આકરો લાગે ત્યારે શ્રી ઠાકોરજીને પણ ઠંડકની જરૂરત પડે. આવા સમયે ભક્તજનો જળની સાંઝીને પ્રભુ સન્મુખ પધરાવી શીતળ મનોરથ કરે છે. જળની સાંઝીમાં સામાન્ય રીતે નાગદમનની લીલા, નૌકાવિહાર, રાધાકૃષ્ણ કુંડની લીલા, શ્રી યમુનાજી વગેરે જળલીલાને અનુરૂપ સાંઝી સિદ્ધ કરે છે.

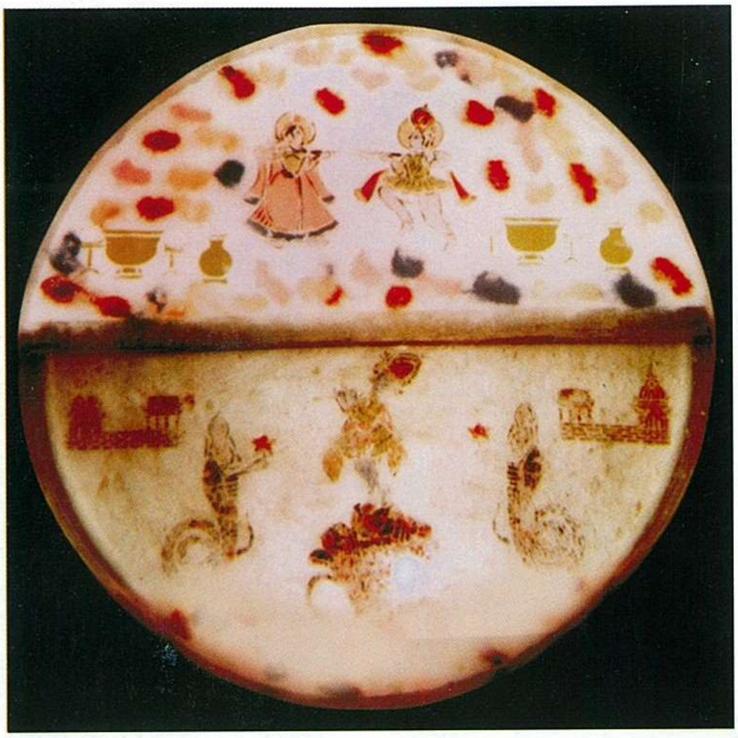

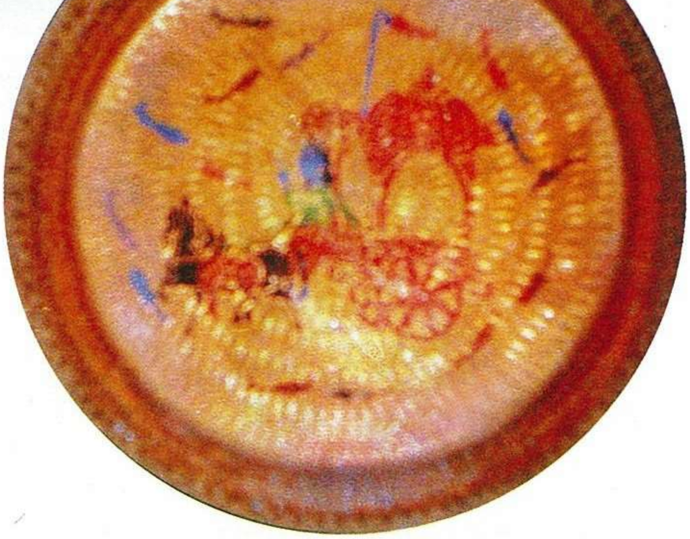

સાંઝી - જળની અંદર

સાંઝીનો આ કલાત્મક પ્રકાર છે. થાળ કે મોટી કથરોટ, જેનો ઉપયોગ સાંઝી માટે કરવાનો છે, તેનું નીચેનું તળિયું જમીનની સપાટી સાથે એકસરખી સપાટીવાળું હોવું જરૂરી છે. થાળ કે કથરોટની કિનારી ૩ (ત્રણ) ઇંચ ઊંચી હોવી જરૂરી છે. થાળમાં નીચેની સપાટી ઉપર લગાવ (નરમ મીણ) હાથથી એકસરખું ચોપડવામાં આવે છે. એના ઉપર સાંઝીના ખાકાથી (બીબાથી) કોરા રંગને કપડાની પોટલીથી છાંટવામાં આવે છે. પછી તેને બેથી ત્રણ મિનિટ માટે આછા તડકાની છાયામાં મૂકવામાં આવે છે. જેની ગરમીથી લગાવ પીગળવા લાગશે અને તેની સાથે સાંઝીના રંગ ભળીને સેટ થઈ જશે અથવા ચોંટી જશે. ત્યાર પછી તે થાળને દશથી પંદર મિનિટ સુધી છાયડામાં ઠંડો પડવા દેવો. થાળને શ્રીજી સન્મુખ પધરાવીને થાળની એક કિનારી ઉપરથી નાની ધારમાં પાણી રેડવું. પાણી થાળની કિનારી સુધી ભરવું. પાણીના પ્રતિબિંબમાં આ સાંઝી અતિ સુંદર રીતે નિખરી ઊઠશે અને પ્રભુ પ્રસન્ન થશે.

ભાવના :

જળ શ્રી યમુનાજીના હૃદયનો ભાવ છે. શ્રી યમુનાજીના હૃદયમાં જે ભાવ છે, તે જોવામાં આવે છે તે જળની સાંઝી છે.

સાંઝી જળની નીચે : જે ભાવ હૃદયની અંદર બિરાજમાન છે અને ગોપીજન એકબીજાનો ભાવ સમજી જાય છે, તે જળની અંદરની સાંઝીનો ભાવ છે.

સાંઝી જળની ઉપર : જે ભાવ બહાર પ્રગટ થઈ જાય છે તે જળની ઉપરની સાંઝીનો ભાવ છે.

જળની સાંઝી રસ ભેદ છે.

દરેક સખી મુજબ ૧૦ રસ ભેદ છે. જળ નીચેની સાંઝીમાં થાળમાં ભરવામાં આવતા જળમાં રંગને ભેળવીને રંગીન કરવામાં આવે છે. (અષ્ટ સખી, શ્રી સ્વામિનીજી, શ્રી ઠાકોરજી.)

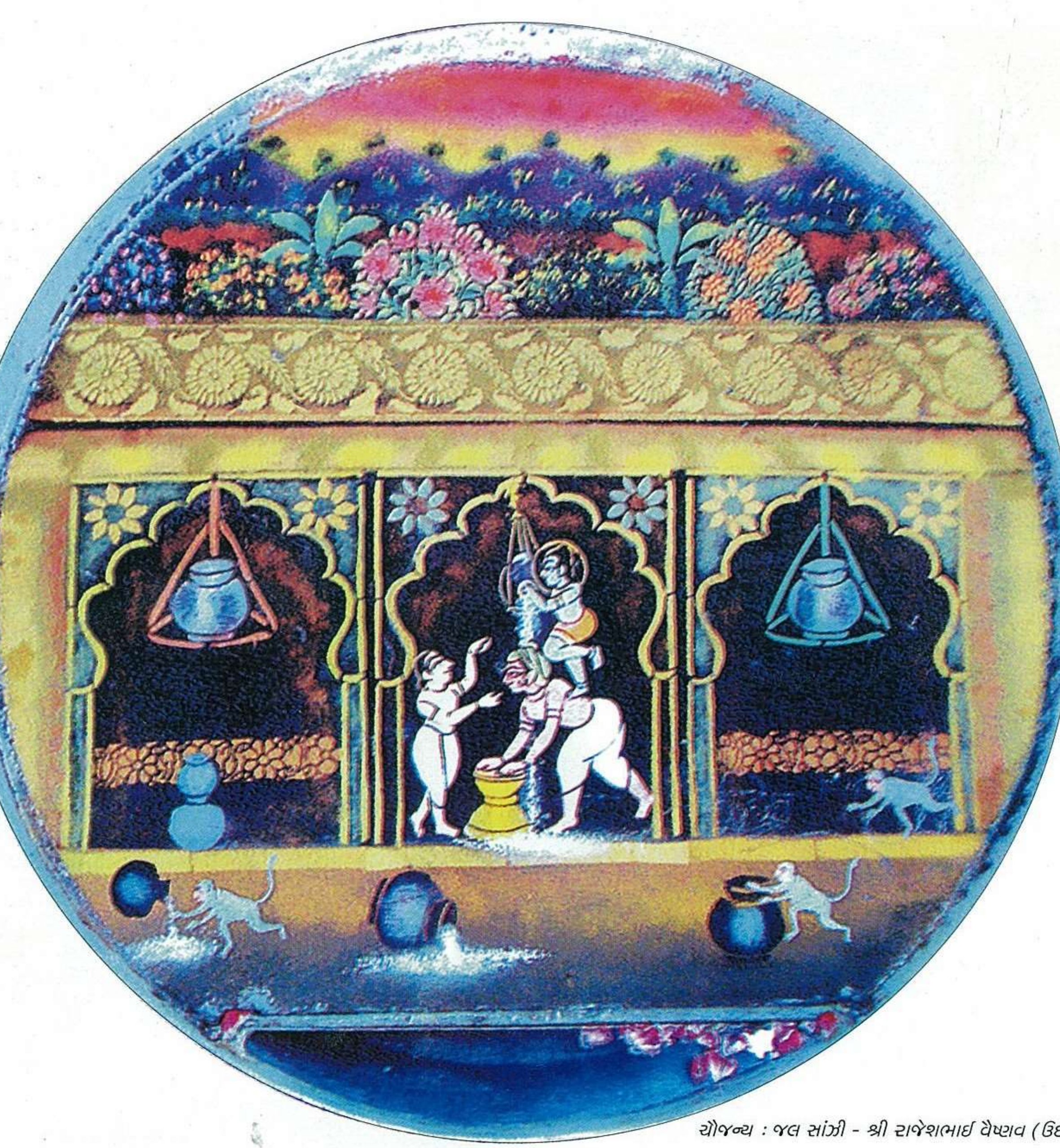

યૌજન્ય : જલ સાંઝી - શ્રી રાજેશભાઈ વૈષ્ણવ (ઉદયપુર)

‘જલ સાંઝી મંદિર’ :

‘સાંઝી’ શબ્દ જોડાયો હોય તેવું એક મંદિર ઉદયપુર (રાજસ્થાન)માં છે. શ્રી ગોવર્ધન નાથજીનું મંદિર (ઉદયપુર), જે ‘જલ સાંઝી’ મંદિરના નામથી પૂરા ઉદયપુર જિલ્લામાં પ્રખ્યાત છે. એવું પણ કહી શકીએ કે વિશ્વમાં સાંઝીના દિવસોમાં ફક્ત જલની સાંઝી શ્રી ઠાકોરજીની સેવામાં સિદ્ધ થાય છે.

અનોખી ભાતની (સુંદર ચિત્ર) જલ સાંઝીના ૧૫ દિવસોમાં (ભા. સુદ ૧૫થી ભા. વદના) નિત્ય સિદ્ધ થાય છે. આ મંદિરમાં જલ સાંઝી સેવાનો ક્રમ છેલ્લાં ૩૫૦ વર્ષથી (૧૫ પેઢીથી) ચાલ્યો આવ્યો છે. હાલ જલ સાંઝીની સેવા મંદિરના મુખિયાજી શ્રી રાજેશભાઈ મન્નાલાલ વૈષ્ણવ (વૈરાગી) કરી રહ્યા છે. આપના જણાવ્યા મુજબ તેઓના ગો.વા. પિતાશ્રી મન્નાલાલજી જલ સાંઝી કલામાં નિપુણ અને પ્રસિદ્ધ પખાવજવાદક હતા. શ્રી નાથજી મંદિર, ઉદયપુર અને ઉદયપુર રાજઘરાનામાં (રાજદરબારમાં) વિધિવત્ રીતે પખાવજવાદનની સેવા કરતા હતા.

નિ. લી. તિલકાયત શ્રી ગોવિંદલાલજી મહારાજશ્રી (નાથદ્વારા) દ્વારા શ્રી મન્નાલાલજીને તથા પરિવારજનોને બ્રહ્મસંબંધ સિદ્ધ થયો હતો. સાંઝીના દિવસોમાં જલ સાંઝીનું અવલોકન (દર્શન) કરવા માટે નિ. લી. ગોસ્વામી શ્રી દાઉજી મહારાજશ્રી (શ્રી રાજીવ બાવા) (નાથદ્વારા) અવશ્ય પધારતા. શ્રી રાજેશભાઈ સાંઝી તૈયાર કરતા સમયનો પોતાનો અનુભવ જણાવતાં કહે છે કે, ‘‘શ્રી ઠાકોરજી સ્વયં હૃદયમાં પધારીને આજ્ઞા કરે છે કે, ‘અહીં કુંજ, અહીં ગાય, અહીં વૃક્ષ, અહીં યમુનાજી, અહીં ગિરિરાજજી વગેરે સિદ્ધ કર.’ ત્યારે આપણે આપણામાં રહેતા નથી, કયાં ખોવાઈ જઈએ છીએ તેની ખબર રહેતી નથી. ત્યાર પછી શ્રી ઠાકોરજી હાથ પકડીને સાંઝી સિદ્ધ કરાવે છે, જે પ્રભુની પ્રત્યક્ષ હાજરીનો અનુભવ છે.’’

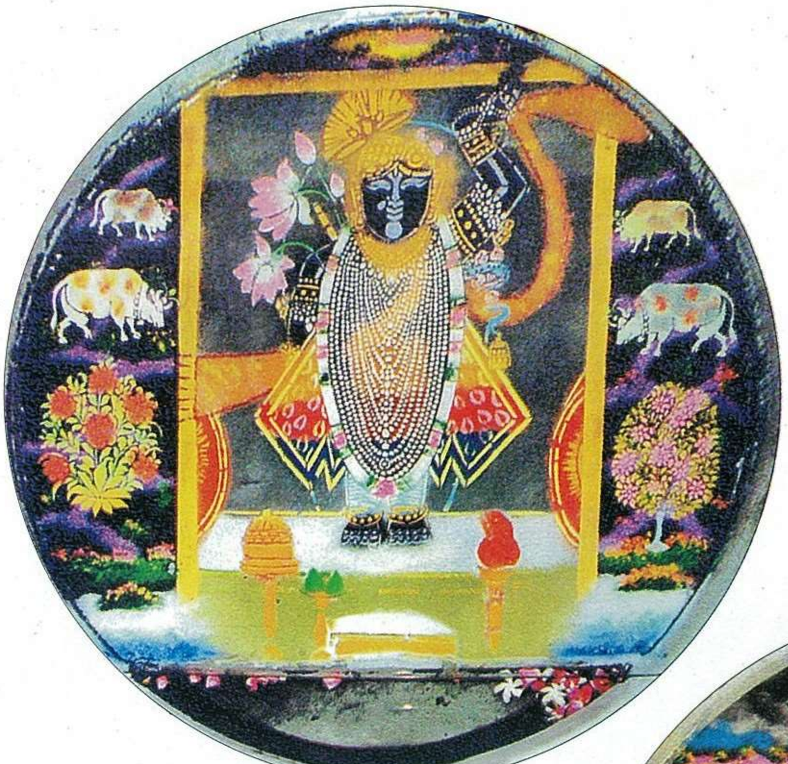

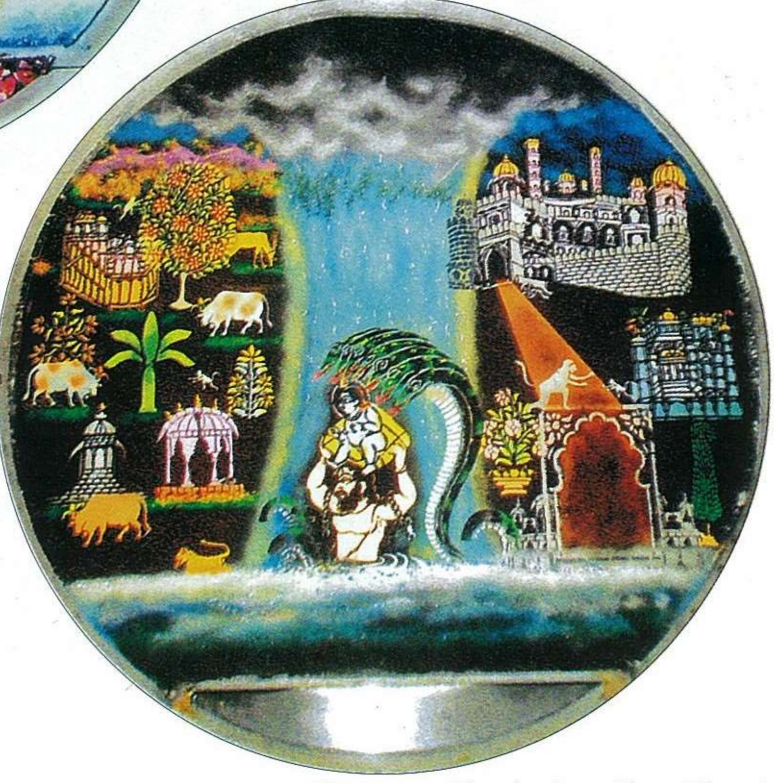

સૌજન્ય : જલ સાંઝી - શ્રી રાજેશભાઈ વૈષ્ણવ (ઉદયપુર)

જલની સાંઝીને માટે તરલ રંગોની જાણકારી આપતાં શ્રી રાજેશભાઈએ જણાવ્યું કે, જલની ઉપર બેઝ(થર) પાથરવા માટે, (૧) સફેદ રંગ સાથે બીજા રંગનું મિશ્રણ અને (૨) કાળા રંગનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે.

(૧) સફેદ રંગનો બેઝ: સોફ્ટ સ્ટોન પાવડર ગ્રામ ૨૦૦, વ્હાઇટ ઝીંક પાવડર ગ્રામ ૫૦ને ભેગા કરી કપડાથી ચાળી લેવાથી સફેદ બેઝ તૈયાર થાય છે. સફેદ બેઝમાં કોરા વિવિધ રંગ જરૂર મુજબ લાઇટ શેડ હલકા - ભારી - રંગનું મિશ્રણ કરીને જલની ઉપરનો રંગીન બેઝ તૈયાર થાય છે.

(૨) કાળા રંગનો બેઝ: કજલી (કાજળ) અને લાકડાના કોલસાને ભેગા કરી બારીક ખાંડીને કપડાથી ચાળી લેવાથી કાળા રંગનો બેઝ તૈયાર થાય છે.

ઉપરોક્ત રંગોને જળ (પાણી)ની ઉપર કપડાની છલની એટલે કપડાના ટુકડામાં રંગ મૂકી આંગળી વડે હલાવી કપડામાંથી જરૂર મુજબ રંગ જળ ઉપર છાંટવો. જે એકસરખો છાંટીને તેના ઉપર સાંઝી લીલાનાં બીબાં મૂકીને કપડાની છલનીમાં મનભાવન રંગ મૂકી આંગળી વડે હલાવી રંગ છાંટવો. દરેક રંગો માટે અલગ અલગ છલની વાપરવી. જેનાથી શ્રી ઠાકોરજીની લીલાની અતિ સુંદર સાંઝી સિદ્ધ થશે.

જલ સાંઝી મંદિરની જલની સાંઝીનાં દર્શનનો અનોખો અને એક માત્ર અવસર પૂરા વિશ્વમાં આપને ઉદયપુરના *''જલ સાંઝી મંદિર'*'માં જ મળશે. ❀

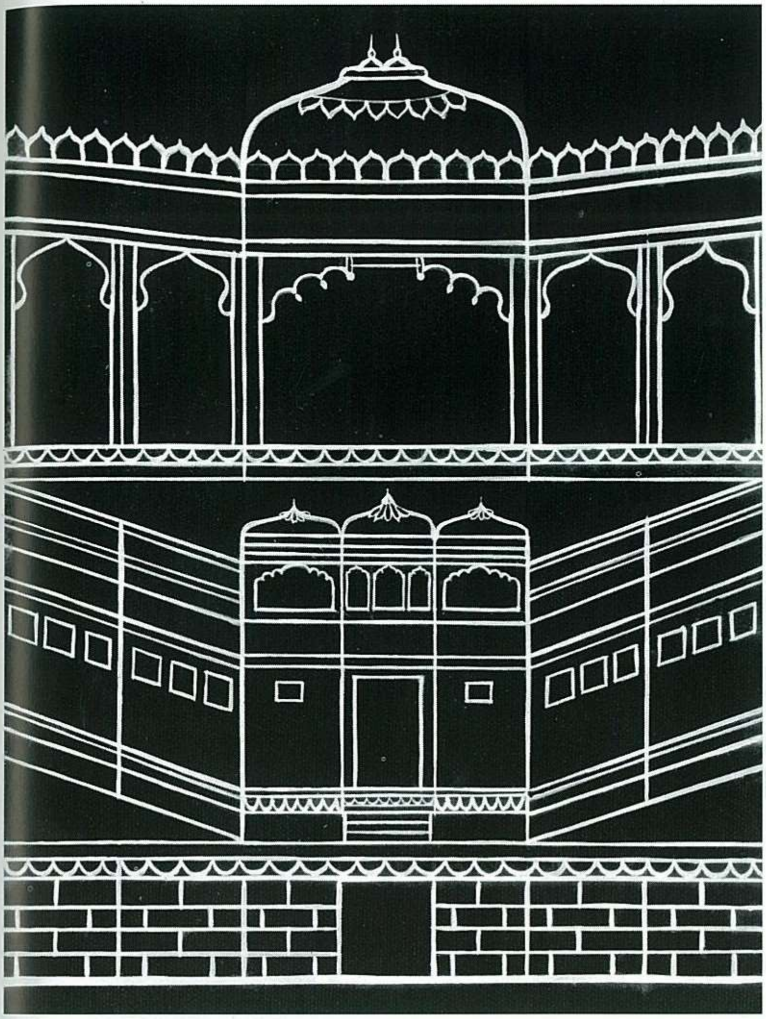

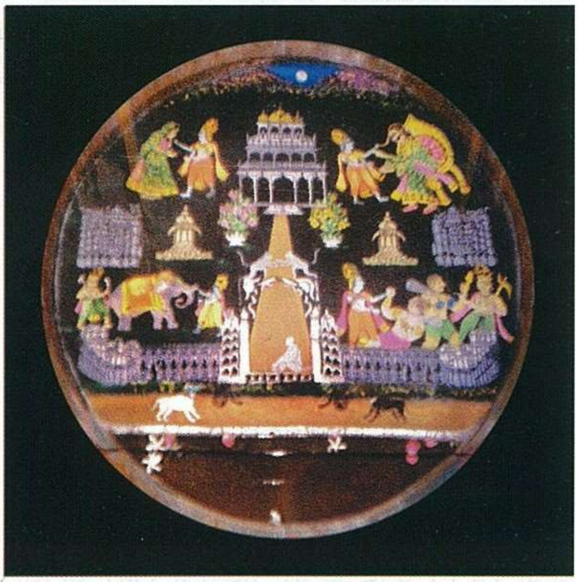

જલ સાંઝી - મહાભારતમાં

ભગવાન શ્રી કૃષ્ણ જીનકે અંગ મેં સે મથુરા દ્વારકા પ્રગટે હૈ, વહાં દ્વારકાકે મર્યાદા લીલા મેં ભી યુધિષ્ઠિર કે રાજસૂય યજ્ઞ મેં સાંઝીકી કલાકૃતિ પ્રગટ કરવાઇ। કયું કી દેશ-દેશાંતરો કે રાજા-મહારાજા વહાં પધારે થે, ઉન રાજાઓંકી રાજ્યભૂમિ જલમેં દિખાઈ। (જલ મેં પૃથ્વી) કુછ રાજાઓ કે રાજ-વૈભવ સ્થલમેં દિખાયે, યહાં જલકો સ્થલકા રૂપ દિયા ગયા। જો કુછ હોના થા વહ તો દ્વારિકાનાથજીને કર હી દિયા લેકિન કરને સે પહેલે કુછ છીપાયા નહીં। લેકિન નાસમઝ અસલિયત કો ગંભીરતા સે નહીં સમજે, ઉસે ખેલ હી સમઝા।

અસલિયત કયા દિખાઈ (૧) જલ મેં સ્થળ : જલ મેં રાજાઓં કે રાજ્ય ઔર રાજમહેલ દિખાયે જો અધર્મ કે પક્ષ-પોષક થે। ઉન રાજાઓં કો દિખાયા, આને વાલે થોડે દિનો મેં, યહ રાજ્ય કે સુખ રસાતલ મેં ચલે જાયેંગે, પાની મેં ડૂબ જાયેંગે।

(૨) સ્થલ મેં જલ : ઇન અધર્મ પોષક રાજાઓં કી રાજસત્તા ઔર સુખો કી નીવ (પાયો) જલ મેં હૈ। આગામી ભવિષ્યમેં જો મહાભારત કી પ્રલય આનેવાલી હૈ ઉસ પ્રલય કા મૂલ પ્રભાવ તુમ્હારે સુખોં પર પડેગા। યહ સબ શ્રી દ્વારકેશ પ્રભુને મર્યાદામેં સાંઝી કે સ્વરૂપ સે અપના મંતવ્ય પ્રગટ કરવા દિયા, ફિર ભી કોઈ ના સમજે તો કયા કરે?

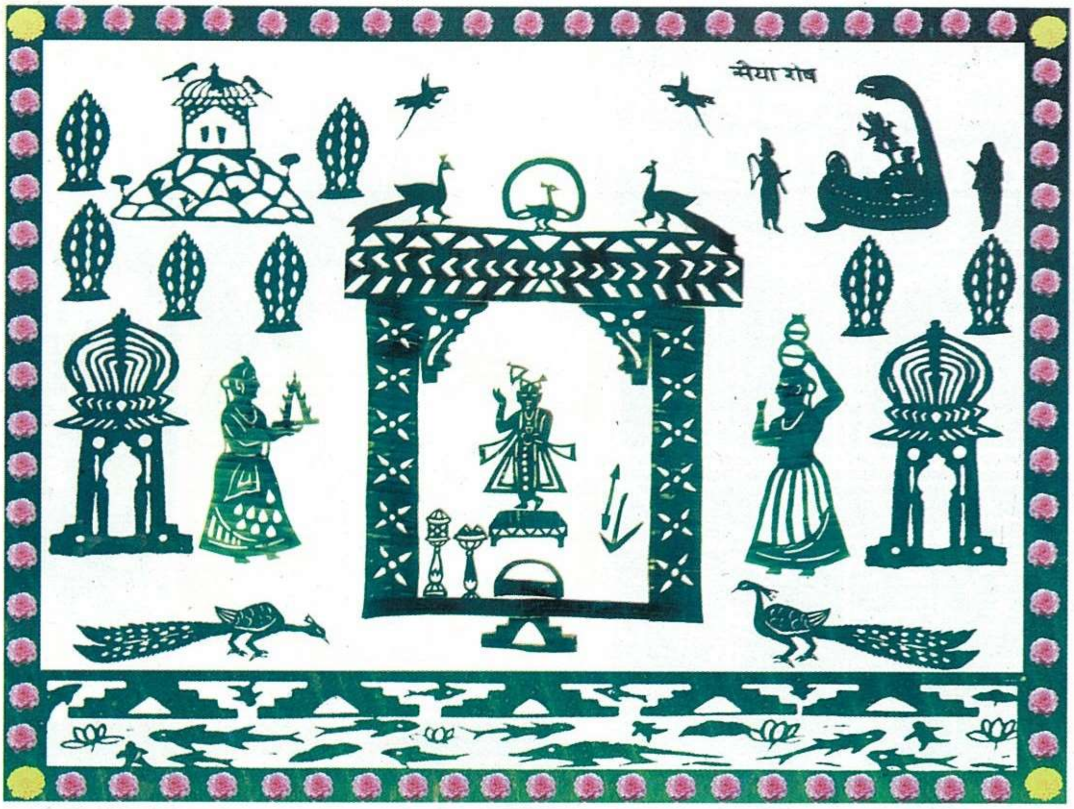

સૌજન્ય : કીર્તનિયા શ્રી કનૈયાલાલજી, નાથદ્વારા

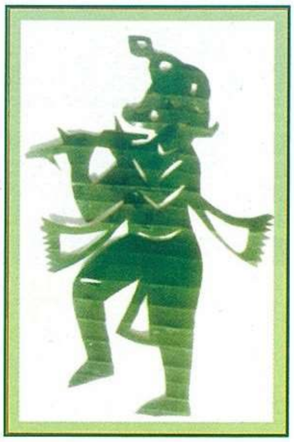

કેળનાં પાનની સાંઝી

કેળનાં પાનની સાંઝી

આ કેળનાં પાનની સાંઝીનો વિશિષ્ટ પ્રકાર છે. કેળનાં પાનનો વચ્ચેનો જાડો પીળો ભાગ કાતરથી કાપી લેવો. કેળના લીલા ભાગને ઉપર રાખી, પાછળનો ભાગ સામસામે રાખી, એકબીજા સાથે જોડીને વીંટા બનાવવા. જરૂરિયાત મુજબ ૫ થી ૧૦ પાનાંને આ મુજબ તૈયાર કરવાં. જેની ઉપર સાધારણ પાણીનો છંટકાવ કરી થોડો સમય તે વીંટાને રાખી મૂકવા. વીંટાને જરૂરત પ્રમાણે એક પછી એક ખોલીને જોઈતા વિવિધ આકારોને કાતરથી સાવધાનીપૂર્વક કાપવા. આ કોતરેલા વિવિધ આકારોને કેળનાં બે પાનાં વચ્ચે મૂકીને રાખવા. તમામ જોઈતા આકાર તૈયાર થઈ જાય ત્યાર પછી તેને સફેદ આરસની સપાટી ઉપર અથવા પાટ ઉપર સફેદ કપડાને પાથરીને પાણી છાંટીને ગોઠવતા જવું.

કેળનાં પાનની સાંઝી સજાવટ કરતા હોય ત્યારે હાથથી પાણીનો છંટકાવ ચાલુ રાખવો, જેથી કેળનાં પાન તેની જગ્યાએ ચોંટીને રહે. કેળનાં પાનનો લીલો ભાગ ઉપર રહે તેનું ધ્યાન રાખવું. કેળનાં પાનની સાંઝીની કિનારી (બોર્ડર) ઉપર વિવિધ પ્રકારનાં રંગબેરંગી ફૂલોની પાંદડીઓ પણ લગાવવી, જેથી તેની સુંદરતા અનેક ગણી વધી જાય છે.

ભાવના : આ સાંઝી શ્રી ચંદ્રવલીજીની ભાવનાથી રચાય છે. નાથદ્વારામાં શ્રાદ્ધ પક્ષમાં શયનનાં દર્શન પછી કમળ ચોકમાંથી બે સફેદ હાથી વચ્ચેથી જવાના દ્વાર પાસે (હથિયા પોલકી દેહલીપે) આ સાંઝી સજાવાય છે. જ્યાં ચોર્યાસી કોસની વ્રજયાત્રાની વિવિધ લીલાની, કલાત્મક રીતે કેળનાં પાનની સાંઝી દ્વારા, રચના થાય છે. કેળનાં પાનની સાંઝીમાં થતો જળનો (પાણીનો) ઉપયોગ શ્રી યમુનાજીની હાજરીના પરોક્ષ રીતે સંબંધની ભાવના છે. જળ (રસ)ના સંબંધમાં (શ્રી યમુનાજીના સંબંધવાળાં) ભીનાં થયેલ કેળનાં પાનને મનભાવન સ્વરૂપમાં ઢાળીને પ્રભુ સંબંધી લીલા ગોપીજનો કરે છે.

નોંધ :

હાલ શ્રી નાથજી(નાથદ્વારા)ના મંદિરમાં કેળની સાંઝીની સેવા શ્રી નવનીતપ્રિયાજીના કીર્તનિયા શ્રી કનૈયાલાલજી, તેમના પુત્ર શ્રી હેમંતજી અને તેમનો ભાણિયો શ્રી ઉમેશ પખાવજી દ્વારા સિદ્ધ થાય છે.

સૌજન્ય : કીર્તનિયાજી શ્રી કનૈયાલાલ, નાથદ્વારા

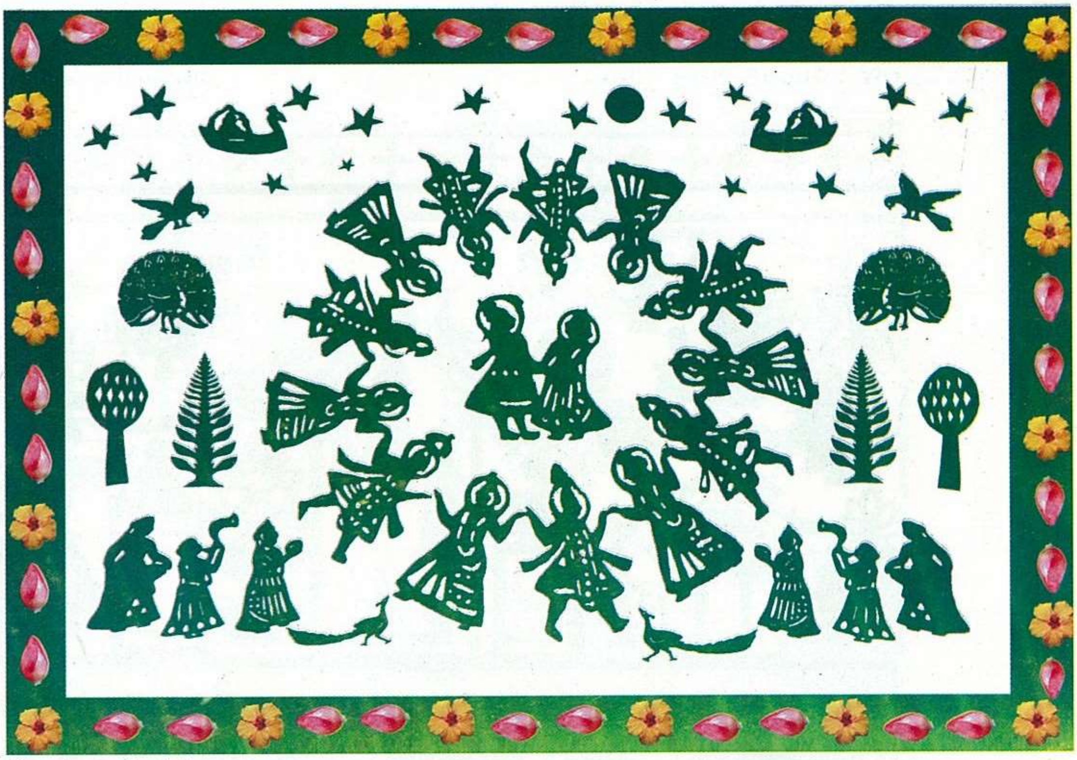

કેળનાં પાનની સાંઝી

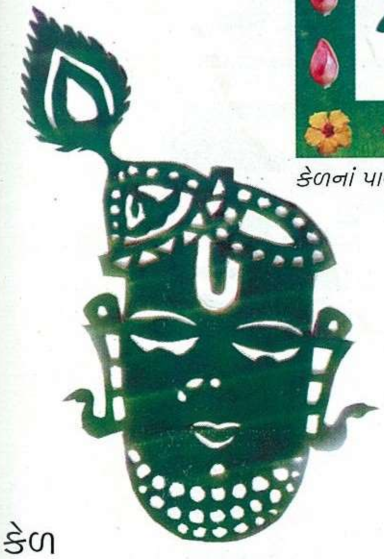

કેળ

કેળનાં વૃક્ષને રંભાનું વૃક્ષ કહે છે અને શાસ્ત્રમાં રંભાને લક્ષ્મી કહે છે. જે ક્ષીરસાગરમાં સેવા કરે છે, તે લક્ષ્મીનો અધિકાર પ્રભુનાં ચરણારવિંદ સુધી છે. તે પણ ત્યાં સુધી કે, જ્યાં સુધી શ્રી ઠાકોરજી પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ નથી. જ્યારે શ્રી ઠાકોરજી પુષ્ટિમાં બિરાજે છે, ત્યારે રમા વૈકુંઠની લક્ષ્મી કદલી ખંભ અથવા રંભા વૃક્ષ (કેળનું વૃક્ષ) બનીને ઉત્સવના દિવસે દરવાજા સુધી જ (હૃદય કલશ સહિત) આવે છે. જ્યારે શ્રી ઠાકોરજી પુષ્ટિમાં બિરાજે છે ત્યારે વ્યાપી વૈકુંઠની લક્ષ્મી પ્રભુનાં મનરંજન માટે દરવાજા ઉપર સાંઝીની રચનાના રસ્તાથી પોતાના જીવનનું સુખ સોંપવા માટે નંદરાયજીના દરવાજા ઉપર આવે છે અને વ્રજગોપીઓ તેનું અતિ સુંદર રૂપ બનાવીને પોતાના કરકમળથી શ્રી ઠાકોરજી સુધી પહોંચાડે છે.

એકાક્ષરી કોશના હિસાબે 'કે' શબ્દનો અર્થ જલ થાય છે, 'લા'નો અર્થ લાસ્ય = આનંદ થાય છે. જે વ્રજગોપીઓથી ભાવ રૂપી જળમાં આનંદ કરે છે, તે કેળ કહેવાય છે.

એકાક્ષરી કોશ પ્રાચીન કાળથી પ્રસિદ્ધ છે. શ્રી મહાપ્રભુજી તથા શ્રી ગુસાંઇજીએ શ્રી સુબોધીનીજીના અને શ્રીમદ્ ભાગવતના મૂળ શ્લોકના અર્થમાં એકાક્ષરી કોશનો ઉપયોગ કર્યો છે. શ્રી મહાપ્રભુજીએ શ્રીમદ્ ભાગવતના સાત અર્થ કર્યાં છે : (૧) શાસ્ત્રાર્થ (૨) સ્કંધાર્થ (૩) અધ્યાયાર્થ (૪) પ્રકરણાર્થ (૫) શ્લોકાર્થ (૬) વાક્યાર્થ (૭) શબ્દાર્થ. વ્યાકરણશાસ્ત્રના નિયમથી શબ્દનો અર્થ કરવા વ્યુત્પત્તિ અને ઉપસર્ગનો પ્રયોગ થાય છે. આ બન્ને પદ્ધતિ પ્રમાણે અર્થ કરવામાં એકાક્ષરી કોશની પ્રધાનતા (જરૂરત) હોય છે. भा शब्दो कीर्तिवचनो ग शब्दो ज्ञानवाचक सर्वेंष्ट वचनो वश्च तो विस्तारस्य वाचकः ।। (कौवस्तुभी संहिता) (५/५३/५५)

ભક્તિનો રંગ હરો (લીલો) હોય છે. નંદાલયની ભક્તિમાં પ્રથમ વાર આવવાથી મન મોટું હોય છે એટલા માટે તેનાં પાંદડાંનો ઘાટ મોટો હોય છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં પ્રથમ વાર આવવાથી એક એક વિચાર અલગ અલગ સંભાળીને રાખવામાં આવે છે. એટલા માટે કેળના થાંભલામાં (સ્તંભમાં) એક પછી એક વિચારોની રચના છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં પ્રથમ વાર આવવાથી ભગવદ્ભક્ત યત્કિંચિત્ કૃપાને બહુ જ કૃપા માને છે. એટલા માટે કેળના સ્તંભમાં એક જ વખતમાં બહુ ફળ આવે છે.

પુષ્ટિ માર્ગમાં સેવાને માટે બીજ ભાવ દૃઢ કરવાની જરૂરત પડે છે, પરંતુ સત્સંગના રસ્તા પરથી, પ્રભુ સન્મુખ થવા માટે કોઈ બીજ ભાવની જરૂરત નથી. એટલા માટે કેળનાં ફળમાં (કેળામાં) કોઈ પણ પ્રકારનાં બીજ હોતાં નથી.

કેળનાં ફળમાં એલચીનો પ્રયોગ કરવાથી ગલિત દશા તુરંત પ્રાપ્ત થાય છે. કેળા રંભા ફળ છે. એલચી શ્રી યમુનાજીનો ભાવ છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં ગલિત દશા (રસમય થવું) શ્રી યમુનાજી વગર નથી થતી. એટલા માટે કેળાના પ્રયોગમાં એલચી વાપરવાનું જરૂરી બતાવ્યું છે. ✿

શ્રીનાથજી માં કેળની સાંજીનો ક્રમ

વ્રજ : ભાદ્રપદ શુક્લ પૂર્ણિમા

ગુજરાતી : ભાદરવા સુદ પૂનમ

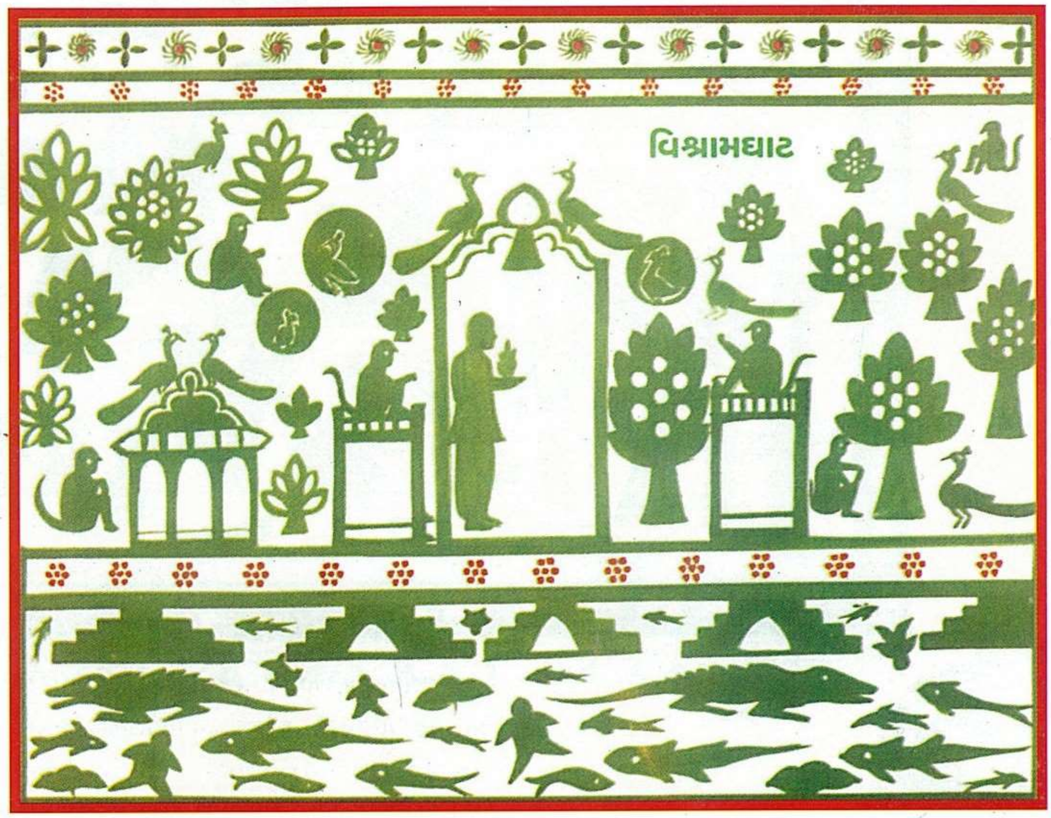

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ એકમ

ગુજરાતી : ભાદરવા વદ એકમ

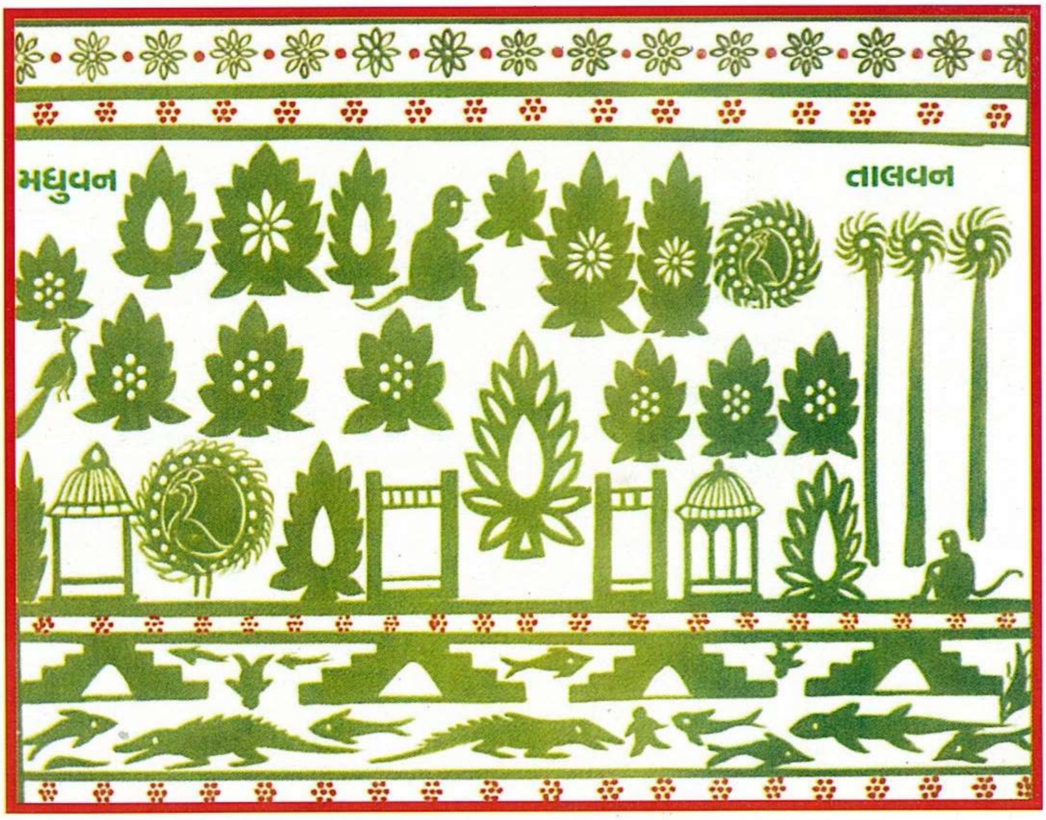

કેળનાં પાનની સાંઝી

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ દ્વિતીયા ગુજરાતી : ભાદરવા વદ બીજ

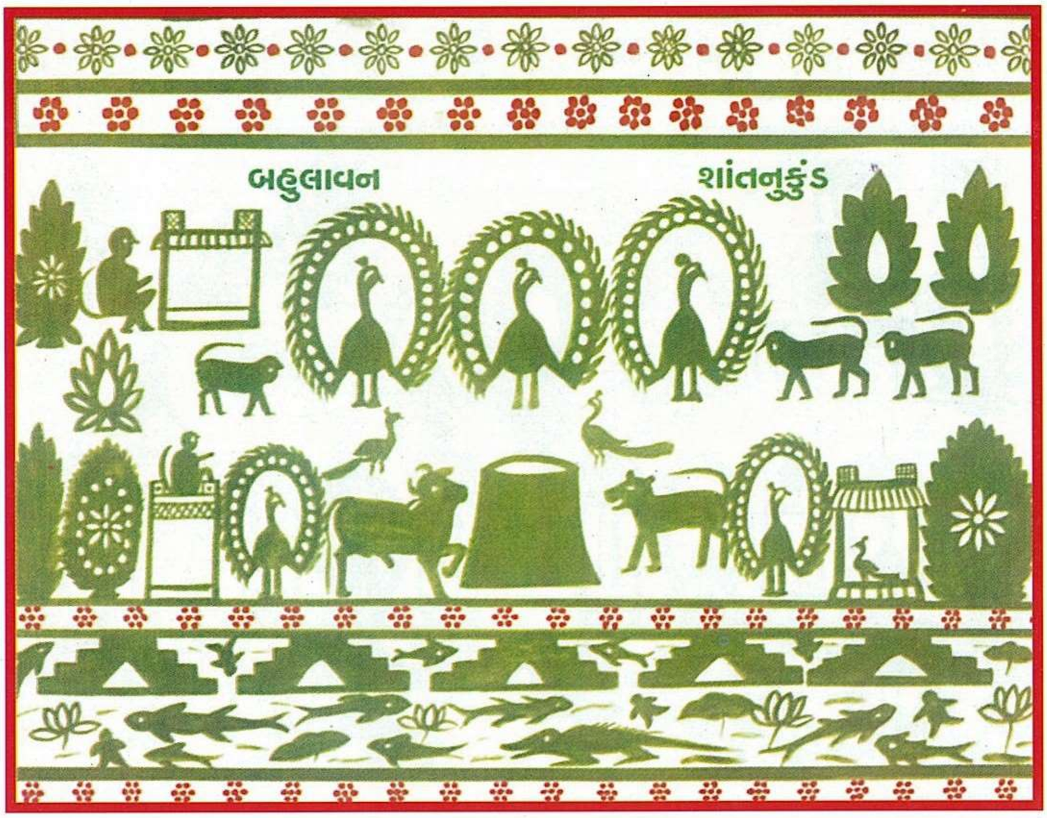
બહુલાવન
શાંતનુકુંડ

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ તૃતીયા ગુજરાતી : ભાદરવા વદ ત્રીજ

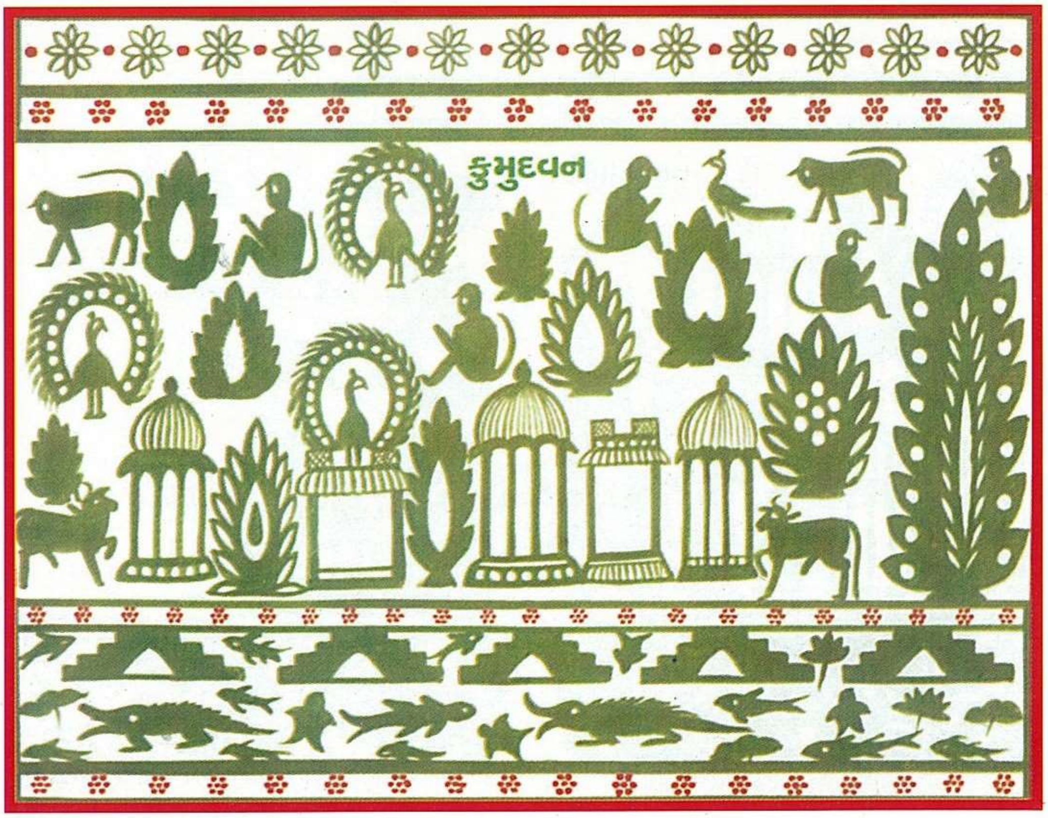

કેળના પાનની સાંઝી

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ ચતુર્થી
ગુજરાતી : ભાદરવા વદ ચોથ

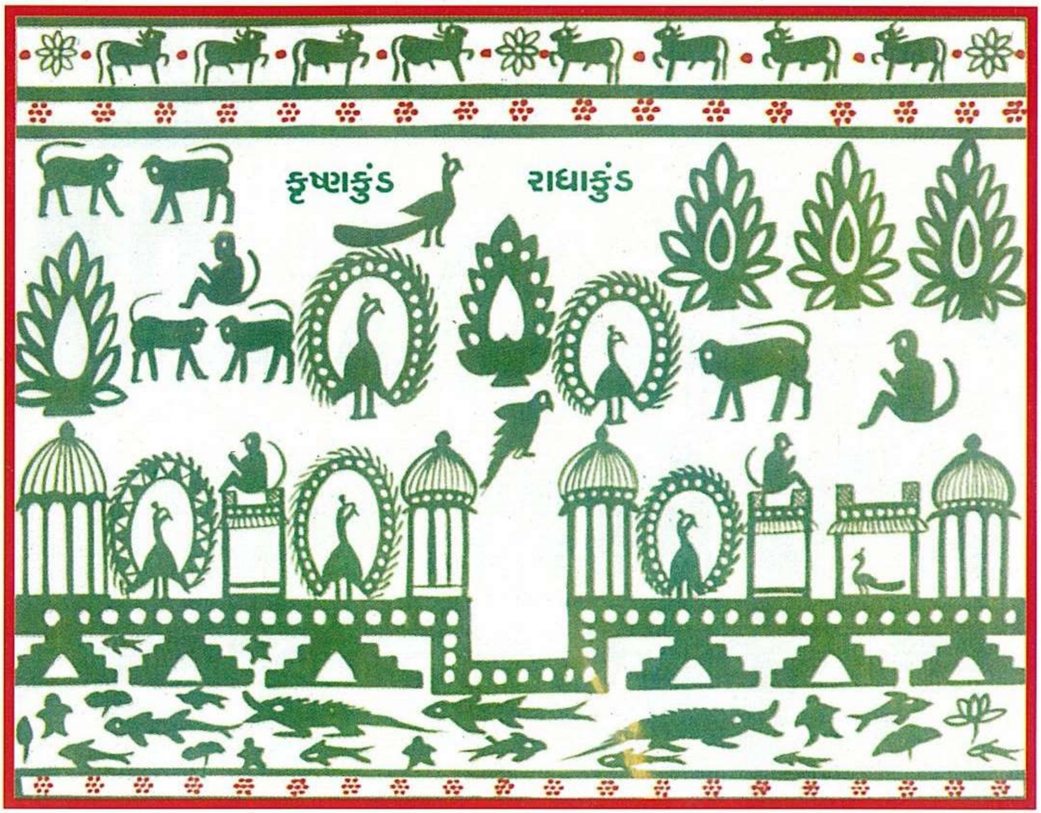

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ પંચમી
ગુજરાતી : ભાદરવા વદ પાંચમ

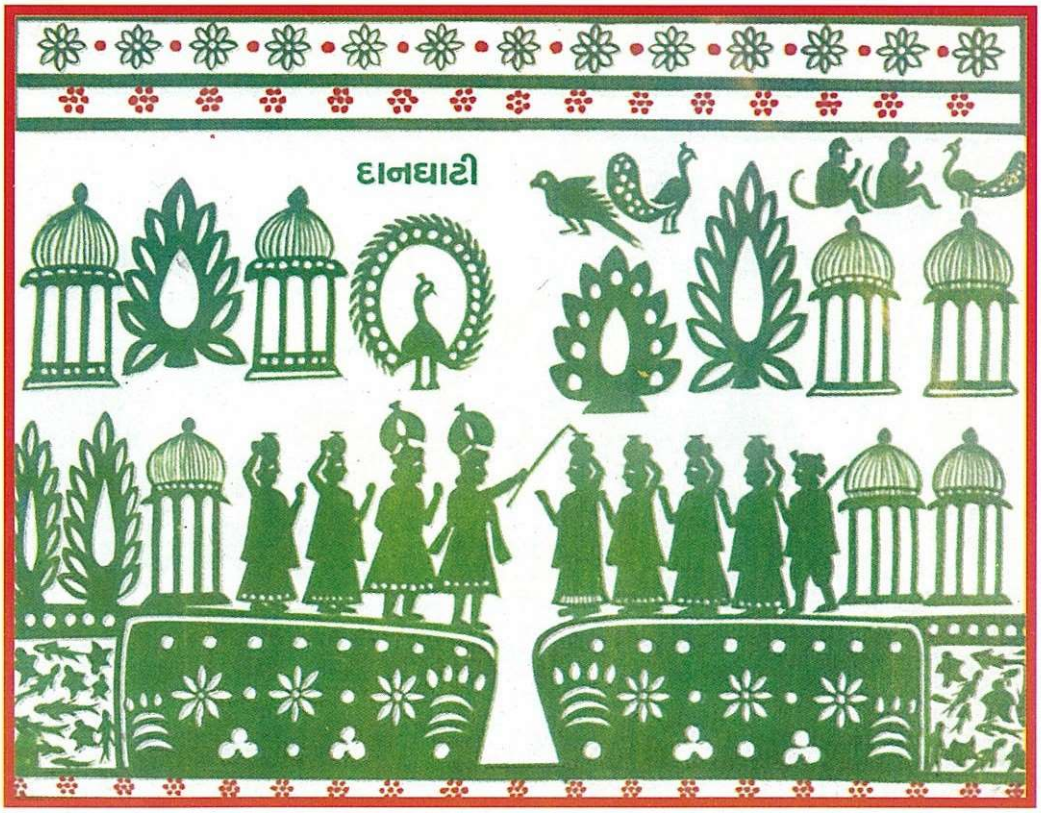

કેળનાં પાનની સાંઝી

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ ષષ્ઠી　　　　ગુજરાતી : ભાદરવા વદ છઠ

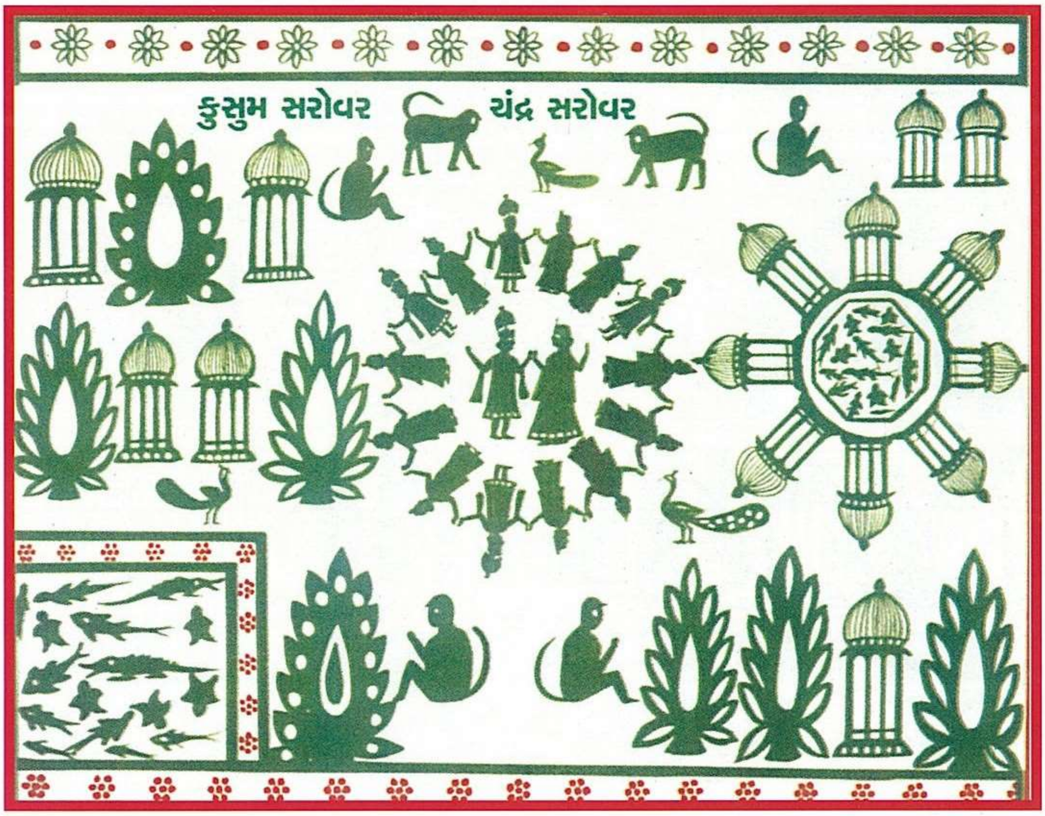
કુસુમ સરોવર
ચંદ્ર સરોવર

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ સપ્તમી　　　　ગુજરાતી : ભાદરવા વદ સાતમ

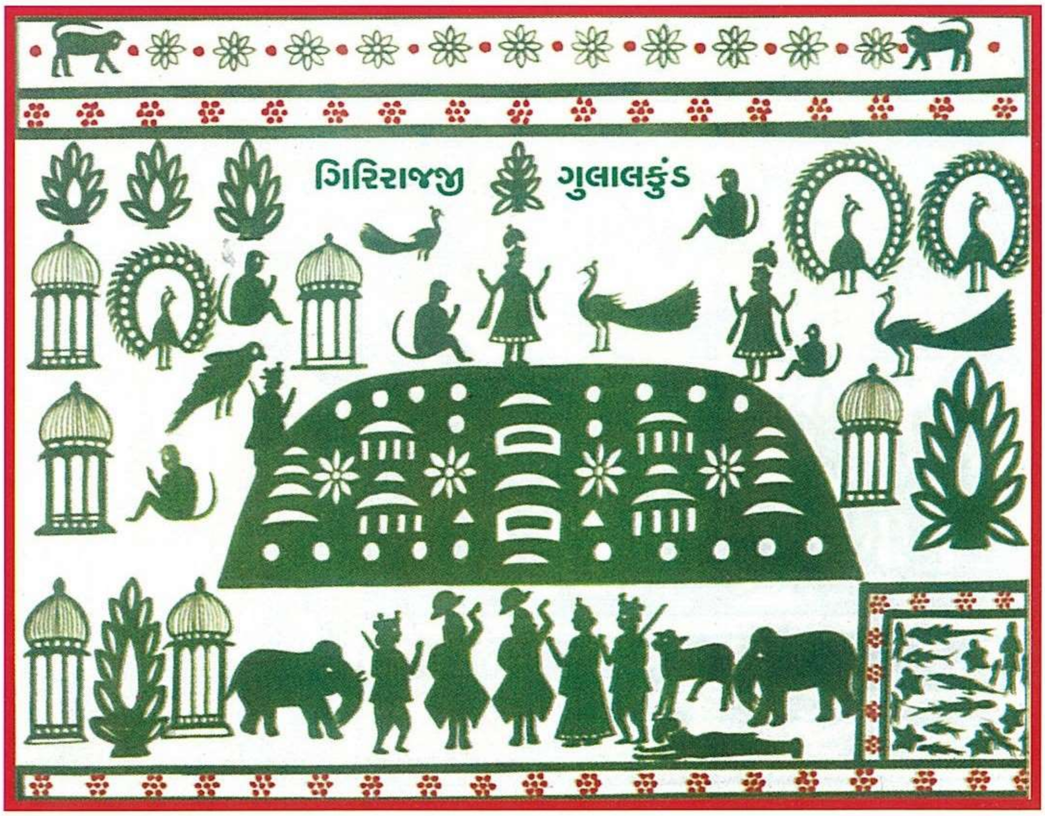
ગિરિરાજજી
ગુલાલકુંડ

કેળનાં પાનની સાંઝી

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ અષ્ટમી ગુજરાતી : ભાદરવા વદ આઠમ

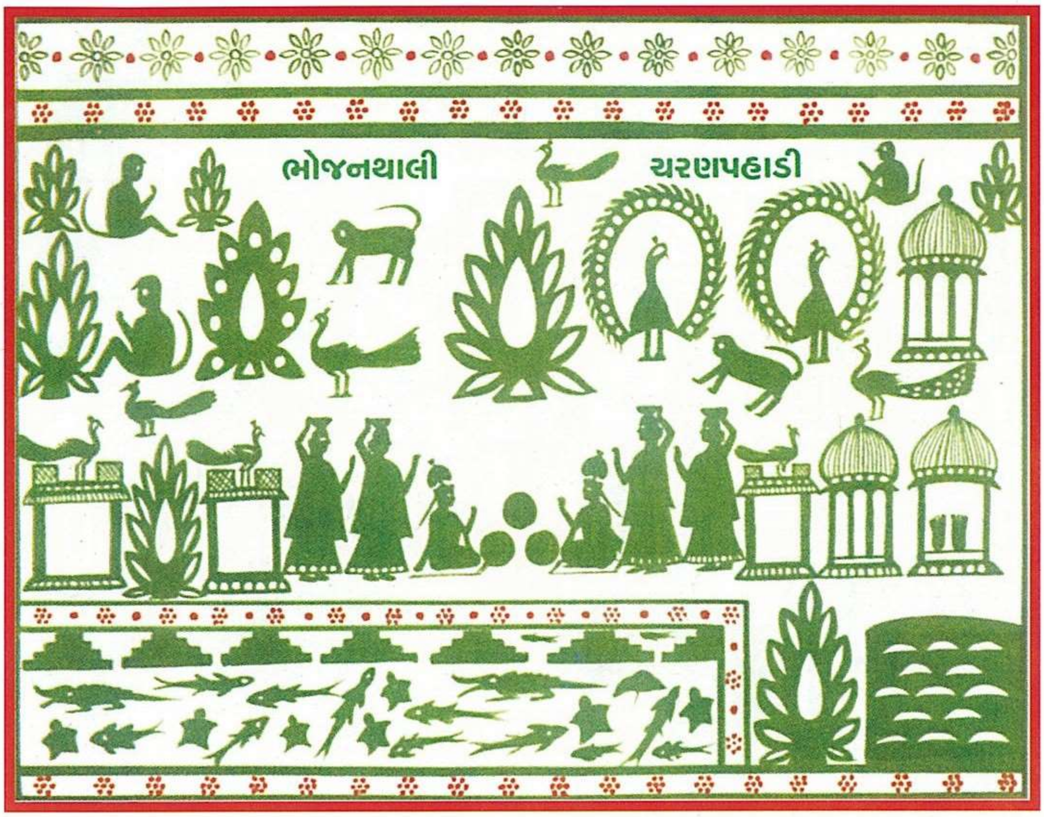
ભોજનથાલી
ચરણપહાડી

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ નવમી ગુજરાતી : ભાદરવા વદ નોમ

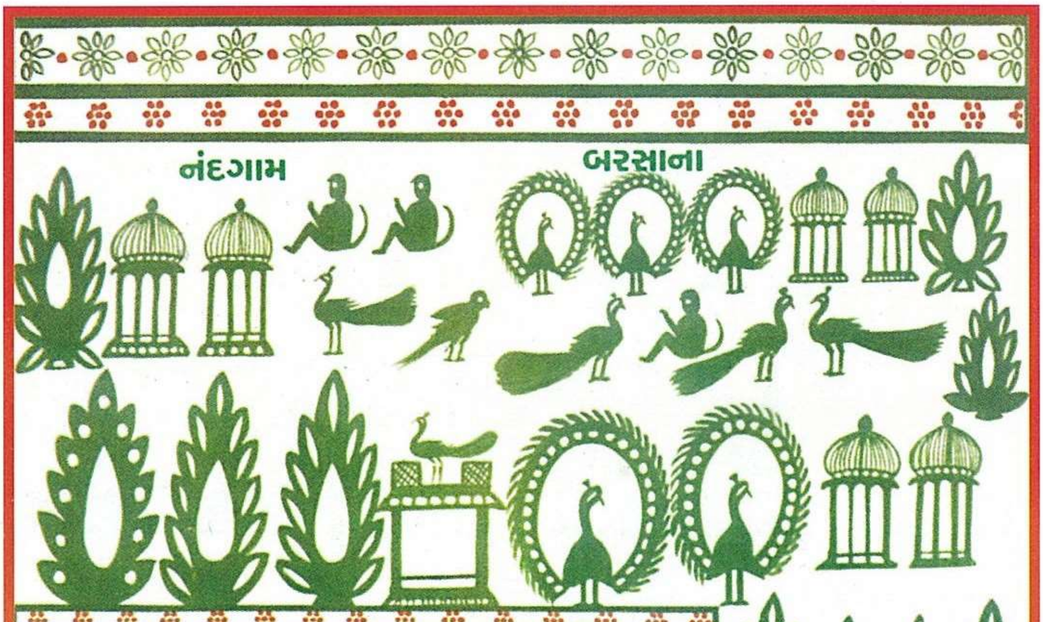

કેળનાં પાનની સાંઝી

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ દશમી ગુજરાતી : ભાદરવા વદ દસમ

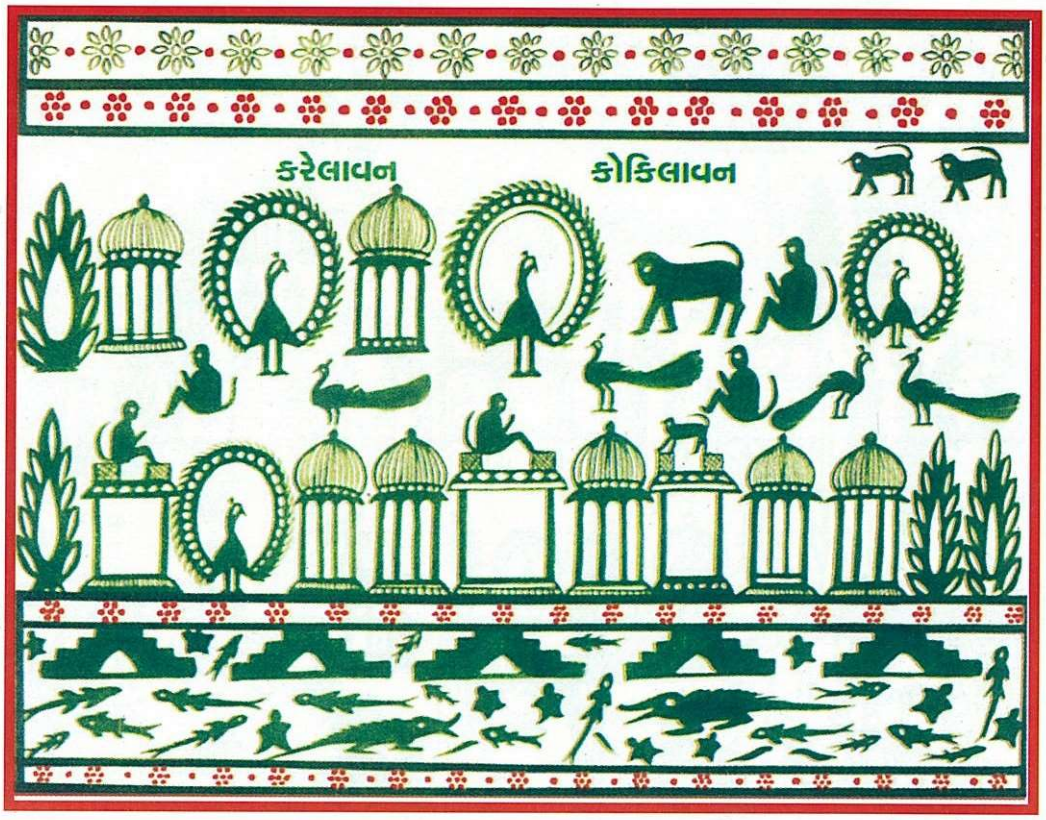
કરેલાવન
કોકિલાવન

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ દ્વાદશી ગુજરાતી : ભાદરવા વદ બારસ

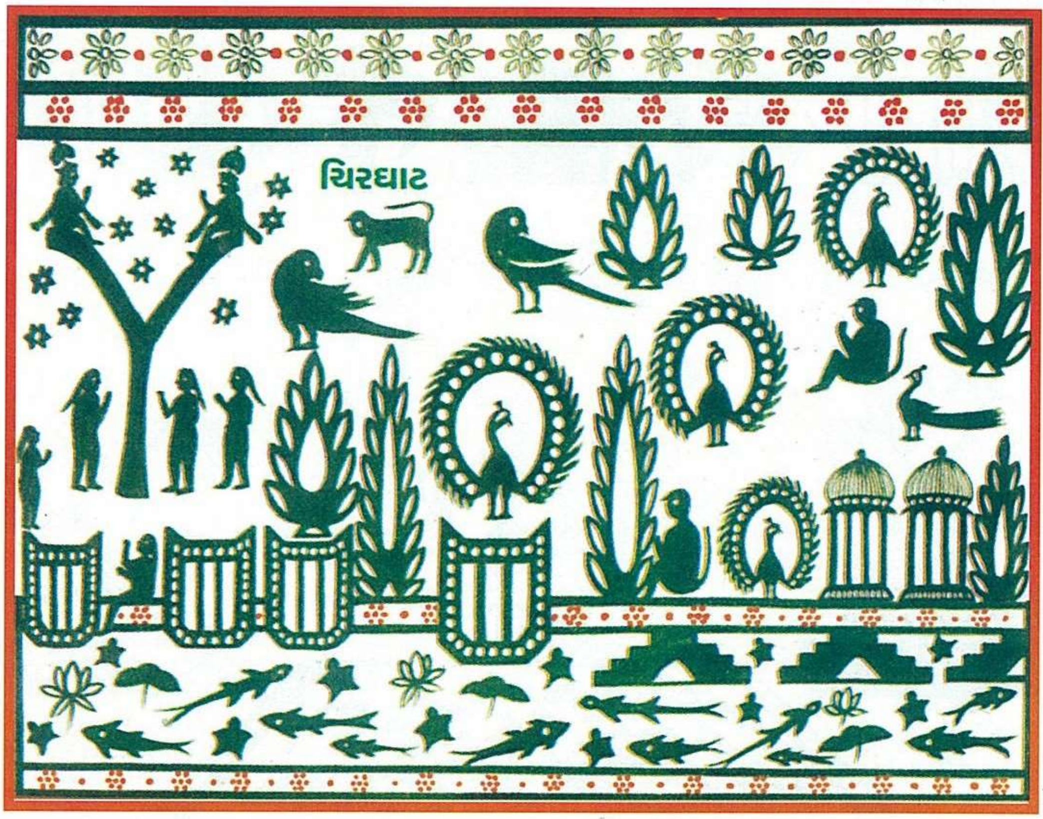

કેળનાં પાનની સાંઝી

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ એકાદશી

ગુજરાતી : ભાદરવા વદ અગિયારસ

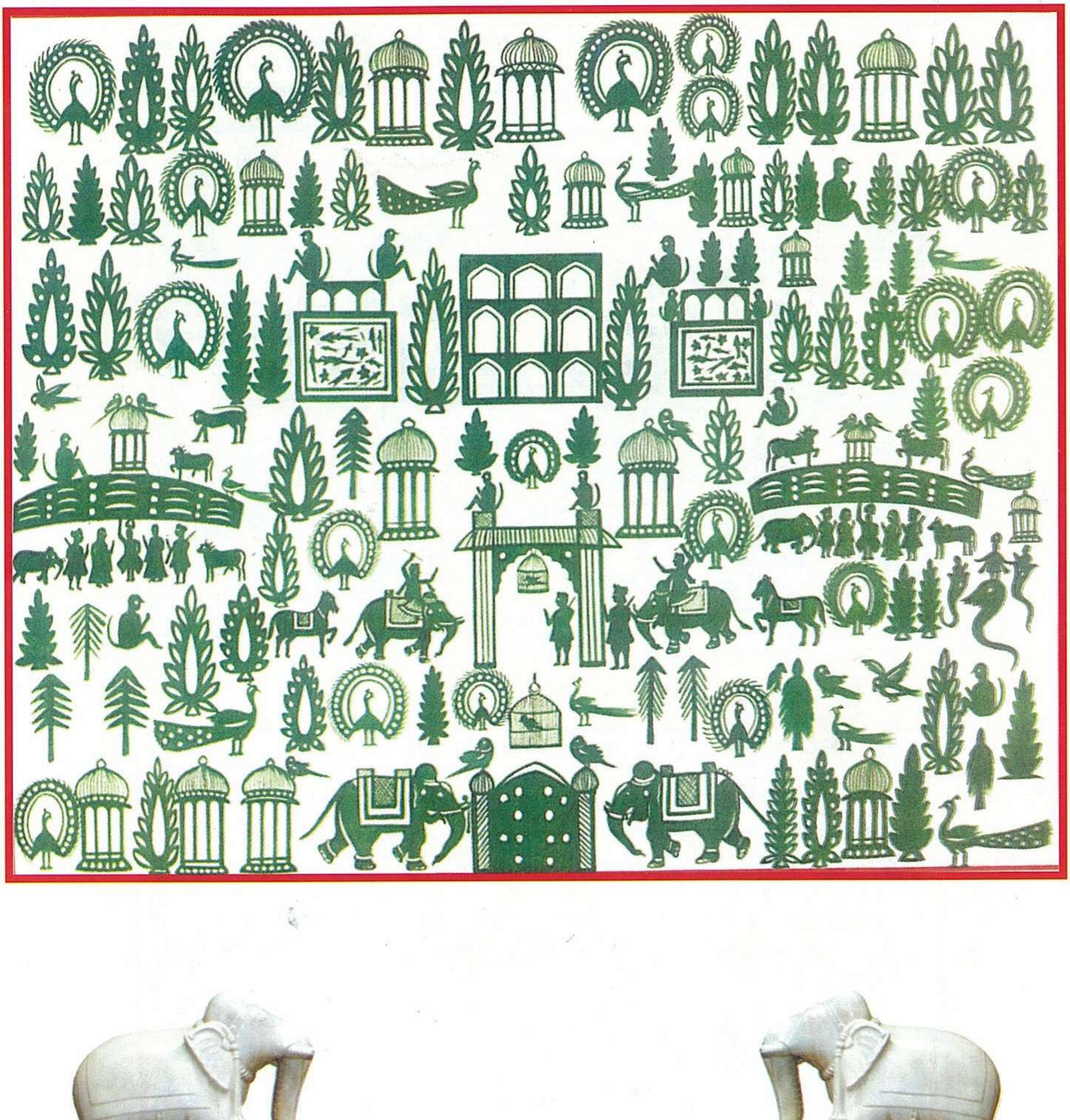

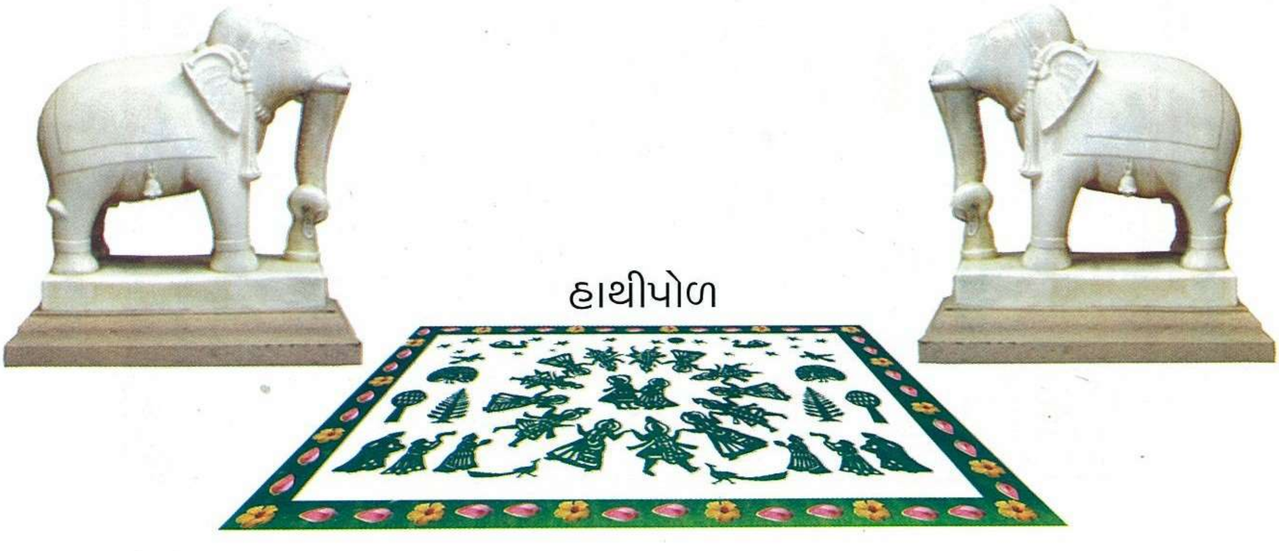

હાથીપોળ

વ્રજ : અશ્વિન કૃષ્ણ ત્રયોદશી

ગુજરાતી : ભાદરવા વદ તેરસ

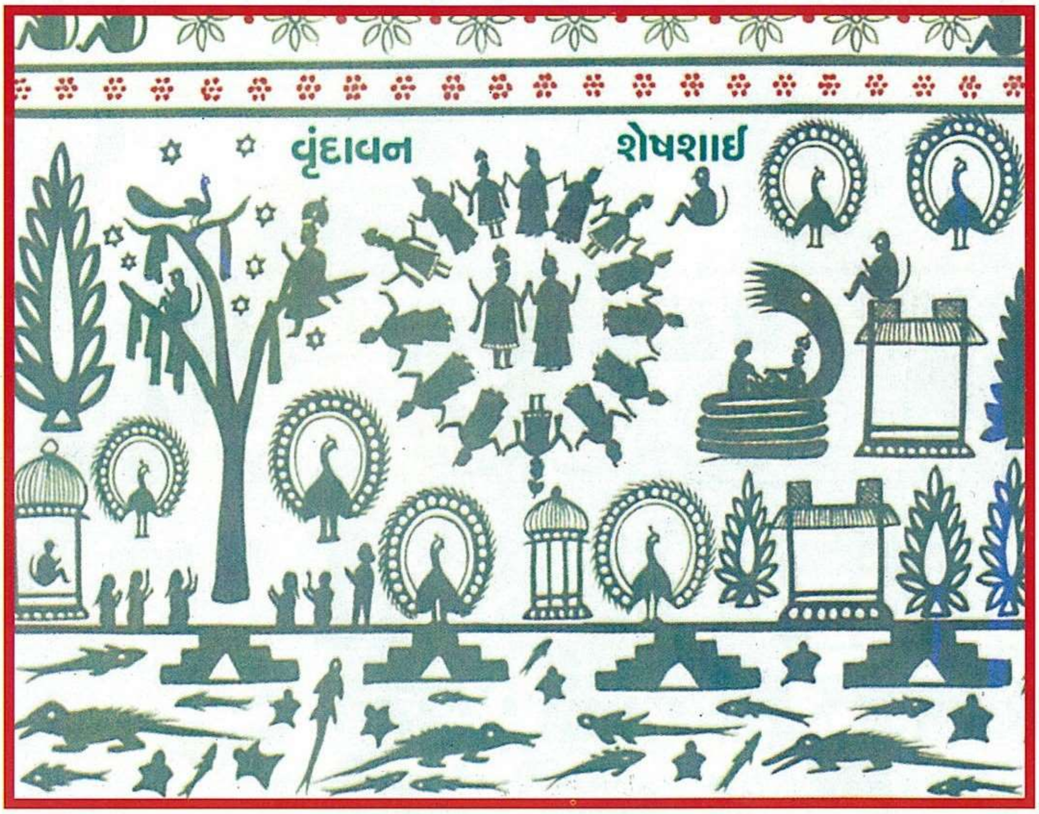

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ ચતુર્દશી

ગુજરાતી : ભાદરવા વદ ચૌદસ

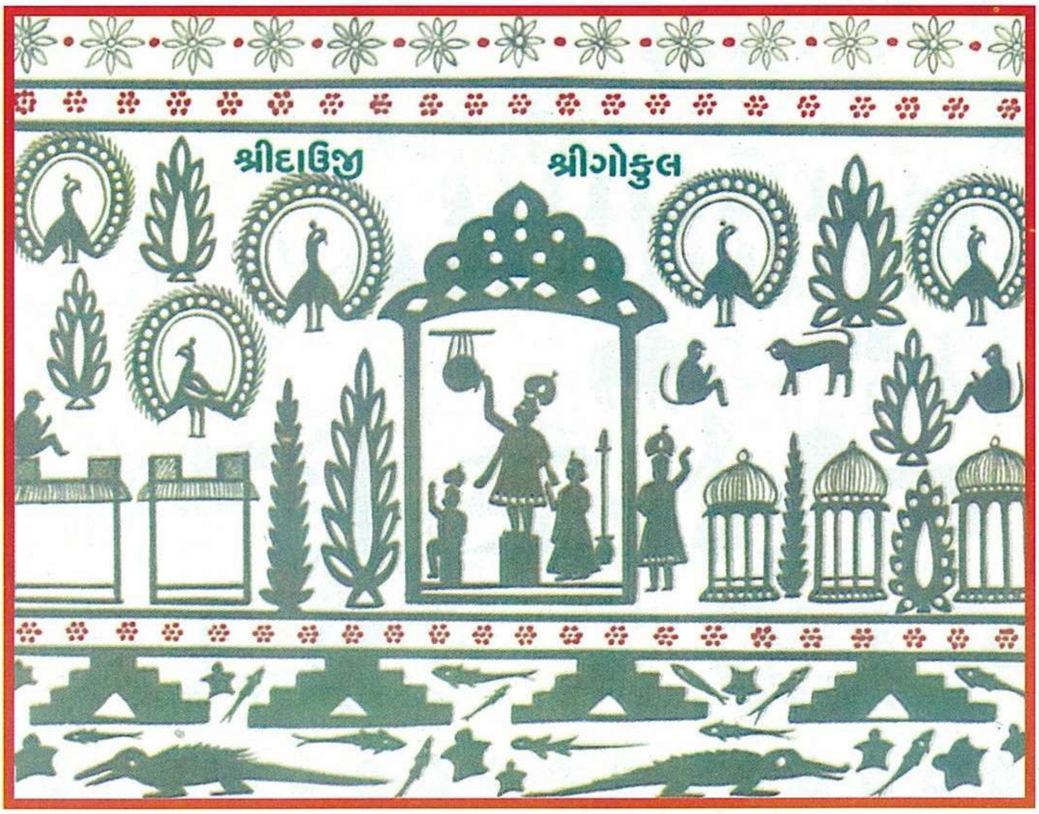
શ્રીદાઊજી
શ્રીગોકુલ

વ્રજ : આશ્વિન કૃષ્ણ અમાવાસ્યા　　ગુજરાતી : ભાદરવા વદ અમાસ

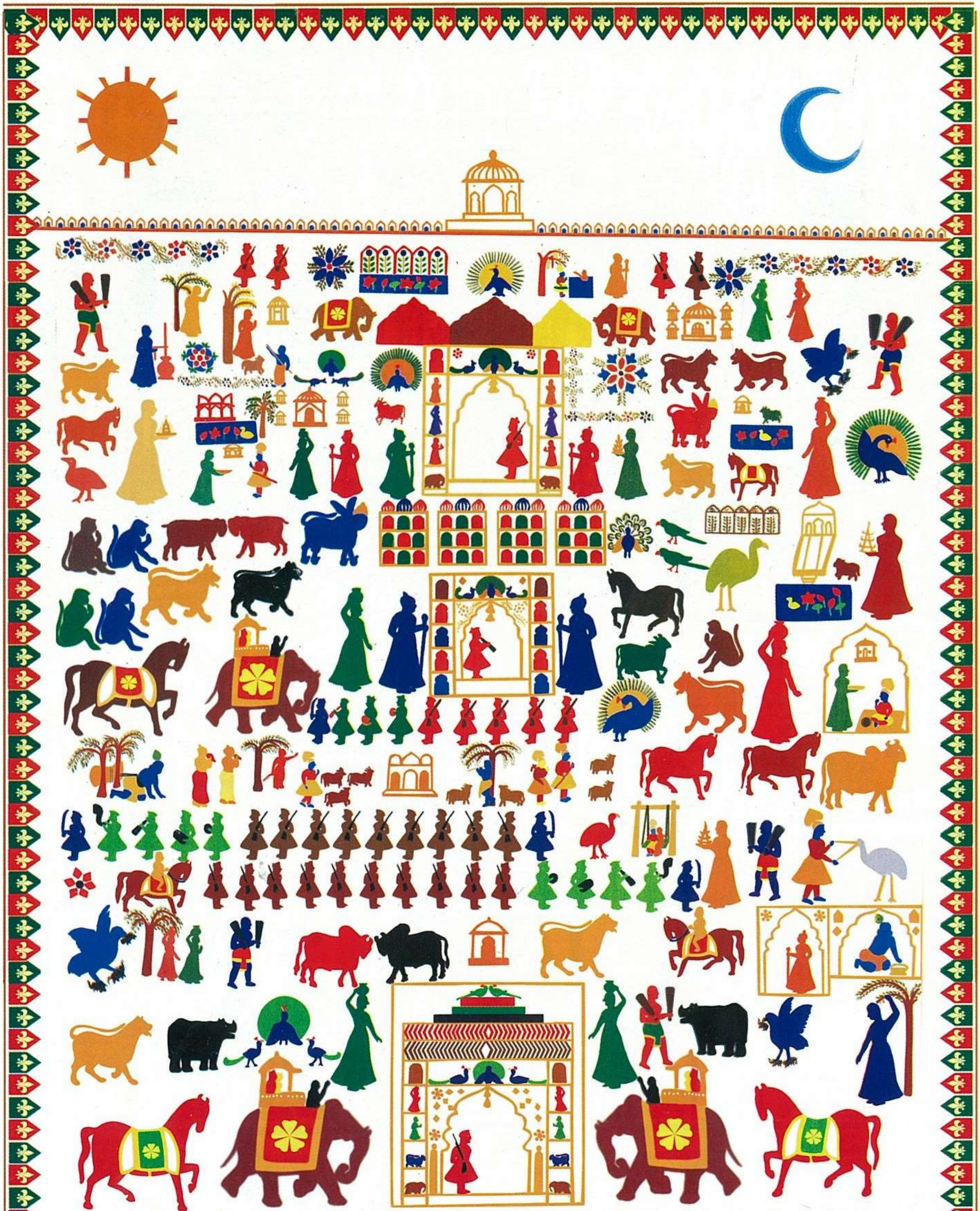

સૌજન્ય : શ્રીહરસાનીજી પબ્લિક ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ, મહેસાણા (વૈષ્ણવ પરિવાર)

કોટની સાંઝી

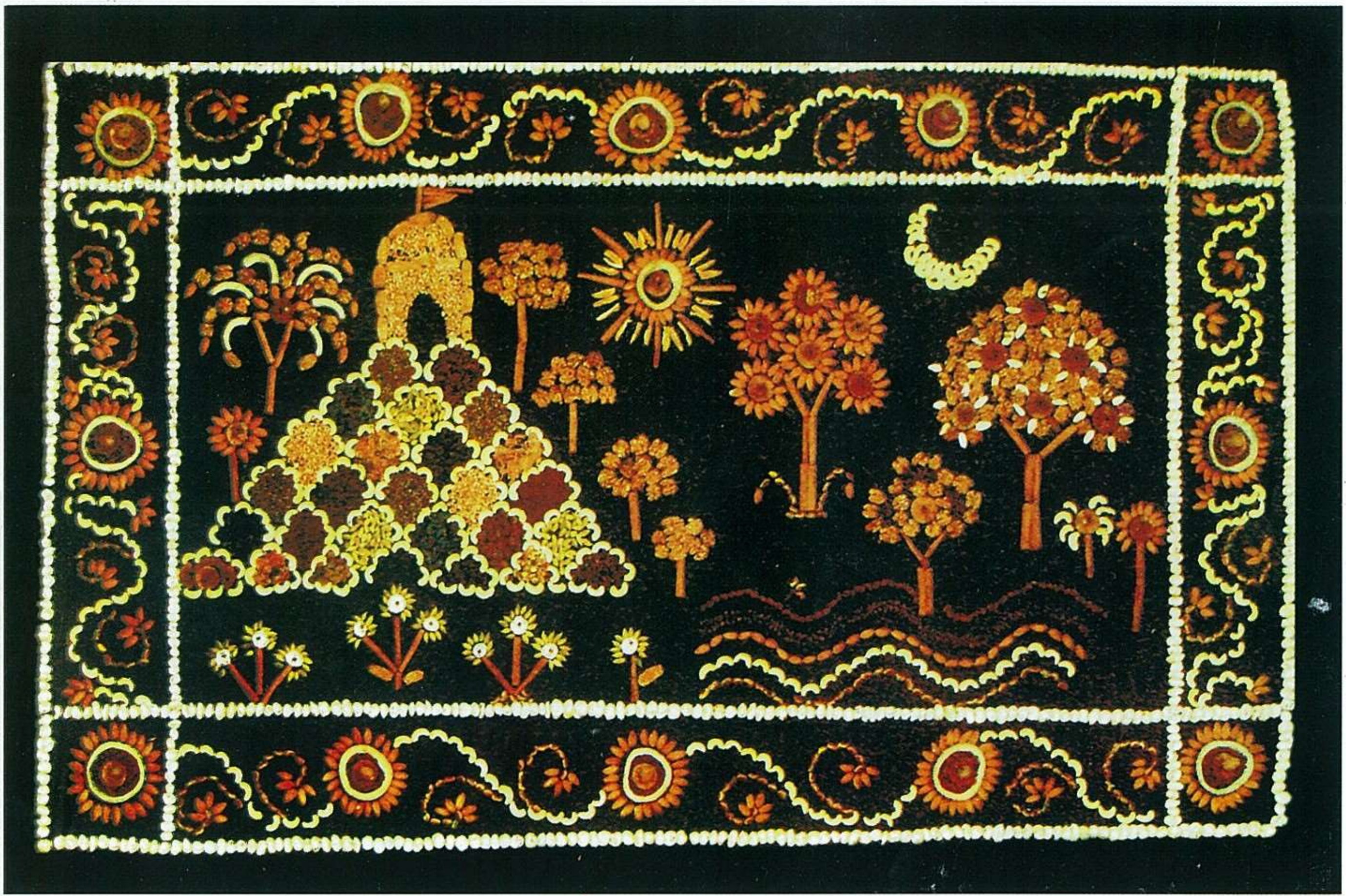

સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ.

ફળોની સાંઝી

શ્રી ઠાકોરજી સ્વયં ફળ છે. ફળ (લીલો મેવો / સૂકો મેવો) વ્રજગોપીઓના ભાવ સ્વરૂપ છે.

(૧) લીલો મેવો (લીલાં ફળ) સરસ છે - રસમય છે.
(૨) સૂકો મેવો (સૂકાં ફળ) નિરસ છે. રસ વગરનાં છે.
શ્રીમદ્ ભાગવતના કોઈ પ્રસંગમાં કહ્યું છે કે
''यस्मींद विरुद्ध गतयो य नीशं पतनंती।''

જેમાં બે વિરોધી સિદ્ધાંત સદા રહે છે, તે મર્યાદા અને પુષ્ટિ પ્રભુનું સ્વરૂપ છે. એટલા માટે (અતઃ) વિરુદ્ધ વિચાર, આ બન્નેને માટે મળે છે. (રામ/કૃષ્ણ)

લીલા મેવાની સાંઝી :

શ્રી ઠાકોરજીની સન્મુખ ચોકમાં અથવા પાટ ઉપર ફળોની સાંઝીની રચના કરવામાં આવે છે. લીલા મેવાની સાંઝીમાં બધા જ પ્રકારના લીલા મેવાનો ઉપયોગ થાય છે. કેરી, દાડમ, મોસંબી, સંતરાં, ચીકુ, કેળાં, જામફળ, પપૈયું, જાંબુ વગેરે ફળોથી સાંઝી રચાય છે. આ સાંઝીની રચના પ્રભુપ્રેરિત હોય છે. કોઈ પણ બે કે તેથી વધુ ફળોની, તેના રંગ અને આકારની મેળવણીથી કરેલી, સાંઝીની સજાવટ પ્રભુને અનેરું સુખ આપે છે.

સૂકા મેવાની સાંઝી :

પ્રભુ સન્મુખ લીલા મેવાની જેમ સૂકા મેવાની સાંઝી પણ સિદ્ધ કરવામાં આવે છે. કાજુ, અંજીર, સૂકા કોપરા, મખાણા, આલુ, બદામ, પીસ્તા, અખરોટ, કાળી-લાલ સૂકી દ્રાક્ષ, ખારેક અને સીંગદાણાથી સાંઝીની રચના થાય છે. સૂકા મેવાના રંગ અને આકારના સંયોજનથી સાંઝીનું સુશોભન થાય છે. આ સૂકા મેવાની સાંઝી પ્રભુને ઘણું જ સુખ આપે છે અને પ્રભુના સુખને જોઈને ભક્તજનો અતિ પ્રસન્ન થાય છે.

લીલો મેવો ભાવના :

કેળાં : ભક્તિમાર્ગીય ફળ છે.

જેવી રીતે દુનિયામાં જન્મ લેવાવાળો જીવ ભક્તોના સંગથી ભક્ત બને છે, તેમાં કોઈ બીજ રોપવું પડતું નથી,. તેવી રીતે કેળાંથી કેળાંનું ફળ તૈયાર થાય છે.

કેરી (આમ) : શ્રી ભાગવત ધર્મનું સ્વરૂપ છે.

શ્રી ભાગવત ધર્મમાં ત્રણ વસ્તુઓ છે : જ્ઞાન, કર્મ અને ભક્તિ, જ્ઞાન કઠોર છે, છતાં પણ કાંઈક કામ આવે છે. આમ (કેરી)ની ગોટલી કઠોર હોય છે, છતાં પણ ક્યારેક કામ આવે છે. આમનો રસવાળો ભાગ (વચ્ચેનો) સરસ અને સ્નિગ્ધ હોય છે. પુષ્ટિ

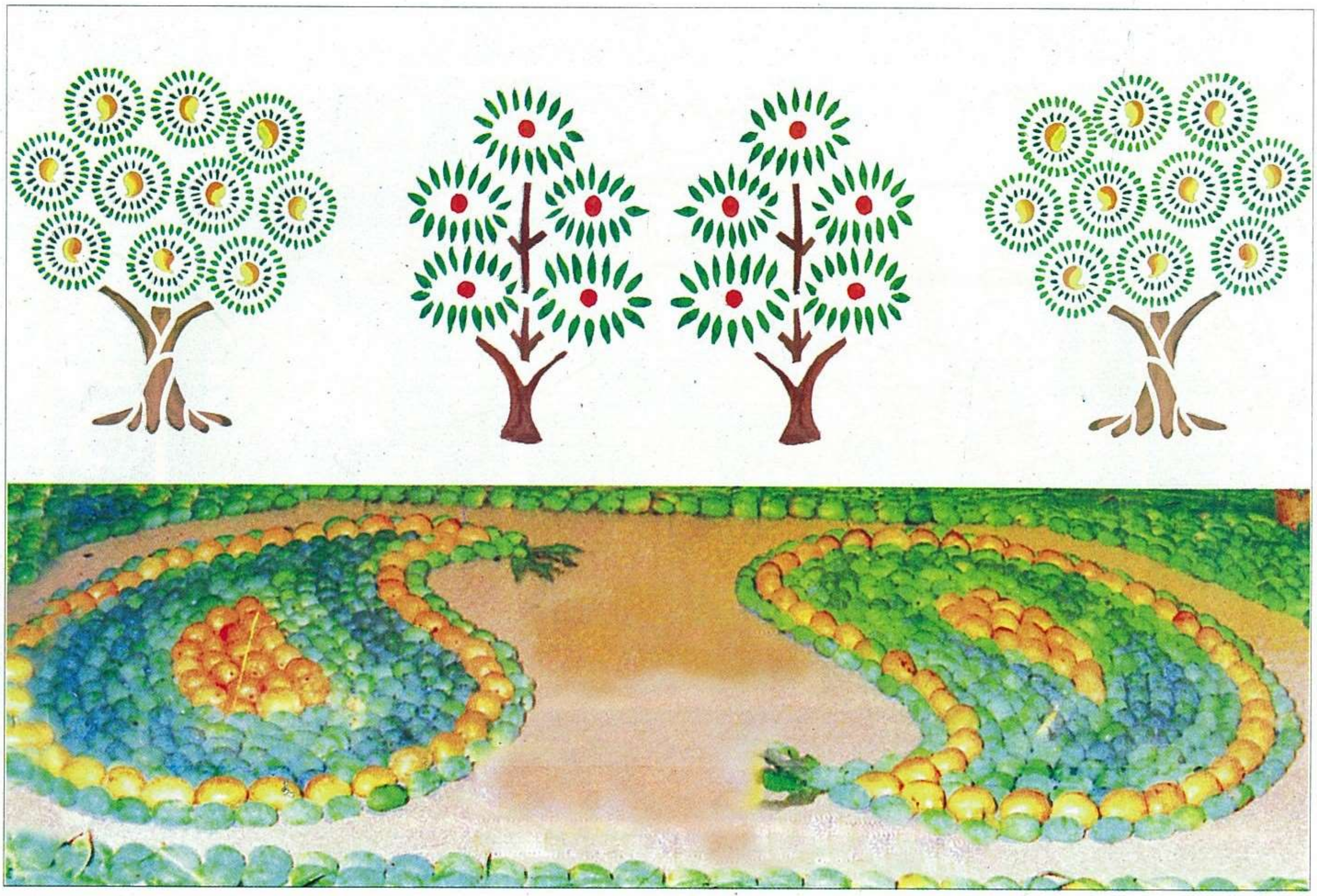

સાભાર : આમ્રકુંજની સાંઝી - શ્રી દ્વારકાધીશજીની હવેલી (કાંદીવલી)

ભક્તિ સરસ અને સ્નિગ્ધ હોય છે. જ્ઞાન અને ભક્તિ નહિ મળવાથી કર્મને છોડી દેવામાં આવે છે. એટલા માટે કેરીના છોડાને ફેંકી દેવામાં આવે છે.

નારંગી :

નારી રૂપ વ્રજગોપીઓના અંગની ભાવનામાં જે રંગાઈ તે નારંગી. એટલા માટે તેની અંદર બધી ગોપીઓની ભાવનાવાળી અલગ અલગ પેશીઓ રહેલી હોય છે.

મોસંબી :

મો-સમી (મારા જેવી છે) એનું પણ હૃદય અષ્ટસખીઓને માન આપવાવાળી કોઈ સખીની સમાન, અલગ અલગ નારંગીના જેવું છે.

અનાર(દાડમ) :

એને ગોપીભાવ નથી મળ્યો, એટલે તેમાં ફક્ત બીજ હોય છે. એટલા માટે એનું નામ અનાર (દાડમ) (અ - નહીં, નાર - સ્ત્રી ભાવ), જેમાં સ્ત્રી ભાવ નથી હોતો, માત્ર પુરુષભાવ છે. તેથી તેને શ્રી ઠાકોરજી સખ્ય ભાવથી આરોગે છે.

અમરુદ(જામફળ) :

''અમ'' એટલે ''મા''. કૃષ્ણની ત્રણ ''મા'' છે. યશોદા, રોહિણી અને દેવકી. રુદ એટલે નિરુદ માતૃભાવવાળાનો નિરોધ કરે છે. એટલા માટે સેવામાં તેનો ઉપયોગ (પ્રયોગ) થાય છે.

ચીકુ :

વ્રજવનમાં ગાયો ચરાવવાના સમયે ખેલમાં ક્યારેક શ્રી ઠાકોરજીના હારવાથી, બલરામજીએ શ્રી ઠાકોરજીને ખીજવ્યા હતા અને શ્રી ઠાકોરજી ખીજ્યા હતા. વ્રજ ભાષામાં એને 'ચેકના' કહે છે. એટલા માટે વ્રજભક્ત વારંવાર તે પ્રસંગની યાદ આપવા માટે ચીકુ આરોગાવે છે.

''મૈયા મોહી દાઉ બહુત ખીજાયો.''

પપીતા(પપૈયું) :

શ્રી સ્વામિનીજીના હોઠની (અધર) સ્મૃતિમાં એમનું રસપાન કરે છે. ઘરમાં શ્રી ઠાકોરજી શ્રી યશોદાજીની પાસે ડબરો આરોગીને સૂઈ જાય છે, ત્યારે થોડી વાર આપ શ્રી યશોદાજીના હૃદયથી રમો છે. (ખેલો છો.) શ્રી યશોદાજીનું વક્ષસ્થલ પીળું કઠોર, અંદરથી રસ-યુક્ત સુંદર શોભાયમાન કાંઈક મોટા છે. પોતાની માતાની ભાવનાથી પપીતાનો રસ ગ્રહણ કરે છે.

૨૫૨ વૈષ્ણવની વાર્તામાં એક વૈષ્ણવના લાવેલા ફળથી, શ્રી ઠાકોરજી ખેલ્યા હતા. તે એવી રીતે રમ્યા હતા, જેવી રીતે સૂતી (શયન) વખતે શ્રી યશોદાજીના હૃદય સાથે ખેલ્યા હતા.

જાંબુન :

જે ભક્તોને સેવા વગર કૃષ્ણભક્તિની ઈચ્છા થાય છે એવા ભક્તોના મનનો રસ ભોગવ્યા પછી શ્રી ઠાકોરજી તેમને કહી દે છે, ''હવે તમે જાઓ'' આ ભાવથી. ''જા-મન'' ના ભાવથી જાંબુન.

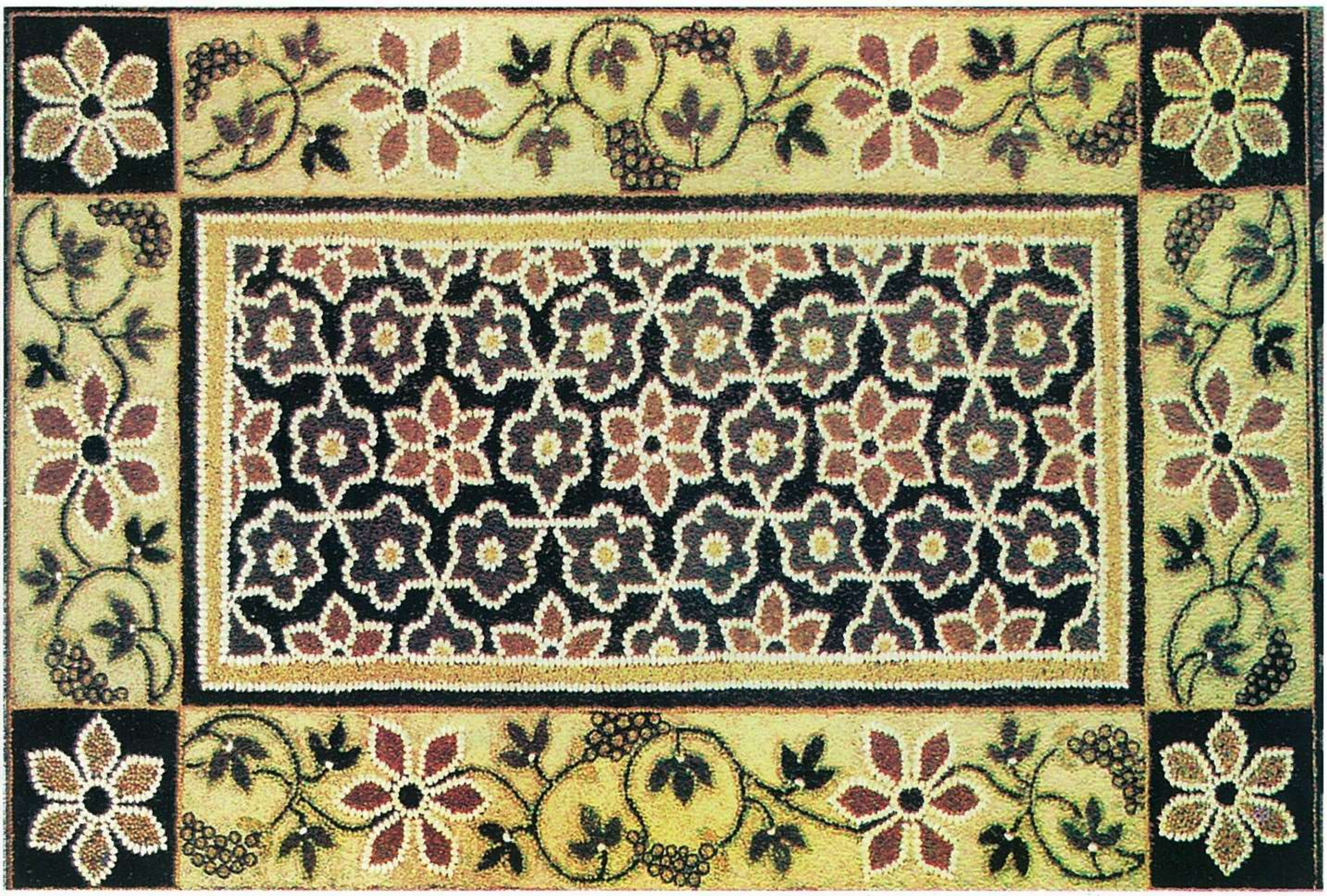

સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ

અનાજની સાંઝી

ઉપનિષદ પ્રમાણે અનાજ (અન્ન) પ્રભુનું સ્વરૂપ છે.

ગુરુને શિષ્યે કહ્યું કે, ''મારે પરમાત્માનાં દર્શન કરવાં છે.'' ગુરુએ કહ્યું, ''આત્માનું દર્શન કરવાથી પરમાત્માનાં દર્શન થશે.'' શિષ્યને પોતાના આત્માની અંદર દર્શન થયાં નહીં. ગુરુએ પ્રાણનાં દર્શન કરવાનું કહ્યું, જેમાં પણ શિષ્ય વિફળ રહ્યો. ગુરુએ અન્નનાં દર્શન કરવાની આજ્ઞા કરી. અન્નમાં શિષ્યને પરમાત્માનાં દર્શન થયાં.

અન્નને (અનાજને) જુઓ અને સમજો. અન્નનો સંબંધ પ્રાણથી, પ્રાણનો સંબંધ આત્માથી અને આત્માનો સંબંધ પરમાત્માથી છે. વ્રજગોપીઓએ પ્રભુ સંબંધી, પ્રભુનું સ્મરણ થતી તમામ સામગ્રીઓના સંબંધમાં રહી, સાંઝીની રચના કરી છે.

મગ લીલા, અડદ કાળા, મઠ સિંદુરી, ચોખા સફેદ, ચણાની દાળ પીળો, ઘઉં આછા કથ્થઈ વગેરે અનેક રંગો અનાજમાં પ્રગટ છે. પ્રભુ સન્મુખ પાટ અથવા ચોકમાં અન્નના ઉપયોગથી સાંઝી નયનરમ્ય અને કલાત્મક સિદ્ધ થાય છે અને પ્રભુ અતિ પસન્ન થાય છે.

તેજાનાની સાંઝી

પ્રભુ સન્મુખ પાટ, થાળ અથવા ચોકમાં તેજાનાની સાંઝીની રચના થાય છે. તેમાં તજ, મરી, લવિંગ, જાયફળ, જાવંત્રી, એલચી વગેરે તેજાનાના ઉપયોગથી સાંઝીની રચના થાય છે. રંગ અને આકાર મુજબ સાંઝીની સજાવટ પ્રભુ સન્મુખ થાય છે.

ભાવના : વ્રજગોપીઓ પ્રભુમાં પોતાનું ચિત્ત પરોવાઈ રહે, તે માટે પોતાની સમક્ષ જે પણ સામગ્રી હોય તેના વડે સાંઝીમાં લીલાની રચના કરતી, અથવા વિવિધ આકાર બનાવી મનમાં/ચિત્તમાં રહેલાં સંકેતોને સાંઝીમાં દર્શાવી, પ્રભુના મિલનની આશાને જીવંત રાખતી.

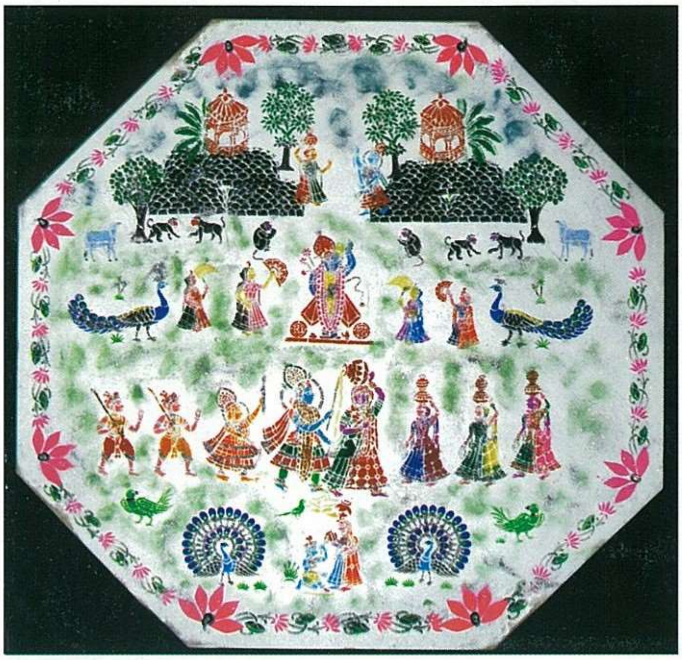

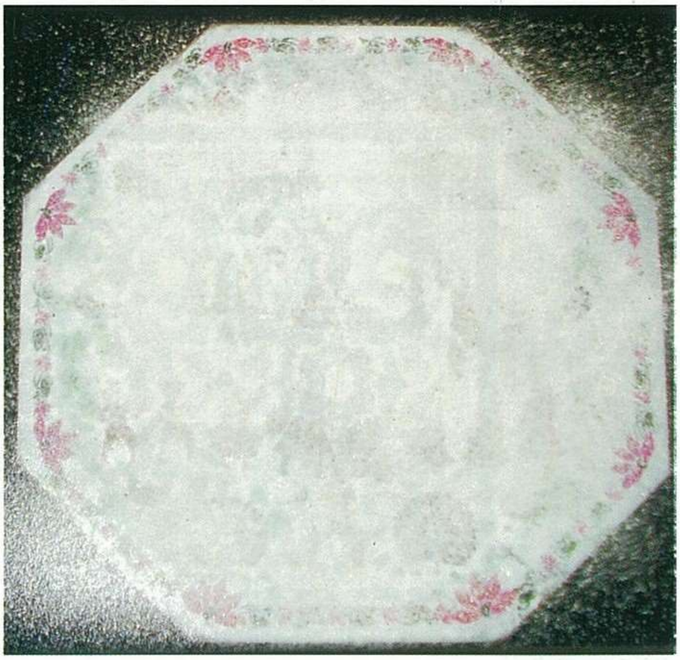

સૌજન્ય : ગૌસ્વામી હવેલી, અમદાવાદ

સાંઝી આવિર્ભાવ/તિરોભાવ

સાંઝીના પ્રારંભમાં સાંઝીના આવિર્ભાવની પ્રમુખ રીતિ છે. જેવી રીતે વૈદિક કર્મકાંડમાં દેવતાઓનું આહ્વાન અને પ્રાણપ્રતિષ્ઠા થાય છે, તેવી રીતે વ્રજસીમંતિની ગોપકુમારિકા અથવા ગોપપત્નીઓનાં હૃદયમાં જે લીલા બિરાજમાન છે, તે લીલા સાગરમાંથી સાંઝીનો આવિર્ભાવ થાય છે. તે જ વ્રજસીમંતિનીઓથી હૃદયમાં લીલા સાગરનો રસાવેશ જ આવિર્ભાવ પછી રસની સ્થાપના છે.

ઉપરોક્ત ક્રમ પછી સાંઝીનો તિરોભાવ થાય છે. આ તિરોભાવ શ્રી લીલા પુરુષોત્તમ નંદનંદનના હૃદયમાં પ્રવેશ કરે છે. આથી પ્રભુમાં જ તેનો તિરોભાવ છે. આ દિવસોમાં શ્રી ઠાકોરજીને રસાવેશ થાય છે. આ રસાવેશ રોક્યો રોકાતો નથી એટલે આ રસાવેશના બળથી શ્રી ઠાકોરજી આગામી (આવનાર) રાત્રીઓમાં વેણુનાદ કરે છે અને રાસ રસ પ્રગટ કરે છે. જ્યારે આવિર્ભાવ થાય છે ત્યારે લીલા રસનો ઉદય થાય છે. ઉદયનો રંગ હંમેશાં અરુણ હોય છે. જેવી રીતે ચંદ્રોદય અને સૂર્યોદય આ બન્ને સમયનો રંગ અરુણ હોય છે.

આ અરુણ રંગ પુષ્ટિ માર્ગનો નિત્ય નવીન પ્રેમ છે. આવી જ રીતે સૂર્ય અને ચંદ્રનો તિરોભાવ (અસ્તાચલ ગમન) સુધી અરુણ રંગ હોય છે. ત્યાર પછી શ્યામ રંગ શરૂ થઈ જાય છે. આ શ્યામ રંગ પુષ્ટિ માર્ગીય કૃષ્ણ ભક્તિનો રંગ છે.

અતઃ પુષ્ટિ માર્ગમાં આ શ્યામ રંગ સિવાય સ્વરૂપ સેવા થતી નથી. જે શ્યામ રંગ છે તે આ શ્યામ રંગ છે.

સાંઝીની આવિર્ભાવ રીતિ ભોગ આરતીથી પ્રારંભ થાય છે અને તિરોભાવ મંગળા આરતી સુધી રહે છે. આ વચ્ચે શ્રી ઠાકોરજીમાં રસાવેશ પરિપક્વ થાય છે. એટલા માટે ક્યારેક કોઈ સમયે ભૂતલ ઉપર બિરાજમાન નિ. લી. ગોસ્વામી શ્રી વ્રજરાયજી મહારાજશ્રી (રાજનગર)નાં વચનામૃત દ્વારા પોતાના સેવકજનોને શ્રવણામૃત રસદાનથી સાંઝી વડી કરવાની રીત આપશ્રીએ સમજાવી હતી. આપણા સંપ્રદાયમાં જ્યાં સ્વયં આચાર્ય વંશજ અને આપશ્રીનાં વચનામૃત પ્રમાણ રૂપ મળે છે ત્યારે શાસ્ત્ર પ્રમાણની પ્યાસ રાખવી જોઈએ નહીં.

સાંઝી વડી કરવાની રીત સાથે ઈત :

સાંઝીને પ્રથમ ભોગ ધરીને, આરતી કરી, પ્રદક્ષિણા કરી, તે દિવસની સાંઝીને જુદી જુદી ભાવનાવાળી લીલા ગાન (કીર્તન) કરીને, હાથ જોડીને દંડવત્ પ્રણામ કરીને, શ્રી કૃષ્ણ અને તેમની લીલા સંબંધી કોઈ મનોકામના હોય તેની વિનંતી કરીને, પ્રથમ સાંઝીની જે પ્રકારની ઝાંખી છે, તેના ઉપર શ્વેત અબીલ (સફેદી) છાંટીને સાંઝીને આચ્છાદિત કરી દેવી. એનું કારણ એ હોય છે કે, 'હે સાંઝી, સમસ્ત ભક્તિ માર્ગીય સૃષ્ટિમાં આપની ઉજ્જ્વળ કીર્તિનો વિસ્તાર થાય.'

આ પ્રકારની મનોકામના શ્રી સ્વામિનીજી અને શ્રી યમુનાજી તરફથી છે. પુષ્ટિ માર્ગમાં આ મનોકામના શ્રી મહાપ્રભુજીના તરફથી છે, કારણ કે ઉજ્જવલ રંગના અધિકારી પુષ્ટિ માર્ગમાં શ્રી યમુનાજી, શ્રી સ્વામિનીજી તથા શ્રી મહાપ્રભુજી આ ત્રણ જ છે. અતઃ એમને નિર્ગુણ ભક્તિ રસપોષક માનવામાં આવે છે.

''અતઃ સાંઝી કે તિરોભાવ મેં શ્વેત અબીર અનિવાર્ય હૈ।''

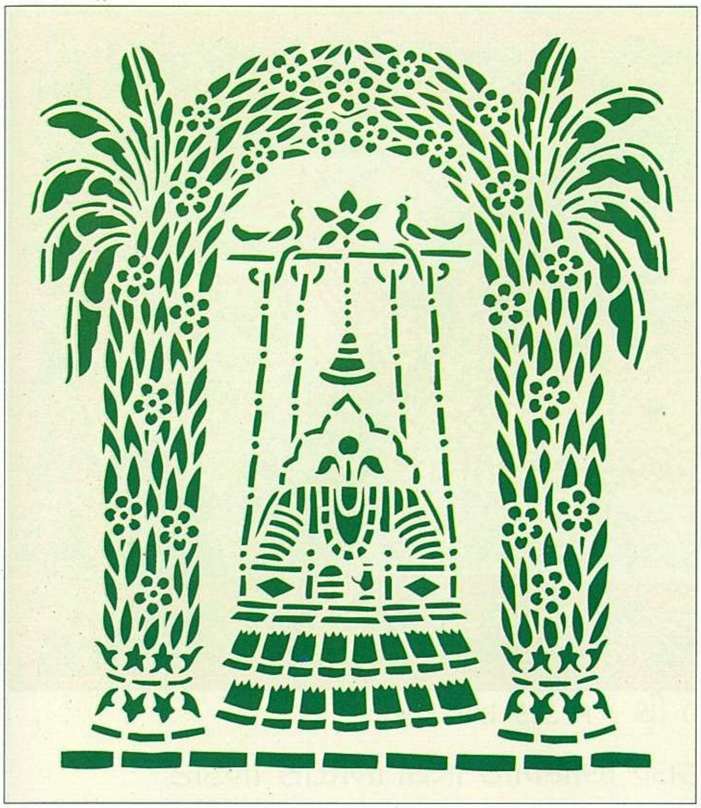

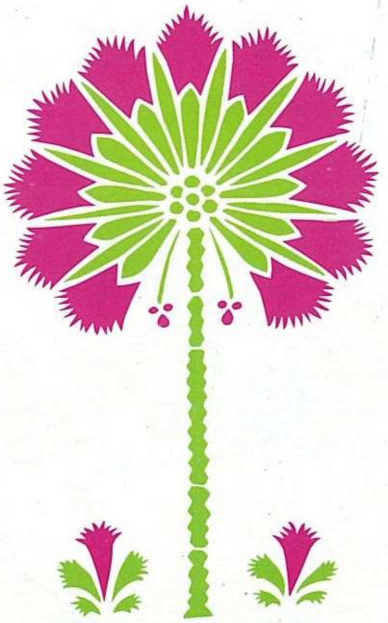

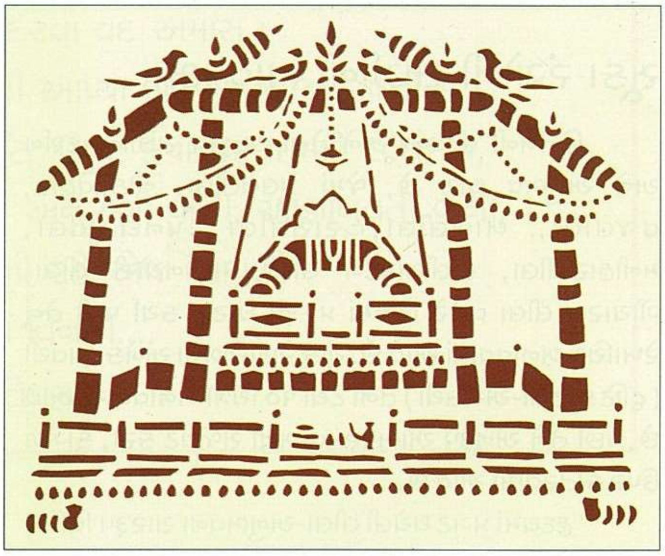

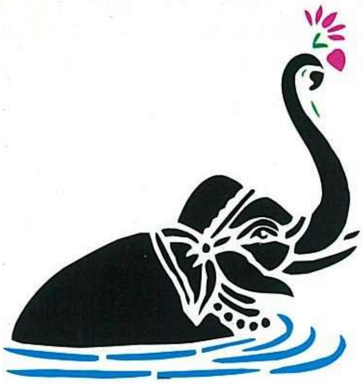

સાંઝીમાં સામગ્રીનો વિનિયોગ

અનાજની-દાળની (ધાન્યની) જે સાંઝી સિદ્ધ કરે છે, તે તેમના સ્વતંત્ર વિચારથી કરે છે, કારણ કે આ ભક્તિ માર્ગ છે. અહીં ભગવાન અને ભક્ત વચ્ચે સંબંધ છે. અહીં અન્નનો (અનાજનો) ભાવાત્મક વિચાર ભગવત્ સ્વરૂપ છે, ભક્તિ સ્વરૂપ નથી. ભક્તિ માર્ગ છે, ભગવાનનો માર્ગ નથી.

દેવપૂજનમાં વિષ્ણુકળશની પૂજા થાય છે, ત્યારે અનાજની ઉપર તેની સ્થાપના થાય છે, કારણ કે તે દેવ કાર્યમાં ભગવાન અને ભક્તનો કોઈ સંબંધ નથી. ત્યાં આવાહન અને વિસર્જન છે. અહીં પુષ્ટિ માર્ગમાં આવિર્ભાવ અને તિરોભાવ હોય છે. એટલા માટે બન્ને માર્ગની રીત અલગ અલગ છે. પુષ્ટિની રીત મર્યાદામાં લાગુ પડે છે, મર્યાદાની રીત પુષ્ટિમાં લાગુ પડતી નથી. કોઈ પણ ભગવત્ કાર્યને જોતાં, અનાજનો વિનિયોગ યજ્ઞ સુધી જ છે. પુષ્ટિ માર્ગ યજ્ઞથી આગળ છે, એટલે અહીં પુષ્ટિ માર્ગના મનોરથમાં અનાજનો ઉપયોગ નથી.

સાંઝી ભગવલ્લીલા છે. લીલામાં કોઈ પણ સામગ્રીનો વિનિયોગ બે પ્રકારે છે : (૧) જેવું છે તેવું સીધેસીધું અને (૨) માધ્યમથી.

જે લીલાની સામગ્રી છે, તેનો હેતુ લીલા જ છે. તે જે સ્વરૂપમાં છે તે જ સ્વરૂપમાં અંગીકાર છે. જળ-દૂધ-ફૂલ-લતા-શાકભાજી-ફળ-સૂકો મેવો (સિદ્ધ કર્યા વગરનું) જેમાં કોઈ પણ પ્રકારથી તેનું સ્વરૂપ બદલાવું જોઈએ નહીં, પૂર્ણ સ્વરૂપે એવી રીતે અન્ન અને બીજી તેવી જ સામગ્રીમાં બીજી કોઈ ક્રિયા વગર રસ પ્રગટ થતો નથી અને તેનો બ્રહ્મસંબંધ અને તુલસીપત્ર વિના વિનિયોગ થતો નથી. જે ફળ ઇત્યાદિક સામગ્રી પણ હિંડોળા - પલના - સાંઝી અને સજાવટમાં આવે છે, તેને પણ રીત પ્રમાણે મનોરથ પછી ફક્ત ગાયોને માટે જ ઉપયોગમાં આવશે. વૈષ્ણવને તે મળે તો લઈને પોતાને ઘરે પધરાવી, એક બે દિવસ તેનાં દર્શન કરી, ભાવના કરે પછી ગાયને આપી દે. (ખવડાવી દે). રંગ, ફૂલ, ગોબર વગેરે મનોરથ પછી નદીના પ્રવાહમાં (શ્રી યમુનાજીના ભાવથી) પધરાવવામાં આવે છે.

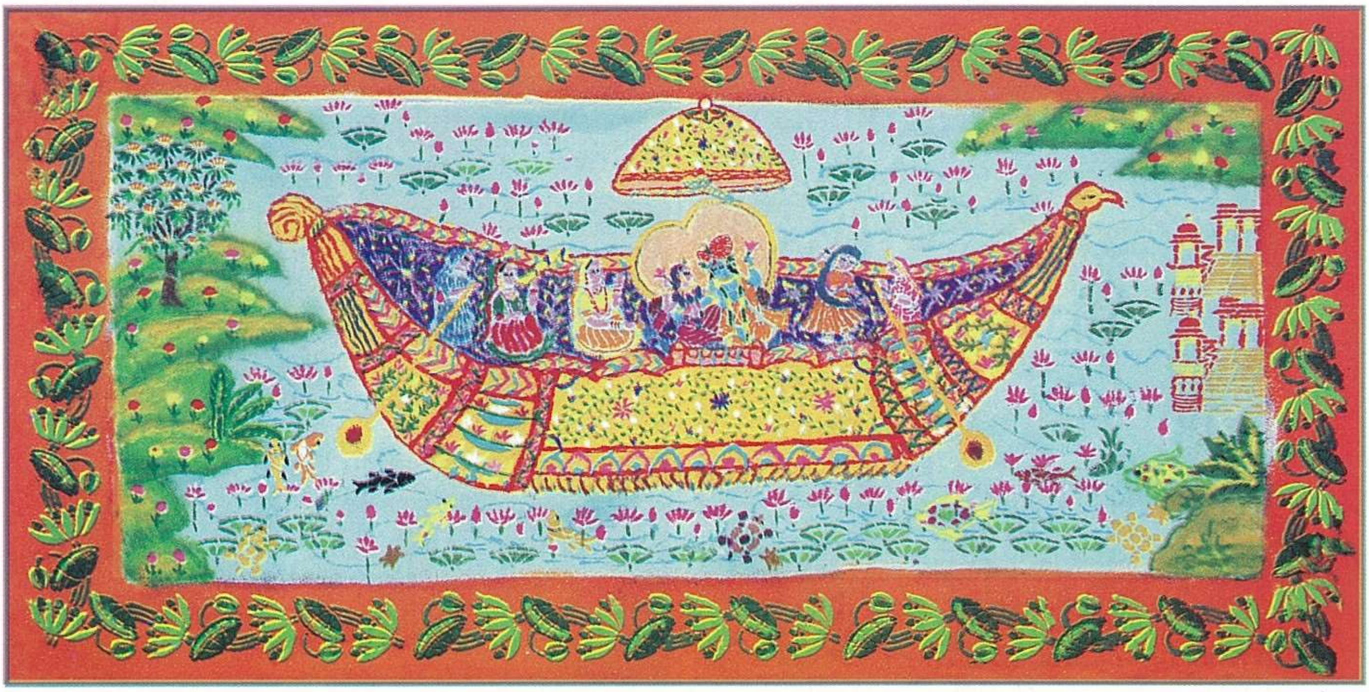

સૂકા રંગોની સાંઝીનો ભાવપક્ષ

ક્રિર્તનની ભાવના અને તેના અનુરૂપ સાંઝીના દર્શન અને અનુભવ થાય છે, જેમાં ઝુલનલીલા, નૌકાવિહાર, વ્રજલીલા, બાળલીલા, રાસલીલા, પનઘાટલીલા, મનીહારીલીલા, કાલીયામર્દન લીલા, માખનચોરી લીલા, ગૌચારણ લીલા વગેરે ચિત્તમાં પ્રા-રૂપ ધારણ કર્યા પછી તેનું રેખાચિત્ર બનાવવામાં આવે છે. એક રેખાચિત્રના અનેક ભાવથી (દૃષ્ટિકોણથી-એંગલથી) તેના ૮થી ૧૦ ચિત્રો બનાવવામાં આવે છે. પછી તેને અનુરૂપ આભરણ-વસ્ત્રની સજાવટ કરી, કાગળ ઉપર કોતરવામાં આવે છે.

'હૃદયમાં પ્રગટ થયેલી લીલા-અનુભવના સારરૂપ વિવિધ સ્વરૂપો સિદ્ધ થાય છે. (બીબાં/ખાકાં સ્વરૂપે)'

વ્રજમાં શ્રી ઠાકોરજીએ જે લીલા કરી તે બધી જ લીલા શ્રી યમુનાજીના તટ ઉપર અથવા શ્રી યમુનાજીની ઉપસ્થિતિમાં કરી, તે ભાવથી સાંઝીની ચોકી અથવા ભૂમિ ઉપર શ્રી યમુનાજીના બહાવમાં નીચે ચીકણી રજ(માટી) આવે છે તે રજનું લીંપણ કરીને તેની ઉપર સાંઝી લીલા પ્રગટ થાય છે અથવા તેની ઉપર સાંઝી ચિતરવામાં આવે છે.

શ્રી યમુનાજી (રજભાવથી) સાક્ષાત્ બિરાજમાન છે, જેની ઉપર વ્રજ ભક્તજન પોતાના હૃદયના ભાવથી લીલા રૂપી, રંગ, વસ્ત્ર, આભૂષણ ધારણ કરાવીને એ લીલા સ્વરૂપમાં સ્થિર થઈ જાય છે.

સૂકા રંગોની સાંઝીનો ભાવપક્ષ

(૧) પાટ અથવા ભૂમિ ઉપર સાંઝી માટે લીંપણ (વેદી)= સંધ્યાદેવીના સ્વરૂપે (શ્રીયમુનાજીના ભાવથી)
(૨) સૂકા રંગ = વસ્ત્રના ભાવ સ્વરૂપે
(૩) વિવિધ રંગો = સખીને અનુરૂપ/સાતે સખીના ભાવરૂપ
(૪) સાંઝીમાં આભરણ = બધા જ રંગોનું જડાવ સોના ઉપર શ્રીસ્વામિનીજીના ભાવથી
(૫) સાંઝીની ચારે બાજુફૂલોની ભાત/કિનાર/કોર = સાડીના પાલવ સ્વરૂપે
(૬) સાંઝી તૈયાર થયે, ઉપર છાંટવામાં આવતી જરી/બાદલા = સાંઝી લીલાને વધાવવા/સાંઝી લીલાની સુંદરતા વધારવા
(૭) સાંઝીમાં સ્વરૂપ = સાંઝીમાં લીલા સામગ્રી સિદ્ધ થઈ ગયા (ચિત્રીત થયા) પછી શ્રી ઠાકોરજી (મુખ્ય નાયક) પધારે છે અને ત્યાર પછી સાંઝીમાં મનોરથ કરેલી લીલાનો પ્રારંભ થાય છે.
(૮) સાંઝીની એક અલૌકિક પરંપરા પુષ્ટિ સંપ્રદાય અનુસાર, ચિત્રીત કરેલ સાંઝીના જમણા ખૂણા ઉપર ગાયનું ચિત્ર અંકિત થાય છે અને ગાયના ચિત્રની નીચે એટલે ગાયના પગ પાસે વ્રજરજ પધરાવવામાં આવે છે. આ પ્રણાલિકા જ્યાં શ્રીયમુનાજીની રજ(માટી)ની ઉપસ્થિતિ ના હોય ત્યાં આ ભાવનાથી વ્રજનું પ્રાગ્ટ્ય માનવામાં આવે છે.

શ્રી ચંદ્રાવલિજી દ્વારા સાંઝીનું પ્રાગ્ટ્ય છે. શ્રી ગુસાંઈજી દ્વારા આપના પ્રાગટ્યથી સાંઝી આપણે સિદ્ધ કરી શકીએ છીએ.

સાંઝીમાં મર્યાદા (દેહ સંબંધ) અને પુષ્ટિ (આત્મ સંબંધ) એ બંને જાળવ્યા છે. એટલે મર્યાદાના પોષણ માટે સાંઝી છે, વ્રજ ગોપીની સાંસ્કૃતિક મર્યાદા છે.

કોઈપણ કલા પુષ્ટિ માર્ગમાં અછૂતી નથી
'ઓર સબ ગડીઆ' - (બીજાનું જોઈ સાંભળીને સજાવટ)
'નંદદાસ જડીઆ' - (પ્રભુ પ્રેરણાથી આકૃતિ બની આવવી)

॥ શ્રી દ્વારકેશો જયતિ ॥

ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રી નૈમીષકુમારજી બાવાશ્રી
(તૃતીયગૃહ કાંકરોલી)

આપ શ્રીમાનો ના કૃપા આશીર્વાદના ફલ સ્વરૂપે
"સાંઝી ભલી બની આઈ " ગ્રંથમાં તૃતીય ગૃહ (કાંકરોલી) સાંઝીની પરંપરા, ક્રમાનુસાર
ભાદરવા સુદ ૧૫ થી ભાદરવા વદ અમાસ
કોટની સાંઝીના ચિત્રો આપશ્રીએ પધરાવી આપ્યા છે. આપશ્રીએ સાંઝીના
ચિત્રો સિદ્ધ કરવા માટે જે શ્રમ વૈષ્ણવી સૃષ્ટિ ઉપર કૃપા કરવા માટે લીધો છે,
જે વર્ષોત્સવની સાંઝી સેવામાં વલ્લભી સમાજ અનુરાગી બની, આજ્ઞાનુવર્તી બની,
ભગવદ્ સેવામાં તત્પરતા બની રહે એજ આપશ્રી
વલ્લભના ચરણોમાં વિનંતી....

સર્વે વલ્લભી વૈષ્ણવ

ભાદરવા સુદ-૧૫ (પૂર્ણિમા) સાંઝીનો આરંભ

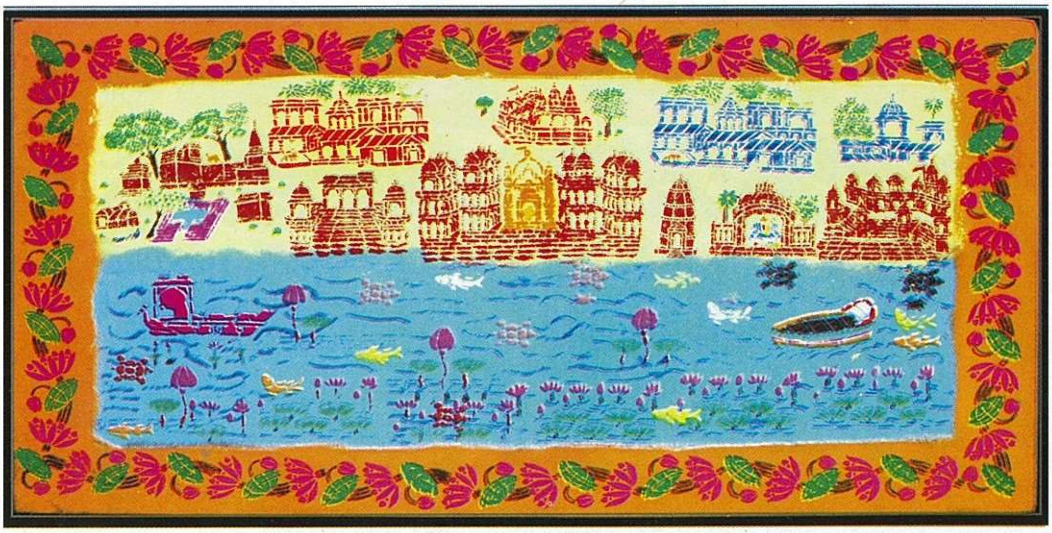

લીલા-શ્રીમથુરાજી,શ્રીવિશ્રામઘાટ,શ્રીબેઠકજી,બુરજ(છત્રી) વગેરે

ભાદરવા વદ ૧

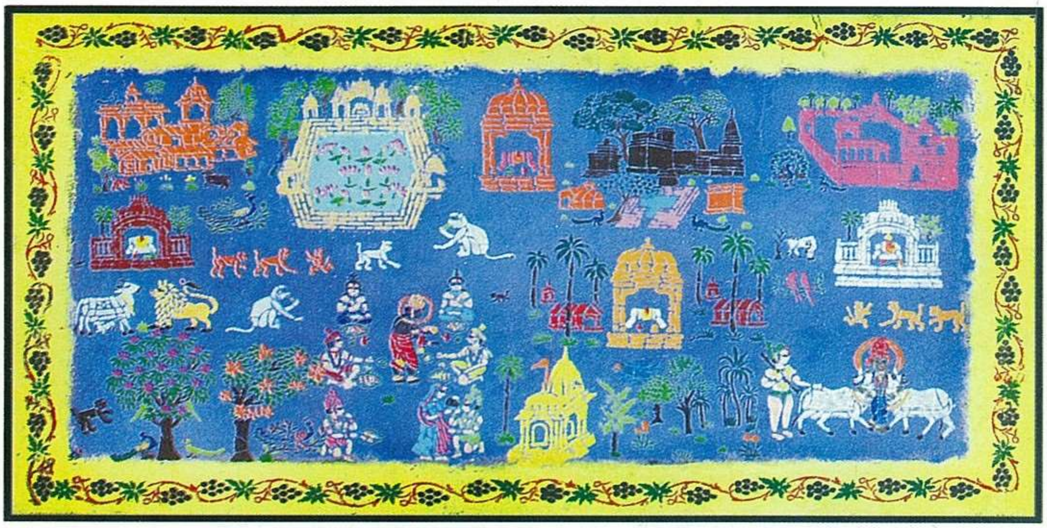

શ્રીમધુવન,શ્રીમધુવનની બેઠકજી,શ્રીતાલવન,શ્રીતાલવનની બેઠકજી તથા તાડવૃક્ષ, શ્રીકમોદવન, શ્રીકમોદવનની બેઠકજી, તથા કમળ, છાકલીલા, શ્રીબહુલાવન, શ્રીબહુલાવનની બેઠકજી તેમાં ગાય અને સિંહનો મિલાપ, એકજ સાથે ચાર સ્થળની લીલા

ભાદરવા વદ ૨

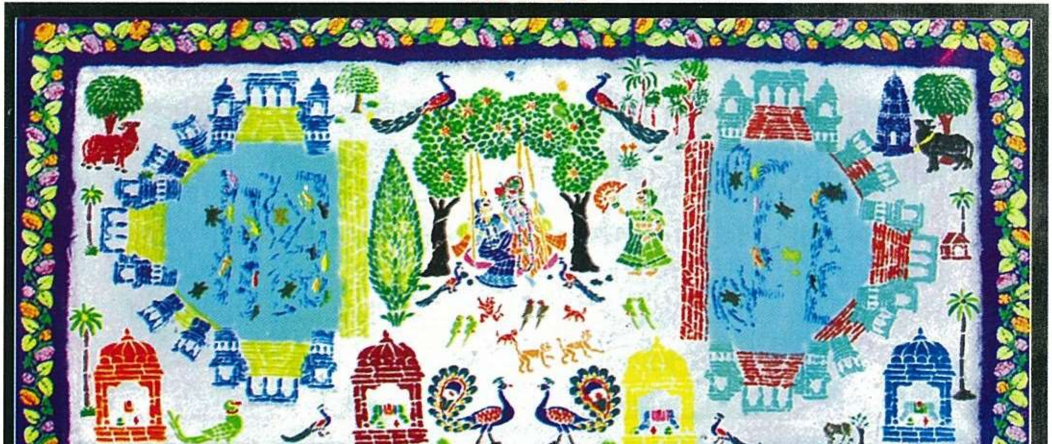

શ્રીરાધાકૃષ્ણ કુંડ ચાર બેઠકજી, વૃક્ષ લતા વિગેરે.

ભાદરવા વદ ૩

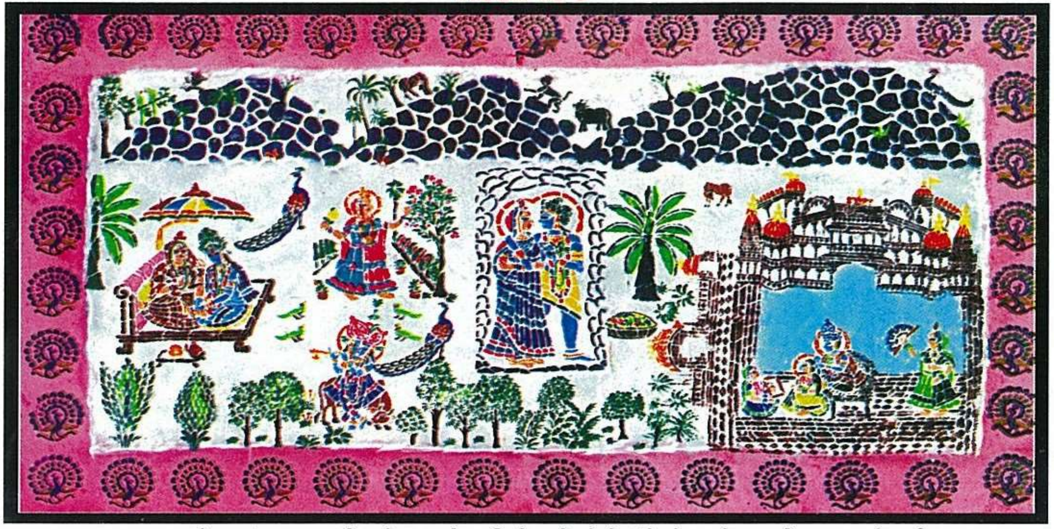

કુસુમ સરોવર,કુંડ,બુરજ,શ્રીઠાકોરજી શ્રીસ્વામિનીજીની ચોટી ગુંથે છે, પાસે ફુલની છાબ સામે દર્પણ

ભાદરવા વદ ૪

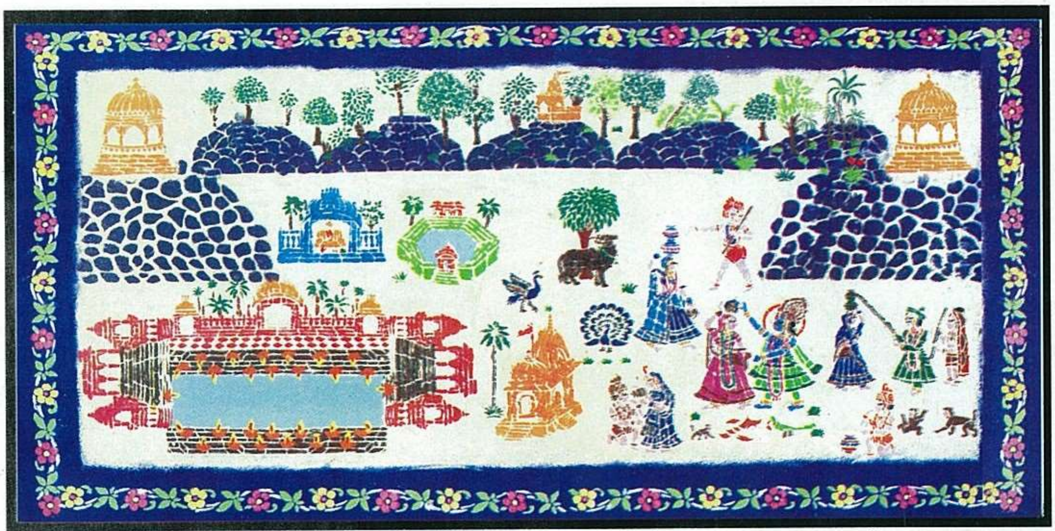

માનસી ગંગા તેંમા દિપક કિનારે, શ્રીબેઠકજી એક બાજુ ગિરીરાજજી, દાન ઘાટ દાન લીલા.

ભાદરવા વદ ૫

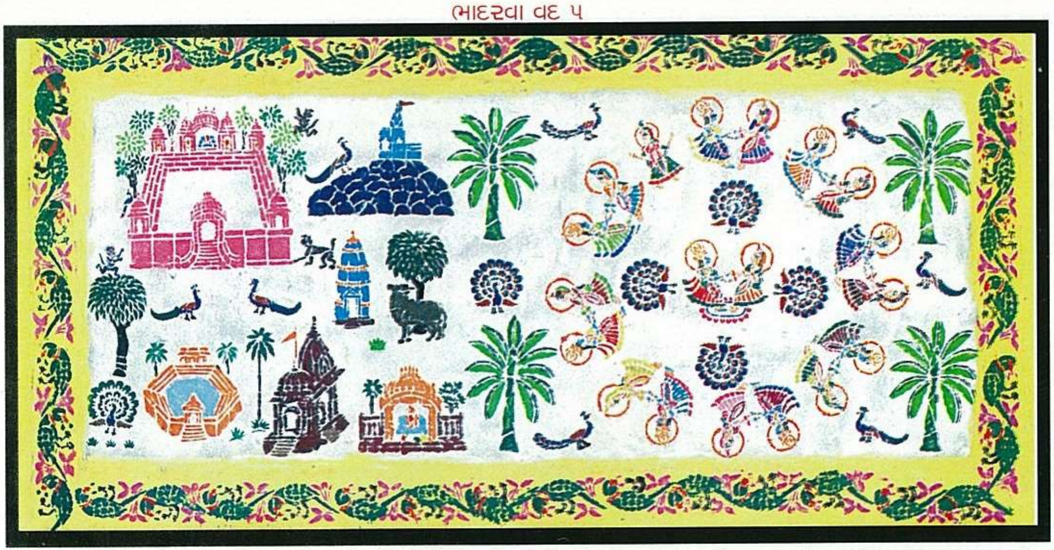

શ્રીચંદ્રસરોવર, શ્રીચંદ્રસરોવર બેઠકજી,બુરજ,રાસનો ચોતરો, તેમાં આઠ ગોપી, આઠ કૃષ્ણની રાસલીલા, મધ્યમાં કલમ ઉપર યુગલસ્વરૂપ નૃત્ય કરે છે.

ભાદરવા વદ ૬

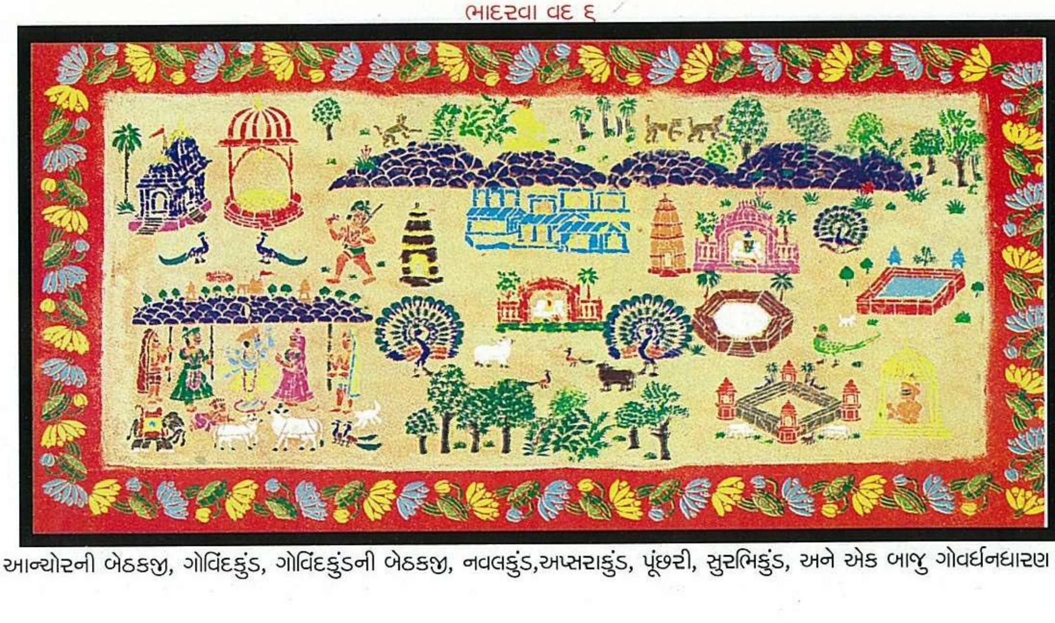

આન્યોર, આન્યોરની બેઠકજી, ગોવિંદકુંડ, ગોવિંદકુંડની બેઠકજી, નવલકુંડ,અપ્સરાકુંડ, પૂંછરી, સુરભિકુંડ, અને એક બાજુ ગોવર્ધનધારણ લીલા જતીપૂરા

ભાદરવા વદ ૭

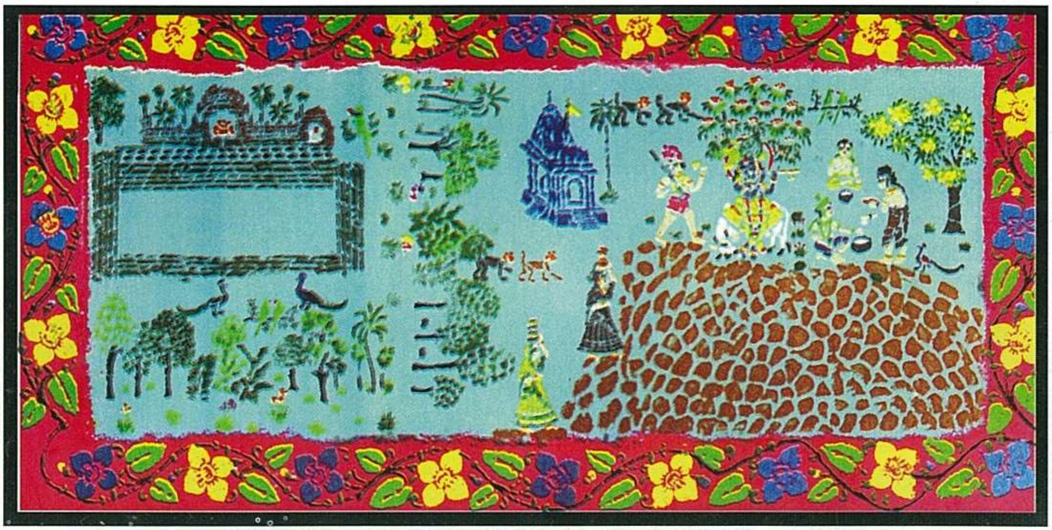

કામવન, શ્રીકુંડ, શ્રીકુડની બેઠકજી, દહીં કટોરા છાકલીલા

ભાદરવા વદ ૮

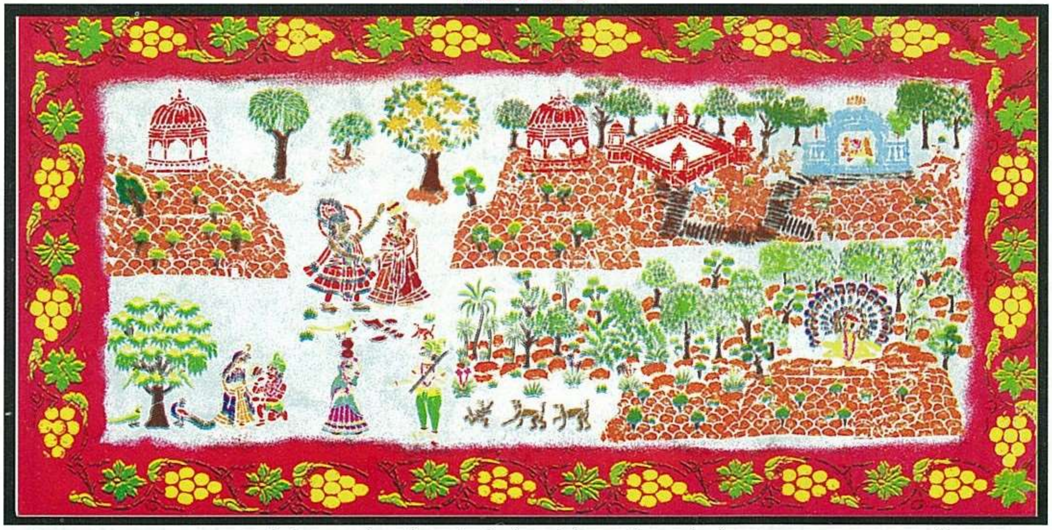

ગહવરવન, ગહવસ્વનની બેઠકજી, મોરકુટીર, સાંકરી ખોર, મોટી દાનલીલા અને એક બાજુ દાનગઢ, માનગઢ લીલા

ભાદરવા વદ ૯

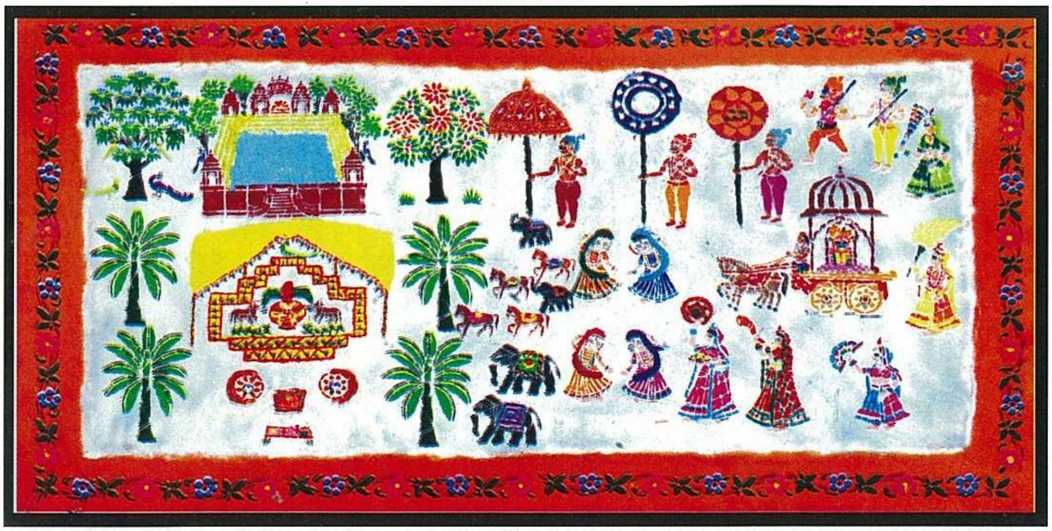

સંકેતવન, સંકેતવનની બેઠકજી, સંકેતવનમાં લગ્ન, વરઘોડો, ચોરી, કુંડ, વૃક્ષ લતા, પશુ,પક્ષી,હાથી, ઘોડા વિગેરે.

ભાદરવા વદ ૧૦

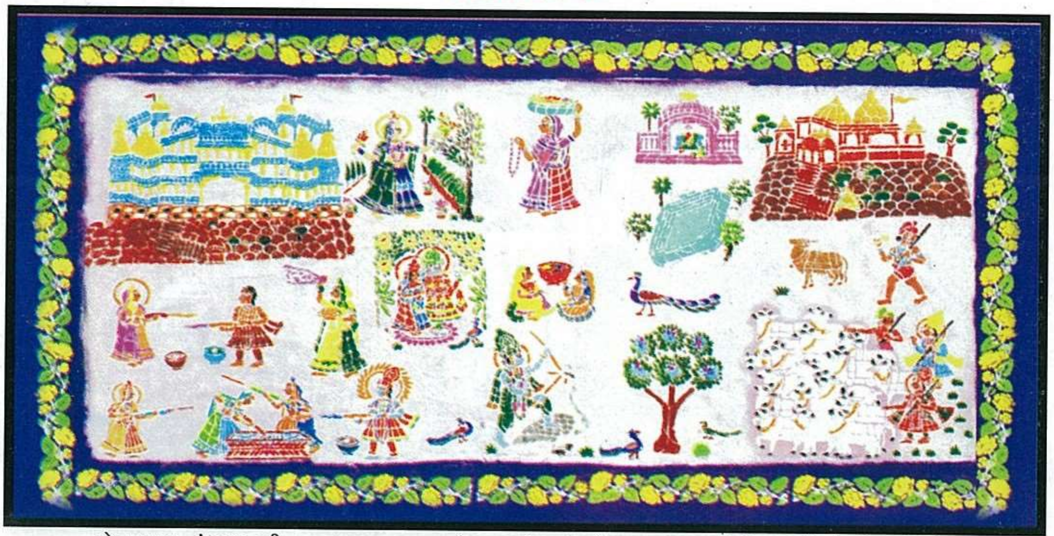

એક બાજુ નંદગામ બીજી બાજુ બરસાના, નંદગામમાં, બાળલીલા, બરસાનામાં ઉપર શ્રીલાડિલીજીનું મંદિર

ભાદરવા વદ ૧૧

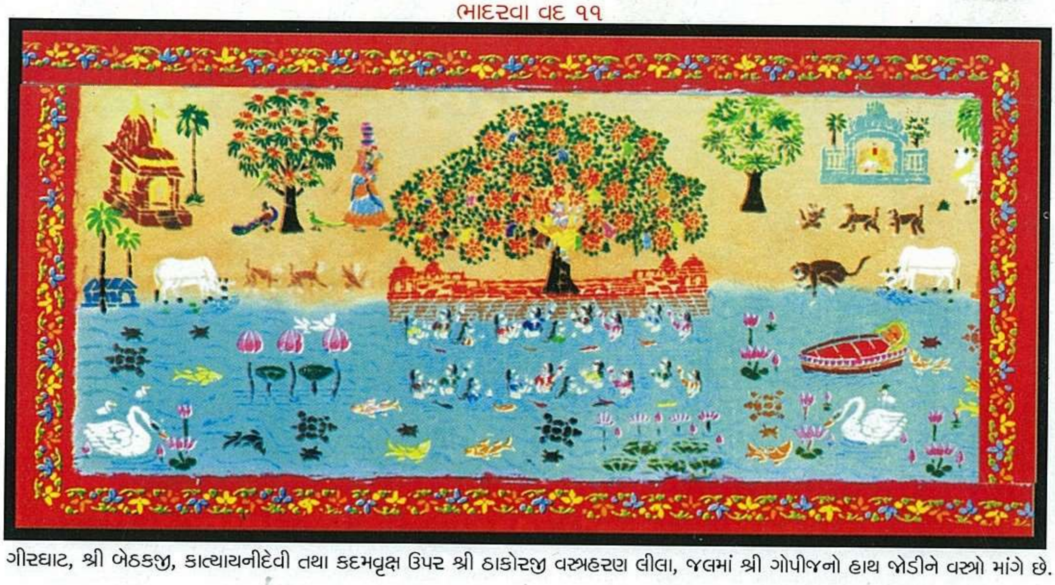

ગીરઘાટ, શ્રી બેઠકજી, કાત્યાયનીદેવી તથા કદમવૃક્ષ ઉપર શ્રી ઠાકોરજી વસ્ત્રહરણ લીલા, જલમાં શ્રી ગોપીજનો હાથ જોડીને વસ્ત્રો માંગે છે.

ભાદરવા વદ ૧૨

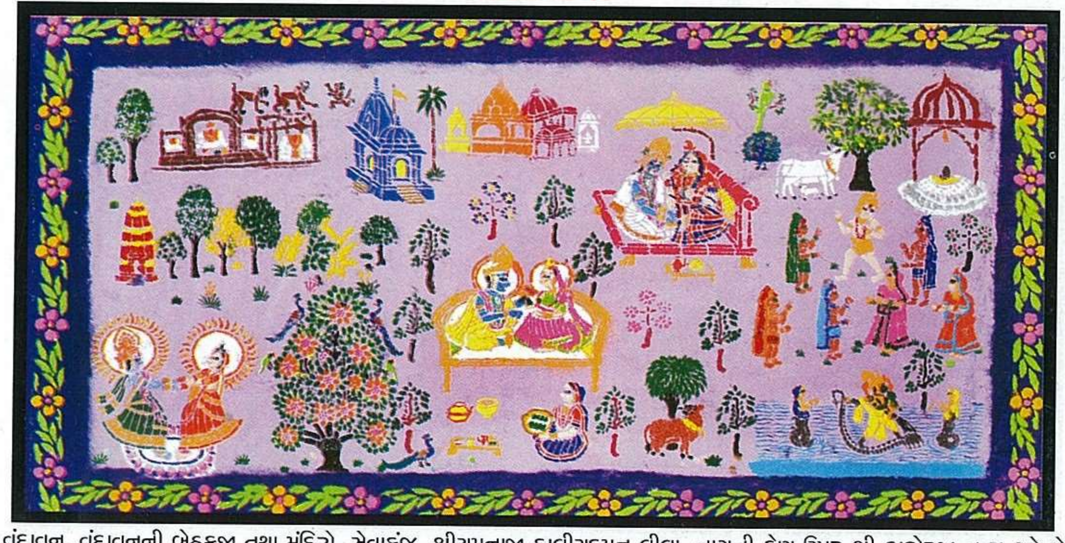

વૃંદાવન, વૃંદાવનની બેઠકજી તથા મંદિરો, સેવાકુંજ, શ્રીયમુનાજી કાલીયદમન લીલા, નાગની ફેણ ઉપર શ્રી ઠાકોરજી નૃત્ય કરે છે. આસપાસ નાગણીયો સ્તુતિ કરે છે કિનારા ઉપર કદમવૃક્ષ ત્યાં નંદ યશોદાજી ગોપગોપી વિગેરે શ્રીકૃષ્ણની રાહ જુએ છે.

ભાદરવા વદ ૧૩

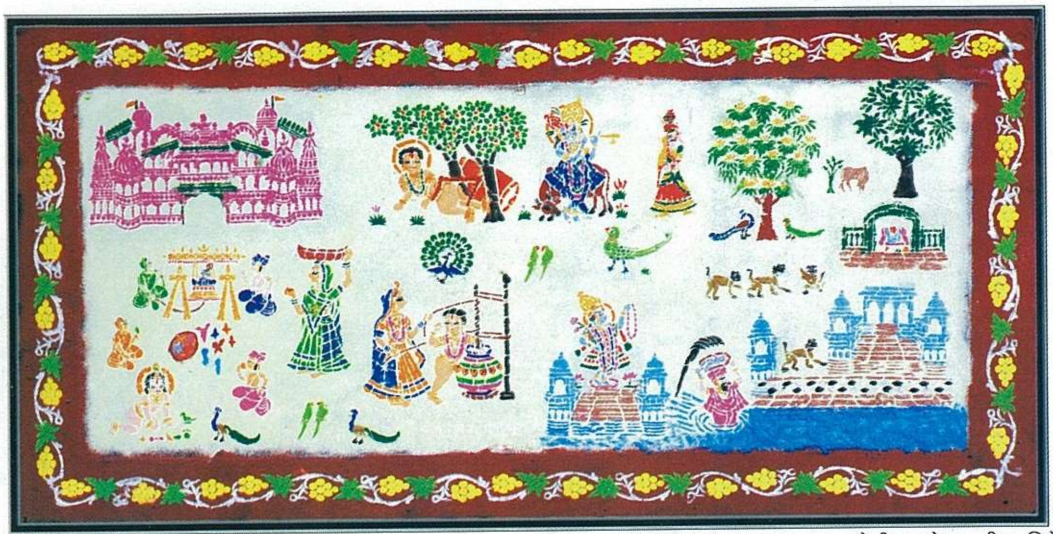

શ્રીમદ્ ગોકુલ ઠકુરાણી ઘાટ, શ્રીબેઠકજી તથા પ્રભુની અનેક પ્રકારની બાળ-લીલાઓ, નંદભવન, માખણ ચોરી, દામોદર લીલા વિગેરે

ભાદરવા વદ ૧૪

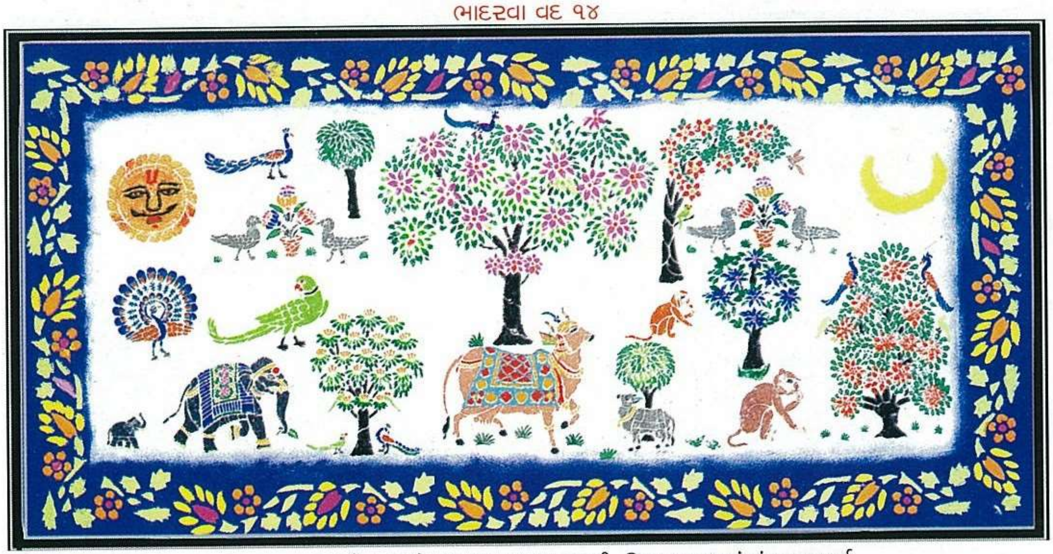

કલ્પવૃક્ષ તથા કામધેનુ વૃક્ષને આસપાસ ચકલા ચકલી, ઉપર આકાશમાં ચંદ્ર તથા સૂર્ય.

ભાદરવા વદ અમાસ

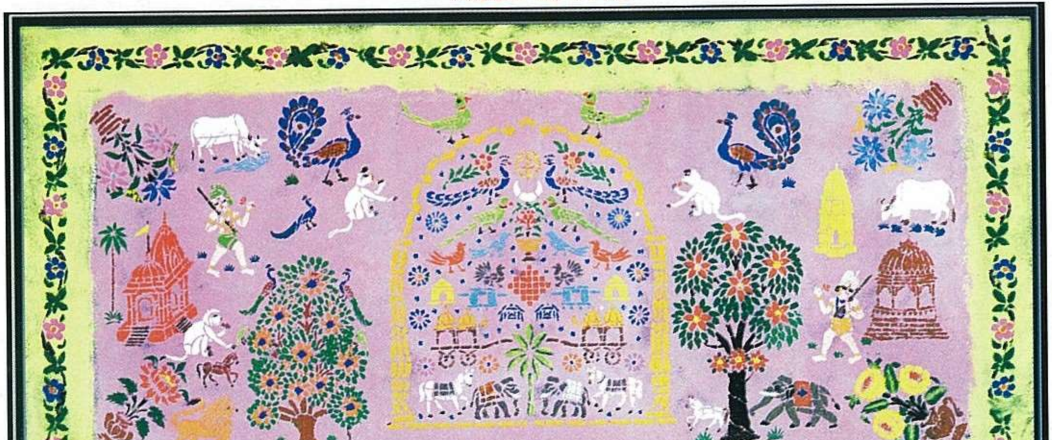

કોટની સાંઝી-એમાં બગલા, હાથી, ઘોડા, દરવાજા, મ્યાના, મોર, પોપટ વિગેરે

સાંઝીમાં નિત્યની આરતી

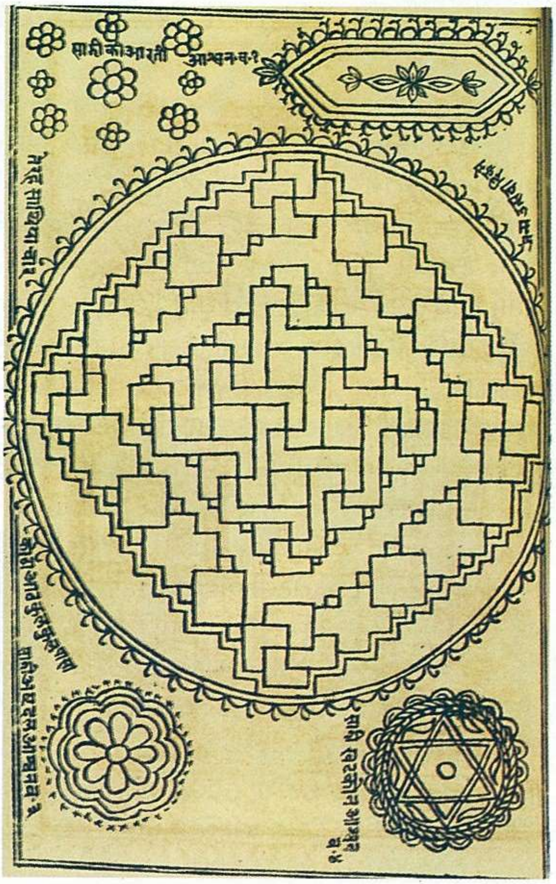
सांझीकीआरती
आश्वनकृ.१

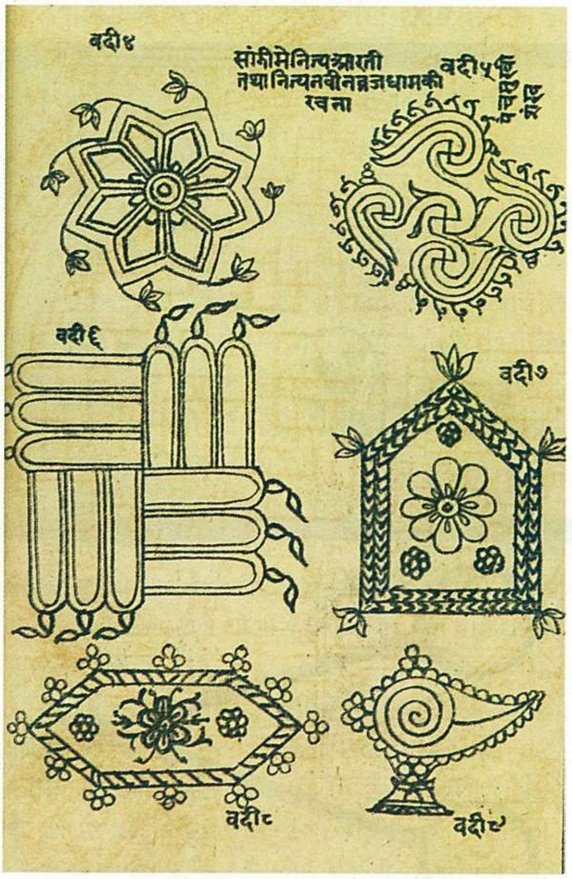
वदी४
सांझीमेनित्यआरती
तथा नित्यनवीनव्रजधामकी
रचना
वदी५
वदी६
वदी७
वदी८
वदी९

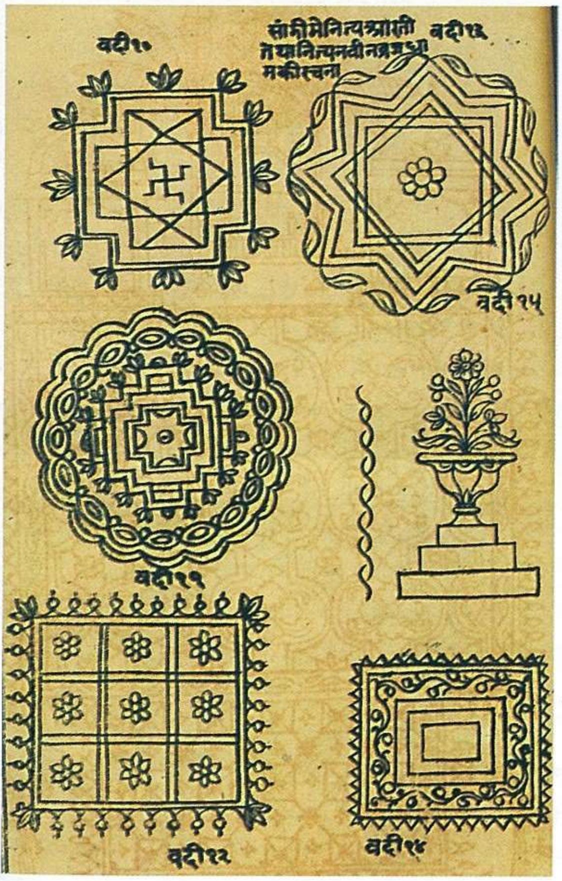
वदी१०
सांझीमेनित्यआरती
तथानित्यनवीनव्रजधा
मकीरचना
वदी१३
वदी१५
वदी११
वदी१२
वदी१४

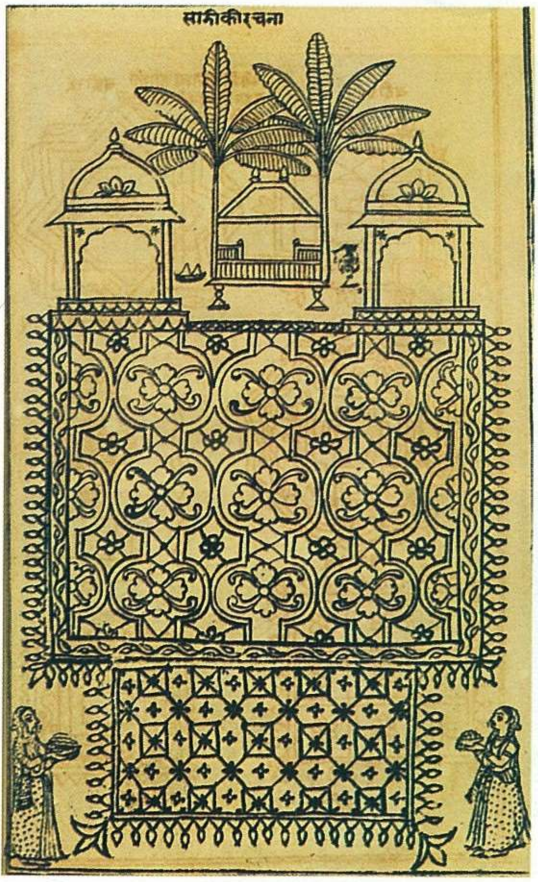

સાભાર : શ્રીવલ્લભવિલાશ (બનારસ, સંવત ૧૯૪૫)

રંગની ‘સાંઝી’ તૈયાર કરવાની સાધન-સામગ્રી

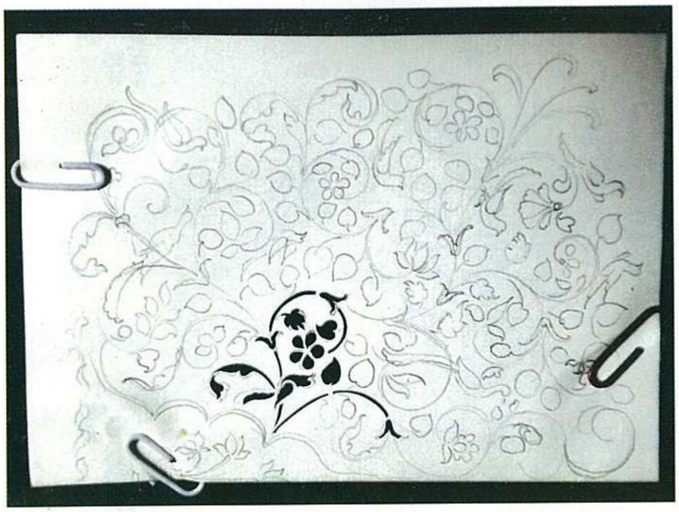

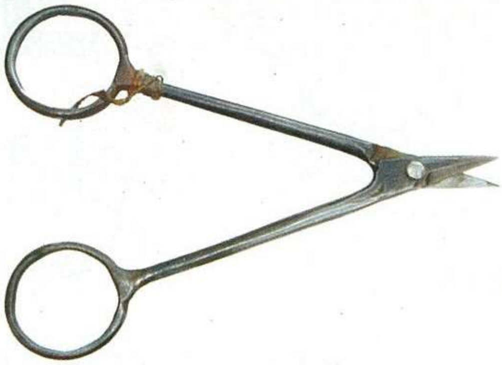

વેદી:

વ્યાખ્યા : શ્રી ઠાકુરજી સન્મુખ જે જગ્યાએ સાંઝી છોડવામાં આવે છે (બનાવવામાં આવે છે), તે જગ્યાએ માટીથી જે ઊંચો થર બનાવવામાં આવે છે તેને ‘વેદી’ કહેવાય છે.

વેદી બનાવવાની રીત : વ્રજ મંડળમાં શ્રીજી સન્મુખ બનાવવામાં આવતી સાંઝી માટેની વેદી જમુનાજીની માટીથી બનાવવામાં આવે છે. જેનો આકાર (ઊંચાઈ - લંબાઈ - પહોળાઈ) દરેકે વર્ષોથી જાળવી રાખવામાં આવેલી હોય તે પરંપરા અનુસાર તૈયાર કરાય છે.

વેદીની ઉપરની સપાટીને એકસરખી કરવા માટે, એક પાત્રમાં માટી લઈ, જળથી ભીની કરી, મુલાયમ કપડાના પોતાથી લીંપણ કરવામાં આવે છે. માટીનું સ્તર સુકાય તે પહેલાં, વેદી ઉપર સપાટ વાડકીથી ઘસવામાં આવે છે, જેથી સપાટી એકસરખી થાય છે. રંગને પકડીને રાખે તેટલી ભીનાશ વેદીના લીંપણ ઉપર રહે ત્યારે સાંઝી પૂરવાનું કાર્ય શરૂ થાય છે. (વધુ પડતી ભીનાશ રંગની વાસ્તવિકતા છોડી દે છે અને ખાકા કાગળના હોઈ ભીનાં થવાથી વેદી સાથે ચોંટી જાય છે અને ઊખડતાં નથી.)

ખાકા (બીબાં - खाका - સ્ટેન્સીલ) :

જાડા કાગળ ઉપર કટીંગ કરેલા (કોતરેલા) બીબાંને ‘ખાકા’ કહેવામાં આવે છે. (હાલ પ્લાસ્ટિક પેપર ઉપર પણ બને છે.)

ખાકા બનાવવાની રીત : પ્રથમ કાગળ ઉપર જે ખાકા તૈયાર કરવાના હોય તે લીલાનું ચિત્રાંકન કરવામાં આવે છે. જેની નીચે હાલ વાપરવામાં આવતા પ્લાસ્ટિક પેપરના ત્રણથી ચાર પેપર મૂકવામાં આવે છે. સૌથી નીચે એક કોરો કાગળ મૂકવામાં આવે છે. જેની ચારે બાજુ યુ પિનથી, થોડી પણ હાલે નહીં તેમ મજબૂત પકડથી, જોડવામાં આવે છે. વચ્ચે પણ ટાંકણીનું બંધારણ લગાવવામાં આવે છે. ખાકા કાપવા માટે ખાસ પ્રકારની કાતર (કેચી) વાપરવામાં આવે છે. ખાકાની બારીકાઈ અને છેડાની તીક્ષ્ણતા ઉપર ખાસ ધ્યાન આપવામાં આવે છે.

ખાકાને કોતરવામાં ૩થી ૪ કલાકનો સમય લાગે છે. મોટા ખાકા કોતરવામાં ૭ દિવસ અને મહારાસની મોટી સાંઝીના ખાકા કોતરવા માટે ૧૫ દિવસ સુધીનો સમય લાગે છે.

ખાકા બનાવવામાં આંખ અને હાથનો અદ્‌ભુત યોગ સમન્વય કુશળ કલાકારની સાધનાના દર્શન કરાવે છે. તેમાં અનુભવ એ મહત્ત્વની બાબત છે.

પ્રાચીન સમયના ખાકા જાડા કાગળ ઉપર જ બનતા હતા, જે ખાકાથી સાંઝી ઉત્તમ કક્ષાની બનતી.

સૂત (દોરા) :

સૂતરના જાડા દોરાને સૂત કહે છે. તેનો ઉપયોગ લાઇનદોરી કરવામાં વપરાય છે. જે રંગની ધાર નક્કી કરી હોય તે રંગમાં સૂતને રગદોળીને વચ્ચેથી મજબૂત પકડી સામસામે ખેંચવાથી વેદી ઉપર તે રંગની સીધી દોરીની લાઇન (રેખા) ઊપસી આવે છે.

ફંટી :

લાકડાની પટ્ટીને ફંટી કહેવામાં આવે છે. તે આશરે ૧ સે.મી. જાડાઈની હોય છે. તેની લંબાઈ ૧.૫ ફૂટથી ૨ ફૂટ સુધીની હોય છે. તેનો ઉપયોગ એક બોર્ડર (કિનારી) ઉપર બીજા રંગનો છંટકાવ ન થાય તેને માટે છે. ઉપરાંત, તે માપ લેવા માટે પણ વપરાય છે.

કાગળની પટ્ટી :

જાડા કાગળને સીધા કાપીને પટ્ટી બનાવવામાં આવે છે. તેની બન્ને બાજુના છેડાની ધારને વાળી દેવામાં આવે છે, જેથી સંભાળપૂર્વક રંગ ઉઠાવી શકાય. બીજા રંગોની સીધી રેખા થાય અથવા તેના ઉપર બાજુના રંગો ન પડે તે માટે આ પટ્ટીનો ઉપયોગ થાય છે. આ પટ્ટીઓ સાંઝી પૂરવાના સમયે જરૂર પ્રમાણે નાની મોટી તૈયાર કરવામાં આવે છે.

કેડા (નારિયેળનાં પાનની સૂકી લાકડી) :

નારિયેળનાં પાનની સૂકી લાકડીના ટુકડાને કેડા કહેવામાં આવે છે. તેનો ઉપયોગ એકસરખા માપ પ્રમાણે ટુકડા કરી સાંઝીની કિનારીને ચોક્કસ માપમાં રાખવા માટે થાય છે.

છલની :

બારીક સુતરાઉ કપડામાં રંગ ભરીને ખાકા ઉપર પાડવામાં આવે છે. આ કપડાને છલની કહેવાય છે. જોઈતા પ્રમાણમાં હાથની આંગળી કપડા ઉપર બહારથી ઘસવાથી રંગ નીચે ઊતરે છે. જુદા જુદા રંગો માટે અલગ અલગ છલની વાપરવામાં આવે છે, કેમ કે એક રંગની અસર બીજા રંગમાં ન આવે.

ચસ (ખાકાની ઓવરલેપીંગ) :

એક ચિત્ર (સાંઝીનું) બનાવવા માટે એક કરતાં વધુ ખાકાનો ઉપયોગ થાય તે પ્રત્યેક ખાકાને (સાંઝીનાં બીબાંને) ચસ કહેવાય છે. તેનાથી ચિત્રમાં વિવિધતા આવે છે અને અનેક રંગોનો ઉપયોગ એકબીજા ઉપર થતાં સાંઝીની સુંદરતા અનેક ઘણી વધી જાય છે. પ્રથમ દૃષ્ટિએ આપણને રંગોળીનો આભાસ થાય છે, પરંતુ ચસ (એક બીબા ઉપર બીજા બીબાનો ઉપયોગ) આકૃતિને સજીવન કરે છે. એક આકૃતિ માટે વધુમાં વધુ ૧૮ ચસ (ખાકા)નો ઉપયોગ થતો હોય તેવું જાણવામાં આવ્યું છે.

ચસનો ઉપયોગ વિવિધ રંગોની ઊંડી સમજ સાથે કરવામાં આવે છે. તેમાં એક નિષ્ણાત કલાકારની કલાનાં પારખાં થાય છે.

કંકળ (કાંકરો) :

પથ્થરના ટુકડાને કંકળ કહે છે. તેનો ઉપયોગ કાગળના ખાકા (બીબાં)નો વચ્ચેનો ભાગ ઉપર રહેતો હોય તેના ઉપર દબાણ માટે કરવામાં આવે છે. તેનું માપ આશરે ૧ થી ૨ સે.મી. હોય છે.

પછેલી :

સાંઝીમાં બોર્ડર (કોરણ)ની ધારને સજાવવા માટે પછેલીનો ઉપયોગ થતો હતો. પછેલી બનાવવા માટે સીસું (Lead) ગરમ કરીને સેલખડીના સાંચામાં ઢાળવામાં આવે છે. તેનાથી ઉભરાતા ગોળ મોતી જેવો ઘાટ બનતો, જેને પછેલી કહેવામાં આવે છે. હાલ આ કળા લુપ્ત થઈ ગઈ છે.

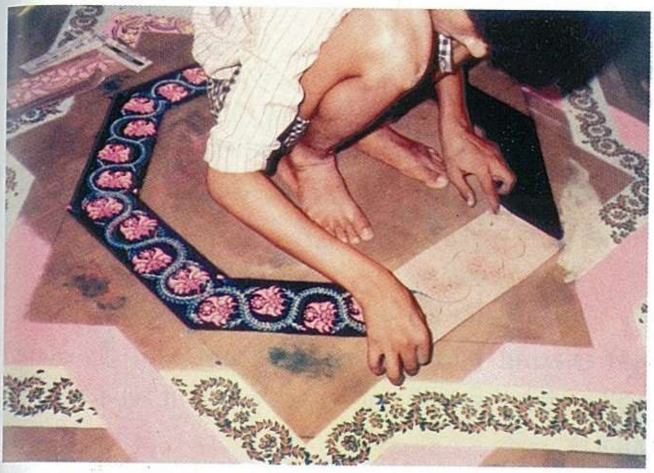

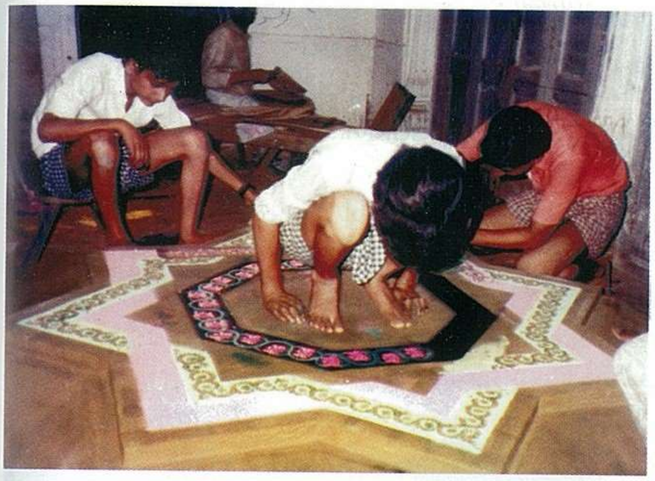

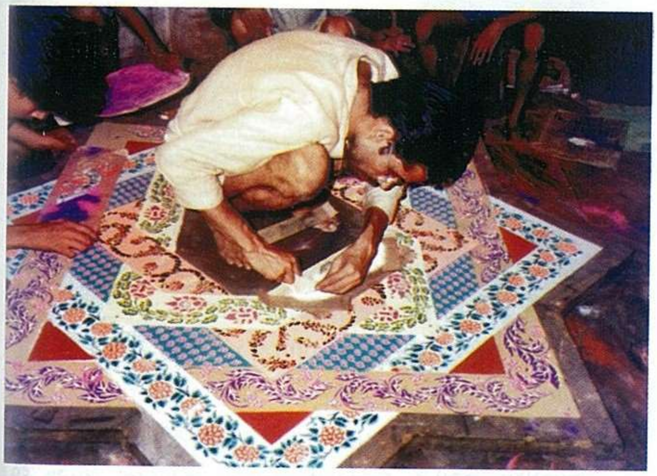

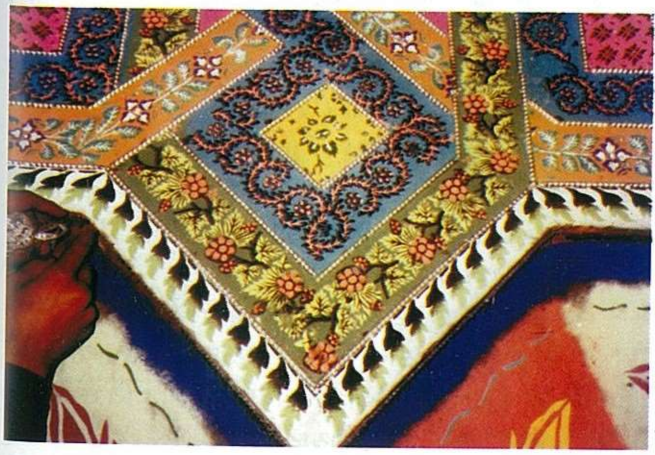

સૌજન્ય : શ્રી પુલિનકૃષ્ણ ગોસ્વામી, વૃંદાવન.

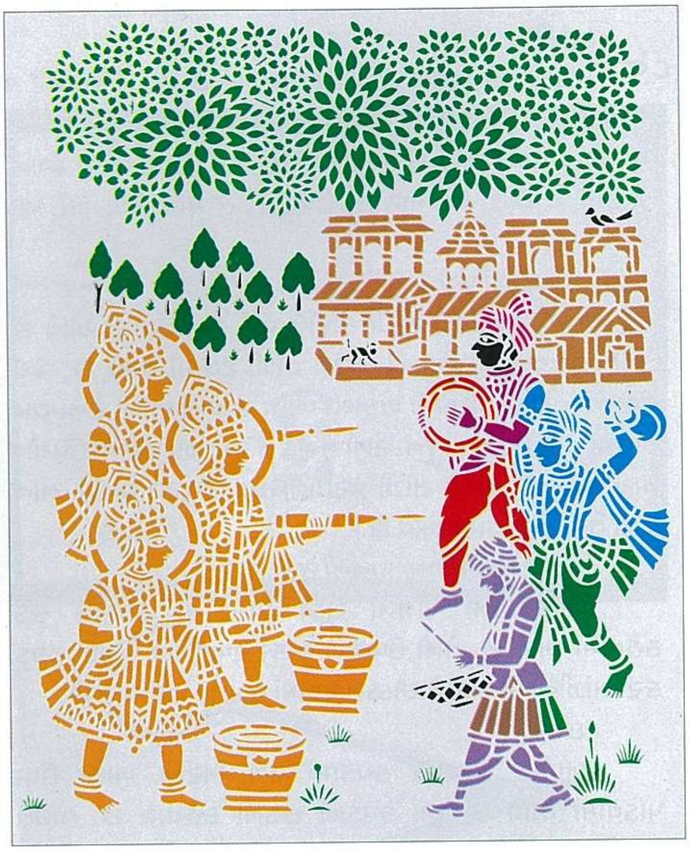

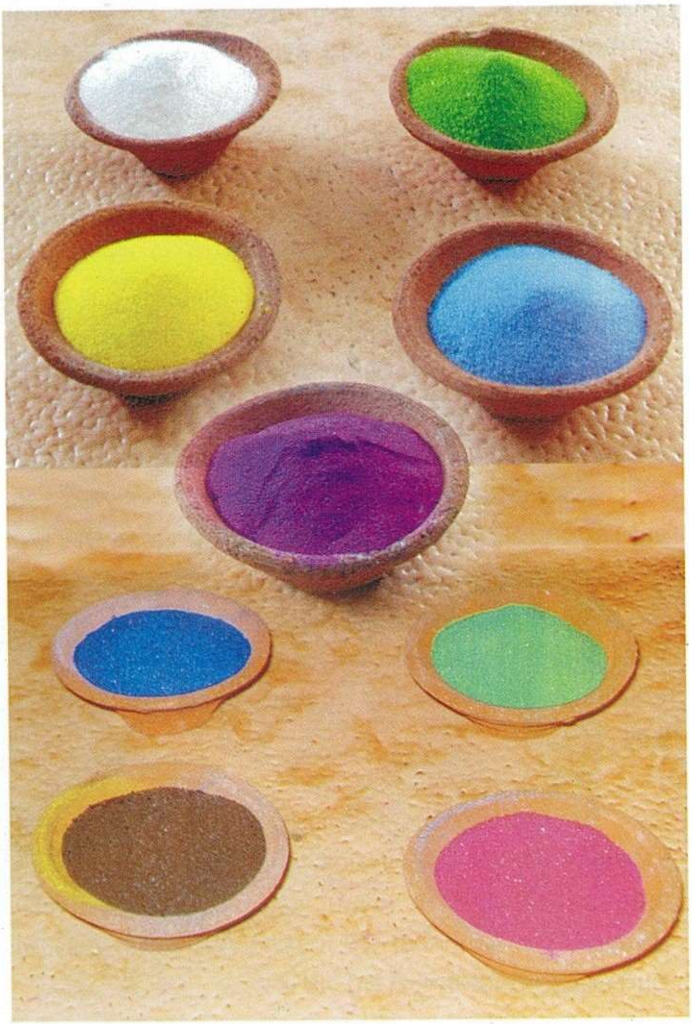

કિનારી :

સાંઝી તૈયાર થઈ ગયા પછી વેદીની ધાર ઉપર જરીની ઝૂલવાળી કિનારી લગાવવામાં આવે છે. તેથી સાંઝીની સજાવટનું આખરી ચરણ પૂરું થાય છે.

બાદલા (જરી) :

સાંઝી તૈયાર થઈ ગયા પછી તેની ઉપર જરીનો બારીક ભૂકો છાંટવામાં આવે તેને બાદલા કહેવામાં આવે છે. તેનાથી સાંઝીના રંગોમાં મનમોહકતા આવે છે અને રંગો આંખને ઊડીને વળગે છે.

પોતના :

પોતનું (ભીનું કપડું) વેદીની જમીન સાથેની ધારની આજુબાજુ પડેલો રંગ સાફ કરવા માટે વપરાય છે. (જેથી શ્રીજી સન્મુખ પધરાવવા માટે ઉતાવળી બને.)

રંગ :

પ્રાચીન સમયમાં સાંઝીમાં વપરાતા રંગો કુદરતી રીતે મળતા પાષાણ, વનસ્પતિ વગેરેમાંથી બનાવવામાં આવતા હતા. દા. ત. : ગેરૂમાંથી ગેરૂ રંગ, હિરમીચમાંથી બ્લેક + બ્રાઉન રંગ, (પારાથી બનતા) હિંગલુમાંથી સિંદૂરી રંગ, પેવડીમાંથી પીળો રંગ, હળદરમાંથી પીળો રંગ, કંકુમાંથી લાલ રંગ, કોલસામાંથી કાળો રંગ, સંગમરમર (આરસ)માંથી સફેદ રંગ, તામડા (પથ્થર)માંથી ડાર્ક બ્લ્યુ રંગ (મોરના રંગ માટે).

રીત : (ખૂબ વાટી - કપડ છલા કરીને વપરાશમાં લેતા)

બાકી બીજા રંગો એકબીજાની મેળવણીથી તૈયાર થતા હતા.

સાંઝીના સૂકા રંગોનું સંયોજન :

સાંઝીના સૂકા રંગોનું સંયોજન સાંઝી કલાનું એક મુખ્ય અંગ છે. તેનાથી સાંઝીની સજાવટનો અદ્‌ભુત નિખાર આવે છે. મુખ્યત્વે સૂકા રંગોની ગોઠવણી એક રંગથી બીજા રંગની વિરુદ્ધ થાય છે, જેને આપણે કોન્ટ્રાસ્ટ કલર કહીએ છીએ. દા. ત. (૧) સફેદ / કાળો, (૨) લીલો / ગુલાબી (૩) સિંદૂરી / પીરોઝી (૪) ગુલાબી / શ્યામ (૫) લાલ / સફેદ (૬) પીળો / ભૂરો (૭) પીળો / કથ્થઈ (૮) પીળો /લાલ આવા કોન્ટ્રાસ્ટ કલર બને છે.

સાંઝીમાં રંગોનું કલાસૂઝ પ્રમાણે સંયોજન થાય છે. સાંઝીના સૂકા રંગ ચમકદાર અને આંખે ઊડીને વળગે તેવા હોય છે. રંગો એકબીજા ઉપર ચઢી ના જાય તેના માટે વિરુદ્ધ રંગોની ગોઠવણી સાંઝી કલામાં ખાસ થાય છે.

મહાકવિ શ્રી બિહારીજી રચિત 'બિહારી સત્તસઈ'માં શ્રી પ્રિયા-પ્રીતમજીના માધુર્યભર્યા મિલનની ભાવભાવના દ્વારા રંગ સંયોજનની રચનાનું ઉત્તમ વર્ણન કર્યું છે.

મેરી ભવ બાધા હરો, રાધા નાગરી સોય ।
જા તન કી ઝાંઈ પરે, શ્યામ હરિત દૂતિ હોય ॥

''જે ચતુર રાધિકાના શરીરનો પડછાયો પડવાથી શ્યામ વર્ણવાળા શ્રી કૃષ્ણ હરે રંગના આભાવાળા બની જાય છે, એ જ રાધિકા મારા સંસારનાં વિઘ્ન બાધાઓનો નાશ કરે.''

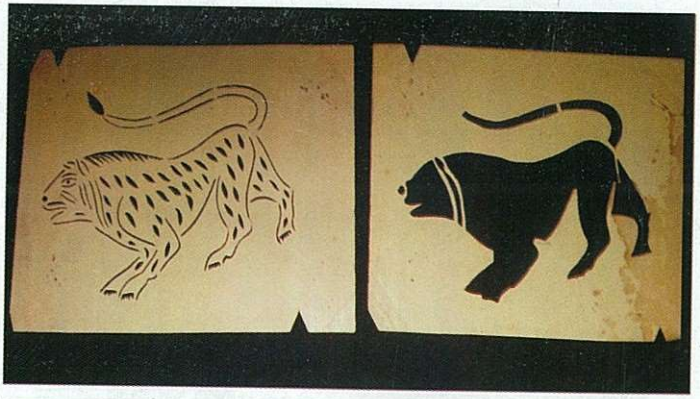

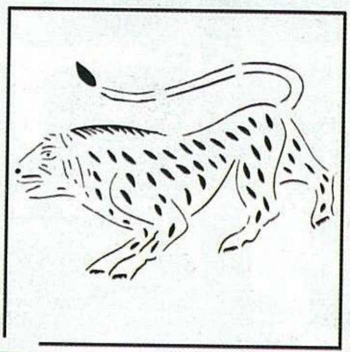

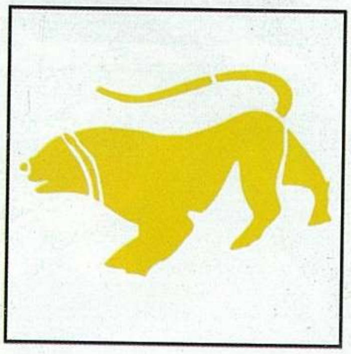

ચસ ની સાંઝી

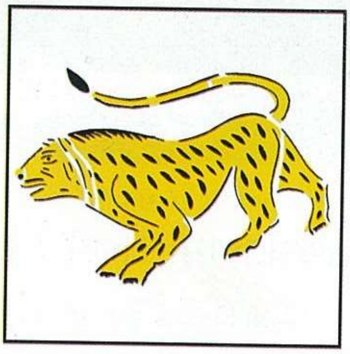

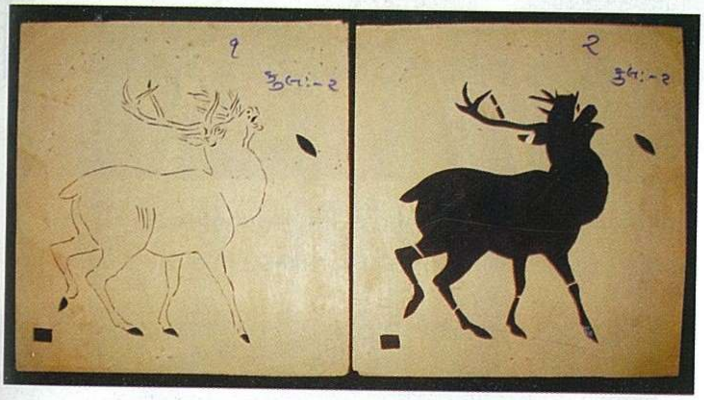

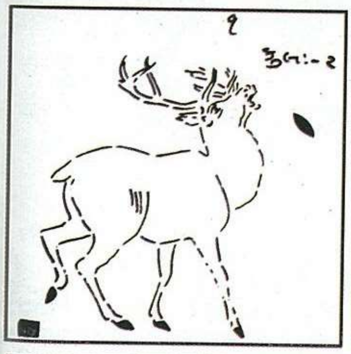

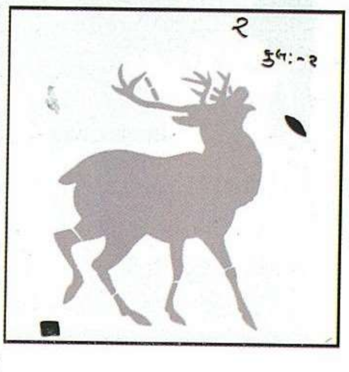

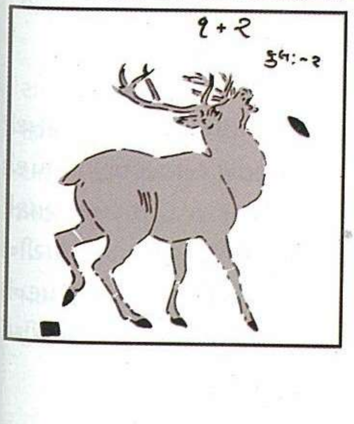

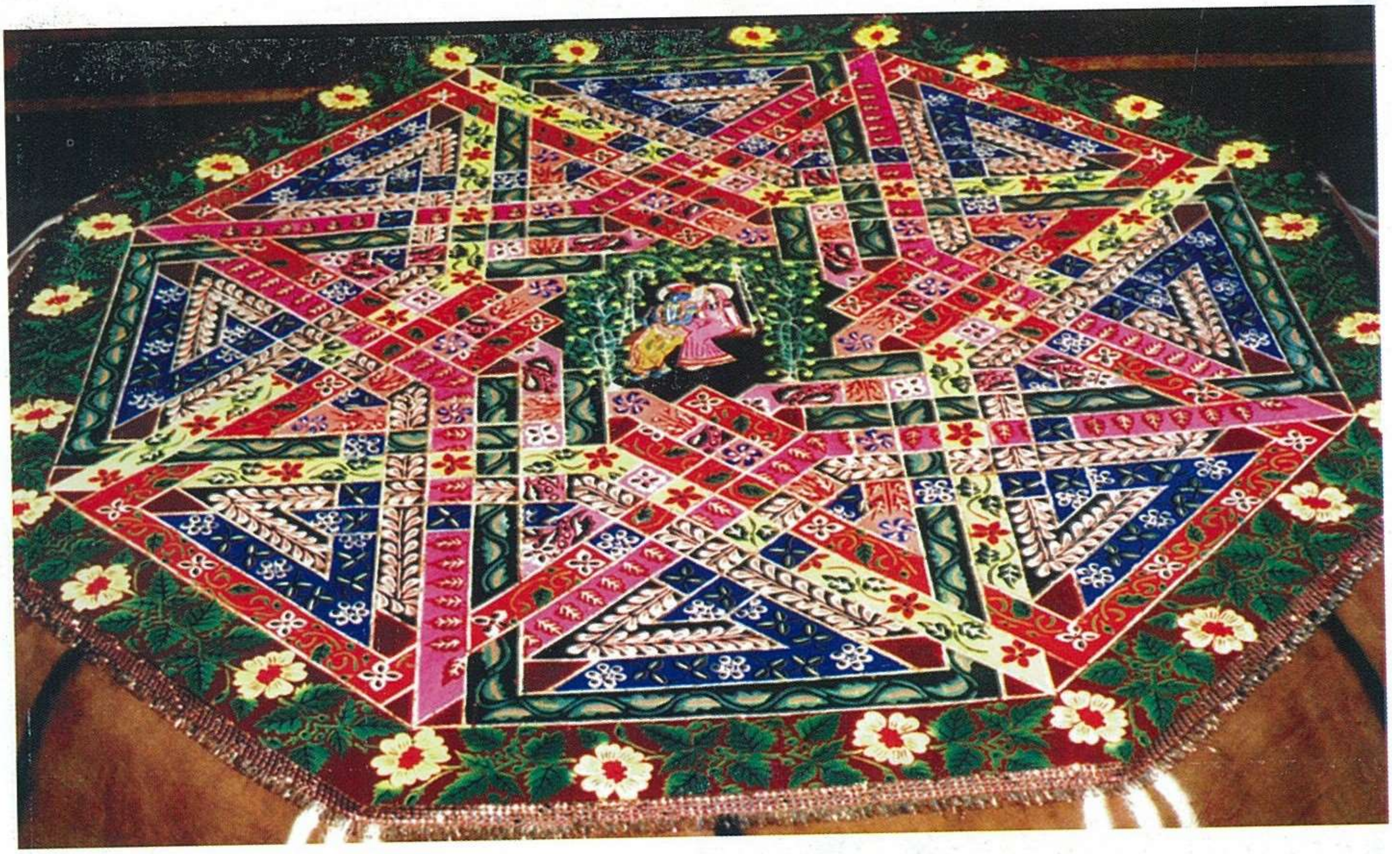

વ્રજમંડળમાં સાંઝી : *રંગો કી રોશની*

શ્રી વિશ્વંભર કૃષ્ણભટ્ટ ગોસ્વામીજીએ (શ્રી મદનમોહનજીનું મંદિર, વૃન્દાવન) વ્રજમંડળની સાંઝી કલાવિષયક વિશેષ જાણકારી આપવાની અમારી વિનંતીને સ્વીકારી અમને આપને ત્યાં વૃંદાવન રૂબરૂ મળવાનું આમંત્રણ આપ્યું. સાંઝીના દિવસોમાં અમે આપશ્રીની અનુકૂળતાનો સમય માગ્યો અને આપશ્રી તરફથી મંજૂરી મળતાં અમે વ્રજમંડળની સાંઝીના દર્શનાનુભવ માટે મથુરા - વૃંદાવન ગયા. ત્યાં અમને ભાવભીનો આવકાર અને સાંઝીવિષયક સંપૂર્ણ માહિતી આપશ્રીના તરફથી મળી, તે બદલ અમે આપના ખૂબ જ ઋણી છીએ. સાથે શ્રી વલ્લભકુળના શ્રી લલિતપ્રભા બેટીજીનો ભાવથી ભરપૂર વિશેષ ટિપ્પણીનો રસાસ્વાદ આ ગ્રંથ સાથે જોડાયેલો છે. આપશ્રીને મળવાનો યોગાનુયોગ જીવનનું ક્યારેય ન ભૂલાય તેવું સંભારણું બની ગયું છે.

સાંઝી લોકકલાના સ્વરૂપમાં વ્રજમંડળમાં પ્રસિદ્ધ છે. આજથી ૨૦૦થી ૨૫૦ વર્ષ પૂર્વે સાંઝી હરા ગોબર (વાછરડાંનાં છાણ)ને દીવાલ ઉપર લીંપીને બનાવવામાં આવતી. તેમાં સજાવટ માટે કોડી - રૂ - ચમકીલા કાગળ (ડાંક) અને ફૂલોનો ઉપયોગ કરવામાં આવતો હતો. તેનું નિર્માણ અનોખી ભાત અને વિવિધતાસભર હતું. આ સુંદર અને કલાત્મક સાંઝી શ્રી ઠાકુરજીને અંગીકાર કરાવવાનો ક્રમ વ્રજમંડળમાં (પુષ્ટિ સમ્પ્રદાયમાં) પ્રસિદ્ધ હતો.

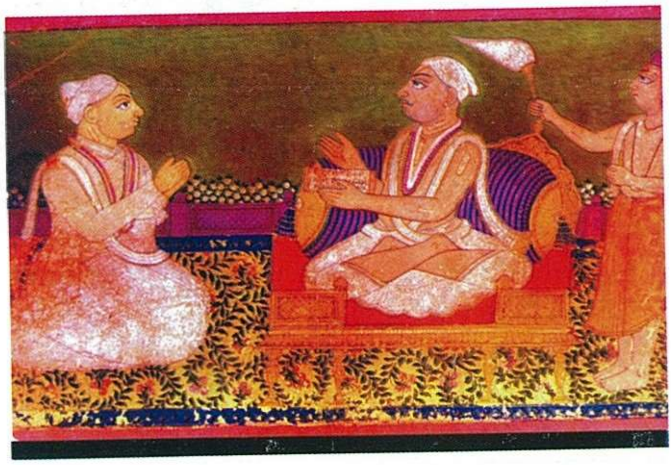

શ્રી ગદાધર ભટ્ટજી મહારાજ ૪૫૦ વર્ષ પૂર્વે દક્ષિણ ભારતથી (આંધ્ર - તૈલંગથી) વ્રજમાં આવ્યા. વૃન્દાવન આવ્યા પછી આપશ્રી માધવ સમ્પ્રદાયના આચાર્યપદે રહ્યા. આપે સાંઝી કલાના સાક્ષી સ્વરૂપે 'માંઝ' પદની સાખ્ય રૂપમાં રચના કરી, જે આપણને પ્રાચીન સાંઝી સેવા પ્રકારના પ્રમાણ રૂપે પ્રાપ્ત છે. હાલ પણ 'માંઝ'ના પદની હસ્તલિખિત પ્રત શ્રી મદનમોહનજી (વૃન્દાવન)ની હવેલીમાં વિદ્યમાન છે.

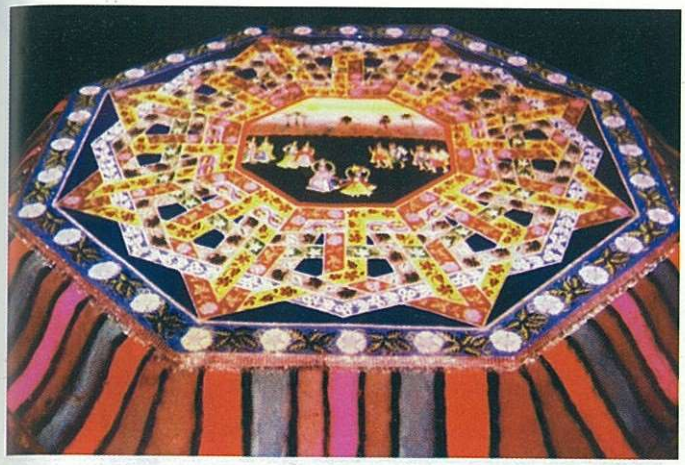

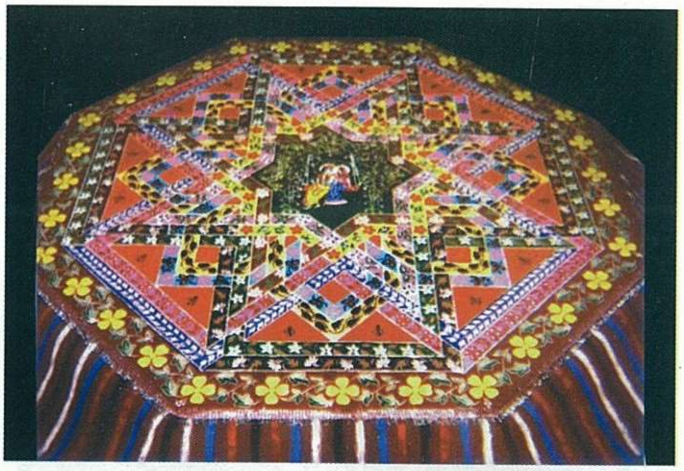

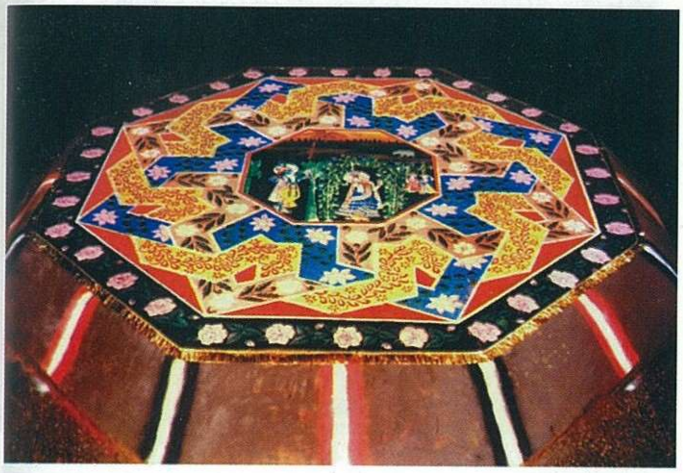

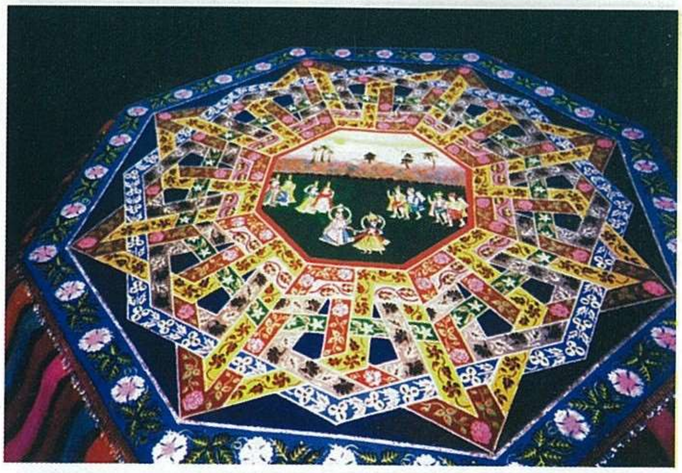

શ્રી મદનમોહનજીનું મંદિર (વૃન્દાવન)ના ઘરમાંથી ૨૫૦ વર્ષ પૂર્વેના સમયગાળા દરમ્યાન પ્રથમ સૂકા રંગોથી સાંઝીનું નિર્માણ થયું. કાળક્રમે સાંઝી કલામાં વિવિધ પરિવર્તનો આવતાં ગયાં. 'શ્રી મદનમોહનજીનું મંદિર, વૃન્દાવન'ના સેવાક્રમમાં પણ પુષ્ટિ સમ્પ્રદાયનો પૂર્વ પક્ષ ઉત્તમ લાગવાથી (શ્રેષ્ઠ લાગવાથી) ફેરફાર થયો. શ્રી મહાપ્રભુજીના વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના બાલભાવના સેવાક્રમથી સંમોહિત થઈને અંગીકાર કર્યો. જેમ ભંવરો ઉત્તમ પ્રકારનાં સુગંધિત ફૂલ તરફ આકર્ષાય તેમ આપનો પુષ્ટિ માર્ગમાં અંગીકાર થયો.

સાંઝી કલાના નિર્માણમાં એક નવું સિમાચિહ્ન ઉમેરાયું. તેમાં સાંઝીમાં ભૂમિતિ (જ્યોમેટ્રી)ના આધાર પર વિવિધ રૂપ-આકારનો સમન્વય કરવામાં આવ્યો. તે આકારોમાં વિવિધ ફૂલોની વેલની છાપ છોડવામાં આવી અને તે શ્રીજીને અંગીકાર કરાવવાની શરૂઆત થઈ.

વ્રજમંડળમાં આ પ્રકારની સાંઝીને 'ચકાઉવાલી' (લપેટ) સાંઝી કહેવામાં આવે છે. પ્રાચીન કાળમાં આ પ્રકારની લપેટવાળી સાંઝી સમગ્ર વ્રજમંડળમાં બધાં જ મંદિરોમાં બનાવવામાં આવતી. આ 'ચકાઉવાલી' સાંઝીમાં વિવિધ ફળ-ફૂલોની વેલો (બીલ - બેલોં)ની સજાવટ કરવામાં આવે છે.

આ બીલ (વેલ) જ્યોમેટ્રીના આધાર ઉપર બનતી હોઈ તેના માપ અને ખૂણાઓનું બારીકાઈથી ધ્યાન રાખવામાં આવે છે. દર્શનાર્થી કોઈ પણ ખૂણેથી જુએ તો તેને એકસરખી જ લાગે છે. એક બીલ (વેલ)થી લઈને અનેક વેલોનો એક જ સાંઝીમાં સમાવેશ કરવામાં આવે છે, જેનો આકાર પણ વિવિધતાસભર હોય છે. સાથિયા, ચોપડ, આલા, ત્રિભૂજ, પંચકોણ, તારા સકલ, ડાયમંડ સેપ (હીરા જેવો), શંખ, ષટ્કોણ, લાલટેન, તાસના પત્તાની સકલના આકારની વેલ, લપેટ અને કિનારી બનાવવામાં આવે છે. આ વેલ લપેટના આકારને બનાવવા માટે સામસામેના ખૂણાઓ એકસરખા બનાવવા અને બધી જ દિશાઓથી એકસરખું નિર્માણ થાય તેનું ધ્યાન રાખવામાં આવે છે. આ પ્રક્રિયાને 'જવાબી સકલ' કહેવામાં આવે છે.

એક કરતાં વધુ, અનેક વેલ (બોર્ડર) એક સાથે ચાલે છે. એક વાર ઉપરથી, એક વાર નીચેથી દબાવીને ચાલે છે. જે ક્રમ વાર એક-બે-ત્રણ એમ અનેક વેલની લપેટ ચાલે છે. શ્રી વિશ્વંભર કૃષ્ણભટ્ટ ગોસ્વામીએ પોતાના દ્વારા (આપના શ્રી હસ્તથી) નિર્માણ પામેલ સાંઝીમાં વધુમાં વધુ ૧૦૮ (એક સો આઠ) વેલની લપેટનો સમાવેશ કર્યો છે.

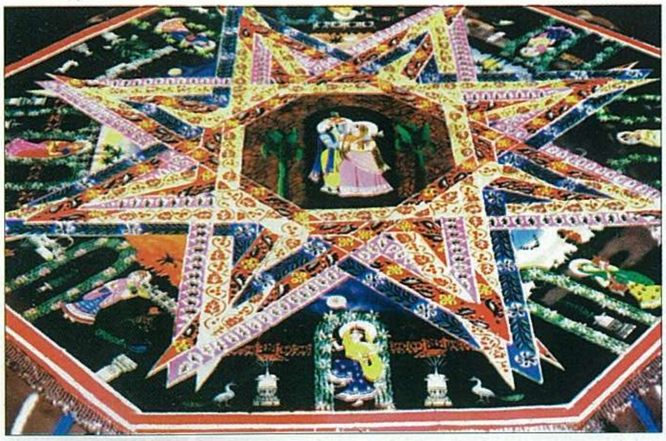

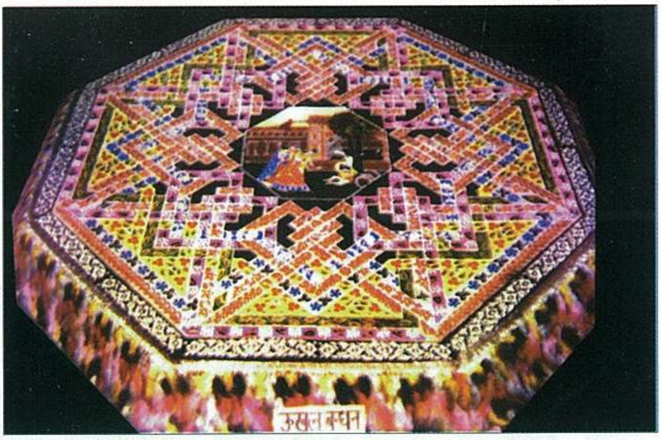

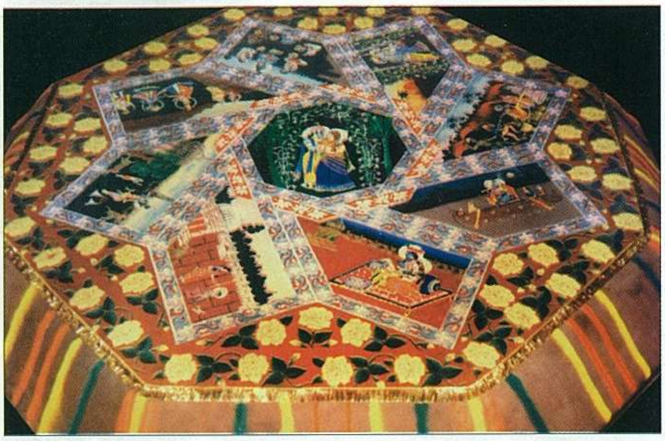

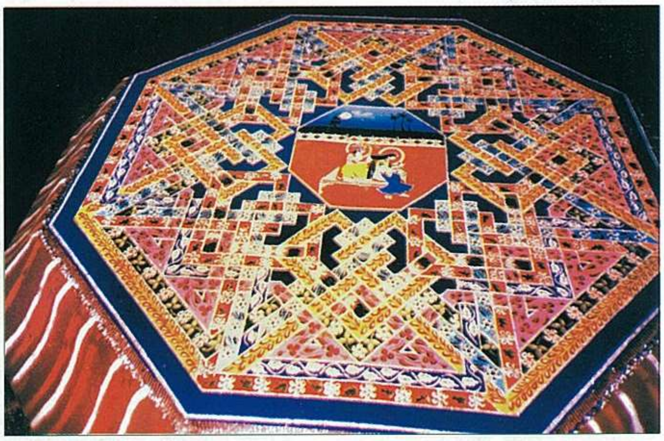

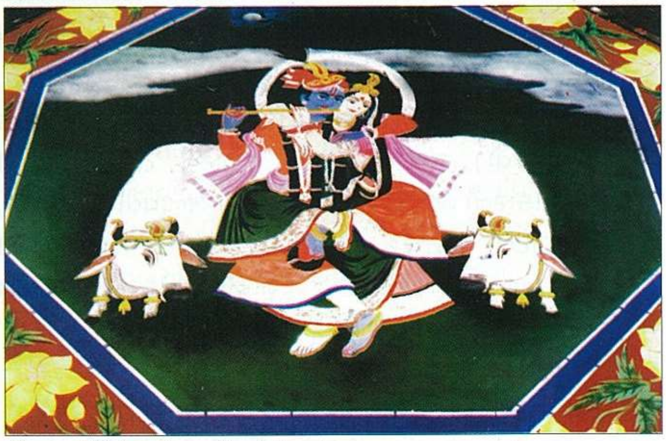

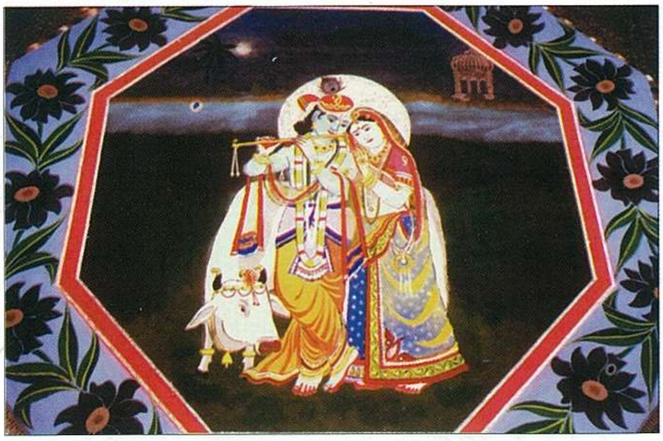

સૌજન્ય : શ્રી વિશ્વંભર કૃષ્ણભટ ગૌસ્વામી (વૃંદાવન)

વેલની લપેટની મધ્યમાં સંપ્રદાયના સેવા પ્રકારને અનુસાર વિવિધ લીલાઓનું સાંઝીથી નિર્માણ કરવામાં આવે છે. ક્યારેક પ્રેરણા ભાવના આધારે મધ્યમાં (વચ્ચે) શ્રી ઠાકુરજીની લીલાનું નિર્માણ કરવામાં આવે છે. આમાં કોઈ પણ પ્રકારનું બંધન હોતું નથી. જે ભાવના સ્ફૂરિત થાય તે અનુસાર મધ્યમાં સાંઝી છોડવામાં આવે છે. કાગળના ખાકા (બીબાં)ને સાંઝી બનાવવાની વેદી ઉપર મૂકી, તેના ઉપર રંગ નાખવામાં આવે પછી બીબાંને ઉઠાવી લેવામાં આવે. આ પ્રક્રિયાને માટે 'સાંઝી છોડવામાં આવે' આવો શબ્દપ્રયોગ અહીં વ્રજમાં બોલાય છે.

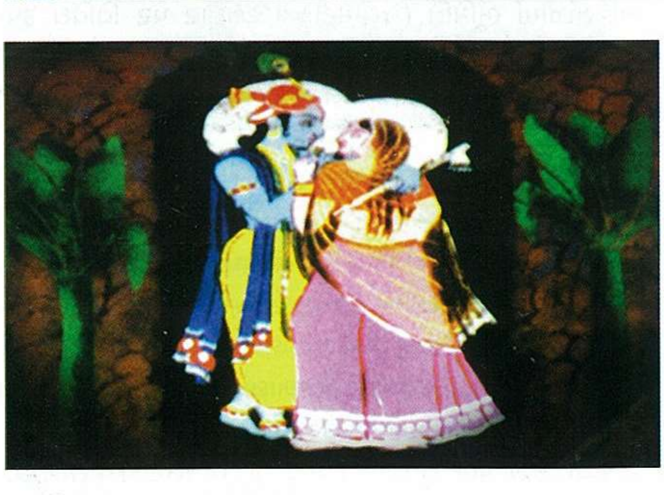

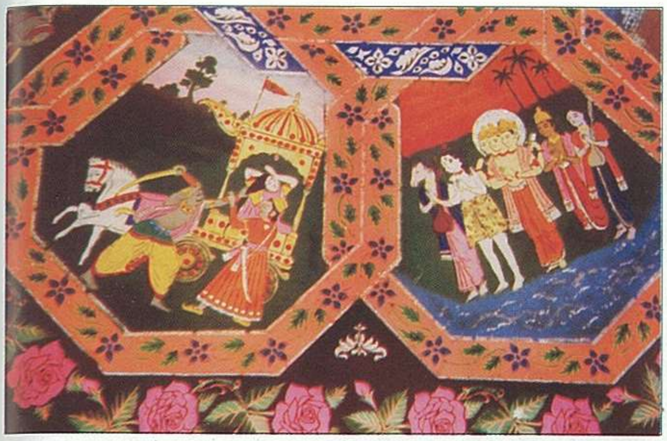

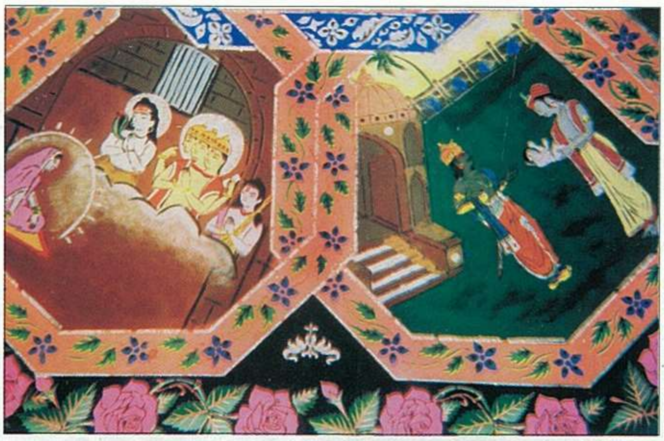

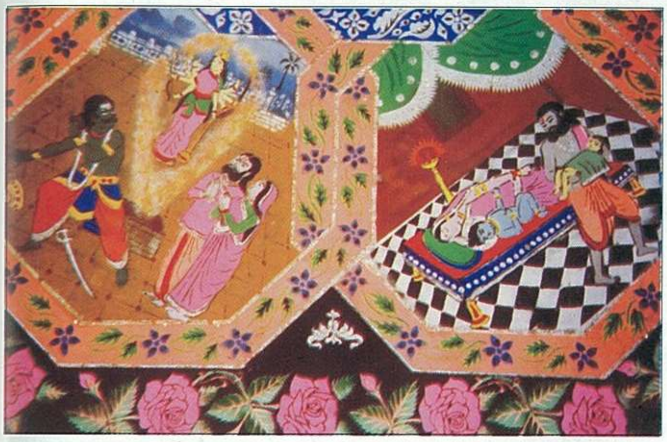

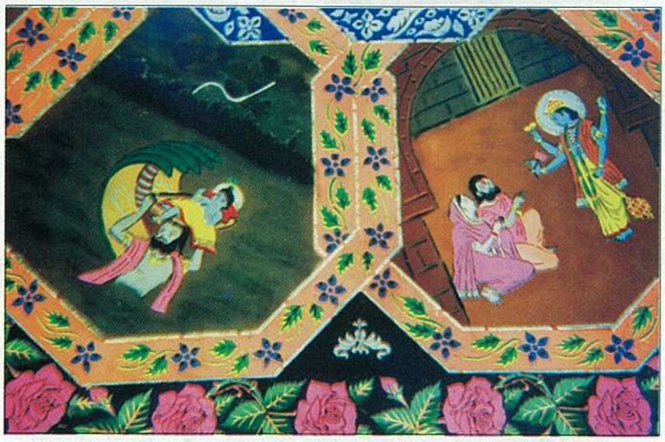

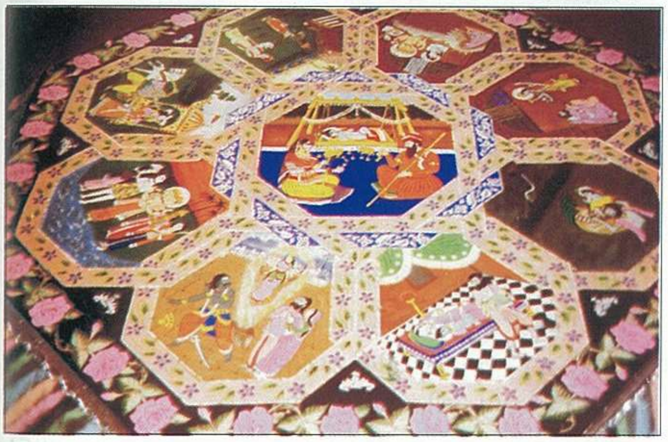

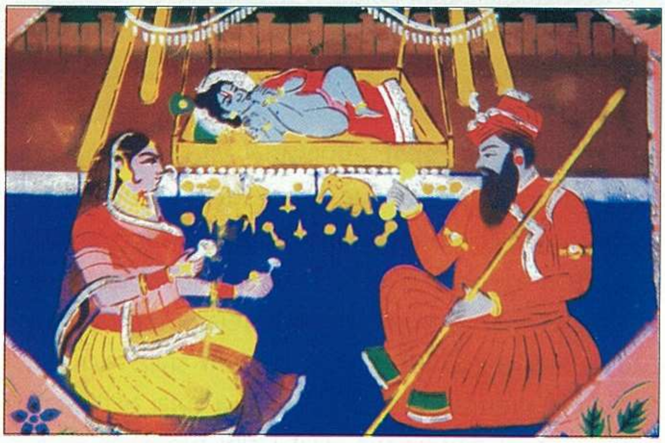

પ્રાચીન સમયમાં એક જ લીલાનું નિર્માણ (વર્ણન) સાંઝીની મધ્યમાં થતું. પાછળથી આ લીલાનું નિર્માણ શ્રીમદ્ ભાગવતજીના આધારે થવા લાગ્યું.

આ પરંપરામાં આજથી ૪૦ વર્ષ પૂર્વે શ્રી મદનમોહનજીની હવેલી (વૃન્દાવન)માં નવી નવી ભાવના જોડી, પ્રાચીન રીતથી અલગ પરિવર્તન કરવામાં આવ્યું છે. 'જાકી રહી ભાવના જૈસી, પ્રભુ મૂરત દેખી તીન જૈસી'. જેના કારણે પ્રાચીન અને અર્વાચીનનો સુગમ સેતુ બન્યો છે. સાંઝીની વિવિધતામાં એક નવો જ અધ્યાય નોંધાયો છે. એક જ સાંઝીમાં શ્રીમદ્ ભાગવતજીના આધારે (૧) શ્રી કૃષ્ણ જન્મ લીલા (૨) બ્રહ્મા સ્તુતિ (૩) વેણુગીત (૪) શ્રી અષ્ટ સખીજન (૫) શ્રી કૃષ્ણ નવ રસરૂપ દર્શન (૬) શ્રી કૃષ્ણ ઉરાહના લીલા વગેરે ચસ છોડવામાં આવે છે.

આ પ્રકારની સાંઝી તૈયાર કરવામાં આઠથી વીસ સેવકના સહયોગ (સેવા)ની જરૂર પડે છે. તેને તૈયાર કરવામાં ૧૨ કલાકથી વધુ સમય લાગે છે.

આજના સમયમાં અર્થ, સમય, સહયોગ અને કલાની સમજ વગેરેના અભાવના કારણે કોઈ ગણ્યાગાંઠ્યા સ્થાને જ આ પરંપરા એના મૂળ સ્વરૂપે જળવાઈ રહી છે. આ સાંઝી કલાનો ક્ષય કોઈએ બીજાને બતાવી નહીં અને કોઈએ જાણવાનો પ્રયત્ન પણ કર્યો નહીં તેથી જણાય છે.

વ્રજમંડળમાં કલાપ્રેમી ભાવિક ભક્તો આજે પણ શ્રી મદનમોહનજીની હવેલી (વૃંદાવન)માં સાંઝીનાં દર્શને અચૂક જાય છે. મથુરા, દિલ્હી, આગ્રા અને દેશવિદેશથી જેઓને જાણકારી હોય તે સાંઝીનાં દર્શને અવશ્ય આવે છે અને શ્રી ઠાકોરજીની લીલાને સરાહે છે.

શ્રી ઠાકોરજીની લીલાનું દર્શન, રંગોથી સુસંગતિ ભરેલો ભક્તિ ભાવ અને નિત્ય લીલાના રસપાનથી મન ભરાતું નથી. દર્શન કર્યા પછી વારંવાર શ્રી ઠાકોરજીની લીલાના રંગોથી ભાવવિભોર બની જઈએ છીએ. આ છે વ્રજની સાંઝી.

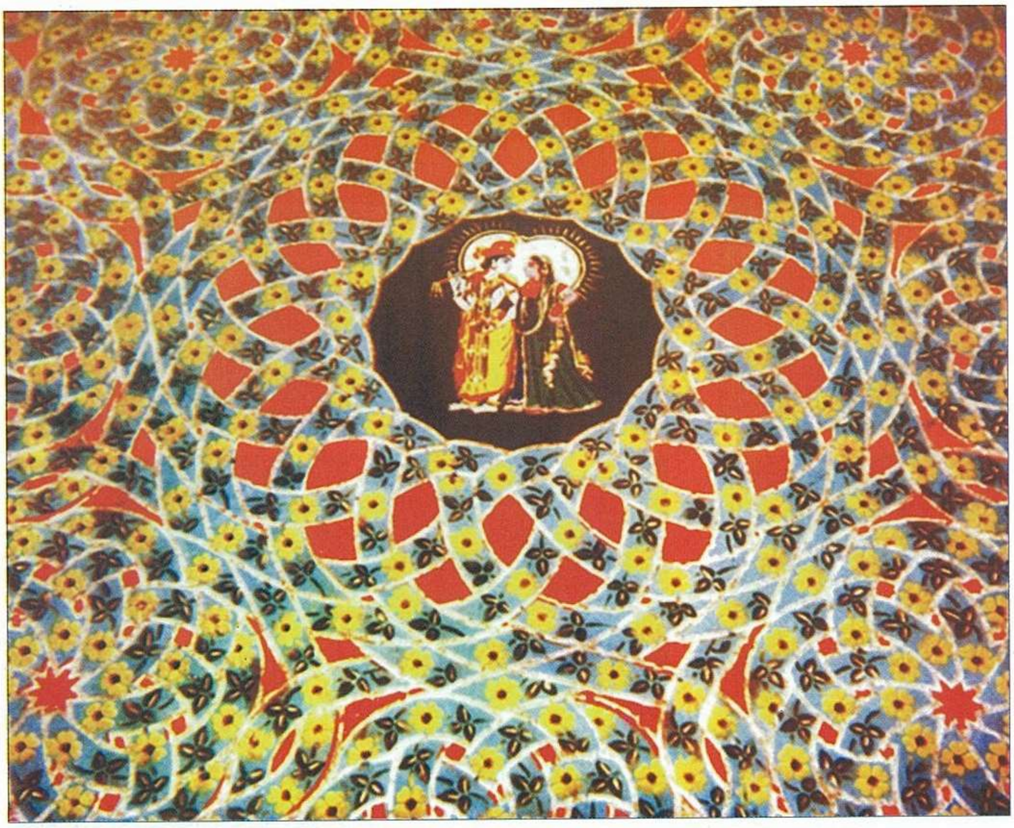

સૌજન્ય : શ્રી વિશ્વંભરકૃષ્ણભટ્ટ ગોસ્વામી, વૃંદાવન

૨૦મી સદીના સાંઝી કલાના માહિર ભક્તજન

(વ્રજમંડળ - વૃંદાવન)

શ્રીજીને પોતાની કલા સમર્પણ કરનારા અનેક ભક્તજનો આ ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા છે. શ્રી ઠાકોરજીની સેવા - શૃંગાર તેની સજાવટથી શ્રીજી શોભા-દર્પણ જોઈને અતિ પ્રસન્ન થાય છે. સાંઝી કલાની ભાવાત્મક સજાવટ લીલા ભાવનાવાળા ભગવદીયો સિવાય કોઈ કરી શકે? આવા વિરલ ભગવદીયો, કોઈ પણ જાતના માન-સન્માનની ઇચ્છા વગર, સ્વતઃ પોતાની કલાને શ્રી ઠાકોરજી સન્મુખ પધરાવે છે. વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં સાંઝી કલાના સર્વોત્તમ મહાનુભાવી ભક્તજન વ્રજમંડળમાં પ્રગટ થયા છે. વ્રજમંડળની પારંપરિક સાંઝી કલાને વર્તમાન સમય સુધી પોષણ આપવા (ટકાવી રાખવા) માટે તેઓનું ઘણું મોટું યોગદાન છે. ૧૯મી ૨૦મી સદીના કેટલાક ઉત્તમ સાંઝી કલાના જાણકાર ભગવદ્ ભક્તો ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા છે. જેમાંથી હાલ ભૂતલ ઉપર બિરાજતા ભક્તજનો, મોટી પાકટ ઉંમરે પણ, શ્રીજી સન્મુખ સાંઝી કલાનું સેવાસમર્પણ કરે છે.

સ્વ. શ્રી ઉમાચરણજી (વૃંદાવન) : આપની સાંઝી કલાના વિશેષજ્ઞ (ઉસ્તાદ)માં ગણના થતી હતી. વેદી નિર્માણથી માંડી સંપૂર્ણ સાંઝી સજાવટ સુધીના દરેક પાસાના આપ જાણકાર હતા. અનેક સાંઝી કલાના જાણકારોએ તેમની પાસેથી શિક્ષા ગ્રહણ કરી છે.

સ્વ. શ્રી વહોરાજી (વૃંદાવન) : સાંઝીમાં પ્રાચીન કાળે વર્ષો પહેલાં બોર્ડરને (કિનારીને) સજાવવા માટે પછેલીનો ઉપયોગ થતો હતો. પછેલી બનાવવા માટે સીસું ગરમ કરીને સેલખડીના સાંચામાં ઢાળવામાં આવતું, જેનાથી ઉભરતા ગોળ મોતી જેવો ચમકદાર ઘાટ બનતો. પછેલી સાંઝીની કોરણ ઉપર સજાવટ માટે વપરાતી હતી. આ પછેલી બનાવવાના શ્રી વહોરાજી નિષ્ણાત હતા (હાલ આ પછેલી બનાવવાની કળા સંપૂર્ણ લુપ્ત થઈ ગઈ છે).

સ્વ. શ્રી દંપતકિશોરજી ચિત્રકાર :

આપ સાંઝી કલાના ઊંડાણના મર્મજ્ઞ હતા. આપની પાસેથી ઘણા કલારસિકોએ શિક્ષા ગ્રહણ કરી છે.

શ્રી જગદીશ ગોસ્વામી (શ્રીરાધા - રમણજી મંદિર, વૃંદાવન) :

આપ સાંઝી કલાના નિષ્ણાત છો. ૮૫ વર્ષની વયે આજે પણ આપ પોતાની નજર સમક્ષ સાંઝીની સજાવટ કરાવો છો.

શ્રી ગટ્ટુલાલજી / શ્રી છજ્જુલાલજી ભટ્ટ :

સાંઝી કલાનો ઉત્તમ કસબ આપ ધરાવવો છો. આપ ખાકા (બીબાં) બનાવવાના માસ્ટર છો. બારીકમાં બારીક સાંઝીના ખાકા (બીબાં) પલક વારમાં બનાવવા આપના માટે ખેલ છે.

શ્રી નંદકિશોર મુકુટવાલે, શ્રી શિવચરણજી, શ્રી ગિરધરલાલજી સાગર (મધ્ય પ્રદેશના), શ્રી નન્દનંદનજી ભટ્ટ (૧૯મી સદી), શ્રી યમુના વલ્લભ ગોસ્વામી (દુસાયત, વૃંદાવન) (૨૦મી સદી) વગેરે નામી અનામી સાંઝી કલાના વિરલ કલાકાર ભગવદીયો ભૂતલ ઉપર બિરાજીને પોતાની આ વિશિષ્ટ કલા શ્રી ઠાકોરજી સન્મુખ કરી, શ્રી ઠાકોરજીની પ્રસન્નતાનો અનુભવ કરતા હતા.

હાલ આ સાંઝી કલાના ઉત્તમ કલાકાર ભક્તજનો ભૂતલ ઉપર ગણ્યા-ગાંઠ્યા દર્શન આપે છે. જરૂર છે આજે વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના કલાપ્રેમી ભક્તજનોની કે જે આ સાંઝી કલાને આપણા શ્રી ઠાકોરજીની સન્મુખ પધરાવી શ્રી ઠાકોરજીની અવિરત પ્રસન્નતાને વધારે.

* * *